प्रस्तावना.

[illegible]

आ ग्रंथ घणु जीवोने उपकारक होवाथी तेनुं भाषांतर गुजरातीमां वढवाणवाला शास्त्री हरिशंकर कालीदासे करी जैनी भाइओनी मददथी छपावी बहार पाडेलुं हतुं. पण हाल ते मलतु नहीं होवाथी अने घणा जैनी भाइओने तथा-साधु साध्वीओने भणवा वांचवानुं सुगम होवाथी प्रातःस्मरणीय तपगच्छना पूज्यपाद गुरुणीजी महाराजश्री सौभाग्यश्रीजीना सदुपदेशथी अने तेमनी खास प्रेरणाथीज कोइनी कांइ पण मदद नहीं छतां तेनी योग्य कींमत राखी आ पुस्तक बहार पाडवामां आव्युं छे. जेओ साहेबना उपकार साथे तेमनुं टुंक वृत्तांत अहीं आपवामां आव्युं छे.

आपने सुविदित छे के आ जैन शासनना प्ररुपक महान वितराग तीर्थंकर भगवान होय छे तेमना अभावे शासन चलावनार आचार्य महाराजा होय छे जेम श्रावकोने विशेष उपकारक आचार्य महाराजा होय छे तेमज श्रावीकाओ तथा साध्वीकाओने विशेष उपकारक गुरुणीजी महाराजा होय छे. तेज न्याये आ पूज्यपाद पवित्र चारित्र भूषण गुरुणीजी महाराजश्री सौभाग्यश्रीजी महाराज साहेब पण हिंदुस्तानना घणा शहेरो अने गामोमां विहार करवा पूर्वक--श्रावीकाओ अने साध्वीकाओने धर्म मार्गमां जोडवामां हंमेशां उध्यमवंत अने घणाज खंत धरावनारा महापवित्र साध्वीजीओमांना एक उत्तम चारित्रवंत गुरुणीजी महाराज छे. एटलुंज नहीं पण तेमनो समुदाय पण गामो गाम विहार करवा पूर्वक अनेक उपकार करी रह्यां छे ते नीचे मुजब छे. तप गच्छना मुख्य प्रातः स्मरणीय परम पूज्य गुरुणीजी महाराजश्री जे श्रीजीनी शिष्याओ.

गुरुणीजी श्री विजकोर श्रीजी.

तेमनी शिष्याओ.

विनयश्रीजी. देव श्रीजी. हेमश्रीजी उत्तमश्रीजी. उमेदश्रीजी. अने रिद्धीश्रीजी. गुरुणीजी साहेबश्री देवश्रीजीनी शिष्याओ. भार-

श्रीजी. सौभाग्यश्रीजी आणंदश्रीजी. हरखश्रीजी. गुरुणीजीमहाराजश्री सौभाग्यश्रीजीनी शिष्याओ. चंपाश्रीजी. हीरश्रीजी. दानश्रीजी. लावण्यश्रीजी. गुलाबश्रीजी दोलत श्रीजी. कनकश्रीजी विद्याश्रीजी मणीश्रीजी सुनंदाश्रीजी. साध्वी आणंदश्रीजीनी शिष्याओ. अनोपश्रीजी कमल श्रीजी शांती श्रीजी चंद्रश्रीजी. साध्वी हरखश्रीजीनी शिष्याओ. प्रमनश्रीजी. साध्वी चंपाश्रीजीनी शिष्याओ. दरसनश्रीजी शिवश्रीजी हीराश्रीजी खीमाश्रीजी प्रभाश्रीजी साध्वीदानश्रीजीनी शिष्याओ. दीपश्रीजी वल्लभश्रीजी.

मांगरोलवाला साध्वीजी गुलाबश्रीजीनी शिष्याओ. पुन्यश्रीजी गुणश्रीजी प्रधानश्रीजी.

उपर बतावेलो परीवार तथा प्रशिष्याओनो घणो समुदाय विगेरे हालमां विचरे छे. अने घणी श्राविकाओ तथा बालीकाओने धर्म मार्गमां जोडवामां घणो उपकार करी रह्या छे. एटलुंज नही परंतु प्राचीन स्तवनो जीवनजनक दंडक प्रकरण ४१ द्वारवालुं तेमज नीत्य स्मरणीय शैत्रुंजा प्रकरणो आदि नाना मोटा पुस्तको पण तेमना सदुपदेशथी छपावी बहार पाडवामां आवेला छे अने ते एटला बधा लोकप्रीय थयेला छे के तेनी बे चार चार आवृत्तिओ काढवी पडी छे. तेज प्रमाणे आ मोटी संग्रहणीनुं पण पुस्तक लोकप्रीय थशे तेमां कांइ संदह जेवुं नथी.

उपरनी हकीकत जणाव्या बाद हुं आ बृहत्संग्रहणीनी प्रत यंत्रो सहित उक्त गुरुणीजी महाराज तरफथी बराबर सुद्ध कराबी छपाववामां आवी छे छतां पण दृष्टी दोषथी तेमज प्रेस दोषथी जे कांइ भुल चुक रही गइ होय अगर जीनाज्ञा विरुद्ध कांइ लखाइ गयुं होय तेनी क्षमायाची मीच्छामि दुक्कडं देवा पूर्वक आ प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे. एज गुणशूकीं वहनां.

संवत १९८० ना महा शुद ५ रवीवार.

ली० प्रसिद्धकर्ता.

AUGARCHAND BHAIRODAN SETHIA.
JAIN LIBRARY.:
BIKANER RAJPUTANA.

॥ श्रीवर्द्धमानस्वामिने नमः ॥

॥ श्री बृहत्संग्रहणी प्रारभ्यते ॥

श्री परमपददायकाष्टकर्मारिघातकत्रिलोकाधारकचतुर्दशरज्ज्वात्मकप्रकटकारकधर्मदीपकादिप्ररूपकपरमपुरुषोत्तमाय नमोनमः ॥ श्रीदानादिचतुष्कस्य शक्त्या धारकशासनाधिष्ठायकदेवेभ्यो नमोनमः ॥ श्रीमहावीरस्वामिने नमोनमः ॥

इहे ग्रंथकर्त्ता प्रथम शिष्टाचार पाळवाने अर्थे तथा विघ्न निवारवाने अर्थे दोढ गाथाथी मंगलाचरण अने अभिधेय, प्रयोजन, सम्बन्ध तथा अधिकारी ए चार वस्तुनुं प्रतिपादन करेछे।

नमिउं अरिहंताई, ठिइभवणो गाहणा य पत्तेयं ॥
सुरनारयाण वुच्छं, नरतिरियाणं विणा भवणं ॥१॥
उववाय चवण विरहं, संखं इगसमइयं गमागमणे॥

अर्थ—(अरिहंताई) के० अरिहंतादिक पांच परमेष्ठिने—त्रणे सकल त्रण भुवनना जनने चमत्कार उपजावनार, उत्तम अरिहंतम-

हिमाने विस्तारनार, अशोकवृक्षादिक आठ प्रातिहार्य धारक, चौत्रीश अतिशयथी सुशोभित, रागादिक शत्रुने हणनार अने बार गुण सहित ते अरिहंत कहेवाय. तथा ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्म रहित, आठ गुणना धारक अने सिद्धक्षेत्रने विषे निराकारपद धारक ते सिद्ध कहेवाय. तथा ज्ञानादिक पांच आचारने पोते पालनार, बीजाने पलावनार पालनाने अनुमोदना करनार, धर्मनो उपदेश आपनार अने छत्रीश गुण सहित ते आचार्य कहेवाय. तथा पच्चीश गुणना धारक, बीजाओने भणावनार अने शुद्ध वाचना आपनार ते उपाध्याय कहेवाय. तथा सत्तावीश गुणना धारक, सत्तर प्रकारे संयम पालनार, पांच महाव्रतना धारक, बावीस परिसहने जीतनार, दशविध यति धर्मना धारक, पांच सुमति त्रण गुप्तिना आधार, षट्कायना रक्षक, मन वचन काय योगने गोपवनार अने बेंतालीश दोष रहित आहारनी गवेषणा करनार ते साधु कहेवाय. ते पूर्वे कहेला पांच परमेष्ठीने (नमिउं) के० त्रिकरण शुद्धिथी नमस्कार करीने (सुरनारयाण) के० देवता तथा नारकीनी (ठिइ) के० स्थिति एटले आयुष्य (भवण) के० निवास करवानां घर अने (ओगाहणाय) के० शरीरनुं प्रमाण, अहिं मूलगाथामां यं शब्दनुं ग्रहण कर्युंछे तेथी ए देवतानां चिह्न, संस्थान, शरीर, अवधिज्ञान, अवधिज्ञाननो आकार, विमान, विषय, लेश्या ए (पत्तेय) के० अनुक्रमे प्रत्येक (वुच्छं) के० कहीशुं, परन्तु (नरतिरियाण) के० मनुष्य अने तिर्यंचना (भवण विणा) के० भवनो शाश्वतां न होवाथी भुवन विना आयुष्य तथा अवगाहना कहीशुं. ए ३ द्वार थयां ॥ १ ॥ तथा (उववायविरहे) के० एक देव उपज्या पछी बीजो देव केटला कालने आंतरे उपजे ? ते उपपात विरहकाल ४, तथा (चवणविरहे) के० एक देव चव्या पछी बीजो देव केटला कालने आंतरे चवे ? ते च-

मन विरहकाल ५, तथा (इगसमयंमि) के० एक समये (कंति) के० उत्पाय्, गणनी केटला उपजे ? ते उपपात संख्या ६, तथा एक समये ऑत्पाय् गणनी केटला चवे ? ते चवन संख्या ७, तथा (गइय) के० क्यांने केटली गतिमां जाय ? ते गति ८, तथा (आगमणे) के० केटली गतिना आव्या जीवो देवपणे उपजे ? ते आगति ९ ॥ एम देवता तथा नारकीनां नव नव द्वार कही अढार द्वार थाय. अने मनुष्य तथा तिर्यंचनां भवन विना आठ आठ द्वार कही सोळ थाय, एम सर्व कही चोवीस द्वार थाय. ए चोवीस द्वार कह्यां. ए अभिधेय कह्युं.

ग्रन्थकर्त्ताने ग्रन्थ रचतां जे शुभ आश्रव अने अशुभनी निर्जरा थाय ते अनन्तर प्रयोजन अने तेथी परंपराए मोक्षप्राप्ति ते परंपरा प्रयोजन जाणवुं. ए बे प्रयोजन ग्रन्थकर्त्तानां जाणवां. तथा श्रोताने देवादिकनु स्वरूप जाणवु ते श्रोतानुं अनंतर प्रयोजन अने तेथी परंपराए मोक्षप्राप्ति ते श्रोतानु परंपरा प्रयोजन, ए बे प्रयोजन श्रोतानां जाणवां.

संबंध बे प्रकारनो छे. पहेलो उपायोपेय लक्षण अने बीजो गुरुपर्वक्रम लक्षण. तेमां संग्रहणी ग्रंथ ते उपाय अने तेनुं तत्त्वज्ञान ते उपेय एम बन्ने मळीने उपायोपेय लक्षण संबंध जाणवो. तथा गुरुपर्वक्रमलक्षण ते ए संग्रहणीनो अर्थ श्रीवीरप्रभुए प्रकाश्यो, त्यार पछी सुधर्मा स्वामीए द्वादशांगीमां गुंथ्यो. त्यांथी श्यामाचार्यादिके पन्नवणा सूत्रमां गुंथ्यो. त्यांथी जिनभद्र गणि क्षमाश्रमणे आ संग्रहणीमां उतार्यो. ए गुरुपर्वक्रम लक्षण जाणवुं. ए संबंध कह्यो.

वळी आ संग्रहणी ग्रन्थ भणवाना अधिकारी साधु साध्वी श्रावक अने श्राविका छे. ते अधिकारीपणुं जाणवुं.

हवे जेवी रीते अनुक्रमे करीने चोवीश द्वार कह्या, तेवीज रीते अनुक्रमे करीने देवतानी स्थिति प्रमुख नव द्वार कहे छे, तेमां प्रथम १ भुवनपति, २ व्यंतर, ३ ज्योतिषी अने ४ वैमानिक. ए चार प्रकारना देवोमांथी भुवनपति देवोनी जघन्य आयुष्यनी स्थिति अर्द्धगाथाए करीने कहे छे

दस वाससहस्साइं, भवणवईणं जहन्नठिई ॥ २ ॥

अर्थ–(भवणवईणं) के० असुरकुमारादिक दश प्रकारना भुवनपति देवोनी अने भुवनपतिनी देवीओनी सामान्यपणे (दस वाससहस्साइं) के० दश हजार वर्षनी (जहन्नठिई) के० जघन्यथी आयुष्यनी स्थिति होय, पण तेथी ओछी न होय.

अहिं देवताओना आयुष्यनुं प्रमाण पल्योपम तथा सागरोपमथी कहेशे, माटे पल्योपम तथा सागरोपमनुं स्वरूप देखाडे छे.

देवकुरु तथा उत्तरकुरुना जुगलीआ सात दिवसना घेटाना एक उत्सेधांगुल प्रमाण रोमखंडना सात वार आठ आठ खंड करतां ते सर्व मळीने वीस लाख सत्ताणुं हजार एक सो बावन खंड थाय. तेवा खंडथी चार गाउनो घनवृत्त (चार गाउ विष्कंभ अने चार गाउ उंडाईवाळो) कूवो ठांसीने कांठा सुधी भरी तेमांथी समये समये एक एक रोमखंड काढतां ज्यारे कूवो खाली थाय त्यारे एक उद्धार पल्योपम कहेवाय, अने सो सो वर्षे एक एक रोमखंड काढतां अद्धा पल्योपम कहेवाय छे. तेवा दश कोडाकोडी पल्योपमे एक सागरोपम थाय छे. अहिं छ प्रकारना पल्योपमनुं विशेष स्वरूप क्षेत्रसमासादि ग्रन्थोथी जाणी लेवुं ॥

हवे भुवनपति देवोनी उत्कृष्टी आयुष्यस्थिति बे गाथाए करी कहे छे.

चमरबलि सारमहियं, तद्देवीणं तु तिन्नि चत्तारी ॥
पलियाइं सड्ढाइं, सेसाणं नव निकायाणं ॥ ३ ॥
दाहिण दिवड्ढ पलियं, उत्तरओ हुंति दुन्नि देसूणा ॥
तद्देवीमद्धपलियं, देसूणं आउमुक्कोसं ॥ ४ ॥

अर्थ—भुवनपति देवोना दश निकाय (जाति विशेष अथवा निवास स्थान) छे. ते दरेक निकायमां दक्षिण अने उत्तर एम बबे खण्ड छे. दरेक खण्डनो एक एक इन्द्र छे. तेथी भुवनपति देवोना सर्व मळीने वीश इंद्रो छे. तेमां पहेला निकायने विषे दक्षिण दिशाना खण्डमां रहेनारा असुरकुमारोनो राजा (चमर) के० चमरेंद्र छे, तेनुं उत्कृष्ट आयुष्य (सारं) के० एक सागरोपमनुं छे. तथा उत्तर दिशाना खण्डमां रहेनारा असुरकुमारोनो राजा (बलि) के० बलीन्द्र छे. तेनुं उत्कृष्ट आयुष्य (अहियं) के० एक सागरोपमथी कांइक अधिक छे. (तु) के० वली (तद्देवीणं) के० ते चमरेन्द्रनी देवीनुं उत्कृष्ट आयुष्य (सड्ढाइं तिन्नि पलियाइं) के० साडात्रण पल्योपमनुं छे. तथा बलीन्द्रनी देवीनुं उत्कृष्ट आयुष्य (सड्ढाइं चत्तारि पलियाइं) के० साडाचार पल्योपमनुं छे. तथा (सेसाणं नव निकायाणं) के० ए चमरेन्द्र तथा बलीन्द्र विना बाकीना जे नव निकायना इंद्रो छे. ॥ ३ ॥ तेमां. (दाहिण) के० दक्षिण दिशाना नव निकायना धरणेंद्र प्रमुख नव इन्द्रो छे तेमनुं उत्कृष्ट आयुष्य (दिवड्ढ पलियं) के० दोढ पल्योपमनुं जाणवुं, अने (उत्तरओ) के० उत्तर दिशाना नव निकायना भूतानेंद्र प्रमुख नव इंद्रो छे तेमनुं उत्कृष्ट आयुष्य (दुन्नि देसूणा) के० देशे ऊणु बे पल्योपमनुं एटले बे पल्योपममां कांइक ओछुं जाणवुं. तथा (तद्देवीमद्ध) के० ते धरणेन्द्र प्रमुख

नव इंद्रोनी देवीओनुं अर्द्धा पल्योपमनुं अने भूतानेन्द्र प्रमुख नव इंद्रोनी देवीओनुं (देसूणं पलियं) के० देशे ऊणुं एक पल्योपमनुं (आउमुक्कोसं) के० उत्कृष्ट आयुष्य जाणवुं अहि इन्द्रना उपलक्षणथी सामान्य भुवनपति देवोनुं तथा तेमनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य पण पूर्वोक्त प्रकारे जाणवुं ॥ ४ ॥

हवे व्यंतरदेवता तथा तेमनी देवीओनुं जघन्य अने उत्कृष्ट आयुष्य गाथाना त्रण पदे करीने कहे छे,

वंतरियाण जहन्नं, दसवाससहस्स पलियमुक्कोसं॥
देवीणं पलियद्धं–

अर्थ–(वंतरियाण) के० व्यंतरदेवता तथा तेमनी देवीओनुं (जहन्न) के० जघन्य आयुष्य (दसवाससहस्स) के० दश हजार वर्षनुं होय छे. अने व्यंतरदेवोनुं (पलियं) के० एक पल्योपमनुं तथा (देवीणं) के० तेमनी देवीओनुं (पलियद्धं) के० अर्द्धपल्योपमनुं. (उक्कोसं) के० उत्कृष्ट आयुष्य जाणवुं.

हवे चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र अने तारा ए पांच जातना ज्योतिषी देवता तथा तेमनी देवीओनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य एक पद अने बे गाथाए करीने कहे छे.

---

१ [illegible] अहि [illegible] इन्द्र इन्द्राणिओनुं आयुष्य [illegible] पण [illegible] अने इन्द्राणीनुं आयुष्य उत्कृष्ट पल्योपम अने अर्ध पल्योपम [illegible] जाणवुं. इन्द्र इन्द्राणीओनुं जघन्य आयुष्य [illegible] नहि.

२ [illegible] आयुष्य १ पल्योपम [illegible] विस्तारथी [illegible] आयुष्य छे.

पलियं अहियं ससिरवीणं ॥ ५ ॥
लक्खेण सहस्सेण य, वासाण गहाण पलियमेएसिं॥
ठिइ अद्धं देवीणं, कमेण नक्खत्त ताराणं ॥ ६ ॥
पलिअद्धं चउभागो, चउअडभागाहिगा उ देवीणं॥
चउजुयले चउभागो, जहन्नमडभाग पंचमए ॥ ७ ॥

अर्थ–ज्योतिषी देवताना बे भेद छे. चर अने स्थिर. तेमां अढी द्वीपनी मांहेला चर छे अने अढी द्वीपनी बाहेरना स्थिर छे. ते सर्व ज्योतिषी मांहेना जे (ससि) के० चंद्रमा इन्द्र अने चन्द्रमाना विमानवासी देवो छे, तेमनुं उत्कृष्ट आयुष्य (वासाण लक्खेण अहियं पलियं) के० एक लाख व अधिक एक पल्योपम, अर्थात् एक पल्योपम अने एक लाख वर्षनुं होय छे. (य) के० तथा (रवीणं) के० सूर्य इन्द्र अने सूर्यना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य (वासाण सहस्सेण अहियं पलियं) के० एक हजार वर्ष अधिक एक पल्योपमनुं अर्थात् एक पल्योपम अने एक हजार वर्षनुं होय छे. तथा (गहाण) के० ग्रह विमानाधिपति अने ग्रहना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य (पलियं) के० एक पल्योपमनुं होय छे. वली (एएसिं) के० ए पूर्वे कहेला चन्द्र सूर्य अने ग्रहो तथा तेमना विमानवासीदेवो ए सर्वनी (देवीणं) के० देवीओनी (ठिइ) के० आयुष्य (अद्धं) के० अर्द्ध जाणवुं. एटले चंद्रनी देवीनुं तथा चंद्रना विमानवासी देवोनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य अर्ध पल्योपम अने पचास हजार वर्ष उपर होय छे. तथा सूर्यनी देवीनुं अने सूर्यना विमानवासी देवोनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य अर्ध पल्योपम अने

नव इंद्रोनी देवीओनुं अर्द्धा पल्योपमनुं अने भूतानेन्द्र प्रमुख नव इंद्रोनी देवीओनुं (देसूणं पलियं) के० देशे ऊणुं एक पल्योपमनुं (आउमुक्कोसं) के० उत्कृष्ट आयुष्य जाणवुं अहिं इन्द्रना उपलक्षणथी सामान्य भुवनपति देवोनुं तथा तेमनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य पण पूर्वोक्त प्रकारे जाणवुं ॥ ४ ॥

हवे व्यंतरदेवना तथा तेमनी देवीओनुं जघन्य अने उत्कृष्ट आयुष्य गाथाना त्रण पदे करीने कहे छे,

वंतरियाण जहन्नं, दसवाससहस्स पलियमुक्कोसं॥
देवीणं पलियद्धं–

अर्थ–(वंतरियाण) के० व्यंतरदेवना[1] तथा तेमनी देवीओनुं (जहन्न) के० जघन्य आयुष्य (दसवाससहस्स) के० दश हजार वर्षनुं होय छे. अने व्यंतरदेवोनुं (पलियं) के० एक पल्योपमनुं तथा (देवीणं) के० तेमनी देवीओनु (पलियद्धं) के० अर्द्धपल्योपमनुं. (उक्कोसं) के० उत्कृष्ट आयुष्य जाणवुं.

हवे चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र अने तारा ए पांच जातना ज्योतिषी देवना तथा तेमनी देवीओनु जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य एक पद अने बे गाथाए करीने कहे छे.

---

१ भवनपतिनी पेठे अहिं व्यन्तरना इन्द्र इन्द्राणिओनुं आयुष्य कह्युं नथी तो पण व्यन्तरेन्द्र अने इन्द्राणीओनुं आयुष्य उत्कृष्ट पल्योपम अने अर्ध पल्योपम अनुक्रमे जाणवुं. इन्द्र इन्द्राणीओनुं जघन्य आयुष्य संभवे नहि.

२ श्री ...वृत्ति विगेरे देवीओनुं आयुष्य १ पल्योपम छे ते व्यन्तर निकायनी नहि पण भवनपति निकायनी होवाथी (?) पल्योपमनु आयुष्य छे.

आयुष्य अड भाग के० पल्योपमना आठमा भागनुं जाणवुं. ए ज्योतिषी देव तथा देवीओनी जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति कही ॥ ७ ॥

हवे वैमानिक देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य दोढ गाथावडे कहे छेः—

दो साहि सत्त साहिय, दस चउदस सतर अयर जा सुक्को ॥ इक्कि महियमित्तो, जा इगतीसुवरि गेविज्जे ॥ ८ ॥ तित्तीसणुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा ठिई जिट्ठा ॥

अर्थः—पहेला सौधर्म देवलोकने विषे देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (दो) के० बे सागरोपमनुं होय छे. आ आयुष्य सौधर्म देवलोकना छेल्ला तेरमा प्रतरमां निवास करनारा देवतानुं जाणवुं. बीजा ईशान देवलोके पण तेरमा प्रतरे बे सागरोपम अने (साहि) के० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे. त्रीजा सनत्कुमार देवलोके देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (सत्त) के० सात सागरोपमनुं छेल्ले प्रतरे होय छे. ए प्रमाणे चोथा माहेन्द्र देवलोके सात सागरोपम अने (साहि) के० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे. पांचमे ब्रह्मदेवलोके देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (दस) के० दश सागरोपमनुं, छट्ठे लांतक देवलोके (चउदस) के० चउद सागरोपमनुं, अने सातमे शुक्र देवलोके देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (सतर अयर) के० सत्तर सागरोपमनुं होय छे. एम (जा सुक्को) के० यावत् छट्ठा शुक्र देवलोक सुधी जाणवुं. (इत्तो) के० त्यार पछी (इक्किमहियं) के० एक एक सागरोपमनी वृद्धि करवी ते (जा) के० ज्यां सुधी (उवरि गेविज्जे) के० उपरना नवमा

पांचसो वर्षनुं उपर होय छे. तथा ग्रहनी देवीनुं तथा ग्रहना विमानवासी देवोनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य अर्द्ध पल्योपमनुं होय छे. हवे (नक्खत्ततारार्ण) के० नक्षत्र तथा तारानुं उत्कृष्ट आयुष्य (कमेण) के० अनुक्रमे करीने कहे छे. ॥ ६ ॥ नक्षत्र अधिपति अने नक्षत्रना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य (पलियद्धं) के० अर्द्धा पल्योपमनुं होय छे. तथा तारा अधिपति अने ताराना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य (चउभागो) के० पल्योपमना चोथा भागनुं होय छे. तथा (देवीणं) के० नक्षत्रनी देवीनुं तथा नक्षत्रना विमानवासी देवोनी देवीओनुं (आउ) के० उत्कृष्ट आयुष्य (चउभागाहिग) के० पल्योपमनो चोथो भाग विशेषाधिक एटले पल्योपमनो चोथो भाग अने कांइक वधारे होय छे. तथा तारानी देवीओनुं अने ताराना विमानवासी देवोनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य (अड भागाहिग) के० पल्योपमनो आठमो भाग विशेषाधिक एटले पल्योपमनो आठमो भाग अने कांइक वधारे होय छे. एम ए ज्योतिषी देवोनां पांचे युगलनुं उत्कृष्ट आयुष्य कह्युं.

हवे ज्योतिषी देवोनुं जघन्य आयुष्य कहे छे. पांच जातना ज्योतिषीमां चंद्र अने सूर्य ए बे इंद्र छे अने बाकीना त्रण विमानना अधिपतिओ छे, तेथी तेमनुं जघन्य तथा मध्यम आयुष्य नथी, माटे तेमना विना (चउजुअले) के० चार जुगल–ते चंद्रना विमानवासी देव अने देवीओ १, सूर्यना विमानवासी देव अने देवीओ २, ग्रहना विमानवासी देव अने देवीओ ३, नक्षत्रना विमानवासी देव अने देवीओ ४, ए चारे जुगलनुं (जहन्न) के० जघन्य आयुष्य (चउ भागो) के० पल्योपमनो चोथो भाग होय अने (पंचमए) के० ताराना विमानवासी देव अने देवीओ ए पांचमा युगलनुं जघन्य

आयुष्य अड भाग के० पल्योपमना आठमा भागनुं जाणवुं. ए ज्योतिषी देव तथा देवीओनी जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति कही ॥ ७ ॥

हवे वैमानिक देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य दोढ गाथावडे कहे छेः—

दो साहि सत्त साहिय, दस चउदस सतर अयर जा सुक्को ॥ इक्किक महियमित्तो, जा इगतीसुवरि गेविज्जे ॥ ८ ॥ तित्तीसणुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा ठिई जिट्ठा ॥

अर्थः—पहेला सौधर्म देवलोकने विषे देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (दो) के० बे सागरोपमनुं होय छे. आ आयुष्य सौधर्म देवलोकना छेल्ला तेरमा प्रतरमां निवास करनारा देवतानुं जाणवुं. बीजा ईशान देवलोके पण तेरमा प्रतरे बे सागरोपम अने (साहि) के० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे. त्रीजा सनत्कुमार देवलोके देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (सत्त) के० सात सागरोपमनुं छेल्ले प्रतरे होय छे. ए प्रमाणे चोथा माहेन्द्र देवलोके सात सागरोपम अने (साहि) के० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे. पांचमे ब्रह्मदेवलोके देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (दस) के० दश सागरोपमनुं, छट्ठे लांतक देवलोके (चउदस) के० चउद सागरोपमनुं, अने सातमे शुक्र देवलोके देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (सतर अयर) के० सत्तर सागरोपमनुं होय छे. एम (जा सुक्को) के० यावत् छट्ठा शुक्र देवलोक सुधी जाणवुं. (इत्तो) के० त्यार पछी (इक्किमहियं) के० एक एक सागरोपमनी वृद्धि करवी ते (जा) के० ज्यां सुधी (उवरि गेविज्जे) के० उपरना नवमा

पांचमो वर्षनुं उपर होय छे. तथा ग्रहनी देवीनुं तथा ग्रहना विमानवासी देवोनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य अर्द्ध पल्योपमनुं होय छे. हवे (नक्खत्ततारार्ण) के० नक्षत्र तथा तारानुं उत्कृष्ट आयुष्य (कमेण) के० अनुक्रमे करीने कहे छे. ॥ ६ ॥ नक्षत्र अधिपति अने नक्षत्रना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य (पलियद्धं) के० अर्द्धा पल्योपमनुं होय छे. तथा तारा अधिपति अने ताराना विमानवासी देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य (चउभागो) के० पल्योपमना चोथाभागनुं होय छे. तथा (देवीणं) के० नक्षत्रनी देवीनुं तथा नक्षत्रना विमानवासी देवोनी देवीओनुं (आउ) के० उत्कृष्ट आयुष्य (चउभागाहिग) के० पल्योपमनो चोथो भाग विशेषाधिक एटले पल्योपमनो चोथो भाग अने कांइक वधारे होय छे. तथा तारानी देवीओनुं अने ताराना विमानवासी देवोनी देवीओनुं उत्कृष्ट आयुष्य (अड भागाहिग) के० पल्योपमनो आठमो भाग विशेषाधिक एटले पल्योपमनो आठमो भाग अने कांइक वधारे होय छे. एम ए ज्योतिषी देवोनां पांचे युगलनुं उत्कृष्ट आयुष्य कह्युं.

हवे ज्योतिषी देवोनुं जघन्य आयुष्य कहे छे. पांच जातना ज्योतिषीमां चंद्र अने सूर्य ए बे इंद्र छे अने बाकीना त्रण विमानना अधिपतिओ छे, तेथी तेमनुं जघन्य तथा मध्यम आयुष्य नथी, माटे तेमना विना (चउजुअले) के० चार जुगल—ते चंद्रना विमानवासी देव अने देवीओ १, सूर्यना विमानवासी देव अने देवीओ २, ग्रहना विमानवासी देव अने देवीओ ३, नक्षत्रना विमानवासी देव अने देवीओ ४, ए चारे जुगलनुं (जहन्न) के० जघन्य आयुष्य (चउ भागो) के० पल्योपमनो चोथो भाग होय अने (पंचमए) के० ताराना विमानवासी देव अने देवीओ ए पांचमा युगलनुं जघन्य

आयुष्य अड भाग के० पल्योपमना आठमा भागनुं जाणवुं. ए ज्योतिषी देव तथा देवीओनी जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति कही ॥ ७ ॥

हवे वैमानिक देवोनुं उत्कृष्ट आयुष्य दोढ गाथावडे कहे छेः—

दो साहि सत्त साहिय, दस चउदस सतर अयर जा सुक्को ॥ इक्कि महियमित्तो, जा इगतीसुवरि गेविज्जे ॥ ८ ॥ तित्तीसणुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा ठिई जिट्ठा ॥

अर्थः—पहेला सौधर्म देवलोकने विषे देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (दो) के० बे सागरोपमनुं होय छे. आ आयुष्य सौधर्म देवलोकना छेल्ला तेरमा प्रतरमां निवास करनारा देवतानुं जाणवुं. बीजा ईशान देवलोके पण तेरमा प्रतरे बे सागरोपम अने (साहि) के० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे. त्रीजा सनत्कुमार देवलोके देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (सत्त) के० सात सागरोपमनुं छेल्ले प्रतरे होय छे. ए प्रमाणे चोथा माहेन्द्र देवलोके सात सागरोपम अने (साहि) के० पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे. पांचमे ब्रह्मदेवलोके देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (दस) के० दश सागरोपमनुं, छट्ठे लांतक देवलोके (चउदस) के० चउद सागरोपमनुं, अने सातमे शुक्र देवलोके देवतानुं उत्कृष्ट आयुष्य (सतर अयर) के० सत्तर सागरोपमनुं होय छे. एम (जा सुक्को) के० यावत् छट्ठा शुक्र देवलोक सुधी जाणवुं. (इत्तो) के० त्यार पछी (इक्किमहियं) के० एक एक सागरोपमनी वृद्धि करवी ते (जा) के० ज्यां सुधी (उवरि गेविज्जे) के० उपरना नवमा

ग्रैवयके (इगनीस) के० एकत्रीश सागरोपमनुं आयुष्य थाय ते कही देखाडे छे. आठमा सहस्रार देवलोके अढार सागरोपम, नवमा आनत देवलोके ओगणीश सागरोपम, दशमा प्राणत देवलोके वीश सागरोपम, अग्यारमा आरण देवलोके एकवीश सागरोपम, अने बारमा अच्युत देवलोके बावीश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य होय छे. वली त्रण त्रण ग्रैवेयकना त्रण जोडलां मली नव ग्रैवेयक उपरा उपरी रहेल्या छे. तेमां नीचेना त्रणमांना नीचेना सुदर्शन ग्रैवेयके त्रेवीश, वचेना (वीजा) सुप्रतिष्ट ग्रैवेयके चोवीश अने उपरना त्रीजा मनोरम ग्रैवेयके पचीश सागरोपमनुं आयुष्य होय छे, वच्चेना त्रणमांना नीचेना एटले चोथा सर्वभद्र ग्रैवेयके छवीश, वच्चेना एटले पांचमा सुविशाल ग्रैवेयके सत्यावीश अने उपरना एटले छठ्ठा सोमनस ग्रैवेयके अठावीश सागरोपमनुं आयुष्य होय छे. तथा उपरना त्रणमानां नीचेना एटले सातमा सुमनस ग्रैवेयके ओगणत्रीश, वच्चेना एटले आठमा प्रीयंकर ग्रैवेयके त्रीश अने उपरना नवमा आदित्य ग्रैवेयके एकत्रीश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य होय छे ॥ ८ ॥ एहथी उपरना विजय वैजयंत जयंत अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध ए पांचे अनुत्तर विमानने विषे देवतानुं (तित्तिस) के० तेत्रीश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य जाणवुं. (सोहम्माइसु) के० सौधर्म देवलोकथी मांडी पांच अनुत्तर विमान सुधीना वैमानिक देवतानी (इमा) के० आ (ठिइ ठिइ) के० उत्कृष्ट स्थिति कही.

हवे वैमानिक देवोनुं जघन्य आयुष्य बे गाथाथी कहे छेः—

सोहम्मे ईसाणे, जहन्नठिई पलियमहियं च ॥ ९ ॥
दो साहि सत्त दस चउ–दस सत्तर अयराइं जा
सहस्सारे ॥ तप्परओ इक्किकं, अहियं जाणुत्तर-

चउके ॥ १० ॥ इगतीस सागराइं, सव्वट्ठे पुण जहन्नठिइ नत्थि ॥

अर्थः—(सोहम्मे) के० सौधर्म देवलोकने विषे देवताओनी (जहन्नठिई) के० जघन्य आयुष्य (पल्लियं) के० एक पल्योपमनुं होय छे. आ आयुष्य सौधर्म देवलोकना तेरे प्रतरमां निवास करनारानुं जाणवुं. (च) के० अने (ईसाणे) के० ईशान देवलोकने विषे एक पल्योपम तथा (अहियं) के० एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे ॥ ९ ॥ त्रीजा सनत्कुमार देवलोके (दो) के० बे सागरोपमनुं अने चोथा माहेन्द्रदेवलोके बे सागरोपम अने (साहि) के० कांइक अधिक होय छे. पांचमा ब्रह्म देवलोके (सत्त) के० सात सागरोपमनु, छट्ठा लांतक देवलोके दस के० दश सागरोपमनुं, सातमा शुक्र देवलोके (चउदस) के० चउद सागरोपमनुं, एम (जा सहस्सारो) के० यावत् आठमा सहस्रार देवलोकने विषे (सत्तर अयराइं) के० सत्तर सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य होय छे. (तप्परओ) के० तेथी उपर आनतादि देवलोकने विषे (इक्किक्कं अहियं) के० एक एक सागरोपम वधारता जवुं. ते (जा उत्तरचउके) के० ज्यां सुधी चोथा अनुत्तर विमानने विषे एकत्रीश सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य थाय छे. ते आ प्रमाणे—आनत देवलोके अढार सागरोपमनुं, प्राणत देवलोके ओगणीश सागरोपमनुं, आरण देवलोके वीश सागरोपमनुं, अने अच्युत देवलोके एकवीश सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य थाय छे. त्यारपछी नवे ग्रैवेयके एक एक सागरोपम वधारतां नवमे ग्रैवेयके बीश सागरोपमनु जघन्य आयुष्य होय. त्यार पछी विजय वैजयंत जयंत अने अपराजित ए चार अनुत्तर विमाने–॥ १० ॥ (इग-

ग्रैवेयके (इगतीस) के० एकत्रीश सागरोपमनुं आयुष्य थाय ते कही देखाडे छे. आठमा सहस्रार देवलोके अढार सागरोपम, नवमा आनत देवलोके ओगणीश सागरोपम, दशमा प्राणत देवलोके वीश सागरोपम, अग्यारमा आरण देवलोके एकवीश सागरोपम, अने बारमा अच्युत देवलोके बावीश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य होय छे. वली त्रण त्रण ग्रैवेयकना त्रण जोडलां मली नव ग्रैवेयक उपरा उपरी रहेला छे. तेमां नीचेना त्रणमांना नीचेना सुदर्शन ग्रैवेयके त्रेवीश, वच्चेना (बीजा) सुप्रतिष्ठ ग्रैवेयके चोवीश अने उपरना त्रीजा मनोरम ग्रैवेयके पचीश सागरोपमनुं आयुष्य होय छे, वच्चेना त्रणमांना नीचेना एटले चोथा सर्वभद्र ग्रैवेयके छवीश, वच्चेना एटले पांचमा सुविशाल ग्रैवेयके सत्यावीश अने उपरना एटले छट्ठा सोमनस ग्रैवेयके अट्ठावीश सागरोपमनुं आयुष्य होय छे. तथा उपरना त्रणमानां नीचेना एटले सातमा सुमनस ग्रैवेयके ओगणत्रीश, वच्चेना एटले आठमा प्रीयंकर ग्रैवेयके त्रीश अने उपरना नवमा आदित्य ग्रैवेयके एकत्रीश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य होय छे ॥ ८ ॥ एहवी उपरना विजय वैजयंत जयंत अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध ए पांचे अनुत्तर विमानने विषे देवतानुं (तित्तिस) के० तेत्रीश सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य जाणवुं. (सोहम्माइसु) के० सौधर्म देवलोकथी मांडी पांच अनुत्तर विमान सुधीना वैमानिक देवतानी (इमा) के० आ (जिट्ठा ठिइ) के० उत्कृष्ट स्थिति कही.

हवे वैमानिक देवोनुं जघन्य आयुष्य बे गाथायी कहे छेः—

सोहम्मे ईसाणे, जहन्नठिई पलियमहियं च ॥ ९ ॥
दो साहि सत्त दस चउ-दस सत्तर अयराइं जा
सहस्सारो ॥ तप्परओ इक्किक्कं, अहियं जाणुत्तर-

सउवे ॥ १० ॥ इगतीस सागराइं, सव्वट्ठे पुण जहन्नठिइ नत्थि ॥

अर्थः— सोहम्मे) के० सौधर्म देवलोकने विषे देवताओनी (जहन्नठिई) के० जघन्य आयुष्य (पलियं) के० एक पल्योपमनुं होय छे. आ आयुष्य सौधर्म देवलोकना तेरे प्रतरमां नियाग करनारानुं जाणवुं. (च) के० अने (ईसाणे) के० ईशान देवलोकने विषे एक पल्योपम मध्ये (अहियं) के० एक पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक होय छे ॥ ९ ॥ त्रीजा सनत्कुमार देवलोके (दो) के० बे सागरोपमनुं अने चोथा माहेन्द्रदेवलोके बे सागरोपम अने (साहि) के० कांइक अधिक होय छे. पांचमा ब्रह्म देवलोके (सत्त) के० सात सागरोपमनु, छट्ठा लांतक देवलोके दस के० दश सागरोपमनुं, सातमा शुक्र देवलोके (चउदस) के० चउद सागरोपमनुं, एम (जा सहस्सारे) के० यावत् आठमा सहस्सार देवलोकने विषे (सत्तर अयराइं) के० सत्तर सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य होय छे. (सत्तरओ) के० तेथी उपर आनतादि देवलोकने विषे (इक्किक्कं अहियं) के० एक एक सागरोपम वधारता जवुं. ते (जा चुत्तरपउवे) के० ज्यां सुधी चोथा अनुत्तर विमानने विषे एकत्रीश सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य थाय छे. ते आ प्रमाणे—आनत देवलोके अढार सागरोपमनुं, प्राणत देवलोके ओगणीश सागरोपमनुं, आरण देवलोके वीश सागरोपमनुं, अने अच्युत देवलोके एकवीश सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य थाय छे. त्यारपछी नवे ग्रैवेयके एक एक सागरोपम वधारतां नवमे ग्रैवेयके त्रीश सागरोपमनु जघन्य आयुष्य होय. त्यार पछी विजय वैजयंत जयंत अने अपराजित ए चार अनुत्तर विमाने—॥ १० ॥ (इग-

तीससागराइं) के० एकत्रीश सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य होय. (पुण) के० वळी (सवट्टे) के० सर्वार्थसिद्ध नामना पांचमा अनुत्तर विमानने विषे (जहन्नठिइ नत्थि) के० जघन्य आयुष्य नथी ॥

हवे वैमानिक देवीओ केटला देवलोक सुधी होय छे? तथा केटला प्रकारनी होय छे? ते अर्थी गाथा वडे कहे छे.

परिगहियाणियराणि य, सोहम्मीसाण देवीणं ॥११॥

अर्थः—(देवीणं) के० वैमानिक देवीनी उत्पत्ति (सोहम्मीसाण) के० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकने विषे होय छे. अने ते देवीओ बे प्रकारनी छे. (परिगहियाणियराणि य) के० एक परिग्रहिता ते परणेली[१] कुलांगना सरखी अने बीजी अपरिग्रहिता ते साधारण गणिका सरखी जाणवी. ॥ ११ ॥

हवे एक इंद्रना भवमां केटली देवीओ उत्पन्न थइ मरण पामे? ते बे गाथावडे कहे छे.

दोकोडाकोडीओ, पंचासी कोडी लक्ख इगसयरी ॥ कोडिसहस्स चउकोडि-सयाण अडवीसकोडीणं ॥ १२ ॥ सत्तावन्नं लक्खा चउदससहस्साय दुस-

१ देवोमां मनुष्यवत् परणवानी विधी नथी परन्तु अमुक वख्त परिग्रहिताज ते देवी गणानी होवाथी परिग्रहीतापणुं होय छे. प्रथम परिग्रहित थयी गयाथी पोतानी तेम बनावे उपभोग्य देवने पुनः पति तरीके अंगीकार करे तो पण परिग्रहीतापणुं गोताप नहि एवी देवलोकनी मर्यादा छे.

पचंचासी ॥ इय संखा देवीओ, चयंति इंदस्स जम्मंमि ॥ १३ ॥

अर्थः—(दो कोडाकोडीओ) के० बे क्रोडाक्रोड, (पंचासीकोडीलक्खा) के० पंचासी क्रोड लाख, (इगसयरि कोडी सहस्स) के० एकोतेर क्रोड हजार, (चउकोडि सयाण) के० चार सो क्रोड अने (अठवीस कोडीओ) के० अठावीस क्रोड ॥ १२ ॥ (सत्तावन्नं लक्खा) के० सत्तावन लाख, (चउदस सहस्सा) के० चउद हजार (य) के० अने (दुसय पंचासी) के० बसो पंचासी. २८५७१४२८५७१४२८५ (इय संखा देवीओ) के० एटली देवीओनी संख्या इंदस्स जम्मंमि के० ॥ एक इंद्रना भवमां (चयंति) के० मरण पामे छे. ॥ १३ ॥

हवे वैमानिक देवीओनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य एक गाथाथी कहे छे.

पलियं अहियं च कमा, ठिई जहन्ना इओ य उक्कोसा ॥
पलियाइं सत्तपन्नास, तहय नव पंचवन्नाय ॥ १४ ॥

अर्थः—सौधर्म देवलोकने विषे (इओ) के० ए परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनी (जहन्ना ठिई) के० जघन्य आयुष्य (पलियं) के० एक पल्योपमनुं, (च) के० ईशान देवलोकने विषे परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनुं जघन्य आयुष्य (अहियं) के० एक पल्योपमथी कांइक अधिक (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवु. तथा सौधर्म देवलोके परिग्रहीता देवीओनुं (उक्कोसा) के० उत्कृष्ट आयुष्य (पलियाइं सत्त) के० सात

तीससागराई) के० एकत्रीश सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य होय. (पुण) के० वळी (सवट्ठे) के० सर्वार्थसिद्ध नामना पांचमा अनुत्तर विमानने विषे (जहन्नठिइ नत्थि) के० जघन्य आयुष्य नथी ॥

हवे वैमानिक देवीओ केटला देवलोक सुधी होय छे? तथा केटला प्रकारनी होय छे? ते अर्थी गाथा वडे कहे छे.

परिगहियाणियराणि य, सोहम्मीसाण देवीणं ॥११॥

अर्थः—(देवीणं) के० वैमानिक देवीनी उत्पत्ति (सोहम्मीसाण) के० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकने विषे होय छे. अने ते देवीओ बे प्रकारनी छे. (परिगहियाणियराणि य) के० एक परिग्रहिता ते परणेली[१] कुलांगना सरखी अने बीजी अपरिग्रहिता ते साधारण गणिका सरखी जाणवी. ॥ ११ ॥

हवे एक इंद्रना भवमां केटली देवीओ उत्पन्न थइ मरण पामे? ते बे गाथाए कहे छे.

दोकोडाकोडीओ, पंचासी कोडी लक्ख इगसयरी ॥ कोडिसहस्स चउकोडि-सयाण अडवीसकोडीणं ॥ १२ ॥ सत्तावन्नं लक्खा चउदससहस्साय दुस-

---

१ देवोमां मनुष्यवत् परणवानो विधी नथी परन्तु अमुक कल्प परिग्रहवाली ते देवी गणाती होवाथी परिग्रहवाळी होय छे. प्रथम परिग्रह वगर गणाती बीजा अेम स्थाने उत्पत्ती देवने मुख नहि करी अंगीकार करे तो पण परिग्रहवाळी गणाय नहि करी देवलोकनी मर्यादा छे.

पपंचासी ॥ इय संखा देवीओ, चवंति इंदस्स जम्मंमि ॥ १३ ॥

अर्थः—(दो कोडाकोडीओ) के० बे क्रोडाक्रोड, (पंचासीकोडीलक्ख) के० पंचासी क्रोड लाख, (इगसयरि कोडी सहस्स) के० एकोतेर क्रोड हजार, (चउकोडि सयाण) के० चार सो क्रोड अने (अडवीस कोडीणं) के० अठावीस क्रोड ॥ १२ ॥ (सत्तावन्नं लक्खा) के० सत्तावन लाख, (चउदस सहस्सा) के० चउद हजार (य) के० अने (दुसय पंचासी) के० बसो पंचासी. २८५७१४२८५७१४२८५ (इय संखा देवीओ) के० एटली देवीओनी संख्या इंदस्स जम्मंमि के० ॥ एक इंद्रना भवमां (चवंति) के० मरण पामे छे. ॥ १३ ॥

हवे वैमानिक देवीओनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य एक गाथाथी कहे छे.

पलियं अहियं च कमा, ठिई जहन्ना इओ य उक्कोसा ॥
पलियाइं सत्तपन्नास, तहय नव पंचवन्नाय ॥ १४ ॥

अर्थः—सौधर्म देवलोकने विषे (इओ) के० ए परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनी (जहन्ना ठिइ) के० जघन्य आयुष्य (पलियं) के० एक पल्योपमनु, (च) के० ईशान देवलोकने विषे परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनुं जघन्य आयुष्य (अहियं) के० एक पल्योपमथी कांइक अधिक (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवु. तथा सौधर्म देवलोके परिग्रहीता देवीओनुं (उक्कोसा) के० उत्कृष्ट आयुष्य (पलियाइं सत्त) के० सात

तीसम्सागराइं) के० एकत्रीश सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य होय. (पुन) के० वली (सबट्ठे) के० सर्वार्थसिद्ध नामना पांचमा अनुत्तर विमानने विषे (जहन्नठिइ नत्थि) के० जघन्य आयुष्य नथी ॥

हवे वैमानिक देवीओ केटला देवलोक सुधी होय छे? तथा केटला प्रकारनी होय छे ? ते अर्थी गाथा वडे कहे छे.

परिगहियाणियराणि य, सोहम्मीसाण देवीणं ॥११॥

अर्थः—(देवीणं) के० वैमानिक देवीनी उत्पत्ति (सोहम्मीसाण) के० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकने विषे होय छे. अने ते देवीओ बे प्रकारनी छे. (परिगहियाणियराणि य) के० एक परिग्रहिता ते परणेली[1] कुलांगना सरखी अने बीजी अपरिग्रहिता ते साधारण गणिका सरखी जाणवी. ॥ ११ ॥

हवे एक इंद्रना भवमां केटली देवीओ उत्पन्न थइ मरण पामे? ते बे गाथाए कहे छे.

दोकोडाकोडीओ, पंचासी कोडी लक्ख इगसयरी ॥
कोडिसहस्स चउकोडि–सयाण अडवीसकोडीणं
॥ १२ ॥ सत्तावन्नं लक्खा चउदससहस्साय दुस-

---

१ देवोमां मनुष्यवत् परणवानी विधी नथी परन्तु अमुक वख्त परिग्रहकर्यानु जे देवी नतानी होवाथी परिग्रहवालीनु होय छे. प्रथम परिग्रह थयो नथाथी बीजा देव ज्यारे उपभोग इच्छे त्यारे पति सहित अंगीकार करे तो पण परिग्रहवालीनु कोशाय अर्थ करे देवलोकनी मर्यादा छे.

चपंचासी ॥ इय संखा देवीओ, चवंति इंदस्स जम्मंमि ॥ १३ ॥

अर्थः—(दो कोडाकोडीओ) के० बे क्रोडाक्रोड, (पंचासीकोडीलक्ख) के० पंचासी क्रोड लाख, (इगसयरि कोडी सहस्स) के० एकोतेर क्रोड हजार, (चउकोडि सयाण) के० चार सो क्रोड अने (अट्ठवीस कोडीणं) के० अठ्ठावीस क्रोड ॥ १२ ॥ (सत्तावन्नं लक्खा) के० सत्तावन लाख, (चउदस सहस्सा) के० चउद हजार (य) के० अने (दुसय पंचासी) के० बसो पंचासी. २८५७१४२८५७१४२८५ (इय संखा देवीओ) के० एटली देवीओनी संख्या इंदस्स जम्मंमि के० ॥ एक इंद्रना भवमां (चवंति के० मरण पामे छे. ॥ १३ ॥

हवे वैमानिक देवीओनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य एक गाथाथी कहे छे.

पलियं अहियं च कमा, ठिई जहन्ना इओ य उक्कोसा ॥
पलियाइं सत्तपन्नास, तहय नव पंचवन्नाय ॥ १४ ॥

अर्थः—सौधर्म देवलोकने विषे (इओ) के० ए परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनी (जहन्ना ठिइ) के० जघन्य आयुष्य (पलियं) के० एक पल्योपमनुं, (च) के० ईशान देवलोकने विषे परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनुं जघन्य आयुष्य (अहियं) के० एक पल्योपमथी कांइक अधिक (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवु. तथा सौधर्म देवलोके परिग्रहीता देवीओनुं (उक्कोसा) के० उत्कृष्ट आयुष्य (पलियाइं सत्त) के० सात

तीससागराई) के० एकत्रीश सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य होय. (पुण) के० वली (सव्वट्ठे) के० सर्वार्थसिद्ध नामना पांचमा अनुत्तर विमानने विषे (जहन्नठिइ नत्थि) के० जघन्य आयुष्य नथी ॥

हवे वैमानिक देवीओ केटला देवलोक सुधी होय छे ? तथा केटला प्रकारनी होय छे ? ते अर्धी गाथा वडे कहे छे.

परिगहियाणियराणि य, सोहम्मीसाण देवीणं ॥११॥

अर्थः—(देवीणं) के० वैमानिक देवीनी उत्पत्ति (सोहम्मीसाण) के० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकने विषे होय छे. अने ते देवीओ बे प्रकारनी छे. (परिगहियागिइयराणि य) के० एक परिग्रहिता ते परणेली[१] कुलांगना सरखी अने बीजी अपरिग्रहिता ते साधारण गणिका सरखी जाणवी. ॥ ११ ॥

हवे एक इंद्रना भवमां केटली देवीओ उत्पन्न थइ मरण पामे ? ते बे गाथावडे कहे छे.

दोकोडाकोडीओ, पंचासी कोडी लक्ख इगसयरी ॥
कोडिसहस्स चउकोडि–सयाण अडवीसकोडीणं
॥ १२ ॥ सत्तावन्नं लक्खा चउदससहस्साय दुस-

---

१ देवोमां मनुष्यवत् परणवानी विधी नथी परन्तु अमुक एक पतिदेवनीज ते देवी गणाती होवाथी पतिव्रतापणुं होय छे. प्रथम पतिदेव मरी गयाथी बीजा तेज स्थाने उपजेला देवने पुनः पति तरीके अंगीकार करे तो पण पतिव्रतापणुं लोपाय नहि एवी देवलोकनी मर्यादा छे.

यपंचासी ॥ इय संखा देवीओ, चवंति इंदस्स जम्मंमि ॥ १३ ॥

अर्थः—(दो कोडाकोडीओ) के० बे क्रोडाक्रोड, (पंचासीकोडीलक्ख) के० पंचासी क्रोड लाख, (इगसयरि कोडी सहस्स) के० एकोतेर क्रोड हजार, (चउकोडि सयाण) के० चार सो क्रोड अने (अडवीस कोडीणं) के० अठावीस क्रोड ॥ १२ ॥ (सत्तावन्नं लक्खा) के० सत्तावन लाख, (चउदस सहस्सा) के० चउद हजार (य) के० अने (दुसय पंचासी) के० बसो पंचासी. २८५७१४२८५७१४२८५ (इय संखा देवीओ) के० एटली देवीओनी संख्या इंदस्स जम्मंमि के० ॥ एक इंद्रना भवमां (चवंति) के० मरण पामे छे. ॥ १३ ॥

हवे वैमानिक देवीओनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य एक गाथाथी कहे छे.

पलियं अहियं च कमा, ठिई जहन्ना इओ य उक्कोसा ॥
पलियाइं सत्तपन्नास, तहय नव पंचवन्नाय ॥ १४ ॥

अर्थः—सौधर्म देवलोकने विषे (इओ) के० ए परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनी (जहन्ना ठिइ) के० जघन्य आयुष्य (पलियं) के० एक पल्योपमनुं, (च) के० ईशान देवलोकने विषे परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनुं जघन्य आयुष्य (अहियं) के० एक पल्योपमथी कांइक अधिक (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवु. तथा सौधर्म देवलोके परिग्रहीता देवीओनुं (उक्कोसा) के० उत्कृष्ट आयुष्य (पलियाइं सत्त) के० सात

तीसमसागराइं) के० एकत्रीश सागरोपमनुं जघन्य आयुष्य होय. (पुण) के० वळी (सव्वट्ठे) के० सर्वार्थसिद्ध नामना पांचमा अनुत्तर विमानने विषे (जहन्नठिइ नत्थि) के० जघन्य आयुष्य नथी ॥

हवे वैमानिक देवीओ केटला देवलोक सुधी होय छे? तथा केटला प्रकारनी होय छे? ते अर्धी गाथा वडे कहे छे.

परिगहियाणियराणि य, सोहम्मीसाण देवीणं ॥११॥

अर्थः—(देवीणं) के० वैमानिक देवीनी उत्पत्ति (सोहम्मीसाण) के० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकने विषे होय छे. अने ते देवीओ बे प्रकारनी छे. (परिगहियाणियराणि य) के० एक परिग्रहिता ते परणेली[1] कुलांगना सरखी अने बीजी अपरिग्रहिता ते साधारण गणिका सरखी जाणवी. ॥ ११ ॥

हवे एक इंद्रना भवमां केटली देवीओ उत्पन्न थइ मरण पामे? ते बे गाथावडे कहे छे.

दोकोडाकोडीओ, पंचासी कोडी लक्ख इगसयरी ॥
कोडिसहस्स चउकोडि–सयाण अडवीसकोडीणं
॥ १२ ॥ सत्तावन्नं लक्खा चउदससहस्साय दुस-

१ देवोमां मनुष्यवत् परणवानो विधी नथी परन्तु अमुक अमुक परिग्रहितनीज ते देवी गणानी होवाथी परिग्रहापणुं होय छे. प्रथम परिग्रह थयो गयाथी बीजो भेग कदापि उपजेला देवने पुनः पति तरीके अंगीकार करे तो पण परिग्रहापणुं लोपाय नहि एवी देवलोकनी मर्यादा छे.

यपंचासी ॥ इय संखा देवीओ, चवंति इंदस्स जम्मंमि ॥ १३ ॥

अर्थः—(दो कोडाकोडीओ) के० वे क्रोडाक्रोड, (पंचासीकोडीलक्ख) के० पंचाशी क्रोड लाख, (इगसयरि कोडी सहस्स) के० एकोतेर क्रोड हजार, (चउकोडि सयाण) के० चार सो क्रोड अने (अडवीस कोडीणं) के० अठावीस क्रोड ॥ १२ ॥ (सत्तावन्नं लक्खा) के० सत्तावन लाख, (चउद्दस सहस्सा) के० चउद हजार (य) के० अने (दुसय पंचासी) के० बसो पंचाशी. २८५७१४२८५७१४२८५ (इय संखा देवीओ) के० एटली देवीओनी संख्या इंदस्स जम्मंमि के० ॥ एक इंद्रना भवमां (चवंति) के० मरण पामे छे. ॥ १३ ॥

हवे वैमानिक देवीओनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य एक गाथाथी कहे छे.

पलियं अहियं च कमा, ठिई जहन्ना इओ य उक्कोसा ॥
पलियाइं सत्तपन्नास, तहय नव पंचवन्नाय ॥ १४ ॥

अर्थः—सौधर्म देवलोकने विषे (इओ) के० ए परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनी (जहन्ना ठिइ) के० जघन्य आयुष्य (पलियं) के० एक पल्योपमनुं, (च) के० ईशान देवलोकने विषे परिग्रहीता तथा अपरिग्रहीता देवीओनुं जघन्य आयुष्य (अहियं) के० एक पल्योपमथी कांइक अधिक (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवु. तथा सौधर्म देवलोके परिग्रहीता देवीओनुं (उक्कोसा) के० उत्कृष्ट आयुष्य (पलियाइं सत्त) के० सात

पल्योपमनी अने अपरिग्रहीता देवीओनी (पन्नास) के० पचास पल्योपमनी आयुस्थिति होय छे. (तह) के० तथा ईशान देवलोके परिग्रहीता देवीओनुं (नव) के० नव पल्योपम अने अपरिग्रहीता देवीओनुं (पंचवन्ना) के० पंचावन पल्योपमनुं आयुष्य होय छे ॥ १४ ॥

सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवताने भोग्य एवी जे पतिव्रता देवीओ छे ते परिग्रहीता देवीओ कहेवाय छे. सौधर्म देवलोके अपरिग्रहीता देवीओनां छ लाख विमान छे. ते अपरिग्रहीता देवीओ गणिका जाति छे. ते अपरिग्रहीता देवीओ त्रीजा पांचमा सातमा नवमा अने अग्यारमा देवलोकना देवोने भोग्य छे, तेथी जे देवीओ जे देवलोकने भोग्य छे ते त्यां जाय छे. तथा ईशान देवलोके अपरिग्रहीता देवीओनां चार लाख विमान छे. ए अपरिग्रहीता देवीओ चोथा छट्ठा आठमा दशमा अने बारमा देवलोकना देवने भोग्य छे, तेथी जे देवीओ जे देवलोकने भोग्य छे ते त्यां जाय छे.

हवे असुर कुमारादिक इंद्रोनी अग्रमहिषीओनी संख्या कहे छे.

पण छ चउ चउ अट्ठ य, कमेण पत्तेयमग्गमहिसीओ ॥
असुरा नागाइ वंतर-जोइस कप्प दुगिंदाणं ॥ १५ ॥

अर्थः—जे प्रधान पटराणी होय ते अग्रमहिषी कहेवाय छे. तेमां भुवनपतिनी पहेली निकायनी बे दिशामां रहेनारा (असुरा) के० असुरकुमारना चमरेन्द्र तथा बलीन्द्र नामना बे इंद्र छे. तेमने एक एकने (पण) के० पांच पांच (अग्गमहिसीओ) के० अग्रमहिषीओ होय छे. तथा (नागाइ) के० नागकुमार विगेरे बाकीना भुवनपतिनी नव निकाय छे तेना धरणेंद्र तथा भूतानंद विगेरे

अढार इंद्र छे, तेमने दरेकने (छ) के० छ छ अग्रमहिषीओ छे. तथा (वंतर) के० व्यंतर देवतानी सोल निकायना काल महाकाल विगेरे बत्रीश इंद्र छे. तेमने दरेकने (चउ) के० चार चार अग्रमहिषीओ होय छे. तथा (जोईस) के० ज्योतिषीना चंद्र तथा सूर्य ए बे इन्द्रने (चउ) के० चार अग्रमहिषीओ होय छे. तथा (कप्पदुगिंदाणं) के० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकना बे इन्द्र छे तेमने दरेकने (अट्ठ) के० आठ आठ अग्रमहिषीओ होय छे. सौधर्म तथा ईशान देवलोकथी उपरला देवलोकने विषे देवीनुं उपजवुं नथी, तेथी त्यां परिग्रहीता देवीओ पण नथी. परंतु ते देवलोकना इंद्र तथा देवोने ज्यारे विषय सेववानी इच्छा थाय त्यारे तेमने यथायोग्य सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी अपरिग्रहीता देवीओ उपभोगने अर्थे थाय छे, माटे त्यां अग्रमहिषीओनो संभव नथी ॥ १८ ॥

हवे देवलोकना प्रतरनी संख्या एक गाथावडे कहे छेः—

दुसु तेरस दुसु बारस, छ पण चउ चउ दुगे
दुगे य चउ ॥
गेविज्जणुत्तरे दस, बिसट्ठि पयरा उवरि लोए ॥१६॥

अर्थः—जेम घरने उपराउपर माळ होय छे, तेम देवलोकमां उपराउपर प्रतर होय छे. पण माळनी हेठे एक प्रतरथी बीजा प्रतरनी वच्चे टेकारूप कंई न होय. देवलोकनां दरेक प्रतरो आकाशमां निराधार होय. तेमां (दुसु) के० सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोकना मळीने (तेरस) के० तेर प्रतर वलयाकारे छे. तेमां पूर्व महाविदेह अने पश्चिम महाविदेहनी वचमां अर्द्धवलयाकार खंडथी अर्द्धो अर्द्ध खंड करवा, तेमां एक दक्षिण दिशानो खण्ड, अने

पल्योपमनी अने अपरिग्रहीता देवीओनी (पन्नास) के० पचास पल्योपमनी आयुस्थिति होय छे. (नव) के० तथा ईशान देवलोके परिग्रहीता देवीओनुं (नव) के० नव पल्योपम अने अपरिग्रहीता देवीओनुं (पंचवन्ना) के० पंचावन पल्योपमनुं आयुष्य होय छे ॥ १४ ॥

सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवताने भोग्य एवी जे पतिव्रता देवीओ छे ते परिग्रहीता देवीओ कहेवाय छे. सौधर्म देवलोके अपरिग्रहीता देवीओनां छ लाख विमान छे. ते अपरिग्रहीता देवीओ गणिका जाति छे. ते अपरिग्रहीता देवीओ त्रीजा पांचमा सातमा नवमा अने अग्यारमा देवलोकना देवोने भोग्य छे, तेथी जे देवीओ जे देवलोकने भोग्य छे ते त्यां जाय छे. तथा ईशान देवलोके अपरिग्रहीता देवीओनां चार लाख विमान छे. ए अपरिग्रहीता देवीओ चोथा छट्टा आठमा दशमा अने बारमा देवलोकना देवने भोग्य छे, तेथी जे देवीओ जे देवलोकने भोग्य छे ते त्यां जाय छे.

हवे असुर कुमारादिक इंद्रोनी अग्रमहिषीओनी संख्या कहे छे.

पण छ चउ चउ अट्ठ य, कमेण पत्तेयमग्गमहिसीओ ॥
असुरा नागाइ वंतर–जोईस कप्प दुगिंदाणं ॥ १५ ॥

अर्थः—जे प्रधान पटराणी होय ते अग्रमहिषी कहेवाय छे. तेमां भुवनपतिनी पहेली निकायनी बे दिशामां रहेनारा (असुरों) के० असुरकुमारना चमरेन्द्र तथा बलीन्द्र नामना बे इंद्र छे. तेमने एक एकने (पण) के० पांच पांच (अग्गमहिसीओ) के० अग्रमहिषीओ होय छे. तथा (नागाइ) के० नागकुमार विगेरे बाकीना भुवनपतिनी नव निकाय छे तेना धरणेंद्र तभूतया नंद्र विगेरे

पयरुक्कोसठिइओ, सव्वत्थ जहन्नओ पलियं ॥ १७ ॥

अर्थः—(मोहम्मुक्कोसहिइ) के० पहेला सौधर्म देवलोकने विषे जे उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी छे तेने (नियपयर) के० पोताना तेर प्रतर साथे (विहत्त) के० वहेंचीने पछी (इच्छ संगुणिओ) के० अहिं जे त्रीजा पांचमा अथवा सातमा प्रतरनुं आयुष्य काढवाने इच्छेतुं होय ते प्रतरनी साथे ज्यारे गुणाकार करीए त्यारे (पयर) के० ते प्रतरनी (उक्कोसठिइओ) के० उत्कृष्ट स्थिति थाय. ते आ प्रमाणे–सौधर्म देवलोकना तेरमा प्रतरे उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति बे सागरोपमनी छे, तेमांथी एक एक सागरोपमना तेर तेर भाग करीये त्यारे बे सागरोपमना तेरीया छवीश भाग थाय, तेने तेर भागे वहेंचतां एक सागरोपमना तेरीया बे भागनुं आयुष्य पहेले प्रतरे होय. एवीज रीते बीजा प्रतरनुं आयुष्य काढवुं होय तो तेने ते साथे गुणीये तो एक पल्योपमना तेरीया चार भाग आवे. तेवीज रीते त्रीजे प्रतरे छ भाग, चोथे आठ भाग, पांचमे दश भाग, छठ्ठे बार भाग, सातमे चउद भाग एटले एक सागरोपम अने उपर तेरीओ एक भाग, आठमे एक सागरोपम ने त्रण भाग, नवमे एक सागरोपम ने पांच भाग, दशमे एक सागरोपम ने सात भाग, अग्यारमे एक सागरोपम ने नव भाग, बारमे एक सागरोपम ने अग्यार भाग अने तेरमे प्रतरे बे सागरोपम संपूर्ण आयुष्य होय. एज प्रमाणे ईशान देवलोकने विषे पण प्रत्येक प्रतरमां आयुष्य काढवानो उपाय जाणवो, परन्तु एटलुं विशेष छे के–ए देवलोकना पहेले प्रतरे सागरोपमना तेरीया बे भागथी कांइक अधिक आयुष्य कहेवुं. एम दरेक प्रतरे अधिक आयुष्य कहेतां तेरमे प्रतरे बे सागरोपम साधिक आयुष्य स्थिति थाय, अने (सव्वत्थ) के० सौधर्म देवलोकना सर्वत्र एटले तेरे

बीजो उत्तर दिशानो खण्ड. तेमां दक्षिण दिशाना अर्द्धवलय खण्डना तेर प्रतर सौधर्मेन्द्रना जाणवा अने उत्तर दिशाना अर्द्धवलय खण्डना तेर प्रतर ईशानेंद्रना जाणवा.[१] तेमज (दुसु) के० सनत्कुमार अने माहेंद्रने विषे मलेला वलयाकार (बारस) के० बार प्रतर छे. अहिं पण अर्द्धोअर्द्ध करी दक्षिण दिशाना सनत्कुमारेन्द्रना अने उत्तर दिशाना माहेन्द्रना प्रतर जाणवा. ब्रह्म देवलोके (छ) के० छ प्रतर, लांतक देवलोके (पण) के० पांच प्रतर, शुक्र देवलोके (चउ) के० चार प्रतर, सहस्रारे (चउ) के० चार प्रतर, तथा आनत अने प्राणत ए (दुगे) के० बे देवलोकना मलीने (चउ) के० चार प्रतर, तथा आरण अने अच्युत ए (दुगे य) के० बे देवलोकना मलीने चार प्रतर जाणवा. ए सर्व मलीने बावन प्रतर थया. वली (गेविज्ज) के० नव ग्रैवेयके एक एक प्रतर गणतां नव प्रतर थाय, अने (अणुत्तरे) के० पांचे अनुत्तर विमाने एक प्रतर ए (दस) के० दश प्रतर थया. ते पूर्वे कहेला बावन साथे मेलवतां (उड्ढ लोए) के० उपरना लोकने विषे (बिसट्ठि पयरा) के० बासठ प्रतर थाय छे ॥ २६ ॥

हवे प्रतरे प्रतरे जूदुं जूदुं उत्कृष्ट तथा जघन्य आयुष्य जाणवा माटे प्रथम सौधर्म देवलोके उपाय कहे छे.

सोहम्मुक्कोसठ्ठिइ, नियपयर विहत्त इच्छ संगुणिओ ॥

१ सौधर्मना १३ प्रतर अने ईशानना १३ प्रतर मली २६ प्रतर न गणाय, पण १३ प्रतरज गणाय. कारण के सौधर्मने साथे दक्षिण बाजुना १३ अर्धा प्रतर अने ईशान इन्द्रने साथे उत्तर बाजुना १३ अर्धा प्रतर मली १३ आखा प्रतर थाय. ए प्रमाणे त्रीजा चोथा आठमा नवमा दशमा अने अगीआर बारमा देवलोके पण जाणवुं.

पयरुक्कोसठिइओ, सव्वत्थ जहन्नओ पलियं ॥ १७ ॥

अर्थः—(सोहम्मुक्कोसठिइ) के० पहेला सौधर्म देवलोकने विषे जे उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी छे तेने (नियपयर) के० पोताना तेर मतर साथे (विहत्त) के० वहेंचीने पछी (इच्छ संगुणिओ) के० अहिं जे बीजा पांचमा अथवा सातमा प्रतरनुं आयुष्य काढवाने इच्छेलुं होय ते प्रतरनी साथे ज्यारे गुणाकार करीए त्यारे (पयर) के० ते प्रतरनी (उक्कोसठिइओ) के० उत्कृष्ट स्थिति थाय. ते आ प्रमाणे–सौधर्म देवलोकना तेरमा प्रतरे उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति बे सागरोपमनी छे, तेमांथी एक एक सागरोपमना तेर तेर भाग करीये त्यारे बे सागरोपमना तेरीया छवीश भाग थाय, तेने तेर भागे वहेंचतां एक सागरोपमना तेरीया बे भागनुं आयुष्य पहेले प्रतरे होय. एवीज रीते बीजा प्रतरनुं आयुष्य काढवुं होय तो तेने ते साथे गुणीये तो एक पल्योपमना तेरीया चार भाग आवे. तेवीज रीते त्रीजे प्रतरे छ भाग, चोथे आठ भाग, पांचमे दश भाग, छट्ठे बार भाग, सातमे चउद भाग एटले एक सागरोपम अने उपर तेरीओ एक भाग, आठमे एक सागरोपम ने त्रण भाग, नवमे एक सागरोपम ने पांच भाग, दशमे एक सागरोपम ने सात भाग, अग्यारमे एक सागरोपम ने नव भाग, बारमे एक सागरोपम ने अग्यार भाग अने तेरमे प्रतरे बे सागरोपम संपूर्ण आयुष्य होय. एज प्रमाणे ईशान देवलोकने विषे पण प्रत्येक प्रतरमां आयुष्य काढवानो उपाय जाणवो, परन्तु एटलुं विशेष छे के–ए देवलोकना पहेले प्रतरे सागरोपमना तेरीया बे भागथी कांइक अधिक आयुष्य कहेवुं. एम दरेक प्रतरे अधिक आयुष्य कहेतां तेरमे प्रतरे बे सागरोपम साधिक आयुष्य स्थिति थाय, अने (सव्वत्थ) के० सौधर्म देवलोकना सर्वत्र एटले तेरे

प्रतरने विषे (जहन्नओ) के० जघन्यथी (पलिय) के० एक पल्योपमनो आयुष्य स्थिति होय. तथा ईशान देवलोकना तेरे प्रतरने विषे जघन्यथी एक पल्योपम अधिक आयुष्य स्थिति होय छे. ॥ १७ ॥

हवे सौधर्मेन्द्रना चार लोकपालोनुं उत्कृष्ट आयुष्य कहे छे.

सोमजमाणं सतिभाग–पलियं वरुणस्स दुन्नि देसूणा॥
वेसमणे दो पलिया, एस ट्ठिइ लोगपालाणं ॥ १८ ॥

अर्थः—पूर्व दिशानो लोकपाल (सोम) के० सोम छे अने दक्षिण दिशानो लोकपाल (जम) के० यम छे. ते बन्नेनुं उत्कृष्ट आयुष्य (सतिभागपलियं) के० एक पल्योपमना त्रीजा भाग सहित एक पल्योपमनुं छे. पश्चिम दिशानो (वरुणस्स) के० वरुण नामनो लोकपाल छे, तेनुं उत्कृष्ट आयुष्य (दुन्नि देसूणा) के० देश उणा बे पल्योपमनुं छे. तथा उत्तर दिशाना (वेसमणे) के० वैश्रमण नामना लोकपालनुं उत्कृष्ट आयुष्य (दोपलिया) के० बे पल्योपमनुं छे. ए प्रमाणे (लोगपालाणं) के० सौधर्मेन्द्रना चार लोकपालनी (एस ट्ठिइ) के० ए उत्कृष्ट आयुष्यनी स्थिति छे ॥ १८ ॥

ए [1]लोकपालोनां विमान केवडां होय छे ? ते एक गाथाथी कहे छेः–

अद्धतेरसलक्खा, विमाणमाणं च लोगपालाणं ॥
भणीयं च पंचमंगे, बुहेहिं निच्चं मुणेयव्वं ॥ १९ ॥

अर्थः—(च) के० वली (लोगपालाणं) के० ए लोकपालनां (विमाणमाणं) के० विमानोनुं प्रमाण एटले विमानोनी

१ इन्द्रना मोटा अधिकारीओ.

लंबाई तथा पहोळाई (अद्धतेरसलक्खा) के० साडा बार लाख योजननी (पंचभेग) के० भगवती सूत्रमां (भणीयं) के० कही छे. ते (मुहेहिं) के० विद्वानोए (निच्च) के० नित्य (मुणेयव्वं) के० जाणवुं. ॥ १९ ॥

हवे बारे देवलोकना इन्द्रोने रहेवानां स्थानक कहे छेः—

कप्पस्स अंतपयरे, नियकप्पवडिंसया विमाणाओ॥
इंदनिवासा तेसिं, चऊदिसि लोगपालाणं ॥ २० ॥

अर्थः—(कप्पस) के० दरेक देवलोकना (अंतपयरे) के० छेल्ला प्रतरना मध्यभागने[१] विषे (नियकप्पवडिंसया) के० पोतपोताना कल्पने नामे अवतंसक नामना (विमाणाओ) के० विमानो छे. जेमके-सौधर्म देवलोकना उपरना तेरमा प्रतरने विषे दक्षिण दिशाए मध्यभागे सुधर्मावतंसक नामनुं विमान छे. तेमज ईशान देवलोकना उपरना तेरमा प्रतरने विषे उत्तर दिशाए मध्य भागे ईशानावतंसक नामनुं विमान छे. एवी रीते सर्व देवलोकने विषे जाणवुं. परंतु नवमा तथा दशमा देवलोकनो एक इन्द्र छे त्यां चोथा प्रतरे प्राणावतंसक नामनुं विमान छे अने अग्यारमा तथा बारमा देवलोकनो एक इन्द्र छे, त्यां पण चोथा प्रतरे अच्युतावतंसक नामनुं विमान छे. ते अवतंसक नामना विमानोने विषे (इंदनिवासा) के० इंद्रोनो निवास छे अने (तेसिं) के० ते विमाननी (चऊदिसि) के० चारे दिशाने विषे (लोगपालाणं) के० ते सोम विगेरे चार लोकपालोनो निवास छे. एम सर्व देवलोकने विषे जाणवुं. ॥ २० ॥

---

१ पोतपोताना तायाना अर्धवलय प्रतरना या पूर्ण प्रतरना मध्य भागे.

हवे हनत्कुमारादिक देवलोकना प्रत्येक प्रतरोने विषे जघन्य तथा उत्कृष्ट आयुष्यनी स्थिति जाणवानो उपाय कहे छेः—

सुरकप्पठिइविसेसो, सगपयरविहत्त इच्छ संगुणिओ ॥
हिट्ठिल्लठिइसहिओ, इच्छियपयरंमि उक्कोसा ॥ २१ ॥

अर्थः—(सुरकप्प) के० देवोना कल्प एटले देवताओने निवास करवाना बार देवलोक ते कल्प कहेवाय छे अने नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमान ते कल्पातीत कहेवाय छे. ते सुरकल्पना उत्कृष्ट आयुष्यनी जे (ठिइ) के० स्थिति छे तेनो (विसेसो) के० विश्लेष करवो, अर्थात् अधिक स्थितिमांथी ओछी स्थिति काढी नाखवी. एम कर्या पछी जे वधे तेने (सगपयरविहत्त) के० पोत पोताना प्रतरे करीने वेहेंचीए. पछी (इच्छसंगुणिओ) के० ए स्थाने वांछित प्रतर साथे गुणीए. तेनो जे आंक आवे तेने (हिट्ठिल्लठिइसहिओ) के० हेठली उत्कृष्ट स्थिति साथे एकठो करीए त्यारे (इच्छियपयरंमि) के० इच्छित प्रतरने विषे (उक्कोसा) के० उत्कृष्ट स्थिति आवे.

ते वातने अहिं उदाहरण सहित समजावे छे केः—पहेला सौधर्म देवलोकना तेरमे प्रतरे उत्कृष्ट आयुष्यनी स्थिति बे सागरोपमनी छे अने सनत्कुमार देवलोकनुं उत्कृष्ट आयुष्य सात सागरोपमनुं छे, माटे सात सागरोपममांथी बे सागरोपमनी स्थिति बाद करीए त्यारे पांच सागरोपम सनत्कुमारना बाकी रहे. पछी ते पांच सागरोपमने सनत्कुमारना बार प्रतरे करीने वेहेंचीए. ते एवी रीते के-एक सागरोपमना बार बार भाग करवा, जेथी पांचे सागरोपमना बारीया साठ भाग थाय अने ते साठे भागने बारे प्रतरे वेहेंचीए त्यारे एक एक प्रतरे सागरोपमना बारीया पांच पांच

भाग भारे. पछी बीजेना सौधर्म देवलोकनी उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी छे ते तेनी साथे भेळवीए त्यारे बीजा सनत्कुमार देवलोकना पहेला प्रतरनी बे सागरोपम अने एक सागरोपमना बारीया पांच भाग उपर एटली उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति थाय. तेवीज रीते बीजा प्रतरे बे सागरोपम अने उपर बारीया दश भाग थाय. त्रीजे प्रतरे त्रण सागरोपम ने उपर बारीया त्रण भाग थाय. ए प्रमाणे प्रतरे प्रतरे बारीया पांच पांच भाग वधारवा, जेथी छेल्ला बारमा प्रतरे बराबर सात सागरोपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य थाय. ए रीते माहेन्द्रे साधिक सात सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति कहेवी. ए प्रमाणे उपरना सर्व देवलोकना प्रतरने विषे आयुष्य स्थिति काढवी. ए आयुष्यनी स्थिति यंत्रमां आपी छे तेमांथी जोइ लेवी ॥ २१ ॥ अहिं देवताना आयुष्यनुं प्रथम द्वार सम्पूर्ण थयुं. ॥

हवे देवगतिने विषे भुवन सम्बन्धी बीजुं द्वार कहे छेः—

असुरा नाग सुवन्ना, विज्जु अग्गी य दीव उदही अ ॥
दिसि पवग थणिय दसविह, भवणवई तेसु
दुदु इंदा ॥ २२ ॥

अर्थः—चार निकायना देवतामां प्रथम भुवनपति देवतानां भुवन कहेवाने माटे भुवनपतिनी दश जातिनां नाम कहे छे. १ (असुरा) के० असुर कुमार, २ (नाग) के० नाग कुमार, ३ (सुवन्ना) के० सुवर्ण कुमार ४ (विज्जु) के० विद्युत्कुमार, ५ (अग्गीय) के० अग्नि कुमार, ६ (दिव) के० द्वीप कुमार, ७ (य) के० अने (उदही) के० उदधि कुमार, ८ (दिसि) के० दिशि कुमार, ९ (पवण) के० वायु कुमार, अने १० (थणिय)

के० स्तनित कुमार. ए (दस विह भवणवइ) के० दश प्रकारना भुवनपति देवता छे. (तेसु) के० ते एक एक निकायने विषे एक दक्षिण श्रेणिनो अने एक उत्तर श्रेणिनो एम (दुदु इंदा) के० बे बे इन्द्रो छे. ए दशे निकायना देवो कुमार एटले बालकनी पेठे क्रीडा करनारा छे, माटे दरेक नामनी साथे कुमार शब्द जोड्यो छे. ॥ २२ ॥

हवे भुवनपतिनी दश निकायना वीश इन्द्रोनां नाम कहे छेः—

चमरे बली य धरणे, भूयाणंदे य वेणुदेवे य ॥
तत्तो य वेणुदाली, हरिकंते हरिस्सहे चेव ॥ २३ ॥
अग्गिसिह अग्गिमाणव, पुन्नविसिट्ठे तहेव जलकंते ॥
जलपह तह अमि अगई, मियवाहण दाहि-
णुत्तरओ ॥ २४ ॥
वेलंबे य पभंजण, घोस महाघोस एमिमन्नयरो ॥
जंबुद्दीवं छत्तं, मेरुं दंडं पहु काउं ॥ २५ ॥

अर्थः—अहिं (दाहिणुत्तरओ) के० दक्षिण श्रेणीनो इन्द्र अने उत्तर श्रेणीना इन्द्र एम दरेक निकायना बबे इन्द्रो कहेवा. तेमना अनुक्रमे करीने नाम कहे छे. पहेली असुरकुमार निकायनी दक्षिण दिशानो (चमरे) के० चमरेन्द्र (य) के० अने उत्तर दिशानो (बली) के० बलीन्द्र, बीजी नागकुमार निकायनी दक्षिण दिशानो (धरणे) के० धरणेन्द्र (य) के० अने उत्तर दिशानो (भूयाणंदे) के० भूतानंद. (य) के० वळी त्रीजी सुवर्ण कुमार निकायनी दक्षिण दिशानो (वेणुदेवे) के० वेणुदेवेन्द्र अने उत्तर

दिशानो (वेणुदाली) के० वेणुदालिन्द्र. (तत्तो) के० त्यारपछी चोथी विद्युत्कुमार निकायनी दक्षिण दिशाने वे वि(हरिकंते) के० हरिकंतेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (हरिस्सहं) के० हरिसहेन्द्र (चेव) के० निश्चयथी जाणवा. ॥ २३ ॥ पांचमी अग्नि कुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (अग्गिसिह) के० अग्निसिखेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (अग्गिमाणव) के० अग्निमानवेंद्र. छट्ठी द्वीपकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (पुन्न) के० पूर्णेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (विसिट्ठ) के० विशिष्टेन्द्र. (तहेव) के० तेमज सातमी उदधिकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (जल-कंते) के० जलकंतेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (जलपह) के० जलप्रभेन्द्र (तह) के० तेमज आठमी दिशिकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (अमिअगई) के० अमितगतीन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (अमियवाहण) के० अमितवाहनेन्द्र-॥ २४॥ (य) के० वळी नवमी वायुकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (वेलंबे) के० वेलंबेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (पभंजण) के० प्रभंजनेन्द्र. दशमी स्तनितकुमार निकायनी दक्षिण दिशाने विषे (घोस) के० घोषेंद्र अने उत्तर दिशाने विषे (महाघोस) के० महाघोषेन्द्र. (एसिं) के० ए वीश इंद्रमांथी (अन्नयरो) के० कोइ इंद्र जो पोतानी शक्ति फोरवे तो ते (जंबुद्दीवं) के० जंबु-द्वीपने (छत्तं) के० छत्राकार करवाने तथा (मेरुं) के० मेरुप-र्वतने (दंडं काउं) के० दंड करवाने (पहु) के० समर्थ थाय छे. अर्थात् ते इन्द्र पृथ्वीनुं छत्र करी अने मेरुपर्वतनो दंड करी हाथो हाथे धारण करे तो पण तेना शरीरने कांई श्रयाम जणाय नहीं. छतां कोइ वखत एवी शक्ति फोरवी जंबुद्वीपने छत्राकार कर्युं नथी, करता नथी ने करशे पण नहिं.

हवे असुर कुमारादिक निकायोनी दक्षिण श्रेणीनी भुवन संख्या कहे छेः—

चउतीसा चउचत्ता, अठ्ठतीसाय चत्त पंचण्हं ॥
पन्ना चत्ता कमसो, लक्खा भवणाण दाहिणओ ॥२५॥

अर्थः—असुर कुमारनां (चउतीसा) के० चोत्रीश लाख, नाग कुमारनां (चउचत्ता) के० चुमालीश लाख, सुवर्ण कुमारनां (अट्ठतीसाय) के० आडत्रीश लाख, वली विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार, उदधिकुमार अने दिशिकुमार ए (पंचण्हं) के० पांचे निकायनां (चत्त) के० चालीश चालीश लाख भुवन छे. तथा पवनकुमारनां (पन्ना) के० पचास लाख अने स्तनितकुमारनां (चत्ता) के० चालीश लाख भुवन छे, ए (कमसो) के० अनुक्रमे करीने (दाहिणओ) के० दक्षिण श्रेणीना (भवणाण) के० भुवनोना (लक्खा) के० लाखोनी संख्या कही. ॥ २६ ॥

हवे उत्तर श्रेणीना भुवननी संख्या कहे छेः—

चउ चउ लक्ख विहूणा, तावइया चेव उत्तर दिसाए ॥
सव्वेवि सत्त कोडी, बावत्तरि हुंति लक्खा य ॥२७॥

अर्थः—जे निकायनी दक्षिण श्रेणीए जे भुवन संख्या कही छे. तेमां एक एकमांथी (चउ चउ लक्ख विहूणा) के० चार चार लाख ओछां कर्यां थकां शेष जे जे निकायनां जेटलां जेटलां भुवन रहे (तावइया) के० तेटलां तेटलां (उत्तर दिसाए) के० उत्तर दिशानी निकायने विषे (चेव) के० निश्चे होय छे. ते आ

ममाणे अगुरकुमारनां त्रीश लाख, नागकुमारनां चाळीश लाख, सुवर्णकुमारनां चोत्रीश लाख, पछी विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्विपकुमार उदधिकुमार अने दिशिकुमार ए पांचेनां छत्रीस छत्रीस लाख, पवनकुमारनां छैंतालीस लाख, अने स्तनितकुमारनां छत्रीसलाख भुवन उत्तर दिशाए छे, (सव्वेवि) के० ए दक्षिण तथा उत्तरे बन्ने श्रेणिना मळी ने (सत्तकोडी) के० सात क्रोड यके० अने (बावत्तरी लक्खा) के० बहोंतेर लाख भुवन हुंति के० होय छे ॥ २७ ॥

हवे एज दश निकायनी दक्षिण तथा उत्तर श्रेणीनी जुदी जुदी भुवन संख्या कहे छेः—

चत्तारिय कोडीओ, लक्खा छच्चेव दाहिणे भवणा,
तिन्नेव य कोडीओ, लक्खा छावट्टी उत्तरओ ॥२८॥

अर्थः—(चत्तारि कोडीओ) के० चार क्रोड, यके० अने (छ लक्खा) के० छ लाख, (दाहिणे) के० दक्षिण दिशामां, (भवण) के० भुवनो, (चेव) के० निश्चे थाय छे, तथा (तिन्नेव कोडीओ) के० त्रण क्रोड, यके० (छावट्टी लक्खा) के० छासठलाख भुवनो, (उत्तरओ) के० उत्तर दिशा तरफ होय छे ॥ २८ ॥

हवे ए पूर्वोक्त भुवन क्यां छे? ते स्थानक कहे छेः—

रयणाए हिठुवरिं, जोयण सहस्सं विमुत्तु ते भवणा ॥
जंबुद्दीप समा तह, संखमसंखिज्जवित्थारा ॥ २९ ॥

अर्थः—रयणाए के० रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख अने एंसीहजार योजन जाडपणे छे, तेमांथी, (हिठुवरि) के० हेठे ने उपर, (जोयण सहस्सं विमुत्तु) के० एक एक हजार योजन

हवे असुर कुमारादिक निकायोनी दक्षिण श्रेणीनी भुवन संख्या कहे छेः—

चउतीसा चउचत्ता, अट्टत्तीसाय चत्त पंचण्हं ॥
पन्ना चत्ता कमसो, लक्खा भवणाण दाहिणओ ॥२५॥

अर्थः—असुर कुमारनां (चउतीसा) के० चोत्रीस लाख, नाग कुमारनां (चउचत्ता) के० चुमालीस लाख, सुवर्ण कुमारनां (अट्टतीसाय) के० आडत्रीस लाख, वळी विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार, उदधिकुमार अने दिशिकुमार ए (पंचण्हं) के० पांचे निकायनां (चत्त) के० चालीस चालीस लाख भुवन छे. तथा पवनकुमारनां (पन्ना) के० पचास लाख अने स्तनितकुमारनां (चत्ता) के० चालीस लाख भुवन छे, ए (कमसो) के० अनुक्रमे करीने (दाहिणओ) के० दक्षिण श्रेणीना (भवणाण) के० भुवनोना (लक्खा) के० लाखोनी संख्या कही. ॥ २६ ॥

हवे उत्तर श्रेणीना भुवननी संख्या कहे छेः—

चउ चउ लक्ख विहूणा, तावइया चेव उत्तर दिसाए ॥
सव्वेवि सत्त कोडी, बावत्तरि हुंति लक्खा य ॥२७॥

अर्थः—दशे निकायनी दक्षिण श्रेणीए जे भुवन संख्या कही छे. तेमां एक एकमांथी (चउ चउ लक्ख विहूणा) के० चार चार लाख ओछां कर्यां थकां शेष जे जे निकायनां जेटलां जेटलां भुवन रहे (तावइया) के० तेटलां तेटलां (उत्तर दिसाए) के० उत्तर दिशानी निकायने विषे (चेव) के० निश्चे होय छे. ते आ

ममाणे असुरकुमारनां त्रीश लाख, नागकुमारनां चाळीश लाख, सुवर्णकुमारनां चोत्रीश लाख, पछी वियत्कुमार अग्निकुमार द्विपकुमार उदधिकुमार अने दिशिकुमार ए पांचेनां छत्रीस छत्रीस लाख, पवनकुमारनां छैंताळीस लाख, अने स्तनितकुमारनां छत्रीसलाख भुवन उत्तर दिशाए छे, (सव्वेवि) के० ए दक्षिण तथा उत्तर वंने श्रेणिना मळी ने (सत्तकोडी) के० सात क्रोड यके० अने (बावत्तरी लक्खा) के० बहोंतेर लाख भुवन हुंति के० होय छे ॥ २७ ॥

हवे एज दश निकायनी दक्षिण तथा उत्तर श्रेणीनी जुदी जुदी भुवन संख्या कहे छेः—

चत्तारिय कोडीओ, लक्खा छच्चेव दाहिणे भवणा,
तिन्नेव य कोडीओ, लक्खा छावट्ठी उत्तरओ ॥२८॥

अर्थः—(चत्तारि कोडीओ) के० चार क्रोड, यके० अने (छ लक्खा) के० छ लाख, (दाहिणे) के० दक्षिण दिशामां, (भवण) के० भुवनो, (चेव) के० निश्चे थाय छे, तथा (तिन्नेव कोडीओ) के० त्रण क्रोड, यके० (छावट्ठी लक्खा) के० छासठलाख भुवनो, (उत्तरओ) के० उत्तर दिशा तरफ होय छे ॥ २८ ॥

हवे ए पूर्वोक्त भुवन क्यां छे ? ते स्थानक कहे छेः—

रयणाए हिठुवरिं, जोयण सहस्सं विमुत्त ते भवणा ॥
जंबुद्दीप समा तह, संखमसंखिज्जवित्थारा ॥ २९ ॥

अर्थः—रयणाए के० रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख अने ऐंसीहजार योजन जाडपणे छे, तेमांथी, (हिठुवरि) के० हेठे ने उपर, (जोयण सहस्सं विमुत्त) के० एक एक हजार योजन

हवे असुर कुमारादिक निकायोनी दक्षिण श्रेणीनी भुवन संख्या कहे छेः—

चउतीसा चउचत्ता, अट्ठत्तीसाय चत्त पंचण्हं ॥
पन्ना चत्ता कमसो, लक्खा भवणाण दाहिणओ ॥२५॥

अर्थः—असुर कुमारनां (चउतीसा) के० चोत्रीश लाख, नाग कुमारनां (चउचत्ता) के० चुमालीश लाख, सुवर्ण कुमारनां (अट्ठत्तीसाय) के० आडत्रीश लाख, वली विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार, उदधिकुमार अने दिग्कुमार ए (पंचण्हं) के० पांचे निकायनां (चत्त) के० चालीश चालीश लाख भुवन छे. तथा पवनकुमारनां (पन्ना) के० पचास लाख अने स्तनितकुमारनां (चत्ता) के० चालीश लाख भुवन छे, ए (कमसो) के० अनुक्रमे करीने (दाहिणओ) के० दक्षिण श्रेणीना (भवणाण) के० भुवनोना (लक्खा) के० लाखोनी संख्या कही. ॥ २६ ॥

हवे उत्तर श्रेणीना भुवननी संख्या कहे छेः—

चउ चउ लक्ख विहूणा, तावइया चेव उत्तर दिसाए ॥
सव्वेवि सत्त कोडी, बावत्तरि हुंति लक्खा य ॥२७॥

अर्थः—दशे निकायनी दक्षिण श्रेणीए जे भुवन संख्या कही छे. तेमां एक एकमांथी (चउ चउ लक्ख विहूणा) के० चार चार लाख ओछां कर्यां थकां शेष जे जे निकायनां जेटलां जेटलां भुवन रहे (तावइया) के० तेटलां तेटलां (उत्तर दिसाए) के० उत्तर दिशानी निकायने विषे (चेव) के० निश्चे होय छे. ते आ

प्रमाणे असुरकुमारनां चोसट लाख, नागकुमारनां चालीश लाख, सुवर्णकुमारनां चोत्रीश लाख, पछी विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्विपकुमार उदधिकुमार अने दिशिकुमार ए पांचेनां छत्रीस छत्रीस लाख, पवनकुमारनां छेंतालीस लाख, अने स्तनितकुमारनां छत्रीसलाख भुवन उत्तर दिशाए छे, (सव्वेवि) के० ए दक्षिण तथा उत्तर बंने श्रेणिना मळी ने (सत्तकोडी) के० सात क्रोड यके० अने (बावत्तरी लक्खा) के० बहोंतेर लाख भुवन हुंति के० होय छे ॥ २७ ॥

हवे एज दश निकायनी दक्षिण तथा उत्तर श्रेणीनी जुदी जुदी भुवन संख्या कहे छेः—

चत्तारिय कोडीओ, लक्खा छच्चेव दाहिणे भवणा,
तिन्नेव य कोडीओ, लक्खा छावट्ठी उत्तरओ ॥२८॥

अर्थः—(चत्तारि कोडीओ) के० चार क्रोड, यके० अने (छ लक्खा) के० छ लाख, (दाहिणे) के० दक्षिण दिशामां, (भवण) के० भुवनो, (चेव) के० निश्चे थाय छे, तथा (तिन्नेव कोडीओ) के० त्रण क्रोड, यके० (छावट्ठी लक्खा) के० छासठलाख भुवनो, (उत्तरओ) के० उत्तर दिशा तरफ होय छे ॥ २८ ॥

हवे ए पूर्वोक्त भुवन क्यां छे? ते स्थानक कहे छेः—

रयणाए हिठुवरिं, जोयण सहस्सं विमुत्तु ते भवणा ॥
जंबुद्दीप समा तह, संखमसंखिज्जवित्थारा ॥ २९ ॥

अर्थः—रयणाए के० रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख अने एंसीहजार योजन जाडपणे छे, तेमांथी, (हिठुवरि) के० हेठे ने उपर, (जोयण सहस्सं विमुत्तु) के० एक एक हजार योजन

मुकीने वचमांना एक लाख अट्टोतेर हजार योजनमांहे, ते के० ते भुवनपति देवोना, (भवणा) के० भुवनों छे. तेमां नाना भुवनों (जंबुद्दीव समा) के० जंबुद्विप सरखा छे. (तह) के० तथा मध्यम भुवनो ते, (संख) के० संख्यात कोटी योजन प्रमाण छे, तथा उत्कृष्टते (असंखिज्ज) के० असंख्याता कोटा कोटी योजन प्रमाण, (वित्थारा) के० विस्तारवंत होय छे ॥ २९ ॥

हवे घणा देवोमां पोतपोतानी निकाय जाणी सकाय माटे असुरादिक दश निकायना देवोनां मुकुटादिक आभूषणने विषे चिन्हो होय छे ते कहे छेः—

चूडामणि फणि गरुडे, वज्जे तह कलस सीह अस्सेय, ॥
गय मगर वद्धमाणे असुराइगं मुणसु चिण्हं ॥ ३० ॥

अर्थः—असुरकुमारना मुकुटने विषे, (चूडामणि) के० चूडामणिनुं चिन्ह छे. नागकुमारना आभूषणने विषे, (फणि] के० सर्पनुं चिन्ह छे सुवर्णकुमारना आभूषणने विषे, (गरुड) के० गरुडनुं चिन्ह छे. विद्युत्कुमारना मुकुटमां, (वज्जे) के० वज्रनुं चिन्ह छे. (तह) के० तथा अग्निकुमारना आभूषणमां, (कलस) के० कलसनुं चिन्ह छे द्विपकुमारना आभूषणमां (सीह) के० सिंहनुं चिन्ह छे, उदधिकुमारना मुकुटने विषे के० (अस्सेय०) अश्वनुं चिन्ह छे, दिशिकुमारनां मुकुट विषे, (गय) के० हाथीनुं चिन्ह छे, वायुकुमारना आभूषणने विषे, (मगर) के० मगरनुं चिन्ह छे स्तनितकुमारना आभूषणने विषे, (वद्धमाणे०) के०सराव संपुटनुं चिन्ह छे. ए प्रमाणे (असुराईणं) के० असुरादिक दश भुवन पतिनां (चिण्हं) के० चिन्ह (मुणसु) के० जाणवा. ॥ ३० ॥

हवे एज असुरादिक दश प्रकारना भुवनपति देवोना शरीरनो वर्ण कहे छेः—

असुरा काला नागु-दहि पंडुरा तह सुवन्न दिसि थणिया–
कणगाभ विज्जु सिहि दीव, अरुणा वाउ पियंगु
निभा ॥ ३१ ॥

अर्थः—असुरकाला के० असुरकुमारनां शरीर काला वर्ण होय छे, (नागुदहि) के० नागकुमार अने उदधिकुमार ए बेनां शरीर, (पंडुरा) के० गौर वर्ण छे तह के० तेमज, सुवन्न के० सुवर्णकुमार (दिसि) के० दिशिकुमार तथा (थणिया) के० स्तनितकुमार ए त्रणनां शरीर (कणगाभ) के० सुवर्णकांति समान होय छे. (विज्जु) के० विद्युत्कुमार (सिहि) के० अग्निकुमार (दीव) के० द्वीपकुमार ए त्रणनां शरीर (अरुणा) के० राता वर्ण छे तथा (वाउ) के० वायुकुमारना शरीरनी कांति (पियंगु) निभा के० प्रियंगु वृक्षना वर्ण समान होय छे नील होय छे. ॥ ३१ ॥

हवे असुरकुमारादिकनां वस्त्रोनो वर्ण कहे छे:—

असुराण वत्थरत्ता, नागोदहि विज्जु दीव सिहि नीला ॥
दिसि थणिय सुवन्नाणं, धवला वाउण संझरुइ ॥ ३२ ॥

अर्थः—असुराण के० असुरकुमारनां वत्थ के० वस्त्र, (रत्ता) के० रातां होय छे, (नागोदहि) के० नागकुमार अने उदधिकुमार तथा (विज्जु) के० विद्युत्कुमार (दीव) के० द्वीपकुमार (सिहि) के० अग्निकुमार ए पांचेनां वस्त्रो नीला के० नील वर्ण होय छे. दिसि के० दिशिकुमार (थणिय) के० स्तनितकुमार अने (सुवन्नाणं) के० सुवर्णकुमार ए त्रणेनां वस्त्रो (धवला) के० उज्ज्वल होय छे. तथा (वाउण) के० वायुकुमारनां वस्त्र (संझरुइ) के० संध्याना रंग सरखां छे.

हवे भुवनपति विगेरे दशे निकायना इंद्रोना सामानिक देवोनी तथा आत्मरक्षक देवोनी संख्या कहे छे:—

मुकीने वचमांना एक लाख अट्ठोतेर हजार योजनमांहे, ते के० ते भुवनपति देवोना, (भवणा) के० भुवनो छे. तेमां नाना भुवनो (जंबूद्वीव समा) के० जंबूद्विप सरखा छे. (तह) के० तथा मध्यम भुवनो ते, (संख) के० संख्यात कोडी योजन प्रमाण छे, तथा उत्कृष्टाने (असंखिज्ज) के० असंख्याता कोडा कोडी योजन प्रमाण, (वित्थारा) के० विस्तारवंत होय छे ॥ २९ ॥

हवे घणा देवोमां पोतपोतानी निकाय जाणी शकाय माटे असुरादिक दस निकायना देवोनां मुकुटादिक आभूषणने विषे चिन्हो होय छे ते कहे छेः—

चूडामणि फणि गरुडे, वज्जे तह कलस सीह अस्सेय, ॥
गय मगर वद्धमाणे असुराइगं मुणसु चिण्हं ॥ ३० ॥

अर्थः—असुरकुमारना मुकुटने विषे, (चूडामणि) के० चूडामणिनुं चिन्ह छे. नागकुमारना आभूषणने विषे, (फणि] के० सर्पनुं चिन्ह छे सुवर्णकुमारना आभूषणने विषे, (गरुड) के० गरुडनुं चिन्ह छे. विद्युत्कुमारना मुकुटमां, (वज्जे) के० वज्रनुं चिन्ह छे. (तह) के० तथा अग्निकुमारना आभूषणमां, (कलस) के० कलसनुं चिन्ह छे द्विपकुमारना आभूषणमां (सीह) के० सिंहनुं चिन्ह छे, उदधिकुमारना मुकुटने विषे के० (अस्सेय०) अश्वनुं चिन्ह छे, दिशिकुमारना मुकुट विषे, (गय) के० हाथीनुं चिन्ह छे, वायुकुमारना आभूषणने विषे, (मगर) के० मगरनु चिन्ह छे स्तनितकुमारना आभूषणने विषे, (वद्धमाणे०) के०सगव संपुटनुं चिन्ह छे. ए प्रमाणे (असुराइगं) के० असुरादिक दस भुवन पतिनां (चिण्हं) के० चिन्ह (मुणसु) के० जाणवा. ॥ ३० ॥

हवे एज असुरादिक दस प्रकारना भुवनपति देवोना शरीरनो वर्ण कहे छेः—

असुरा काला नागु. दहि पंडुरा तह सुवन्न दिसि थणिया-
कणगाभ विज्जु सिहि दीव, अरुणा वाउ पियंगु
निभा ॥ ३१ ॥

अर्थः—असुराकाला के० असुरकुमारनां शरीर काला वर्ण होय छे, (नागुदहि) के० नागकुमार अने उदधिकुमार ए बेनां शरीर, (पंडुरा) के० गौर वर्ण छे तह के० तेमज, सुवन्न के० सुवर्णकुमार (दिसि) के० दिशिकुमार तथा (थणिया) के० स्तनितकुमार ए त्रणनां शरीर (कणगाभ) के० सुवर्णकांति समान होय छे. (विज्जु) के० विद्युत्कुमार (सिहि) के० अग्निकुमार (दीव) के० द्वीपकुमार ए त्रणनां शरीर(अरुणा) के० राता वर्ण छे तथा (वाउ) के० वायुकुमारना शरीरनी कांति (पियंगु) निभा के० प्रियंगु वृक्षना वर्ण समान होय छे नील होय छे. ॥ ३१ ।

हवे असुरकुमारादिकनां वस्त्रोनो वर्ण कहे छेः—

असुराण वत्थरत्ता, नागोदहि विज्जु दीव सिहि नीला ॥
दिसि थणिय सुवन्नाणं, धवला वाउ ग संझरुइ ॥ ३२ ॥

अर्थः—असुराण के० असुरकुमारनां वत्थ के० वस्त्र, (रत्ता) के० रातां होय छे, (नागोदहि) के० नागकुमार अने उदधिकुमार तथा (विज्जु) के० विद्युत्कुमार(दीव) के० द्विपकुमार (सिहि) के० अग्निकुमार ए पांचेनां वस्त्रो निला के० नील वर्ण होय छे, दिसि के० दिशिकुमार (थणिय) के० स्तनितकुमार अने(सुवन्नाणं) के०(सुवर्ण)कुमार ए त्रणेनां वस्त्रो (धवला) के० उज्वल होय छे. तथा (वाउण) के० वायुकुमारनां वस्त्र (संझरुइ) के० संध्याना रंग सरखा छे.

हवे भुवनपति विगेरे दशे निकायना इंद्रोना सामानिक देवोनी तथा आत्मरक्षक देवोनी संख्या कहे छेः—

**चउसट्ठि सट्ठि असुरे, छच्चसहस्सा धरणाइं माइणं ॥
सामाणिया इमेसिं, चउग्गुणा आय रक्खाय ॥ ३३ ॥**

अर्थः—असुरे के असुरकुमार निकायना बे इन्द्र छे तेमां पहेला चमरेन्द्रने (चउसट्ठि)के० चोसठ हजार अने बलिन्द्रने(सट्ठि)के० साठ हजार तथा (धरणाईणं) के० धरणेन्द्र विगेरे अढारहजार इन्द्रने (छच्च सहस्साइं) के० छ हजार (सामाणिया) के० सामानिक देवता छे, (य) के० अने (इमेसिं) के० ए सामानिक देवोथी (चउग्गुणा) के० चार गुणा (आयरक्खा) के० आत्मरक्षक देवो होय छे. ॥ ३३ ॥ एम भुवनपतिनी दशे निकायनां नाम, इन्द्र, भुवनसंख्या, चिन्ह, वर्ण, वस्त्र, सामानिक देव अने आत्मरक्षक विगेरेनी वक्तव्यता कही.

हवे व्यंतरदेवोनी वक्तव्यता कहेता थका प्रथम व्यंतर देवोनां भुवन कहे छेः—

**रयणाए पढम जोयण–सहसे हिट्ठुवरि सय सय विहूणे॥
वंतरियाणं रम्मा, भोमा नगरा असंखिज्जा ॥ ३४ ॥**

अर्थः—(रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना पिंडना (पढम) के० प्रथम उपरना जोयण (सहसे) के० जे एक हजार योजन मूक्या छे, तेमांथी (हिट्ठुवरि सय सय विहूणे) के० हेठे अने उपर सो सो योजन मूकीए. वचमां आठसो योजन रह्या, तेमां (वंतरियाणं) के० व्यंतर देवोनां (भोमा) के० पृथ्वीकाय संबंधी (रम्मा) के० रमणिक (असंखिज्जा) के० असंख्याता (नगरा) के० नगरो छे. ॥ ३४ ॥

हवे व्यंतर देवोना घरना आकार कहे छेः—

बाहिं वट्टा अंतो, चउरंस अहो अ कण्णियायारा ॥
भवणवईणं तह वंतराण, इंद भवणाओ नायव्वा ॥३५॥

अर्थः—व्यंतरदेवोनां घरो (बाहिं) के० बाहेरना भागे (वट्टा) के० वृत्त एटले गोळ आकारवाळा छे, अने (अंतो) के० मांहेला भागे (चउरंस) के० चोखूणा छे. (अ) के० वळी (अहो) के० अधोभागे एटले नीचेना भागे (कण्णियायारा) के० कमळनी कर्णिकाना आकारे छे. ए उपर कहेली आकृतीवाळा (भवणवईणं) के० भवनपतिनां (तह) के० तथा (वंतराण) के० व्यंतरदेवोना (इंदभवणाओ) के० इन्द्रना भुवनो (नायव्वा) के० जाणवा. ॥ ३५ ॥

तहिं देवा वंतरिया, वरतरुणीगीयवाइयरवेणं ॥
निच्चं सुहिया पमुइया, गयंपि कालं न याणंति ॥३६॥

अर्थः—(तहिं) के० ते भुवनोमां (देवा वंतरिया) के० व्यंतरिक देवताओ (वरतरुणी) के० अति सुन्दर देवांगनाओना (गीयवाइयर वेणं) के० मधुर गीत अने वजींत्रशब्द नाटक सहित मृदंगादिक वाजिंत्रना शब्दथी (निच्चं) के० नित्य (सुहिया) के० सुखी छता अने (पमुइया) के० हर्षवंत छता (गयंपि कालं) के० गयेला काळने (न याणंति) के० नथी जाणता ॥ ३६ ॥

हवे ते व्यंतर देवोनां नगरोनुं प्रमाण तथा निकायनां नाम कहे छेः—

ते जंबुदीव भारह-विदेह सम गुरु जहन्न मज्झिमगा ॥
वंतर पुण अट्ठविहा, पिसाय भूया तहा जक्खा ॥३७॥

अति वेगवाला, सुन्दर आकृतिवाला, महोटा शरीरवाला, पुष्ट विस्तारवंत स्कंध ग्रीवावाला अने विचित्र आभूषणोने धारण करनारा एवा भुजंग, भोगशालिन, महाकाय, अतिकाय, स्कंध शालिन, मनोरम, महावेग, महेश्वक्ष, मेरुकांत अने भास्वंत ए दश प्रकारना महोरग देवो छे. ॥ ७ ॥

सुन्दर आकृतिवाला, श्रेष्ठ सुखवाला, प्रीय शब्दवाला, मस्तकने विषे मुकुट अने कंठने विषे हारने धारण करनार एवा हाहा, हूहू, तुंबरु, नारद, ऋषिवादक, भूतवादक, कादंब, महाकादंब, रैवत विश्वावसु, गीतरति अने गीतयश ए बार प्रकारना गंधर्व देवो छे, ए व्यंतरदेवोना प्रतिभेद कह्या.

हवे व्यंतर देवोना शोल इन्द्रोनां नाम बे गाथावडे कहे छेः—

काले य महाकाले, सुरूव पडिरूव पुन्नभद्दे य ॥
तह चेव माणिभद्दे, भीमे य तहा महाभीमे ॥ ३९ ॥
किंनर किंपुरिसे सप्पु–रिसा महपुरिस तहय अइकाए ॥
महकाए गीयरई, गीयजसे दुन्नि दुन्नि कमा ॥ ४० ॥

अर्थः—पिशाच निकायमां दक्षिण दिशाए (काले) के० कालेंद्र अने (य) के० वली उत्तर दिशाए (महाकाले) के० महाकालेन्द्र, भूतनिकायमां दक्षिण दिशाए (सुरूव) के० स्वरूपेंद्र अने उत्तर दिशाए (पडिरूव) के० प्रतिरूपेन्द्र, (य) के० अने यक्षनिकायमां दक्षिण दिशाए (पुन्नभद्दे) के० पूर्णभद्र अने उत्तर दिशाए (तह चेव) के० तेवीज रीते निश्चे (माणिभद्दे) के० [illegible], य के० वली तहा के० (तथा) राक्षस निकायमां दक्षिण [illegible] (भीमे) के० भीमेन्द्र अने उत्तर दिशाए (महाभीमे)

के० महाभीमेन्द्र. ॥ ३९ ॥ किंनर निकायमां दक्षिण दिशाए (किंनर) के० किंनरेन्द्र अने उत्तर दिशाए (किंपुरिसे) के० किंपुरुषेन्द्र, तथा किंपुरिष निकायमां दक्षिण दिशाए (सप्पुरिसा) के० सत्पुरुषेन्द्र अने उत्तर दिशाए (महपुरिस) के० महापुरुषेन्द्र, (तहय) के० तेमज महोरग निकायमां दक्षिण दिशाने विषे (अइकाए) के० अतिकायेन्द्र अने उत्तर दिशाने विषे (महकाए) के० महाकायेन्द्र, गंधर्व निकायमां दक्षिण दिशाने विषे (गीयरई) के० गीतरतींद्र अने उत्तर दिशाने विषे (गीयजसे) के० गीत-यशेंद्र. ए प्रमाणे आठ निकायमां (कमा) के० अनुक्रमे करीने (दुन्नि दुन्नि) के० बबे इंद्रो होय छे. ॥ ४० ॥

हवे ए पिशाचादिक आठ निकायना व्यंतर देवोनी ध्वजामां चिन्ह होय ते कहे छेः—

चिंधं कलंब सुलसे, वड खट्टंगे असोग चंपयए ॥
नागे तुंबरु अ झए, खट्टंगविवज्जिया रुक्खा ॥ ४१ ॥

अर्थः—पिशाचने (कलंब) के० कदंब वृक्षनुं चिन्ह, भूतने (सुलसे) के० सुलस वृक्षनुं चिन्ह, यक्षने (वड) के० वडवृक्षनुं चिन्ह राक्षसने (खट्टंगे) के० तापसना पात्रनुं चिन्ह, किंनरने (असोग) के० अशोक वृक्षनुं चिन्ह, किंपुरुषने (चंपयए) के० चंपक वृक्षनुं चिन्ह, महोरगने (नागे) के० नाग वृक्षनुं चिन्ह, गंधर्वने (तुंबरु अ) के० वळी तुंबराना वृक्षनुं चिन्ह होय छे. ए सर्वे (चिंधं) के० चिन्ह (झए) के० ध्वजामां होय छे. तेमां (खट्टंगविवज्जिया) के० खट्टंगने वर्जीने बाकीना सर्व चिन्हो रुक्खा के० वृक्षो छे. अने खट्वांग ए तापसनुं उपकरण छे. ॥४१॥

हवे ए व्यंतर देवोना शरीरनो वर्ण कहे छेः—

जक्ख पिसाय महोरग, गंधव्वा साम किंनरा नीला ॥
रक्खस किंपुरिसा वि य, धवला भूया पुणो काला ॥४२॥

अर्थः—(जक्ख) के० यक्ष, (पिसाय) के० पिशाच, (महोरग) के० महोरग, (गंधव्वा) के० गंधर्व ए चारनो वर्ण (साम) के० श्याम एटले किंचित् कृष्णवर्ण जाणवो. (किंनरा) के० किंनरो (नीला) के० श्याम पण किंचित् नील वर्णवाला जाणवा. (रक्खस) के० राक्षस अने (किंपुरिसाविय) के० किंपुरुष पण (धवला) के० उज्वल वर्णवाला होय छे. (पुणो) के० वली (भूया) के० भूतदेवो (काला) के० कृष्णवर्णवाला होय छे. ॥ ४२ ॥

हवे बीजा आठ जातिना व्यंतर देवो छे, ते कहे छेः—

रयणाए जोयणसए, हिट्ठुवरि दस दस ऋड़ए चेव ॥
वंतरियाण निकाया, भवणासंखा सुए भणिया ॥ ४३ ॥

अर्थः—(रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना पिंड माहेला (जोयणसए) के० पहेला सो योजनमां (हिठुवरि) के० नीचे अने उपर (दस दस ठाइए चेव) के० निश्चय दश दश योजन मूकीये. बाकीना एंशी योजनमां वंतरियाण (निकाया) के० व्यंतर देवतानी आठ निकायो छे. तेमां (भवणासंखा) के० व्यंतर देवोना असंख्य भुवनो (सुए भणिया) के० सूत्रमां कह्यां छे ॥ ४३ ॥

अणपन्नी पणपन्नी, इसिवाई भूयवाइए चेव ॥
कंदी य महाकंदी, कोहंडे चेव पयए य ॥ ४४ ॥

अर्थः—१ (अणपन्नी) के० अणपन्नी निकाय, २ (पण-

पन्नी) के० पणपन्नी निकाय, ३ (इसिवाई) के० ऋषिवादी निकाय, ४ (भूयवाइए) के० भूतवादी निकाय, (चेव) के० निश्चे, ५ (कंदी य) के० वळी कंदित निकाय, ६ (महाकंदी) के० महाकंदित निकाय. ७ (कोहंडे) के० कोहंडिक निकाय, (चेव) के० निश्चय ८ (पयए य) के० वळी पतंग निकाय. ए व्यंतर देवोनी आठ निकाय जाणवी. ॥ ४४ ॥

इय पढमजोयणसए, रयणाए अट्ठ वंतरा अवरे ॥
तेसु इह सोलसिंदा, रुअगअहो दाहिणुत्तरओ ॥ ४५ ॥

अर्थः—(इय) के० ए आठ निकाय ते (रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना (पढमजोयणसए) के० पहेला सो योजन माहेलां वचला एसी योजनमां वसनारा (अट्ठ वंतरा) के० आठ जातिना व्यंतर ते पूर्वे कहेला व्यंतरोथी (अवरे) के० बीजा अर्थात् वाणव्यंतर देवो जाणवा. (इह) के० अहिं (तेसु) के० ते व्यंतर देवताने विषे आठ निकायना (सोलसिंदा) के० शोल ईंद्रो (रुअगअहो) के० रुचक प्रदेशथी दश योजन नीचे एंसी योजनमां दाहिणुत्तरओ के० दक्षिण अने उत्तर दिशाना भेदे करीने जाणवा. ॥ ४५ ॥

हवे बे गाथावडे शोल इंद्रोना नाम कहे छेः—

सन्निहिए सामाणे, धाइ विहाए इसी य इसिवाले ॥
ईसर महेसरे वि य, हवइ सुवत्थे विसाले य ॥ ४६ ॥
हासे हासरई वि य, सेए य भवे तहा महासेए ॥
पयगे पयगवई वि य, सोलस इंदाण नामाणि ॥ ४७ ॥

अर्थः—१ (सन्निहिए) के० संनिहितेंद्र, २ (सामाणे)

के० सामानेंद्र, ३ (धाइ) के० धाता इंद्र, ४ (विहाए) के० विधाता इंद्र, ५ (इसी य) के० वळी ऋषि इंद्र, ६ (इसिवाले) के० ऋषिपालेंद्र, ७ (ईसर) के० ईश्वरेन्द्र, ८ (महेसरे) के० महेश्वरेन्द्र, (वि य) के० निश्चय (हवइ) के० होय. ९ (सुवत्थे) के० सुवत्सेंद्र, (य) के० अने १० (विसाले) के० विशालेन्द्र. ॥ ४६ ॥ ११ (हासे) के० हास्य इंद्र, १२ (हासरई) के० हास्यरति इंद्र, (वि य) के० वळी १३ (सेए) के० श्वेतइंद्र, (भवे) के० होय. (तहा) के० तेमज १४ (महासेए) के० महाश्वेत इंद्र, १५ (पयगे) के० पतंग इंद्र, १६ (पयगवइ) के० पतंगपति इंद्र. ए वि य के० निश्चय (सोळसइंद्राण) के० सोळ इंद्रोनां (नामाणि) के० नाम कह्यां. ॥ ४७ ॥

आ वाणव्यंतर देवोना सोळ इंद्र कह्या. तेनी पहेला व्यंतर देवोना पण सोळ इंद्रो कह्या छे. सर्व मळी बत्रीस इन्द्र थया. तेमनी साथे भुवनपतिना वीश, सूर्य चंद्रना बे अने वैमानिकना दश मळी चोसठ इंद्रो गणाय छे.

हवे व्यंतर तथा ज्योतिषि देवोना सामानिक अने आत्मरक्षक देवो सरखा छे, माटे साथे संख्या कहे छेः—

सामाणियाण चउरो, सहस्स सोलस य आयरक्खाणं ॥
पत्तेयं सव्वेसिं, वंतरवइ ससिरवीणं च ॥ ४८ ॥

अर्थः—(सव्वेसिं) के० सर्व एटले बत्रीश (वंतरवइ) के० व्यंतर इन्द्रोने (च) के० अने (ससिरवीणं) के० सूर्य अने चंद्रने ते (पत्तेयं) के० दरेकने (सामाणियाण) के० सामानिक देवो (चउरोसहस्स) के० चार हजार अने (आयरक्खाणं) के० अंगरक्षक देवो ते (सोलसय) के० सोळ हजार होय छे. ॥४८॥

हवे दरेक इन्द्रनी पासे केटली जातना देवो होय छे ? ते कहे छेः—

इंदसामाणियाण ता-यत्तीसा परिसा य अंगरक्खा य ॥
लोगपाला अणिका, पइन्न अभिओग किब्बि-
सीया ॥ ४९॥

अर्थः—(इंद) के० इन्द्र, (सामाणियाण) के० सामानिक देवो, (तायत्तीसा) के० त्रायस्त्रिंशक देवो, (परिसा) के० पर्षदाना देवो, (अंगरक्खा) के० अंगरक्षक देवो, (लोगपाला) के० लोकपाल देवो, (अणिका) के० अनिक ते कटकना देवो, (पइन्न) के० प्रकीर्ण एटले प्रजारूप देवो, (अभिओग) के० आभियोगिक ते चाकर देवो, (किब्बिसीया) के० किल्बिषिक देवो. ए दश जातिना देवो होय छे. ॥ ४९ ॥

हवे कटकना सात प्रकार कहे छेः—

गंधव्व नट्ट हय गय, रह भड अणियाणि सव्वइंदाणं ॥
वेमाणियाण वसहा, महिसा य अहोनिवासाणं ॥ ५० ॥

अर्थः—(गंधव्व) के० मृदंगधर गंधर्वनुं, (नट्ट) के० नृत्य करनार नाटकीयानुं, (हय) के० घोडानुं, (गय) के० हाथीनुं, (रह) के० रथनुं अने (भड) के० सुभटनुं. ए छ प्रकारनां (अणियाणि) के० कटको (सव्वइंदाणं) के० सर्व इन्द्रोने होय छे, परंतु (वेमाणियाण) के० वैमानिक इन्द्रोने सातमुं कटक (वसहा) के० वृषभनुं होय छे. (य) के० अने (अहोनिवासीणं) के० भुवनपति तथा व्यंतर इन्द्रोने सातमुं कटक (महिसा) के० महिष एटले पाडानुं होय छे. ॥ ५० ॥

हवे प्रत्येक इन्द्रने त्रायत्रिंशकादिक देवोनी संख्या कहे छेः—

तित्तिस तायतीसा, परिसतिया लोगपाल चत्तारि ॥
अणियाणि सत्त सत्त य, अणियाहिव सव्वइंदाणं ॥५१॥

अर्थः—(तित्तिस तायतिसा) के० तेत्रीस त्रायत्रिंशक एटले गुरुस्थानीया सलाह पूछवा योग्य देवो. (परिसतिया) के० बाह्य-मध्य अने अभ्यंतर एवी त्रण पर्षदा, (लोगपाल चत्तारि) के० सोम यम वरुण अने कुबेर ए नामना चार लोकपाल, (अणियाणि सत्त सत्त य) के० वळी सात सात प्रकारनुं कटक, अने (अणियाहिव) के० कटकना अधिपति, ए सव्वइंदाणं) के० सर्व इन्द्रोने होय छे. ॥ ५१ ॥

नवरं वंतर जोइस, इंदाण न हुंति लोगपालाओ ॥
तायत्तीसभिहाणा, तियसाविय तेसिं नहु हुंति ॥५२॥

अर्थः—परंतु (नवरं) के० एटलुं विशेष छे के—(वंतर) के० व्यंतर देवोना बत्रीश इंद्रोने तथा (जोइस) के० ज्योतिषीना बे इंद्रोने (लोगपालाओ) के० चार लोगपाल (न हुंति) के० न होय. तेमज (तायत्तीसभिहाणा) के० त्रायत्रिंशक नामना (तिय साविय) के० ते देवता पण (तेसिं) के० व्यंतर तथा ज्योतिषीना इन्द्रोने (नहु हुंति) के० न होय. ॥ ५२ ॥

हवे ज्योतिषी देवोना विमानोनी वक्तव्यता कहे छे. ज्योतिषी तिर्यक् लोकमां छे. अने तिर्यक् लोक मेरु मध्यकनकथी नवसो योजन उपर अने नवसो योजन नीचे एम अढारसो योजन प्रमाण छे, तेमां उपरना जे तिर्यक् लोकना नवसो योजन छे. तेमां ज्योतिषीना विमान केटला उंचा छे ? ते कहे छेः—

समभूतलाओ अट्ठहिं, दसूण जोयणसएहिं आरम्भ ॥
उवरि दसूत्तर जोयण–सयंमि चिट्ठंति जोइसिया ॥५३॥

अर्थः—मेरूपर्वतना मध्य भागमां जे आठ रुचकप्रदेश छे, ते समभूतला कहेवाय. ते (समभूतलाओ) के० समभूतला थकी (दसूण) के० दश योजन ओछा एवा (अट्ठहीं जोयणसएहीं) के० आठसो योजन अर्थात् सातसो ने नेवुं योजन, त्यांथी (आरम्भ) के० आरंभीने (उवरि) के० उपरना भागने विषे (दसूत्तर जोयणसयंमि) के० एकसो दश योजनमांहे (जोइसिया) के० ज्योतिषी देवो (चिट्ठंति) के० रहे छे ॥ ५३ ॥

हवे एकसो दश योजनमां ज्योतिषि देवो केवी रीत रह्या छे ? ते कहे छेः—

तत्थ रवी दसजोयण, असीइ तदुवरि ससी य रिक्खेसु॥
अह भरणि साइ उवरि, वहि मूलो भिंतरे अभिई ॥५४॥

अर्थः—(तत्थ) के० त्यां एटले एकसो दश योजनमां (दस जोयग) के० प्रथम दश योजननी उपर (रवी) के० सूर्य छे. (तदुवरि) के० तेना उपर (असीइ) के० एंसी योजन (ससी) के० चंद्रमा छे. (य) के० वली ते थकी चार योजन उंचा (रिक्खेसु) के० अट्ठावीश नक्षत्रो छे तेमां (भरणि) के० भरणी नक्षत्र सर्व नक्षत्रोथी (अह) के० नीचे चाले छे, तथा (साइ) के० स्वाति नक्षत्र सर्व नक्षत्रोथी (उवहि) के० उपर चाले छे. वली (मूलो) के० मूल नक्षत्र सर्व नक्षत्रोथी (वहि) के० बहारना मंडले चाले छे अने (अभिइ) के० अभिजिद् नक्षत्र सर्व नक्षत्रोनी (भिंतरे) के० अंदर चाले छे. ॥ ५४ ॥

हवे प्रत्येक इन्द्रने त्रायस्त्रिंशकादिक देवोनी संख्या कहे छेः—

तित्तिस तायतीसा, परिसतिया लोगपाल चत्तारि ॥
अणियाणि सत्त सत्त य, अणियाहिव सव्वइंदाणं ॥५१॥

अर्थः—(तित्तिस तायतिसा) के० तेत्रीस त्रायस्त्रिंशक एटले गुरुस्थानीया सलाह पूछवा योग्य देवो. (परिसतिया) के० बाह्य मध्य अने अभ्यंतर एवी त्रण पर्षदा, (लोगपाल चत्तारि) के० सोम यम वरुण अने कुबेर ए नामना चार लोकपाल, (अणियाणि सत्त सत्त य) के० वळी सात सात प्रकारनुं कटक, अने (अणियाहिव) के० कटकना अधिपति, ए सव्वइंदाणं) के० सर्व इन्द्रोने होय छे. ॥ ५१ ॥

नवरं वंतर जोइस, इंदाण न हुंति लोगपालाओ ॥
तायत्तीसभिहाणा, तियसावि य तेसिं नहु हुंति ॥५२॥

अर्थः—परंतु (नवरं) के० एटलुं विशेष छे के—(वंतर) के० व्यंतर देवोना बत्रीस इंद्रोने तथा (जोइस) के० ज्योतिषीना बे इंद्रोने (लोगपालाओ) के० चार लोगपाल (न हुंति) के० न होय. तेमज (तायत्तीसभिहाणा) के० त्रायस्त्रिंशक नामना (तियसाविय) के० ते देवता पण (तेसिं) के० व्यंतर तथा ज्योतिषीना इन्द्रोने (नहु हुंति) के० न होय. ॥ ५२ ॥

हवे ज्योतिषी देवोना विमानोनी वक्तव्यता कहे छे. ज्योतिषी तिर्यग् लोकमां छे. अने तिर्यग् लोक मेरु मध्यरुचकथी नवसो योजन उपर अने नवसो योजन नीचे एम अढारसो योजन प्रमाण छे, तेमां उपरना ते तिर्यग् लोकना नवसो योजन छे. तेमां ज्योतिषीना विमान केटला उंचा छे ? ते कहे छेः—

मद) के० अगीयारसो योजन अने ते उपर (इगारसाहिया) के० अगीयार योजन अधिक. एम (कमसो) के० अनुक्रमे करीने (मेरुअलोगाबाहिं) के० मेरुपर्वतथी अलोकने अबाधा करने (जोइसचक्कं) के० ज्योतिषचक्र (चरइ) के० चाले छे. अने (ठाइ) के० स्थिर रहे छे. अर्थात् मेरुपर्वतथी अगीयारसो ने एकवीस योजन दूर ज्योतिषचक्र मनुष्य क्षेत्रमां चाले छे अने लोकना छेडाथकी अगीयारसो ने अगीयार योजन चार दिशामां मांहेली कोरे लोकनी अबाधाए एटले अंतरे ज्योतिष चक्र स्थीर छे. तात्पर्य मनुष्यक्षेत्रमां चर ज्योतिषी अने बाहारना क्षेत्रमां स्थीर ज्योतिषी छे. ॥५६॥

अद्धकविट्ठागारा. फलिहमया रम्म जोइसविमाणा ॥
वंतरनयरेहिंतो. संखिज्जगुणा इमे हुंति ॥ ५७ ॥

अर्थः—(अद्धकविट्ठागारा) के० अर्द्धा कोठ फलना आकारवाला. (फलिहमया) के० स्फटिकरत्नमय अने (रम्म) के० रमणिक एवा (जोइसविमाणा) के० ज्योतिषि देवोना विमानो छे. अने (इमे) के० ए विमानो (वंतरनयरेहिंतो) के० पूर्वे कहेला व्यंतरना नगरोथकी (संखिज्जगुणा) के० संख्यातगुणा मोटां (हुंति) के० होय छे ॥ ५७ ॥

जोइसियविमाणाइं, सव्वाइं हुंति फालिहमयाइं ॥
दगफालिहमया पुण, लवणे जे जोइसविमाणा ॥५८॥

अर्थः—(सव्वाइं) के० पूर्वे कहेला सर्वे (जोइसियविमाणाइं) के० ज्योतिषि विमानो (फालिहमयाइं) के० स्फटिकरत्नमय (हुंति) के० छे. पुण के० (वली लवणे) के० लवणसमुद्रने विषे (जे जोइसविमाणा) के० जे ज्योतिषिना विमानो छे ते सर्वे

तार रवि चंद रिक्खा, बुह सुक्का जीव मंगल सणिया ॥
सग सय नउय दस असिइ, चउ चउ कमसो तिया
चउसु ॥ ५५ ॥

अर्थः—समभूतला पृथ्वीथी सातसो ने नेवुं योजन सुधीज ज्योतिषि विनानुं केवळ आकाश छे. (सग सय नउय) के० ते सातसो ने नेवुं योजन उपर (तार) के० तारा मंडल छे, ते उपर (दस) के० दस योजन उंचो (रवि) के० सूर्य छे, ते थकी (असिइ) के० एंशी योजन उपर (चंद) के० चंद्रमा छे, ते थकी (चउ) के० चार योजन उपर (रिक्खा) के० नक्षत्र छे, ते थकी (चउ) के० चार योजन उंचो (बुह) के० बुध छे, ते थकी (कमसो) के० अनुक्रमे (तिया) के० त्रण त्रण योजनने अंतरे (शुक्का) के० शुक्र, (जीव) के० बृहस्पति, (मंगल) के० मंगल अने (सणिया) के० शनी ए (चउसु) के० चार ग्रह छे. ए प्रमाणे समभूतला पृथ्वीथी सातसो नेवुं योजन उपर एकसो दस योजनमां सर्व ज्योतिष चक्र चाले छे. समभूतला पृथ्वीथी नवसो योजन सर्वथी उंचो शनीश्वर छे. अहिं योजननुं प्रमाण प्रमाणांगुले करीने जाणवुं. ॥ ५५ ॥

हवे मनुष्यक्षेत्रमां चर ज्योतिषी मेरुपर्वतथी केटला योजन दूर चाले ? तथा अलोकथी अंदर केटली अबाधाए ज्योतिषी रहे छे ? ते कहे छेः—

इक्कारस जोयण सय, इगवीसिक्कार साहिया कमसो ॥
मेरु अलोगावाहिं, जोइसचक्कं चरइ ठाइ ॥ ५६ ॥

अर्थः-(इक्कारस जोयण सय) के० अगीयारसो योजन अने ते उपर (इगवीस) के० एकवीस योजन. वळी (इक्कारस जोयण-

पणयाल लक्ख जोयण, नरखित्तं नत्थिमे सया भमिरा ॥
नरखित्ताओ बहि पुण, अद्धपमाणा ठिया निच्चं ॥६०॥

अर्थः—(पणयाल लक्ख जोयण) के० पिस्तालीस लाख योजननुं (नरखित्त) के० मनुष्यक्षेत्र छे. (तत्थ) के० ते मनुष्य क्षेत्रमां (इमे) के० ए चर ज्योतिषि (सया) के० निरंतर (भमिरा) के० फरे छे. (पुण) के० वली (नरखित्ताओ बहि) के० मनुष्य क्षेत्रनी बाहेर (अद्धपमाणा) के० जे चर ज्योतिषिना विमानोनुं प्रमाण कह्युं छे, तेथी अर्द्धा प्रमाणवाला ज्योतिषि विमानो (निच्चं) के० निरंतर (ठिया) के० स्थिर रह्या छे. अर्थात् चर ज्योतिषिना विमानोथी स्थिर ज्योतिषिना विमानोनुं प्रमाण लंबाइ पहोलाइ अने उंचाइमां अर्धुं छे. ॥ ६० ॥

अहिं पिस्तालीस लाख योजननुं मनुष्य क्षेत्रनुं प्रमाण कहे छे के-जंबुद्वीपथी पूर्व दिशामां बे लाख योजननो लवण समुद्र, चार लाख योजननो धातकी खण्ड, आठ लाख योजननो कालोदधि समुद्र, अने आठ लाख योजननो पुष्करार्द्ध. ए सर्वे मली बावीश लाख योजन थया. तेवाज बावीश लाख योजन पश्चिम दिशामां थाय. बन्ने मली चुमालीश लाख योजन थाय, तेनी साथे एक लाख योजननो जंबुद्वीप मेलवतां पिस्तालीस लाख योजन थाय, तेम प्रमाणे उत्तर दक्षिणमां गणतां पण पिस्तालीश लाख योजन थाय छे, ए पिस्तालीश लाख योजनना मनुष्य क्षेत्रने वींटीने सतरसो एकवीस योजन उंचो मानुषोत्तर पर्वत रह्यो छे. तेनी अंदरज मनुष्योना जन्म मरण थवाथी ते मनुष्य क्षेत्र कहेवाय छे. ए मनुष्य क्षेत्रमां चर ज्योतिषिनां विमानो मेरु पर्वतने प्रदक्षिणा देतां निरंतर फरे छे. ॥

(दगफालिहमया) के० उदकस्फटिकरत्नमय छे. लवण समुद्रनी शिखा दश हजार योजन पहोळी अने सोळ हजार योजन उंची छे, अने ज्योतिषि विमानो तो नवसो योजन उंचाइमां छे, तेथी ते विमानो पाणीनी खामां चाले छे, परंतु स्फटिकरत्नना प्रभावथी पाणी फाटीने मोकळुं थइ जाय छे, तेथी विमानोने बाधा थती नथी. तेम विमानोमां पाणी भरातुं नथी. आवा कारणोथी सूर्यप्रज्ञप्ति विगेरेमां ज्योतिषि विमानो स्फटिकमय, पण लवण समुद्रमां फरता ज्योतिषि विमानो उदकस्फटिकमय कह्यां छे. वळी ते विमानोना तेजनी पाणीथी कांइ हानी थती नथी ॥ ५८ ॥

हवे चंद्रादिक ज्योतिषि देवोना विमानोनुं प्रमाण कहे छेः—

जोयणिगसट्ठि भागा, छप्पन्नऽडयाल गाउ दु इग द्धं ॥
चंदाइविमाणायाम, वित्थडा अद्धमुच्चत्तं ॥ ५९ ॥

अर्थः—(जोयणिगसट्ठि भागा) के० एक योजनना एकसठ भाग करीये, तेवा (छप्पन्न) के० छप्पन्न भागनुं चन्द्र विमान लांबु छे अने (अडयाल) के० अडतालीश भागनु सूर्य विमान लांबु छे. वळी (गाउ दु) के० बे गाउनां ग्रह विमानो लांबा छे, तथा (इग) के० एक गाउनां नक्षत्र विमानो लांबा छे, अने (अद्धं) के० अर्द्धा गाउना ताराना विमानो लांबा छे. ए (चंदाइविमाणायाम) के० चन्द्र विगेरेना विमानोनी लंबाइ कही, वळी (वित्थडा) के० विस्तार एटले पहोळाइ पण तेटली जाणवी. अने तेटलां लांबां पहोळां कह्यां. तेथी (अद्धं उच्च) के० अर्द्धा उंचाइ जाणवी. ॥ ६० ॥

हवे मनुष्यलोकनु प्रमाण तथा मनुष्यलोकथी बाहेरना स्थिर चन्द्रादि पांचे ज्योतिषिओना विमानोनुं स्वरूप कहे छेः—

अर्थः—सर्वथी (अप्पड्ढीयाओ) के० थोडी रुद्धिवाला (तारा) के० ताराओ छे. (तेओ) के० तेथी (महड्ढीया) के० वधारे रुद्धिवाला (नक्खत्ता) के० नक्षत्रो (खलु) के० निश्चे होय छे. अने (नक्खत्ते) के० नक्षत्रोथी (गहा) के० ग्रहो वधारे रुद्धिवाला हुंति) के० होय छे. वली (गहेहिं) के० ग्रहोथी वधारे रुद्धिवाला (सुरा) के० सूर्य होय छे, अने (तओ) के० सूर्यथी वधारे रुद्धिवाला (चंदा) के० चन्द्र होय छे. तारा पांच वर्णना होय छे अने बीजा सर्वे ज्योतिषि देवो अग्नितप्त सुवर्ण समान छे. पांचे ज्योतिषि देवोने पोत पोतानी नामाकृति सरखां मुकुटमां चिन्ह होय छे. ॥ ६३ ॥

सोलस सोलस अड चउ, दो सुरसहस्सा पुरो य दाहिणओ ॥
पच्छिम उत्तर सीहा, हत्थी वसहा हया कमसो ॥ ६४ ॥

अर्थः –(सोलस सुर सहस्सा) के० सोल हजार देवो चन्द्र विमानने वहन करनारा अने (सोलस) के० सोल हजार देवो सूर्यना विमानने वहन करनारा होय छे. वली (अड) के० आठ हजार देवो ग्रहना विमानने वहन करनारा, (चउ) के० चार हजार देवो नक्षत्रना विमानने वहन करनारा, तथा (दो) के० बे हजार देवो ताराना विमानने वहन करनारा होय छे. जो के चन्द्रादिकना विमानो स्वाभाविक रीते आकाशमां आलंबन रहित फर्या करे छे. परंतु आज्ञाकारी देवो भक्ति देखाडवाने माटे विमानने नीचे सिंहादिकनां रूप धारण करी रह्या छे. तेथी तेओ पण विमाननी साथे भ्रमण कर्या करे छे.

हवे मनुष्य क्षेत्रमां चन्द्र विगेरे ज्योतिषि देवतानी गति तथा तेमना विमानने वहन करनारा देवतानी संख्या विगेरे कहे छेः—

ससि रवि गह नक्खत्ता, ताराओ हुंति जहुत्तरं सिग्घा ॥
विवरीया उ महड्डिअ, विमानवहगा कमेणेसिं ॥ ६१ ॥

अर्थः—(ससि) के० चन्द्र, (रवि) के० सूर्य, (गह) के० ग्रह, (नक्खत्ता) के० नक्षत्र अने (ताराओ) के० तारा तेमनी गति (जहुत्तरं) के० यथोत्तरपणाये करीने (सिग्घा) के० उतावली (हुंति) के० होय छे. (उ) के० वली (महड्डिअ) के० महर्द्धिके करीने (विवरीया) के० पूर्वे कहेला अनुक्रमथी विपरीत क्रम जाणवो. अने (कमेणेसिं) के० अनुक्रमे करीने (विमाणवहगा) के० विमाने वहन करनारा देवता ए सर्वे आगली गाथार्थमांथी कहे छे. ॥ ६१ ॥

चंदेहिं सिग्घा, रविणो भवे उ गहा य सिग्घयरा ॥
तत्तो नक्खत्ताओ, नक्खत्ते हुंति ताराओ ॥ ६२ ॥

अर्थः—(चंदेहिं) के० चन्द्रथी (रवी) के० सूर्य (सिग्घा) के० उतावली गतिवाला छे. (उ) के० वली (रविणो के० सूर्यथी (गहा य) के० ग्रहो (सिग्घयरा) के० उतावली गतिवाला (भवे) के० होय छे. (तत्तो) के० ग्रहोथी (नक्खत्ताओ) के० नक्षत्रो, अने (नक्खत्ते) के० नक्षत्रोथी (ताराओ) के० तारा उतावली गतिवाला (हुंति) के० होय छे. ॥ ६२ ॥

अप्पड्ढीयाओ तारा, नक्खत्ता खलु तओ महड्ढीया ॥
नक्खत्त हुंति गहा, गहेहिं सूरा तओ चन्दा ॥ ६३ ॥

अर्थः—सर्वथी (अप्पड्ढीयाओ) के० थोडी रुद्धिवाला (तारा) के० ताराओ छे. (तेओ) के० तेथी (महड्ढीया) के० वधारे रुद्धिवाला (नक्खत्ता) के० नक्षत्रो (खलु) के० निश्चे होय छे. अने (नक्खत्त) के० नक्षत्रोथी (गहा) के० ग्रहो वधारे रुद्धिवाला (हुंति) के० होय छे. वली (गहेहिं) के० ग्रहोथी वधारे रुद्धिवाला (सूरा) के० सूर्य होय छे, अने (तओ) के० सूर्यथी वधारे रुद्धिवाला (चंदा) के० चन्द्र होय छे. तारा पांच वर्णना होय छे अने बीजा सर्वे ज्योतिषि देवो अग्नितप्त सुवर्ण समान छे. पांचे ज्योतिषि देवोने पोत पोतानी नामाकृति सरखां मुकुटमां चिन्ह होय छे. ॥ ६३ ॥

सोलस सोलस अड चउ, दो सुरसहस्सा पुरो
य दाहिणओ ॥
पच्छिम उत्तर सीहा, हत्थी वसहा हया कमसो ॥ ६४ ॥

अर्थः—(सोलस सुर सहस्सा) के० सोल हजार देवो चन्द्र विमानने वहन करनारा अने (सोलस) के० सोल हजार देवो सूर्यना विमानने वहन करनारा होय छे. वली (अड) के० आठ हजार देवो ग्रहना विमानने वहन करनारा, (चउ) के० चार हजार देवो नक्षत्रना विमानने वहन करनारा, तथा (दो) के० बे हजार देवो ताराना विमानने वहन करनारा होय छे. जो के चन्द्रादिकना विमानो स्वाभाविक रीते आकाशमां आलंबन रहित फर्या करे छे. परंतु आज्ञाकारी देवो भक्ति देखाडवाने माटे विमाननी नीचे सिंहादिकनां रूप धारण करी रहा छे. तेथी तेओ पण विमाननी साथे भ्रमण कर्या करे छे.

ए पांच ज्योतिषि विमानोने चलावनार देवो चारे दिशामां सरखे भागे रह्या छे ते कहे छे. (पुरो) के० पूर्वदिशाये (सीहा) के० सिंहनां रूपे, (दाहिणओ) के० दक्षिण दिशाये (हत्थी) के० हाथीनां रूपे, (पच्छिम) के० पश्चिम दिशाये (वसहा) के० वृषभने रूपे अने (उत्तर) के० उत्तर दिशाये (हया) के० घोडाने रूपे (कमसो) के० अनुक्रमे करीने जाणवा. ॥ ६४ ॥

तेज वात दृढ करवाने बीजी गाथायो कहे छेः—

पुरो य हुंति सिंहा, दाहिणे कुंजरो महाकाए ॥
पच्छिमेण य वसहा, तुरगा पुण उत्तरे पासे ॥ ६५ ॥

अर्थः—चन्द्रना विमानने वहन करनारा सोळ हजार देवो छे. तेमां (पुरो) के० पूर्व दिशामां (सिंहा) के० सिंहनां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे, (दाहिणे) के० दक्षिण दिशामां कुंजरो (महाकाए) के० मोटा शरीरवाळा हाथीनां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे, (पच्छिमेण य) के० पश्चिम दिशामां (वसहा) के० वृषभनां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे, (पुण) के० वळी (उत्तरे पासे) के० उत्तर दिशामां (तुरगा) के० घोडानां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे. एज प्रमाणे सूर्य विगेरेना विमानोने वहन करनारा देवोनी जे संख्या कही होय तेना चोथे भागे दरेक दिशामां सिंहादि रूपने धारण करनारा देवो होय छे एम जाणवुं. ॥ ६५ ॥

सर्व ज्योतिषि देवोमां चन्द्र अधिक ऋद्धिवंत छे, माटे चंद्रनो परिवार कहे छेः—

गह अट्ठासी नक्खत्ता, अडवीसं तार कोडि कोडीणं ॥
छासट्ठि सहस्स नव सय, पणहत्तरि एगससिसिन्नं ॥६६॥

अर्थः—(गह) के० मंगल विगेरे ग्रहो ते (अट्ठासी) के० अठ्यासी छे, अने (नक्खत्त) के० अभिजित् विगेरे नक्षत्रो (अट्ठवीसं) के० अठावीस छे, वली (छासट्ठि सहस्स) के० छासठ हजार, (नव सय) के० नवसो अने (पणहत्तरि) के० पंचोतेर एटली (कोडि कोडीणं) के० कोडा कोडी—अर्थात् छासठ हजार कोडा कोडी अने पंचोतेर कोडा कोडी एटला (तार) के० तारा ए सर्व (एगससिसिन्नं) के० एक चन्द्रनुं सैन्य एटले परिवार छे. ॥ ६६ ॥

अहिं कोइने शंका थाय के—मनुष्यक्षेत्र पिस्तालीस लाख योजन छे अने तारानी संख्या वधारे छे तो तेटला क्षेत्रमां समावेश थाय नहीं. आ शंकानी आगली गाथाथी निवृत्ति करे छे:—

कोडाकोडी सन्नं-तरं तु मन्नंति खित्तथोवतया ॥
केइ अन्ने उस्से-हंगुलमाणेण ताराणं ॥ ६७ ॥

अर्थः—अहिं बे मत छे. (केइ) के० कोईक आचार्य (कोडा कोडी) के० कोडा कोडीनी संख्याने (सन्नंतरं) के० नामांतर (मन्नंति) के० माने छे. जेम वीशने कोडी कहेवाय छे तेम कोडाकोडी पण तेनुंज बीजुं नाम छे. कारण के (खित्तथोवतया) के० मनुष्यक्षेत्रनुं थोडापणुं छे माटे. वली (अन्ने) के० बीजा केटलाक आचार्य (ताराणं) के० ताराना विमाननुं प्रमाण (उस्सेहंगुलमाणेण) के० उत्सेधांगुलप्रमाणे करीने माने छे. अहिं केटलाक ग्रन्थोमां चारसो उत्सेधांगुले एक प्रमाणांगुल कह्युं छे अने केटलाक ग्रन्थोमां एक हजार उत्सेधांगुले एक प्रमाणांगुल कह्युं छे.

ए पांच ज्योतिषि विमानोने चलावनारा देवो चारे दिशामां सरखे भागे रह्या छे ते कहे छे. (पुरो) के० पूर्वदिशाये (सीहा) के० सिंहनां रूपे, (दाहिणओ) के० दक्षिण दिशाये (हत्थी) के० हाथीनां रूपे, (पच्छिम) के० पश्चिम दिशाये (वसहा) के० वृषभने रूपे अने (उत्तर) के० उत्तर दिशाये (हया) के० घोडाने रूपे (कमसो) के० अनुक्रमे करीने जाणवा. ॥ ६४ ॥

तेज वात दृढ करवाने बीजी गाथाथी कहे छेः—

पुरो य हुंति सिंहा, दाहिणे कुंजरो महाकाए ॥
पच्छिमेण य वसहा, तुरगा पुण उत्तरे पासे ॥ ६५ ॥

अर्थः—चन्द्रना विमानने वहन करनारा सोल हजार देवो छे. तेमां (पुरो) के० पूर्व दिशामां (सिंहा) के० सिंहनां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे, (दाहिणे) के० दक्षिण दिशामां कुंजरो (महाकाए) के० मोटा शरीरवाला हाथीनां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे, (पच्छिमेण य) के० पश्चिम दिशामां (वसहा) के० वृषभनां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे, (पुण) के० वली (उत्तरे पासे) के० उत्तर दिशामां (तुरगा) के० घोडानां रूपने धारण करनारा चार हजार देवो होय छे. एज प्रमाणे सूर्य विगेरेना विमानोने वहन करनारा देवोनी जे संख्या कही होय तेना चोथे भागे दरेक दिशामां सिंहादि रूपने धारण करनारा देवो होय छे एम जाणवुं. ॥ ६५ ॥

सर्व ज्योतिषि देवोमां चन्द्र अधिक ऋद्धिवंत छे, माटे चंद्रनो परिवार कहे छेः—

वर्णनुं छे. ते सर्वदा चन्द्रनी साथे पण चन्द्रना विमानथी चार अंगुल नीचुं चाले छे. तेमां कृष्णपक्षमां चन्द्रमंडलना पंदर भाग करीये तेवा एक एक भागने वधारे ढांके छे. अने शुक्लपक्षमां एक एक भागने मूके छे. जेथी लोकमां चन्द्रमंडलना तेजनी हानी वृद्धि देखाय छे.

हवे जंबूद्वीपमां तथा बीजा पण मनुष्यक्षेत्रमां एक ताराथी बीजा ताराना विमानोनुं पर्वतादिकना व्याघाते (आंतरे) अथवा व्याघात विना (आंतरा विना) जघन्योत्कृष्ट अंतर केटलुं होय ? ते कहे छेः—

तारस्स य तारस्स य. जंबुद्दीवंमि अंतरं गुरुयं ॥
बारस जोयण सहस्सा. दुन्निसया चेव बायाला ॥७०॥

अर्थः—(जंबुद्दीवंमि) के० जंबूद्वीपने विषे (तारस्स य तारस्स य) के० एक ताराथी बीजा तारानुं (गुरुयं अंतरं) के० उत्कृष्ट अंतर (बारस जोयण सहस्सा) के० बार हजार योजन, (दुन्नि सया) के० बसो योजन अने (बायाला) के० बेंतालीश योजन अर्थात् (१२२४२) योजन (चेव) के० निश्चे होय छे. आ अंतर मेरु पर्वतना व्याघातथी एटले आंतराथी जाणवुं. कारण मेरु पर्वत समभूतलानी नीचे दश हजार योजन जाडो छे, तथा मेरुने अने एक बाजुना ताराने अगीयारसो एकवीश योजननुं अंतर छे. अने बीजी बाजुए पण मेरुने अने ताराने तेटलुंज अंतर छे, ए त्रण अंतरनी संख्याने एकठी करीये ता एक ताराथी बीजा तारानु उत्कृष्ट अंतर (१२२४२) योजन थाय छे. ॥ ७० ॥

हवे मेरु पर्वत विना बीजा पर्वतोनां आंतरे अथवा आंतरा विना तारा तथा नक्षत्रोनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहे छेः—

तेथी क्षेत्रनुं अलान्त होवा छतां उत्सेधांगुलना मानथी नागतां विमाननुं प्रमाण करी शकाय छे. ॥ ६७ ॥

हवे राहुनुं स्वरुप अने तेनी गति कहे छेः—

आयामं विरकंभं, जोयणमेगं तु तिगुणओ परिही ॥
अड्डाइज्ज धणुसया, राहुविमाणाण बाहल्लं ॥ ६८ ॥

अर्थः—(राहु विमाणाण) के० राहुना विमाननी (आयामं विरकंभं) के० लंबाइ तथा पहोळाइ (जोयणमेगं) के० एक योजननी होय छे. तु के० वळी (परिही) के० परिधि ते (तिगुणओ) के० त्रण गुणी एटले त्रण योजनथी अधिक छे. अने (बाहल्लं) के० जाडाइ ते (अड्डाइज्जधणुसया) के० अढीसो धनुष्यनी छे. ॥ ६८ ॥

कण्हं राहु विमाणं, निच्चं चन्देण होइ अविरहियं ॥
चतुरंगुलमप्पत्तं, हिठ्ठा चन्दस्स तं चरइ ॥ ६९ ॥

अर्थः—(कण्हं) के० काळा वर्णवाळुं (राहुविमाणं) के० राहुनुं विमान (निच्चं) के० निरंतर (चन्देण) के० चन्द्रना विमानथी (अविरहियं होइ) के० अभिन्न होय छे. अर्थात् दूर थातुं नथी. (तं) के० ते राहुनु विमान (चंदस्स) के० चन्द्रना विमानथी (चतुरंगुलमप्पत्तं) के० चार अंगुल दूर (हिठ्ठा) के० नीचे (चरइ) के० चाले छे. ॥ ६९ ॥

राहु बे प्रकारना छे. एक नित्यराहु बीजो पर्वराहु. पर्वराहु जघन्यथी छ मासे चन्द्रने अने सूर्यने ग्रहण करे छे अर्थात् पोताना विमानथी ढांके छे. तथा उत्कृष्टथी चन्द्रने बेंतालीस मासे अने सूर्यने अडतालीस वर्षे ग्रहण करे छे. नित्यराहुनुं विमान काळा

चर्णनुं छे. ते सर्वदा चन्द्रनी साथे पण चन्द्रना विमानथी चार अंगुल नीचुं चाले छे. तेमां कृष्णपक्षमां चन्द्रमंडलना पंदर भाग करीये तेवा एक एक भागने वधारे ढांके छे. अने शुक्लपक्षमां एक एक भागने मूके छे. जेथी लोकमां चन्द्रमंडलना तेजनी हानी वृद्धि देखाय छे.

हवे जंबूद्वीपमां तथा बीजा पण मनुष्यक्षेत्रमां एक ताराथी बीजा ताराना विमानोनुं पर्वतादिकना व्याघाते (आंतरे) अथवा व्याघात विना (आंतरा विना) जघन्योत्कृष्ट अंतर केटलुं होय ? ते कहे छेः—

तारस्स य तारस्स य. जंबुद्दीवंमि अंतरं गुरुयं ॥
बारस जोयण सहस्सा. दुन्निसया चेव बायाला ॥७०॥

अर्थः—(जंबुद्दीवंमि) के० जंबूद्वीपने विषे तारस्स य तारस्स य) के० एक ताराथी बीजा तारानुं (गुरुयं अंतरं) के० उत्कृष्ट अंतर (बारस जोयण सहस्सा) के० बार हजार योजन, (दुन्नि सया) के० बसो योजन अने (बायाला) के० बेंतालीश योजन अर्थात् (१२२४२) योजन (चेव) के० निश्चे होय छे. आ अंतर मेरु पर्वतना व्याघातथी एटले आंतराथी जाणवुं. कारण मेरु पर्वत समभूतलानी नीचे दश हजार योजन जाडो छे, तथा मेरुने अने एक बाजुना ताराने अगीयारसो एकवीश योजननुं अंतर छे. अने बीजी बाजुए पण मेरुने अने ताराने तेटलुंज अंतर छे, ए त्रण अंतरनी संख्याने एकठी करीये तो एक ताराथी बीजा तारानुं उत्कृष्ट अंतर (१२२४२) योजन थाय छे. ॥ ७० ॥

हवे मेरु पर्वत विना बीजा पर्वतोनां आंतरे अथवा आंतरा विना तारा तथा नक्षत्रोनुं जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतर कहे छेः—

निसढो य नीलवंतो, चत्तारिस उच्च पंच सय कूडा ॥
अद्धं उवरि सिहा, चरंति उभय ट्ठ बाहाए ॥ ७१ ॥

अर्थः—(निसढो य नीलवंतो) के० निषध अने नीलवंत ए बन्ने पर्वत (चत्तारि सय उच्च) के० भूमिथी चारसो योजन उंचा छे अने ते पर्वतनां (पंच सय) के० पांचसो योजन उंचा (कूडा) के० नव नव कूट एटले शिखरो छे. ते कूटो (उवरि) के० उपरना भागे (अद्ध) के० अढीसो योजन पहोळा छे. पर्वत अने शिखरनुं मळी नवसो योजन उंचपणुं थयुं. ते कूटना (उभय) के० बन्ने बाजुए (अट्ठ) के० आठ योजननी (अबाहाए) के० अबाधाए (सिहा) के० नक्षत्रो (चरंति) के० फरे छे. एटले के—अढीसो योजन शिखरनी पहोळाइ तथा बन्ने बाजुए आठ योजननी अबाधा मळीने—॥ ७१ ॥

छावट्ठा दुन्निसया, जहन्नमेयं तु होइ बाघाए ॥
निव्वाघाए गुरुलहु, दो गाउ य धणुसया पंच ॥ ७२ ॥

अर्थः—(छावट्ठा दुन्निसया) के० बसो ने छासठ योजन (एयं) के० ए (जहन्न) के० जघन्यथी तारा ताराने तथा नक्षत्र नक्षत्रने (बाघाए) के० पर्वतादिकना व्याघाते एटले आंतरे अंतर छे. अने (निव्वाघाए) के० पर्वतादिकना आंतरा विना नो (गुरु) के० उत्कृष्ट अंतर (दो गाउ) के० बे गाउनुं छे, (य) के० अने (लहु) के० जघन्य अंतर (धणुसया पंच) के० पांचसो धनुष्यनुं छे ॥ ७२ ॥

हवे मनुष्य क्षेत्रनी बहार घंटाकारे स्थिर रहेला चन्द्र सूर्यनुं मांहोमांहे अंतरप्रमाण कहे छेः—

माणुसनगाओ बाहिं, चंदा सूरस्स सूर चंदस्स ॥
जोयण सहस्स पन्नास, णूणगा अंतरं दिट्ठं ॥ ७३ ॥

अर्थः—(माणुस नगाओ) के० मनुष्यक्षेत्रनी मर्यादा रूप मानुषोत्तर पर्वतथी (बाहिं) के० बहार (चंदा) के० चन्द्रथी (सूरस्स) के० सूर्यनुं अने (सूर) के० सूर्यथी (चंदस्स) के० चन्द्रनुं (जोयण सहस्स पन्नास) के० पचाश हजार योजननुं (अणूणगा) के० परिपूर्ण (अंतरं) के० अंतर (दिट्ठं) के० तीर्थकरोए कह्युं छे. ॥ ७३ ॥

उपरनी गाथामां सूर्यथी चन्द्रनुं अने चन्द्रथी सूर्यनुं अंतर कह्युं हवे सूर्यथी सूर्यनुं अने चन्द्र थी चन्द्रनुं अंतर कहे छेः—

ससि ससि रवि रवि साहिय, जोयण लक्खेण अंतरं होइ ॥
रवि अंतरिया ससिणो, ससि अंतरिया रवी दित्ता ॥७४॥

अर्थः—(ससि ससि) के० एक चन्द्रथी बीजा चन्द्रनुं अने (रवि रवि) के० एक सूर्यथी बीजा सूर्यनुं (साहिय जोयण लक्खेण) के० एक लाख योजन अधिक अंतरं (होइ) के० अंतर होय छे. कारण के (रवि अंतरिया ससिणो) के० सूर्य सूर्यने आंतरे चन्द्र छे. अने (ससि अंतरिया रवी) के० चंद्र चंद्रने आंतरे सूर्य (दित्ता) के० प्रकाशे छे. अर्थात् एक चन्द्रथी बीजा चन्द्रनुं अंतर एक लाख योजन उपर सूर्यना मंडल जेटलुं एटले एक योजनना एकसठीया अडतालीश भाग जेटलुं छे अने एक सूर्यथी बीजा सूर्यनुं अंतर एक लाख योजन तथा एक योजनना एकसठीया छप्पन्न भाग जेटलुं छे. ॥ ७४ ॥

वहिया मणुसुत्तरओ, चंदा सूरा अवट्ठिअज्जोया ॥
चन्दा अभिइजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ७५ ॥

अर्थः—(मणुसुत्तरओ) के० मानुषोत्तर पर्वतथकी (वहिया) के० बहार (चन्दा सूरा) के० चंद्र अने सूर्य (अवट्ठिअज्जोया) के० निश्चल रह्या छता प्रकाश करे छे. तेमां (चंदा) के० चंद्र (अभिइजुत्ता) अभिजित् नक्षत्र युक्त छे. पुण के० वली (सूरा) के० सूर्य (पुस्सेहिं) के० पुष्य नक्षत्र युक्त (हुंति) के० होय छे. अहिं सूर्य सूर्यनी वच्चे चंद्र, अने चंद्र चंद्रनी वच्चे सूर्य होवाथी चंद्र बहु शीतलता करता नथी अने सूर्य बहु तपता नथी. ॥ ७५ ॥

सूक्ष्म अने बादर एवा भेदथी उद्धार सागरोपम वे प्रकारनो छे.

जं जोयणविच्छिन्नं, तं तीउणं परिरयणमविसेसं ॥
तावइयं उव्विद्धं, पल्लि पलिओवमं नाम ॥ ७६ ॥

अर्थः—(जं जोयणविच्छिन्नं) के० जे एक योजन विस्तारवालो, (तं तीउणं परिरयणमविसेसं) के० ते त्रणगुणाथी अधिक परिधि सहित, (तावइयं उव्विद्धं) के० तेटलो एटले एक योजन उंडो (पल्लि) के० पालो अर्थात् कुवो तेनुं (पलिओवमं) नाम के० पल्योपम नाम कहेवाय. कारण एथी पल्योपमनु प्रमाण थाय छे माटे. ॥ ७६ ॥

एगाहिय वेहीया, तेहीयाण उक्कोस सत्तरत्ताणं ॥
समगं स निचियं, भरियं वालग्गकोडिणं ॥ ७७ ॥

अर्थः—(एगाहिय) के० एक दिवसना, (वेहीया) के० वे दिवसना, (तेहीयाण) के० त्रण दिवसना, एम उक्कोस (सत्तरत्ताणं) के० उत्कृष्टथी सात दिवस सुधीना येहना (वालग्ग-

कोडिणं) के० एक उत्सेधांगुल प्रमाण वालना (२०९७१५२ ककडा थाय, एवा ककडाथी (स) के० ते पालो (समग्गं के० सघलो (निचिय) के० ठांसी ठांसीने (भरियं) के० भरवो. ॥ ७७ ॥

तत्तो समए समए, इक्किके अवहिंयंमि जो कालो॥
संखिज्जा खलु समया, बायर उद्धार पलियंमि ॥ ७८ ॥

अर्थः—(तत्तो) के० त्यार पछी ते कूवामांथी (समए समए) के० एक एक समये (इक्किके) एक एक वालाग्र (अवहियंमि) के० काढवो. एम करतां (जो कालो) के० जेटलो काल कूवो खालो करतां थाय. तेमां (संखिज्जा समया) के० संख्याता समय (खलु) के० निश्चे थाय छे. ते (बायर उद्धारपलियंमि), के० बादर उद्धार पल्योपम कहेवाय. ॥ ७८ ॥

इक्किकमओ लोमं, कट्टुमसंखिज्जखंडमद्दीसं ॥
समच्छेयाणतयए, सियागपल्लं भरिज्जाहिं ॥७९॥

अर्थः—(अओ) के० त्यारपछी (इक्किकं लोमं) के० पूर्वे कहेला (२०९७१५२) लोमखंड मांहेला एकेक लोमखंडना (अद्दीसं) के० मनकल्पीन अदृश्य (असंखिज्जखंडं कट्टु) के० असंख्याता ककडा करीने (समच्छेयाणतयए) के० शिलाग्र सहित (सियाणपल्लं) के० शिलाकपल्यने (भरिज्जाहिं) के० भरवो. ॥ ७९ ॥

तत्तो समए समए, इक्किके अवहियंमि जो कालो ॥
संखिज्जवासकोडी सुहुमे उद्धारपलीयंमि ॥८०॥

बहिया मणुसुत्तरओ, चंदा सूरा अवट्ठिउज्जोया ॥
चन्दा अभिइजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ७५ ॥

अर्थः—(मणुसुत्तरओ) के० मानुषोत्तर पर्वतथकी (बहिया) के० बहार (चन्दा सूरा) के० चंद्र अने सूर्य (अवट्ठिउज्जोया) के० निश्चल रह्या छता प्रकाश करे छे. तेमां (चंदा) के० चंद्र (अभिइजुत्ता) अभिजित् नक्षत्र युक्त छे. पुण के० वली (सूरा) के० सूर्य (पुस्सेहिं) के० पुष्य नक्षत्र युक्त (हुंति) के० होय छे. अहिं सूर्य सूर्यनी वच्चे चंद्र, अने चंद्र चंद्रनी वच्चे सूर्य होवाथी चंद्र बहु शीतलता करता नथी अने सूर्य बहु तपता नथी. ॥ ७५ ॥

सूक्ष्म अने बादर एवा भेदथी उद्धार सागरोपम बे प्रकारनो छे.

जं जोयणविच्छिन्नं, तं तीउणं परिरयणसविसेसं ॥
तावइयं उव्विद्धं, पल्लि पलिओवमं नाम ॥ ७६ ॥

अर्थः—(जं जोयणविच्छिन्नं) के० जे एक योजन विस्तारवालो, (तंतीउणं परिरयणसविसेसं) के० ते त्रणगुणाथी अधिक परिधि सहित, (तावइयं उव्विद्धं) के० तेटलो एटले एक योजन उंडो (पल्लि) के० पालो अर्थात् कुवो तेनुं (पलिओवमं) नाम के० पल्योपम नाम कहेवाय. कारण एथी पल्योपमनु प्रमाण थाय छे माटे. ॥ ७६ ॥

एगाहिय बेहीया, तेहीयाण उक्कोस सत्तरत्ताणं ॥
समग्गं स निचियं, भरियं वालग्गकोडिणं ॥ ७७ ॥

अर्थः—(एगाहिय) के० एक दिवसना, (बेहीया) के० बे दिवसना, (तेहीयाण) के० त्रण दिवसना, एम उक्कोस (सत्तरत्ताणं) के० उत्कृष्टथी सात दिवस सुधीना बेटाना (वालग्ग-

कोडिणं) के० एक उत्सेधांगुल प्रमाण वालना (२०९७१५२ ककडा थाय, एवा ककडाथी (स) के० ते पालो (समग्गं के० सघलो (निचिय) के० ठांसी ठांसीने (भरियं) के० भरवो. ॥ ७७ ॥

तत्तो समए समए, इक्किके अवहिरंमि जो कालो॥
संखिज्जा खलु समया, बायर उद्धार पलियंमि ॥७८॥

अर्थः—(तत्तो) के० त्यार पछी ते कूवामांथी (समए समए) के० एक एक समये (इक्किके) एक एक वालाग्र (अवहिंयंमि) के० काढवो. एम करतां (जो कालो) के० जेटलो काल कूवो खाली करतां थाय. तेमां (संखिज्जा समया) के० संख्याता समय (खलु) के० निश्चे थाय छे. ते (बायर उद्धारपलियंमि) के० बादर उद्धार पल्योपम कहेवाय. ॥ ७८ ॥

इक्कीक्कमओ लोमं, कट्टुमसंखिज्जखंडमद्दीसं ॥
समच्छेयाणतयए, सियागपल्लं भरिज्जाहिं ॥७९॥

अर्थः—(अओ) के० त्यारपछी (इक्किकं लोमं) के० पूर्व कहेला (२०९७१५२) लोमखंड मांहेला एकेक लोमखंडना (अद्दीसं) के० मनकल्पीत अदृश्य (असंखिज्जखंडं कट्टु) के० असंख्याता ककडा करीने (समच्छेयाणतयए) के० सिलाग्र सहित (सियाणपल्लं) के० शिलाकपल्यने (भरिज्जाहिं) के० भरवो. ॥ ७९ ॥

तत्तो समए समए, इक्किके अवहिंयंमि जो कालो ॥
संखिज्जवासकोडी सुहुमे उद्धारपलीयंमि ॥८०॥

बहिया मणुसुत्तरओ, चंदा सूरा अवट्ठिअजोगा ॥
चन्दा अभिइजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ७५ ॥

अर्थः—(मणुसुत्तरओ) के० मानुषोत्तर पर्वतथकी (बहिया) के० बहार (चन्दा सूरा) के० चंद्र अने सूर्य (अवट्ठिअजोगा) के० स्थिर रह्या छता प्रकाश करे छे. तेमां (चंदा) के० चंद्र (अभिइजुत्ता) अभिजित नक्षत्र युक्त छे. पुण के० वळी (सूरा) के० सूर्य (पुस्सेहिं) के० पुष्य नक्षत्र युक्त (हुंति) के० होय छे. अहिं सूर्य सूर्यनी वर्ग नहि, अने चंद्र चंद्रनी वर्ग सूर्य होवाथी चंद्र बहु शीतलता करता नथी अने सूर्य बहु तपता नथी. ॥ ७५ ॥

मनुष्य अने बाहर एवा मेरुथी उद्धार सागरोपम बे प्रकारनो छे.

जं जोयणविच्छिन्नं, तं तीउणं परिरयणमविसेसं ॥
तावइयं उव्विद्धं, पल्लि पलिओवमं नाम ॥ ७६ ॥

अर्थः—(जं जोयणविच्छिन्नं) के० जे एक योजन विस्तारवाळो, (तं तीउणं परिरयणमविसेसं) के० ते त्रणगुणाथी अधिक परिधि सहित, (तावइयं उव्विद्धं) के० तेटलो एटले एक योजन ऊंडो (पल्लि) के० पालो अर्थात् कुवो तेनुं (पलिओवमं) नाम के० पल्योपम नाम कहेवाय. कारण एवी पल्योपमनुं प्रमाण थाय छे माटे. ॥ ७६ ॥

एगाहिय बेहीया, तेहीयाण उक्कोस सत्तरत्ताणं ॥
समग्गं स निचियं, भरियं वालग्गकोडिणं ॥ ७७ ॥

अर्थः—(एगाहिय) के० एक दिवसना, (बेहीया) के० बे दिवसना, (तेहीयाण) के० त्रण दिवसना, एम उक्कोस (सत्तरत्ताणं) के० उत्कृष्टथी सात दिवस सुधीना घेटाना (वालग्ग-

कोडिर्ण) के० एक उत्सेधांगुल प्रमाण वालना (२०९७१५२ ककडा थाय, एवा ककडाथी (स) के० ते पालो (समग्गं के० सघलो (निचिय) के० ठांसी ठांसीने (भरियं) के० भरवो. ॥ ७७ ॥

तत्तो समए समए, इक्किके अवहियंमि जो कालो॥
संखिज्जा खलु समया, बायर उद्धार पलियंमि ॥ ७८॥

अर्थः—(तत्तो) के० त्यार पछी ते कूवामांथी (समए समए) के० एक एक समये (इक्किके) एक एक वालाग्र (अवहियंमि) के० काढवो. एम करतां (जो कालो) के० जेटलो काल कूवो खाली करतां थाय. तेमां (संखिज्जा समया) के० संख्याता समय (खलु) के० निश्चे थाय छे. ते (बायर उद्धारपलियंमि) के० बादर उद्धार पल्योपम कहेवाय. ॥ ७८ ॥

इक्कीकमओ लोमं, कट्टुमसंखिज्जखंडमद्दीसं ॥
समच्छेयाणतयए, सियागपल्लं भरिज्जाहिं ॥७९॥

अर्थः—(अओ) के० त्यारपछी (इक्किकं लोमं) के० पूर्व कहेला (२०९७१५२) लोमखंड मांहेला एकेक लोमखंडना (अद्दीस) के० मनकल्पीत अदृश्य (असंखिज्जखंडं कट्टु) के० असंख्याता ककडा करीने (समच्छेयाणतयए) के० शिखाग्र सहित (सियाणपल्लं) के० सिखाकपन्यने (भरिज्जाहिं) के० भरवो. ॥ ७९ ॥

तत्तो समए समए, इक्किके अवहियंमि जो कालो ॥
संखिज्जवासकोडी सुहुमे उद्धारपलीयंमि ॥८०॥

बहिया मणुसुत्तराओ, चंदा सूरा अवट्ठिअजोगा ॥
चन्दा अभिइजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ७५ ॥

अर्थः—(मणुसुत्तराओ) के० मानुषोत्तर पर्वतथकी (बहिया) के० बहार (चन्दा सूरा) के० चंद्र अने सूर्य (अवट्ठिअजोगा) के० निश्चल रह्या छता प्रकाश करे छे. तेमां (चंदा) के० चंद्र (अभिइजुत्ता) अभिजित नक्षत्र युक्त छे. पुण के० वळी (सूरा) के० सूर्य (पुस्सेहिं) के० पुष्य नक्षत्र युक्त (हुंति) के० होय छे. अहिं सूर्य सूर्यनी वच्चे चंद्र, अने चंद्र चंद्रनी वच्चे सूर्य होवाथी चंद्र बहु शीतलता करता नथी अने सूर्य बहु तपता नथी. ॥ ७५ ॥

सूक्ष्म अने बादर एवा भेदथी उद्धार सागरोपम बे प्रकारनो छे.

जं जोयणविच्छिन्नं, तं तीउणं परिरयणमविसेसं ॥
तावइयं उव्विद्धं, पल्लि पलिओवमं नाम ॥ ७६ ॥

अर्थः—(जं जोयणविच्छिन्नं) के० जे एक योजन विस्तारवालो, (तं तीउणं परिरयणमविसेसं) के० ते त्रणगुणाथी अधिक परिधि सहित, (तावइयं उव्विद्धं) के० तेटलो एटले एक योजन ऊंडो (पल्लि) के० पालो अर्थात् कुवो तेनुं (पलिओवमं) नाम के० पल्योपम नाम कहेवाय. कारण एथी पल्योपमनु प्रमाण थाय छे माटे. ॥ ७६ ॥

एगाहिय वेहीया, तेहीयाण उक्कोस सत्तरत्ताणं ॥
समग्गं स निचियं, भरियं वालग्गकोडिणं ॥ ७७ ॥

अर्थः—(एगाहिय) के० एक दिवसना, (वेहीया) के० बे दिवसना, (तेहीयाण) के० त्रण दिवसना, एम उक्कोस (सत्तरत्ताणं) के० उत्कृष्टथी सात दिवस सुधीना घेटाना (वालग-

कोडिणं) के० एक उत्सेधांगुल प्रमाण वालना (२०९७१५२ ककडा थाय. एवा ककडाथी (स) के० ते पालो (समग्गं के० समस्तो (निचिय) के० ठांसी ठांसीने (भरियं) के० भरवो. ॥ ७७ ॥

तत्तो समए समए, इक्किके अवहिंयंमि जो कालो॥
संखिज्जा खलु समया, बायर उद्धार पलियंमि ॥७८॥

अर्थः—(तत्तो) के० त्यार पछी ते कूवामांथी (समए समए) के० एक एक समये (इक्किके) एक एक वालाग्र (अवहियंमि) के० काढवो. एम करतां (जो कालो) के० जेटलो काल कूवो खालो करतां थाय. तेमां (संखिज्जा समया) के० संख्याता समय (खलु) के० निश्चे थाय छे. ते (बायर उद्धारपलियंमि) के० बादर उद्धार पल्योपम कहेवाय. ॥ ७८ ॥

इक्किकमओ लोमं, कट्टुमसंखिज्जखंडमद्दीसं ॥
समच्छेयाणतयए, सियागपल्लं भरिज्जाहिं ॥७९॥

अर्थः—(अओ) के० त्यारपछी (इक्किकं लोमं) के० पूर्व कहेला (२०९७१५२) लोमखंड मांहेला एकेक लोमखंडना (अद्दीसं) के० मनकल्पीत अदृश्य (असंखिज्जखंड कट्टु) के० असंख्याता ककडा करीने (समच्छेयाणतयए) के० शिखाग्र सहित (सियाणपल्लं) के० शिलाकपल्यने (भरिज्जाहिं) के० भरवो. ॥ ७९ ॥

तत्तो समए समए, इक्किके अवहियंमि जो कालो ॥
संखिज्जवासकोडी सुहुमे उद्धारपलीयंमि ॥८०॥

अर्थः—(तत्तो) के० त्यार पछी (समए समए) के० एक एक समये (इक्किके) के० एक एक रोमखंड काढतां (जो काल्यो) के० जेटले काले (अवहियंमि) के० ते पल्य खाली थाय. तेमां (संखिज्जवासकोडी) के० संख्याना वर्षकोटि थाय. ते (सुहुमे उद्धारपल्लियंमि) के० सूक्ष्म उद्धार पल्योपम कहेवाय. ॥ ८० ॥

जावइया उद्धार, अड्ढाइज्जाण सागराण भवे
तावइया खलु लोए, एवं दिवा समुद्दाय ॥८१॥

अर्थः—(अड्ढाइज्जाण) के० अढी (उद्धार सागराण) के० उद्धार सागरोपमना (जावइया) के० जेटला समय (भवे) के० थाय. (तावइया) के० तेटला (लोए) के० लोकने विषे (एवं) के० ए प्रमाणे (दीवा) के० द्वीप (य) के० अने (समुद्दा) के० समुद्र (खलु) के० निश्चे जाणवा. ॥ ८१ ॥

उध्धारसागर दुगे सढे समएहिं तुलदीवुदहि
दुगुणादुगण पवित्थर, वलयागारा पढमवज्जं ॥८२॥

अर्थः—(उद्धारसागर) के० उद्धार सागरोपम ते (दुगे सढे) के० अढी एटले अढी उद्धारसागरोपमना जेटला (समएहिं) के० समय थाय तेहने (तुल्ल) के० बराबर अर्थात् तेटला (दीवुदहि) के० द्वीप अने समुद्र छे. तेमां (पढमवज्ज) के० पहेला जंबुद्वीपने वर्जीने बाकीना सर्वे (दुगुणादुगुणपवित्थर) के० एक बीजाथी बमणा विस्तारवाला अने (वलयागारा) के० वलय एटले चूडीना आकारे छे. अने प्रथमना जंबूद्वीप वृत्ताकारे छे. ॥ ८२ ॥

अहीं प्रस्तावे छ प्रकारना पल्योपम अने ६ प्रकारना सागरोपमनुं स्वरूप जणावे छे ते आ प्रमाणेः—

१ सात वार आठ आठ खण्ड करीने भरेला घनवृत कुवा-मांथी एकेक समये एकेक स्थूल वालाग्र काढता जेटलो काळ लागे तेटलो काळ बादर उद्धार पल्योपम. अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे एक बादर उद्धार सागरोपम थाय.

२ प्रथम भरेला संख्यात रोम खण्डमांथी दरेक रोमखण्डना पुनः असंख्य असंख्य रोमखण्ड करीए ते सूक्ष्म रोमखण्ड कहेवाय एवा सूक्ष्म रोमखण्डथी भरेला ते घनवृत्त कुवामांथी एकेक समये एकेक वालाग्र काढतां जेटले काळे ते कुवो खाली थाय तेटलो काळ सूक्ष्म उद्धार पल्योपम, अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे एक सूक्ष्म उद्धार सागरोपम थाय.

३ स्थूल वालाग्रथी भरेला कूवामांथी दर सो सो वर्षे एकेक स्थूल वालाग्र काढतां जेटलो काळ लागे तेटलो काळ बादर अद्धा पल्योपम अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे एक बादर अद्धा सागरोपम.

४ सूक्ष्म वालाग्रथी भरेला कूवामांथी दर सो सो वर्षे एकेक सूक्ष्म वालाग्र काढतां जेटलो काळ लागे तेटलो काळ सूक्ष्म अद्धा पल्योपम अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे १ सूक्ष्म अद्धा सागरोपम.

५ स्थूल वालाग्रथी भरेला कूवामां जेटला आकाश प्रदेशो स्थूल वालाग्रोने स्पर्शेला छे तेमांथी दरेक स्पर्शेला आकाश प्रदेशने एकेक समये काढतां जेटलो काळ लागे तेटलो काळ बादर क्षेत्र पल्योपम, अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे १ बादर क्षेत्र सागरोपम.

६ सूक्ष्म रोमखण्डथी भरेला कूवामांथी ते सूक्ष्म रोमखण्डोने स्पर्शेला अने नहि स्पर्शेला आकाश प्रदेशोने एकेक समये काढतां

जेटलो काळ लागे तेटलो काळ सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम, अने एवा १० कोडाकोडि पल्योपमे १ सूक्ष्म क्षेत्र सागरोपम.

पढमो जोयणलक्खं, वट्टो तं वेढिउं ठिया सेसा
पढमो जंबुदीवो, सयंभूरमणोदही चरमो ॥८३॥

अर्थः—(पढमो) के० पहेलो जंबुद्वीप (वट्टो) के० थालीनी पेठे गोळ आकारे (जोयणलक्खं) के० एक लाख योजननो छे. अने (तं) के० ते जंबुद्वीपने (वेढिउं) के० वींटीने (सेसा) के० बीजा सर्वे द्वीपो (ठिया) के० रह्या छे. (पढमो) के० सर्वथी पहेलो (जंबुदीवो) के० जंबुवृक्षथी प्रसिद्ध थयेलो जंबुद्वीप छे, अने (चरमो) के० सर्वथी छेल्लो (सयंभूरमणोदही) के० स्वयंभूरमण नामनो समुद्र छे. ॥ ८३ ॥

हवे केटलाक द्वीप अने समुद्रनां नाम कहे छेः—

जंबु धायइ पुक्खर, वारुणिवर खीर घय खोय नंदिसरा ॥
अरुण रुणवाय कुंडल, संख रुयग भुयग कुस कुंचा ॥८४॥

अर्थः—१ (जंबु) के० जंबुद्वीप, २ धायइ) के० धातकीखंड द्वीप, ३ (पुक्खर) के० पुष्करवर द्वीप, ४ (वारुणिवर) के० वारुणिवर द्वीप, ५ (खीर) के० क्षीरवर द्वीप, ६ (घय) के० घृतवर द्वीप, ७ (खोय) के० इक्षुवर द्वीप, ८ (नंदिसरा) के० नन्दीश्वर द्वीप, ९ (अरुण) के० अरुण द्वीप, १० (अरुणवाय) के० (अरुणोपपात) द्वीप, ११ (कुंडल) के० कुंडल द्वीप, १२ (संख) के० शंख द्वीप, १३ (रुयग) के० रुचक द्वीप, १४ (भुयग) के० भुयंग द्वीप, १५ (कुस) के० कुसद्वीप, १६ (कुंचा) के० क्रौंच द्वीप. ॥ ८४ ॥

हवे सर्व द्वीप एकेक समुद्रथी वींटया छे ते समुद्रोनां नाम कहे छे:—

पढमे लवणो जलहि, बीए कालो य पुक्खराइसु ॥
दीवेसु हुंति जलहि, दीवसमाणेहिं नामेहिं ॥८५॥

अर्थः—(पढमे) के० पहेलो (लवणो जलहि) के० लवण नामनो समुद्र छे, (बीए) के० बीजो कालो के० कालोदधि नामनो समुद्र छे. (य) के० अने (पुक्खराइसु) के० त्रीजा पुष्करवर समुद्रथी मांडीने (दीवेसु) के० सर्व द्वीपने विषे (दीवसमाणेहिं नामेहिं) के० द्वीपना सरखा नामवाला (जलहि) के० समुद्रो (हुंति) के० होय छे. जेम वारुणिवर द्वीप अने वारुणिवर समुद्र. ए प्रमाणे बीजा पण जाणवा. ॥ ८५ ॥

ए सर्वे द्वीप समुद्र वलयाकार जगतीथी वींटायला छे. जगती आठ योजन उंची छे. मूलमां बार योजन पहोली, पछी प्रदेशे प्रदेशे हीन थतां उपर चार योजन पहोली छे. ते उपर बे गाउ अने पांचसो धनुष्य उंची पद्मवर वेदिका छे. ते उपर वन छे.

हवे लवण समुद्रना चार द्वारनुं परस्पर अंतर कहे छे.

दुन्नि सया य असिया, पणनउइ सहस्स तिन्नि
लक्खा य ॥
कोसो अंतर लवणे, दारस्स दाराओ विन्नेया ॥ ८६ ॥

अर्थः—(तिन्नि लक्खा य) के० त्रण लाख, (पणनउइ सहस्स) के० पंचाणु हजार, (दुन्नि सया) के० बसो, (य) के० अने (असिया) के० एंशी एटला योजन, तथा (कोसो) के० एक गाउ उपर. एटलुं (लवणे) के० लवणसमुद्रमां (दारस्स

दाराणी) के० एक द्वारथी बीजा द्वार सुधीनुं (अंतर) के० अंतर (विरहिया) के० जाणवुं ॥ लवण समुद्रनो परिधि (१५८११३०.) योजनमां कांइक ओछो छे. अने लवण समुद्रनी चार दिशामां चार दरवाजा छे. ते दरेक दरवाजो चार चार योजन पहोलो छे. तेथी चार दरवाजाना सोल योजन थाय. अने दरेक दरवाजानी बन्ने बाजुए एक एक गाउना विस्तारवाली द्वारशाख प्रदेशनी भींत छे. तेथी चार दरवाजाना आठ द्वारशाख प्रदेशना बे योजन मेलवतां अढार योजन थाय, ते अढार योजन काढी नाखीने बाकीनी लवण समुद्रनी परिधिना चार भाग करतां (३९५२८०) योजन अने एक गाउ एटलुं द्वार द्वारनुं अंतर थाय. ॥ ८६ ॥

हवे मोटा पाताल कलशानुं स्वरूप अने तेनी संख्या कहे छेः–

जोयण सहस्स दसगं, मूले उवरि य हुंति विच्छीण्णा ॥
मज्झे य सय सहस्सं, तीत्तियमित्तं च उगाढा ॥ ८७ ॥

अर्थः—लवण समुद्रनी चारे दिशामां पूर्व दिशाथी आरंभीने १ वडवामुख, २ केयूप, ३ यूप, अने ४ ईश्वर ए नामना अने एक हजार योजननी जाडी ठीकरीवाला चार मोटा पातालकलशा छे. ते कलशा (मूले) के० नीचे मूलमां (य) के० अने (उवरि) के० उपर मुख आगल (जोयण सहस्स दसगं) के० दश हजार योजन (विच्छीण्णा) के० विस्तारवाला हुंति के० छे. (य) के० अने (मज्झ) के० मध्यभागने विषे (सय सहस्सं) के० एक लाख योजन विस्तारवाला छे. (च) के० वली तित्तियमित्तं के० तेटलाज एटले एक लाख योजन (उगाढा) के० पृथ्वीमां उंडा छे. ॥ ८७ ॥

हवे नाना पाताल कलशानुं स्वरूप अने तेनी संख्या कहे छे:-

जोयण सयविच्छिण्णा, मूले उवरि दससयाण मज्झमि ।
उगाढा य सहस्सं, दसजोयण वायसि तुंडा ॥ ८८ ॥

अन्ने लहुपायाला, खुड्डालिं जरगसंठिया लवणे
अट्ठसया चूलसीया, सत्त सहस्सा य सव्वेवि ॥ ८९ ॥

अर्थः—(मूले) के० मूलमां नीचे अने (उवरि) के० उपर (जोयणसय विच्छिण्णा) के० सो योजन विस्तारवाला, (मज्झमि) के० मध्य भागमां (दससयाण) के० दश हजार योजन विस्तारवाला, (य) के० अने (सहस्सं) के० एक हजार योजन (उगाढा) के० उंडा, तथा (दस जोयण) के० दस योजन (वायसि तुंडा) के० जाडी ठीकरीवाला-॥ ८८ ॥ एवा (अन्ने लहु पायाला) के० बीजा नाना पाताल कलशा तेनी (खुड्डालि) के० नानी नव पंक्ति ते (जरग संठिया) के० गरवाने आकारे (लवणे) के० लवण समुद्रमां रही छे. मोटा चार पाताल कलशानी बचमां बचमां नाना पाताल कलशानी नव पंक्तिओ छे. पहेली पंक्तिमां (२१५) कलशा छे, बीजी पंक्तिमां (२१६) कलशा छे. एम वधतां वधतां नवमी पंक्तिमां (२२३) कलशा छे. एक भागना सर्व मलीने (१९७१) कलशा छे. चारे भागना एकठा गणतां (७८८४) कलशा थाय छे. ॥ ८९ ॥

पायाला लवण विभागे, सव्वाण वि तिन्नि
भाग विन्नेया ॥
हेट्ठीमभागे वाऊ, मज्झे वाऊ य उदगं च ॥ ९० ॥

अर्थः—(लवण) के० लवण समुद्रमां (पायाला) के० पाताल कलशाना नाना अने मोटा एवा (विभागे) के० बे भाग छे. ते (सव्वाणावि) के० सर्व कलशाना एक एकना (तिभि भाग) के० त्रण भाग (विन्नेया) के० जाणवा. तेमां (हेट्ठीम-भागे) के० नीचेना भागमां (वाऊ) के० वायु छे. (मज्झे) के० मध्यना भागमां (वाऊ) के० वायु (य) के० अने (उदगं) के० पाणी भेगुं छे. तथा उपरना भागमां पाणीज छे. ॥ ९० ॥

हवे बीजा द्वीप समुद्रोनां केवां केवां नाम छे ? ते कहे छेः—

आभरण वत्थ गंधे, उप्पल तिलए य पउम निहि रयणे,
वासहर दह नईओ, विजया वक्खार कप्पिंदा ॥ ९१ ॥
कुरु मंदर आवासा, कुडा नक्खत्त चन्द सूरा य
अन्नेवि एवमाई, पसत्थवत्थूण जे नामा ॥ ९२ ॥

अर्थः—(आभरण) के० हार विगेरे आभूषण, (वत्थ) के० वस्त्र, (गंध) के० कस्तुरी वगेरे सुगंधिवस्तु, (उप्पल) के० चन्द्रविकाशी कमल, (तिलए य) के० वृक्ष तिलक अथवा तिलक-वृक्ष, (पउम) के० शतपत्र पुंडरिकादिक सूर्यविकाशी कमल, (निहि) के० महापद्मादि नव निधि, (रयणे) के० कर्केतनादि रत्न. (वासहर) के० हिमवंतादिक वर्षधर पर्वत, (दह) के० पद्मादिक द्रह, (नईआ) के० गंगा विगेरे नदीओ, (विजया) के० कच्छादिक विजय, (वक्खार) के० माल्यवंत विगेरे वक्षस्कार पर्वत, (कप्प) के० सौधर्मादिक देवलोक, (इंदा) के० शक्रेंद्र विगेरे इंद्रो ॥ ९१ ॥ (कुरु) के० देवकुरु उत्तरकुरु (मंदर) के० मेरु पर्वत, (आवासा) के० इन्द्रादिकना निवासभुवन, (कूडा) के० कूटपर्वत, (नक्खत्त) के० कृत्तिकादि नक्षत्र, (चन्द) के०

चन्द्र, अने सूरा य के० सूर्य, (एवमाई) के० ए विगेरे (अंतवि) के० वीजो पण पसत्थवत्थुग के० श्रेष्ट वस्तुनां (जे नामा) के० जे नामो छे. ॥ ९२ ॥

तन्नामा दीवुदही. तिपडायायार हुति अरुणाई
जंबुलवणाईया. पत्तेयं ते असंखिज्जा ॥ ९३ ॥
तागंतिम सूरवरा–वभासजलही परंतु इक्किका
देवे नागे जक्खे. भूए य सयंभूरमणे य ॥ ९४ ॥

अर्थः—(तन्नामा) के० ते नामना (दीवुदही) के० द्वीप अने समुद्र छे. तेमां अरुणाई के० अरुण द्वीपथी आरंभीने सर्व द्वीप समुद्र (तिपडायायार) के० त्रिप्रत्यावतार एटले त्रण द्वीप-समुद्रना एक सरखा नाम (हुति) के० छे. तेमज आभरणादिक वस्तुनां नामवाळा सर्व द्वीपसमुद्र त्रिप्रत्ययावतार होय छे. जेमके अरुण द्वीप, अरुणसमुद्र, अरुणवरद्वीप, अरुणवरसमुद्र, अरुण-वरावभास द्वीप, अरुणवरावभास समुद्र. हार द्वीप, हार समुद्र, हारवर द्वीप, हारवर समुद्र, हारवरावभास द्वीप, हारवरावभास समुद्र विगेरे. वळी (जंबूलवणाईया) के० जंबूद्वीप अने लवण समुद्र विगेरे जे (पत्तेय) के० दरेक द्वीप समुद्र छे. (ते) के० ते नामना पण (असंखिज्जा) के० असंख्याता द्वीप समुद्रो छे. ॥ ९३ ॥ (तागंतिम) के० तेमां छेल्लो (सूरवरावभास) के० सूर्यवरावभास नामना समुद्र छे, त्यांसुधी त्रिप्रत्ययावतार जाणवा. (परं तु) के० अने त्यांथी आगळ तो छेल्ला (देवे) के० देव द्वीप अने देव समुद्र, (नागे) के० नाग द्वीप अने नाग समुद्र, (जक्खे) के० यक्ष द्वीप अने यक्ष समुद्र, (भूए य) के० वळी भूत द्वीप अने भूत समुद्र, तथा (सयंभूरमणे य) के० स्वयंभूरमण द्वीप

अने स्वयंभूरमण समुद्र ए पांच द्वीपसमुद्रो (इक्किका) के० एक एक छे. ते त्रिप्रत्ययावतार नथी ॥ ९४ ॥

हवे सर्व समुद्रोनां पाणी विषेरंनुं विशेष स्वरूप कहेछे.

वारुणिवर खीर वरो, घयवर लवणो य हुंति भिन्नरसा ॥
कालो य पुक्खरोदहि, सयंभूरमणो य उदगरसा॥९५॥
इक्खुरस सेसजलही, लवणे कालो य चरिम बहुमच्छा ॥
पण सग दस जोयण सय,तणु कमा थोव सेसेसु॥९६॥

अर्थः—(वारुणिवर) के० वारुणिवर समुद्रनुं पाणी मदिरा-सरखुं, (खीरवरो) के० क्षीर समुद्रनुं पाणी दुध सरखुं, (घयवर) के० घृतवर समुद्रनुं पाणी गायना घी सरखुं, (य) के० अने (लवणो) के० लवण समुद्रनुं पाणी खारुं. एम ए चारे समुद्रो (भिन्नरसा) के० जूदा जूदा रसवाला (हुंति) के० छे. अर्थात् नाम सरखा पाणीना स्वादवाला छे. तेमज (कालो) य के० कालोदधि, (पुक्खर) के० (पुष्करवर य) के० अने (सयंभूरमणो) के० स्वयंभूरमण. ए त्रण (उदहि) के० समुद्रो (उदगरसा) के० वर्षादना पाणी जेवा स्वादवाला छे. ॥ ९५ ॥ (सेस जलहि) के० बाकीना नंदीश्वर समुद्रथी आरंभी भूतसमुद्र पर्यंतना सर्व समुद्रना पाणी(इक्खुरस) के० शेरडीना रस समान मीठ पाणीवाला छे. वली (लवण) के० लवणसमुद्र, (कालो) के० कालोदधि समुद्र, (य) के० अने (चरिम) के० स्वयंभूरमण समुद्र. ए त्रण समुद्रमां (बहुमच्छा) के० घणा माछलांनो जातो छे. अने ते माछलां (पण सग दस योजणसयतणु के० पांच सो, सात सो अने हजार योजनना शरीरवाला (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवा. अर्थात् लवण समुद्रमां उत्कृष्टा पांचसो योजनना, कालोदधिमां सात सो योज-

शने त्रण गुणा करता एक सो छत्रीश थाय, तेमां धातकीखंडना बार, लवण समुद्रना चार, अने जंबुद्वीपना बे. एमहार मेळवतां एकसो चुमालीश थाय, परंतु पुष्करवरद्वीपमां अर्धु मनुष्य क्षेत्र छे माटे (पुक्खरद्धंमि) के० अर्धा पुष्करवर द्वीपमां (बिसत्तरी) के० बहोंतेर बहोंतेर चंद्र सूर्य छे. बाकीना बहोंतेर चंद्र सुर्य समश्रेणीए नथी अने स्थीर छे माटे गण्या नथी. वळी पुष्करवर द्वीपना एक सो चुमालीशने त्रण गुणा करतां चार सो बत्रीश थाय, तेमां जंबुद्वीपना बे, लवण समुद्रना चार, धातकी खंडना बार, अने कालोदधीना बेंतालीश मेळवतां पुष्करवर समुद्र चारसो बाणु चंद्र अने चारसो बाणु सूर्य थाय छे. एज प्रमाणे आगळना द्वीप समुद्रने विषे पण [1]जाणवुं. ॥ ९८ ॥

हवे मनुष्य लोकमां पंक्तिने विषे चंद्र सुर्यनी संख्या कहे छे.

दो ससि दो रवि पंती, एगंतरिया छसठ्ठि संखाया ॥
मेरुं पयाहिगंता, माणुसखित्ते परिभमंति ॥ ९९ ॥

अर्थ—जंबुद्वीपमां (दो ससि) के० बे चंद्र अने (दो रवि) के० बे सूर्य तेमनी (पंती) के० पंक्ति एटले श्रेणि छे. ते पंक्ति (एगंतरिया) के० एक एकने आंतरे छे. एटले सूर्यनी पंक्तिने आंतरे चंद्रपंक्ति अने चंद्रपंक्तिने आंतरे सूर्यपंक्ति छे. अढी द्वीपरूप मनुष्य क्षेत्रमां एक पंक्तिने विषे छसठ्ठिसंखाया के० छासठ छासठ चंद्र सूर्य होय छे. तेथी ते चार पंक्ति छे. ते चारे पंक्तिओ (माणुसखित्ते) के० मनुष्य क्षेत्रने विषे (मेरुं पयाहिणंता) के०

---

१ ए संबंधमां मतांतर घणो छे, ते मोटा ग्रंथोथी जाणवा आ वास्तु प्रकरणमांज १०६-१०७ ने १०८ मी गाथा देखवाथी आ कारणनो मतांतर समजाय छे, तेपण व्यामोह करवा योग्य नथी.

मेरुपर्वतने प्रदक्षिणा देतां छतां (परिभमंति) के० फरे छे. एटले जंबूद्वीपमां ज्यारे एक सूर्य मेरुपर्वतथी दक्षिण दिशाए फरतो होय त्यारे बीजो सूर्य उत्तर दिशाए फरतो होय छे, तेवीज रीते लवण समुद्रमां एक एक दिशाए बबे सूर्य, धातकी खंडमां एक एक दिशाए छ छ सूर्य, कालोदधिमां एक एक दिशाए एकवीस एकवीस सूर्य, अने पुष्करार्द्धमां एक एक दिशाए छत्रीश छत्रीश सूर्य, एम सर्व मली, छासठ सूर्य दक्षिण दिशाए अने छासठ सूर्य उत्तर दिशाए ए बे समश्रेणिना सर्व मली एकसो बत्रीस सूर्य अने तेवीज रीते एकसो बत्रीस चंद्र मनुष्यक्षेत्रमां फरे छे. ॥ ९९ ॥

हवे मनुष्यक्षेत्रमां ग्रहनी पंक्ति कहे छे.

एवं गहाइणोवि हु, नवरं धुवपासवत्तिणो तारा ॥
तं चिय पयाहिणंता, तत्थेव सया परिभमंति ॥१००॥

अर्थ—(एवं) के० ए पूर्वे कहेली चंद्र सूर्यनी पंक्तिनी पेठे (गहाइणोवि हु) के० ग्रह तथा नक्षत्रनी पंक्तिओ पण जाणवी. ते आ प्रमाणे एक एक चंद्रनी पाछल अठावीश नक्षत्रनी एक पंक्ति एवी छासठ छासठनी बे पंक्ति मली एक सो बत्रीश पंक्ति चंद्रनी पाछल जाणवी. तेमज अठाशी ग्रहनी एक पंक्ति, एवी छासठ छासठनी बे पंक्ति जाणवी. तेमां (नवरं) के० एटलुं विशेष छे के (धुवपासवत्तिणो तारा) के० ध्रुवना तारानी पासे रहेला ताराओ (तच्चिय पयाहिणंता) के० ध्रुवना तारानेज प्रदक्षिणा करता (तत्थेव) के० त्यांज (सया) के० निरंतर (परिभमंति) के० भ्रमण करे छे. ॥ १०० ॥

बत्तीससयं चंदा, बत्तीससयं च सूरिया सययं ॥
समसेणीए सव्वे, माणुसखित्ते परिभमंति ॥ १०१ ॥

अर्थ—(बत्तीससयं) के० एकसो बत्रीस (चंदा) के० चंद्र, (य) के० अने (बत्तिससयं) के० एक सो बत्रीस (सुरिया) के० सूर्य (सव्वे) के० ते सर्वे (समसेणीए) के० समश्रेणिए रह्या छता (सययं) के० निरंतर (माणुसखित्ते) के० मनुष्य क्षेत्रने विषे (परिभमंति) के० फरे छे ॥ १०१ ॥

चत्तारि य पंतीओ, चंदाइच्चाण मणुयलोगंमि ॥
छावट्ठी छावट्ठी य, होइ इक्किकया पंती ॥ १०२ ॥

अर्थ—(मणुयलोगंमि) के० मनुष्यक्षेत्रने विषे (चंदाइच्चाण) के० एक सो बत्रीस चंद्र अने एक सो बत्रीस सूर्यनी (चत्तारिय-पंतीओ) के० चार पंक्ति छे. तेमां (छावट्ठी छावट्ठी य) के० छासठ छासठ चंद्र सूर्यनी (इक्किकया पंती) के० एक एक पंक्ति (होइ) के० होय छे ॥ १०२ ॥

छप्पन्न पंतीओ, नक्खत्ताणं च मणुयलोगंमि ॥
छावट्ठी छावट्ठी य, होइ इक्किकया पंती ॥ १०३ ॥

अर्थ—(मणुयलोगंमि) के० मनुष्य लोकमां (नक्खत्ताणं) के० नक्षत्रोनी (छप्पन्न पंतीओ) के० छप्पन पंक्ति छे. वली (छावट्ठी छावट्ठी य) के० वंने श्रेणिना छासठ छासठ चंद्र सूर्य-मांना दरेक चंद्र सूर्यनी पाछल (इक्किकया पंती) के० अठावीस अठावीस नक्षत्रनी एक एक पंक्ति (होइ) के० होय छे ॥१०३॥

छावत्तरी गहाणं, पंतिसयं होइ मणुअलोयंमि ॥
छावट्ठी छावट्ठी य, होइ इक्किकया पंती ॥ १०४ ॥

अर्थ—(गहाणं) के० ग्रहोनी (छावत्तरी पंतिसयं) के०

एकेकी ने छोंतेर पंक्ति (मणुअलोयंमि) के० मनुष्य लोकमां (होइ) के० होय छे. (छावट्ठी छावट्ठी य) के० अने श्रेणिना छासठ छासठ चंद्र सूर्यमाना दरेक चंद्र सूर्यनी पाछळ (इकिकपा पंती) के० अठाशी ग्रहोनी एक एक पंक्ति (होइ) के० होय छे. १०४

ते मेरुपरिअडंता. पयाहिणा वत्तमंडला सव्वे ॥
अणवट्ठियजोगेणं, चंदा सूरा गहगणा य ॥ १०५ ॥

अर्थ—(ते सव्वे) के० ते सर्वे (चंदा सूरा गह गणाय) के० चंद्र सूर्य अने ग्रहगणो (अणवट्ठियजोगेणं) के० अनवस्थितयोगे करीने (मेरुपरिअडंता) के० मेरु पर्वतनी समीपे (वत्तमंडला) के० गोळ मंडले करीने (पयाहिणा) के० प्रदक्षणा करे छे.॥१०५॥

चउयालसयं पढम-भूया पंतिए चंदसूराणं ॥
तेणं परिंतीओ, चउरुत्तरियाए वुड्ढीए ॥ १०६ ॥

अर्थ—अढी द्वीपनी बहारना अर्द्धा पुष्करवर द्वीपमां (पढमभूयापंतीए) के० मानुषोत्तर पर्वतनी पेठे गोळ रहेली प्रथम पंक्तिने विषे (चंदसूराणं) के० एक बीजाने आंतरे रहेला बहोंतेर चंद्र तथा बहोंतेर सूर्य मळीने (चउयाल सयं) के० एक सो चुमालीश चंद्र सूर्य होय छे. (तेणं) के० त्यार पछी क्षेत्रवृद्धिना कारणे असंख्याता द्वीप समुद्र सुधी (परिंतीओ) के० दरेक पंक्तिमां (चउरुत्तरियाए वुड्ढीए) के० बे चंद्र अने बे सूर्य मळी चार चारनी वृद्धि करवी.॥ १०६ ॥)

बावत्तरि चंदाणं, बावत्तरि सूरियाण पंत्तिए ॥
पढमाए अंतरं पुण, चंदा चंदस्स लक्खदुगं ॥१०७॥

अर्थ—(पढमाए पंतिए) के० पहेली पंक्तिमां (बावत्तरि चंदाणं) के० बहोंतेर चंद्र अने (बावत्तरि सूरियाण) के० बहोंतेर सूर्य होय छे. (पुण) के० वली (चंदा चंदस्स) के० चंद्र चंद्रनुं (अंतर) के० अंतर (लक्खदुगं) के० बे लाख योजननुं जाणवुं. ॥ १०७ ॥

जो जावइ लक्खाइ, वित्थारो सागरो य दीवो वा ॥
तावइआओ य तहिं, चंदासूराग पतीओ ॥ १०८ ॥

अर्थ—(जो) के० जे (सागरो) के० समुद्र (वा) के० अथवा (दीवो) के० द्वीप (जावइ लक्खाइं) के० जेटला लाख योजननो (वित्थारो) के० विस्तारवालो होय, (तहिं) के० त्यां (तावइआओ) के० तेटली (चंदासूराण) के० चंद्र सूर्यनी (पंतीओ) के० पंक्तिओ जाणवी. एटले जेम वाय पुष्करार्द्ध आठ लाख योजननो छे तो तेमां लाख लाख योजनने अंतरे चंद्र सूर्यनी आठ पंक्ति छे. एम बीजा बहारना सर्व द्वीप समुद्रोने विषे जाणवुं. ॥ १०८ ॥

हवे जंबुद्वीपने विषे चंद्रसूर्यनां मांडलां कहे छे.

पन्नरस चुलसीइसयं, इह ससिरविमंडलाइं तक्खित्तं ॥
जोयण पणसयदसहिय, भागा अडयाल इगसट्ठा ॥१०९॥

अर्थ—(इह) के० आ जंबुद्वीपमां (ससि) के० चंद्रना (पन्नरस) पंदर मांडलां छे, अने (रविमंडलाइं) के० सूर्यनां मांडलां चुलसीइसयं) के० एकसो चोराशी छे. तथा (तक्खित्तं) के० ते मांडलांनुं क्षेत्र (जोयणपणसयदसहिय) के० पांच सो दश

योजन अने (भागा अडयाल इग सट्ठा) के० एक योजनना एकसठ भाग करीये तेवा अडतालीश भाग जाणवा. ॥ १०९ ॥

हवे नक्षत्रोथी एनुं परिमाण कहे छे.

तिसि इगसट्ठा चउरो, इग इगसट्ठस्स सत्त भइयंस ॥
पणतीसं च दुजोयण, ससि रविणो मंडलंतरयं ॥११०॥

अर्थ—एक योजनना (इगसट्ठा) के० एकसठ भाग करीये, तेवा (तिसि) के० त्रीश भाग, अने (इग) के० एक एवा (इगसट्ठस्स) के० एकसठीया भागना (सत्त भइयंस) के० सात भाग करीये तेवा (चउरो) के० चार भाग, तथा (पणतीसं जोयण) के० पांत्रीश योजन एटलुं (ससि) के० चंद्रना मांडलानुं अंतर छे. अने (दुजोयण) के० बे योजननुं (रविणो) के० सूर्यना मांडलानुं अंतर छे. ॥ ११० ॥

एज वात आगलनी गाथावडे कहे छे.

दो जोयणाणि सूरस्स, मडलाणि हवंति इयरस्स ॥
पणतीस जोयणीगस–ट्ठितीस चउ भाग सत्तहिया॥१११॥

अर्थ—(सूरस्स) के० सूर्यनां (मंडलाणि) के० मांडलां (दो जोयणाणि) के० बे बे योजनने आंतरे (हवंति) के० होय छे. अने (इयरस्स) के० चंद्रनां मांडला मांडलानुं अंतर (पणतीस जोयण) के० पांत्रीश योजन, तथा (इगसट्ठी) के० एक योजनना एकसठ भाग करीये तेवा (तीस) के० त्रीश भाग अने (सत्तहिया) के० ते एकसठी एक भागना सात भाग करीये तेवा (चउ भागा) के० चार भाग उपर एटलुं अंतर चंद्रना मांडलानुं जाणवुं ॥ १११ ॥

तेनी गणनी आ प्रमाणे-सूर्यना एक सो चोराशी मांडलाना एक सो त्याशी आंतरा थाय. ते एक एक आंतरानुं परिमाण बे योजन छे. माटे एकसो त्याशीने बमणा करिये एटले सर्व मली त्रण सों छासट योजन थाय. हवे सूर्यना एक एक विमाननुं जाडपणुं योजनना एकसठीया अडतालीश भागनुं छे. ते अडतालीश भागने एक सो चोराशी मांडले गुणीये त्यारे (८८३२) भाग थाय. ते भागनो एकसठे भागाकार करीये त्यारे एक सो चुमालीश योजन, अने उपर एक योजनना एकसठीया अडतालीश भाग वधे. ते पूर्वे कहेला आंतराना त्रण सो छासठ योजनमां मेलवीये त्यारे सर्व मली पांच सो दश योजन अने एक योजनना एकसठीया अडतालीश भाग एटलुं सूर्यने विचरवानुं क्षेत्र होय।

हवे चंद्रना मांडला पंदर छे अने तेना आंतरा चउद छे. ते एक मांडलाथी बीजा मांडला सुधीनुं अंतर पांत्रीश योजन, ते उपर एक योजनना एकसठीया त्रीस भाग, तथा एक एकसठीया भागना सात भाग करीये तेवा चार भाग एटलुं अंतर छे.तेना आंतरा चउद छे माटे आंतराना योजनने चउद गुणा करीये त्यारे चारसो सत्ताणुं योजन. अने ते उपर एकसठीयो एक भाग वधे. हवे चंद्रना एक एक मंडलनुं जाडपणुं एक योजनना एक सठीया छपन भागनुं छे. तेने पंदर गुणा करतां तेर योजन अने एक सठीया सुडतालीश भाग आवे. तेने चार सो सत्ताणुं योजन साथे मेलवीये त्यारे पांच सो दश योजन अने एक योजनना एक सठीया अडतालीश भाग उपर थाय. एटलुं चंद्रना मंडलने विचरवानुं क्षेत्र जाणवुं.

हवे सूर्य चंद्रनां केटलां मांडलां जंबुद्वीपमां अने केटलां लवण समुद्रमां छे ? ते कहे छे.

मंडलदसग लवणे, पणगं निसढंमि होइ चंदस्स ॥
मंडलअंतरमाणं, जाणपमाणं पुरा कहियं ॥ ११२ ॥

अर्थ—(चंदस्स) के० चंद्रनां (मंडलदसगं) के० दश मांडलां (लवणे) के० लवण समुद्रमां छे. अने (पणगं) के० पांच मांडलां (निसढंमि) के० निषधपर्वत उपर (होइ) के० छे. वली (मंडल अंतरमाणं) के० मंडलना आंतरानुं प्रमाण "पांत्रीश योजन, एक योजनना एकसठीया त्रीसभाग अने एक सठीया एक भागना सात भाग करीये तेवा चार भाग ए उपरनी गाथामां कह्युं छे ते," तथा (जाण पमाणं) के० विमाननुं प्रमाण "एक योजनना छप्पन भागनुं" ते (पुरा कहियं) के० प्रथम कह्युं छे तेम जाणवुं ॥ ११२ ॥

पणसट्ठी निसढंमि य, दुन्निय बाहा दुजोयणंतरिया ॥
इगुणवीसं तु सयं, सूरस्स य मंडला लवणे ॥ ११३ ॥

अर्थ—(य) के० वली (सूरस्स) के० सूर्यनां (पणसट्ठी) के० पांसठ मांडलां (निसढंमि) के० निषध पर्वत उपर छे. पण तेमांनां (दुन्नि य बाहा) के० बे मांडलां निषधपर्वतनी बाहेर हरिवष पर्वतनी जिहाना अग्रभागउपर छे. अने (इगुणवीसं तु सय) के० एकसो ओगणीस मांडलां (लवणे) के० लवण समुद्रमां छे. तथा ते मांडलां (दुजोयणंतरिया) के० बे योजनने आंतरे रहेलां छे. ११३ ॥

हवे जंबुद्वीपमां तथा लवणसमुद्रमां चंद्रसूर्यने फरवानुं क्षेत्र केटला योजन छे ? ते कहे छे.

ससिरविणो लवणंमि य, जोयणसयाणि तिन्नि तीस
अहियाइं ॥
असियं, तु जोयणसयं, जंबुद्दीवंमि पविसंति ॥११४॥

अर्थ—(लवणंमि) के० लवणसमुद्रमां (ससिरविणो) के० चंद्र अने सूर्यनुं चारक्षेत्र एटले फरवानुं क्षेत्र (जोयणसयतिन्नि) के० त्रण सो योजन अने (तीस अहियाइं) के० त्रीश अधिक अर्थात् त्रण सो त्रीश योजन अने एकसठीया अडतालीश भाग अधिक छे. अने त्यांथी पाछो फरतां (असियं तु जोयणसयं) के० एक सो एंशी योजन (जंबुद्दीवंमि) के० जंबुद्वीपमां (पविसंति) के० प्रवेश करे छे ॥ ११४ ॥

ग्रह, नक्षत्र अने ताराओने एक एकज मांडलुं होय छे, तेथी तेओ पोत पोताने मांडलेज फरे छे, पण दक्षिण उत्तर तरफ जता नथी.

बे चंद्रने तथा बे सूर्यने सर्वथी अंदरना मांडले अने बहारना मांडले अंतर केटलुं होय ? ते कहे छे.

ससिससि रविरवि अंतर, मज्झे इग लक्ख तिसयस-
ट्ठिसाउणो ॥
साहिय दुसयरिजुय, बहि लक्खो छसय सट्ठिहिओ ॥११५॥

अर्थ—(मज्झे) के० मध्यथी अंदरना मांडलाने विषे एटले एक चंद्र निषध पर्वत उपरना अभ्यंतर मांडले आवे अने बीजो चंद्र नीलवंत पर्वत उपरना अभ्यंतर मांडले आवे त्यारे (ससि-ससि) के० चंद्र चंद्रने तथा (रवि रवि) बे सूर्य सूर्यने (अंतर) के० आंतरुं ते

(इगलक्ख) के० एक लाख योजननी मध्ये (निसयसट्ठिमाउणो) के० त्रण सो साठ योजन ओछुं अर्थात् (९९६४०) योजननुं होय छे. केमके एक सूर्य निषध पर्वत उपर एक सो एंशी योजन जंबुद्वीपमां आवे त्यारे बीजो सूर्य नीलवंत पर्वत उपर एक सो एंशी योजन जंबुद्वीपमां आवे त्यारे बन्ने मळीने त्रण सो साठ योजन थाय.ते त्रणसो साठ योजन जंबुद्वीपना एक लाख योजनना आयाम विष्कम्भमांथी बाद करीये त्यारे (९९६४०)योजन रहे.एटलुं अंदरना मंडले आंतरुं जाणवुं. त्यार पछी (साहियदु) के० सूर्य सूर्यने दरेक मांडले बे योजन वधारवुं अने चंद्र चंद्रने (सपरिचय) के० दरेक मांडले सीत्तेर योजन वधारवुं. जेथी (बहि) के० सर्वेथी बहारना मंडले (लक्खो) के० एक लाख, (छसय) के० छ सो अने (सट्ठिहिओ) के० साठ अधिक एटला योजन आंतरुं थाय.॥११५॥

तिन्नेव सयसहस्सा, पन्नरस हवंति जोयण सहस्सा॥
एगुणनउया परिही, अब्भितर मंडले तेसिं ॥ ११६ ॥

अर्थ—तिन्नेव य सयसहस्सा) के० त्रण लाख, (पन्नरस जोयण सहस्सा) के० पंदर हजार, अने (एगुणनउया) के० नेव्याशी योजननी (परिही) के० परिधी (तेसिं) के० ते सूर्यना (अब्भितर मंडले) के० अंदरना मांडलानी (हवंति) के० होय छे ॥ ११६ ॥

लक्ख तिगं अट्ठारस,सहसा तिन्नि सय पंचदस अहिया॥
परिही य जोयणाइं, बाहिरए मंडले हुंति ॥ ११७ ॥

अर्थ—(लक्ख तिगं) के० त्रण लाख, (अट्ठारस सहस्सा) के० अढार हजार, (तिन्नि सय) के० त्रण सो, अने (पंचदस

अहिया) के० पंदर उपर एटला (जोयणाइं) के० योजननी (परिही) के० परिधि ते (बाहिरए मंडले) के० सूर्यना सवथी बाहेरना मंडले (हुंति) के० होय छे. ॥ ११७ ॥

हो द्वीप समुद्रने विषे ग्रह नक्षत्र तथा तारानी संख्या जाणवानो उपाय कहे छे.

गहरिक्खतारसंखं, जत्थेच्छसि नाउ मुदहि दीवे वा॥
तस्ससिहि एगससिगा, गुण संखं होइ सव्वग्गं ॥११८॥

अर्थ-(जत्थ) के० जे (उदहि) के० समुद्रने विषे (वा) के० अथवा (दीवे) के० द्वीपने विषे (गहरिक्खतारसंखं) के० ग्रह नक्षत्र अने तारानी संख्याने (नाउं) के० जाणवाने (इच्छसि) के० इच्छा करे छे, तो (तस्ससिहि) के० ते द्वीप समुद्रना चंद्रनी संख्याने मांडीने (एगससिगो) के० एक चंद्रना ग्रह नक्षत्र अने ताराना परिवार साथे (गुण) के० गुणाकार कर-के जेथी (सव्वग्गं संख हाइ) के० सर्व संख्या थाय छे.

दृष्टांत-जेम लवण समुद्रमां चार चंद्र छे, अने एक एक चंद्रने अठ्ठाशी ग्रहनो परिवार होवाथी अठ्ठाशीने चार गुणा करतां त्रणसो बार ग्रह थाय. तेवीज रीते अठ्ठावीस नक्षत्रने चार गुणा करीये तो एकसो बार नक्षत्र थाय, तथा तारानी संख्या कोडा कोडी जेटली के प्रथम कही छे तेने चार गुणी करीये त्यारे बे लाख कोडाकोडी, सडसठ हजार कोडाकोडी अने नव सो कोडा कोडी थाय. एवी रीते सर्व द्वीप समुद्रने विषे जाणवुं. ॥ ११८ ॥

हवे बाकी बे गाथाथी कहे छे.

चत्तारि चेव चंदा, चत्तारि य सूरिया लवणतोए ॥
बारस नक्खत्तसयं, गहाण तिन्नेव बावन्ना ॥ ११९ ॥
दो चेव सय सहस्सा, सत्तट्ठी खलु भवे सहस्सा य ॥
नवयसया लवणजले, ताराणं कोडिकोडीणं ॥ १२० ॥

अर्थ—(लवणतोए) के० लवण समुद्रने विषे (चत्तारि चंदा) के० चार चंद्र, (चत्तारि सूरिया) के० चार सूर्य, (बारस नक्खत्तसयं) के० एकसो बार नक्षत्र, अने (गहाण तिन्नेव बावन्ना) के० त्रण सो बावन ग्रह (चेव) के० निश्चे होय छे. ॥ ११९ ॥

(य) के० वली (दो चेव सयसहस्सा) के० बे लाख,(सत्तट्ठी सहस्सा) के० सडसठ हजार अने (नवयसया) के० नव सो एटली (ताराणं कोडिकोडीणं) के० ताराओनी कोडाकोडी (लवणजले) के० लवण समुद्रने विषे (खलु) के० निश्चे (भवे) के० होय छे. ॥ १२० ॥

हवे वैमानिक देवोनां विमाननी संख्या कहे छे.

बत्तीस ट्ठावीसा, बारस अड चउ विमाण लक्खाइं ॥
पन्नास चत छ सहस्स, कमेण सोहम्माइसु ॥ १२१ ॥
दुसु सय चउ दुसु सय तिग.मिगारसहियं सयं तिगेहिट्ठा॥
मज्झे सत्तुत्तर सय, मुवरितिगे सय मुत्तरि पंच ॥१२२॥

अर्थ—सौधर्म देवलोके (बत्तीस) के० बत्रीस लाख, ईशान देवलोके (अट्ठावीसा) के० अठावीस लाख, सनत्कुमारे (बारस) के० बार लाख, माहेंद्रे (अड) के० आठ लाख, ब्रह्मदेवलोके (चउ)

के० चार लाख (विमाण) के० विमान छे. ए सर्वे (लत्तगाई) के० लाखनी संख्याये करीने जाणवा. लंतके (पन्नास) के० पचास हजार, शुक्र (चत्त) के० चालीस हजार, सहस्रारे (छ) के० छ हजार, ए सर्वे (सहस्स) के० हजारनी संख्याये जाणवा. ए (कमेण) के० अनुक्रमे करीने (सोहम्माईसु) के० सौधर्मादिक देवलोकना विमाननी संख्या जाणवी ॥ १२१ ॥ तथा आनत अने प्राणत ए (दुसु) के० बे लोकने विषे (सय चउ) के० चार सो विमान, तथा आरण अने अच्युत ए (दुसु) के० बे देवलोकने विषे (सय-तिगं) के० त्रण सो विमान जाणवा. (हिडिल्ला) के० नीचेना त्रण ग्रैवेयके (इगारसहियं) के० अगीयार सहित (सयं) के० सो अर्थात् एक सो अगियार विमान छे. (मज्झे) के० वचला त्रण ग्रैवेयके (सत्तुत्तरसयं) के० एक सो सात विमान छे, अने (उवरितिगे) के० उपरना त्रण ग्रैवेयके (सय) के० एक सो विमान छे. वळी (उवरि) के० उपरना पांच अनुत्तर विमाने (पंच) के० पांच विमान छे. ॥ १२२ ॥

हवे ए पूर्वे कहेला विमानोनी सर्व संख्या तथा विमानादिकनुं स्वरूप कहे छे.

चुलसीइ लक्ख सत्ताण, वइसहस्सा विमाण तेवीसं ॥
सव्वग्गमुड्ढलोगंमि, इंदय विसट्ठि पयरेसु ॥ १२३ ॥

अर्थ—(सव्वग्गं) के० सर्व संख्याये (चुलसीइ लक्ख) के० चोरासी लाख, ([illegible] सहस्सा) के० सत्ताणु हजार, अने (तेवीसं) के० [illegible]) के० उर्ध्वलोकने विषे (विमाण) [illegible] (विसट्ठि-

पयरेसु) के० पासठे मतरने विषे मध्य भागमां (इंदय) के० एक एक इंद्रक विमान छे. सव मळीने इंद्रक विमान पासठ छे. ॥१२३॥

चउदिसि चउपंतीओ, बासट्ठि विमाणिया पढमपयरे ॥
उवरि इक्किकहीणा, अणुत्तरे जाव इक्किकं ॥ १२४ ॥

अर्थ—(पढमपयरे) के० पहेला मतरने विषे मध्यना इंद्रक विमानथकी (चउदिसि) के० चारे दिशाए (बासट्ठिविमाणिया) के० बासठ बासठ विमाननी (चउपंतीओ) के० चार पंक्तिओ छे, तेना (उवरि) के० उपर दरेक मतरे (इक्किकहीणा) के० एक एक विमान चारे दिशाए ओछुं करवुं, जेथी (अणुत्तरे) के० अनुत्तर विमाने जाव (इक्कं) के० यावत् एक एक विमान चारे दिशाए रहे ॥ १२४ ।

इंदय वट्टा पंतिसु, तो कमसो तंस चउरसा वट्टा ॥
विविहा पुप्फवकिन्ना, तयंतरे मुत्तुं पुव्वदिसिं ॥१२५॥

अथ—सर्वेनी वचमां (इंदय) के० इंद्रक विमान (वट्टा) के० वाटलुं एटले गोळाकृतिवाळुं छे. (तो) के० त्यार पछी (पंतिसु) के० पंक्तिने विषे (कमसो) के० अनुक्रमे करीने प्रथम (तंस) के० त्रीखूणावाळा, पछी (चउरसा) के० चार खूणावाळा, अने छेला (वट्टा) के० गोळाकृतिवाळा विमानो छे. अने (तयंतरे) के० ते चारे पंक्तिओनी वचमां एक (पुव्वदिसिं मुत्तुं) के० पूर्वदिशा मूकीने बाकीनी सर्वेदिशामां (विविहा) के० विविधप्रकारना (पुप्फवकिन्ना) के० भिन्न भिन्न पुष्पावकीर्ण विमानो छे. ॥१२५॥

हवे पहेला मतरनी एक एक पंक्तिना बासठ बासठ विमान कये कये स्थानके छे ? ते कहे छे.

एगं देवे दीवे, दुवे य नागोदहीसु बोधव्वे ॥
चत्तारि जक्खदीवे, भूयसमुद्देसु अट्ठेव ॥ १२६ ॥
सोलस सयंभुरमणे, दीवेसु पइट्ठिया य सुरभवणा ॥
इगतीसं च विमाणा, सयंभुरमणे समुद्दे य ॥ १२७ ॥

(अर्थ—पहेला प्रतरनी चारे दिशानुं (एगं) के० पहेलुं एक एक विमान (देवे दीवे) के० देवद्वीपमां छे, (य) के० अने (दुवे) के० बे बे विमान (नागोदहीसु) के० नागसमुद्रमां (बोधव्वे)के० जाणवां. त्यार पछीनां (चत्तारि) के० चार चार विमान (जक्खदीवे) के० यक्षद्वीपमां छे. अने (भूयसमुद्देसु) के० भूतसमुद्रमां(अट्ठेव) के० आठ आठ विमानो छे. । १२६ ॥ वळी (सयंभुरमणे दीवेसु) के० स्वयंभूरमण द्वीपने विषे (सोलस) के० सोळ (सुरभवणा) के० विमानो (पइट्ठिया) के० रह्यां छे (च) के० अने (इगतीसं विमाणा) के० एकत्रीश विमानो (सयंभुरमणे समुद्दे) के० स्वयंभूरमण समुद्रमां छे. ॥ १२७ ॥)

हवे बीजा प्रतरमां चारे दिशाये एकसठ विमानोनी पंक्ति शी रीते छे, ते कहे छे.

वट्टं वट्टस्सुवरिं, तंसं तंसस्स उवरिं होइ ॥
चउरंसे चउरंसं, उड्ढं तु विमाणसेढीए ॥ १२८ ॥

अर्थः—(वट्टस्सुवरिं) के० वाटला एटले गोळविमाननी उपर (वट्टं) के० गोल विमान छे. (तंसस्स) उवरिं) के० त्रण खुणानी उपर (तंसं) के० त्रिखूणी विमान (होइ) के० होय छे. (तु) के० वळी (चउरंसे) के० चार खूणा विमाननी उपर

(चउरंसं) के० चार खूणां विमान होय छे. एम (उड्ढं) के० उपर (विमाणसेढीए) के० विमानोनी पंक्ति जाणवी. सर्व प्रतरमां मध्यभागे इंद्रक विमान वाटलुं छे. त्यार पछी चारे दिशाए चारे पंक्तिमां अनुक्रमे एक एक विमान त्रिखूणावालां. पछी चार खूणावालां, पछी वाटलां एम अनुक्रमे पंक्ति पूरी थाय त्यां सुधी जाणवां. दरेक प्रतर छेवटनुं एक एक विमान ओछुं करवुं जेथी सर्वार्थसिद्धे एक एक विमान त्रिखूणुं रहे ॥ १२८ ॥

सव्वे वट्टविमाणा, एगदुवारा हवंति नायव्वा ॥
तिण्णि य तंसविमाणे, चत्तारि य हुंति चउरंसे ॥१२९॥

अर्थः—(सव्वे वट्टविमाणा) के० सर्व वाटलां विमानो (एगदुवारा) के० एक बारणावालां (हवंति) के० होय छे. एम (नायव्वा) के० जाणवां. (तंसविमाणे) के० त्रिखूणां विमानने विषे (तिण्णिय) के० त्रण बारणां होय छे; (य) के० अने (चउरंसे) के० चार खूणा विमानने विषे (चत्तारि) के० चार बारणा (हुंति) के० होय छे ॥ १२९ ॥

पागारपरिक्खित्ता, वट्टविमाणा हवंति सव्वेवि ॥
चउरंस विमाणाणं, चउद्दिसिं वेइया होइ ॥ १३० ॥

अर्थः—(सव्वेवि) के० चारे दिशामां रहेला सर्व (वट्टविमाणा) के० वाटलां एटले गोलविमानो (पागारपरिक्खिता) के० गढथी विंटलायला (हवंति) के० होय छे. अने (चउरंस विमाणाणं) के० चार खूणावाला विमानने (चउद्दिसिं) के० चारे दिशाए (वेइया होइ) के० वेदिका होय छे, कांगरा विनाना

वाटने वेदिका जाणवी, अने बाकीना विमानोने कांगरावाळो गढ अने चोखूणा विमानोने कांगरा विनानो गढ छे. ॥ १३० ॥

जत्तो वट्टविमाणा, तत्तो तंसस्स वेइया होइ ॥
पागारो बोधव्वो, अवसेसेण विमाणाणं ॥ १३१ ॥

अर्थः— (जत्तो) के० जे दिशाए (वट्टविमाणा) के० गोळ विमानो छे, (तत्तो) के० ते दिशाए (तंसस्स) के० त्रिखूणिया विमानने (वेइया) के० वेदिका एटले कांगरा विनानो गढ (होइ) के० छे. अने (अवसेसेण) के० बाकीनी दिशाए (विमाणाणं) के० विमानोने (पागारो) के० कांगरावाळो गढ (बोधव्वो) के० जाणवो. ॥ १३१ ॥

सव्वेसु पत्थडेसु, मज्झे वट्टं अणंतरं तंसं ॥
तयणंतर चउरंसं, पुणोवि वट्टं तओ तंसं ॥ १३२ ॥

अर्थ— (सव्वेसु पत्थडेसु) के० देवलोकना सर्व प्रतरे वचमां (मज्झे) के० मध्य इन्द्रक विमान (वट्टं) के० गोळाकार छे, अने (अणंतर) के० त्यार पछी चारे दिशाए एक एक विमान [illegible] के० त्रण खूणावाळुं छे, (तयणंतर) के० त्यार पछी चार दिशाए एक एक विमान (चउरंसं) के० चार खूणावाळुं छे. वळी (पुणोवि) के० फरीने पण (वट्टं) के० गोळ विमान अने [illegible] के० त्यार पछी (तंसं) के० त्रण खूणावाळुं. एम [illegible] विमान [illegible] अने [illegible] एक एक [illegible] ॥ १३२ ॥

[illegible]

आवलियविमाणाणं. अंतरं नियमओ असंखिज्जं ॥
संखिज्जमसंखिज्जं भणियं पुप्फावकिन्नाणं ॥ १३३ ॥

अर्थ—(आवलियविमाणाणं) के० चारे दिशानी पंक्तिमां रहेला विमानोनुं (अंतरं) के० अंतर (नियमओ) के०) निश्चयथी (असंखिज्जं) के० असंख्याता योजननुं होय छे. अने (पुप्फावकिन्नाणं) के० चारे दिशानी वचमां रहेला पुष्पावकीर्ण विमानोनुं अंतर (संखिज्जमसंखिज्जं) के० संख्याता अथवा असंख्याता योजननुं (भणियं) के० कह्युं छे. ॥ १३३ ॥

हवे विमानोनी आकृति दृष्टांतथी कहे छे.

वट्टं तु वलयंपिव. तंसं सिंघाडगंपिव विमाणं ॥
चउरंस विमाणं पुण, अरकाडगसंठियं भणियं ॥१३४॥

अर्थ—(वट्टं) के० जे वाटलां विमान छे ते (वलयंपिव) के० वलयाकार होय छे, अने (तंसं विमाणं) के० त्रिखूणां विमान (सिंघाडगंपिव) के० सिंघोडाना आकारे होय छे. (पुण) के० वळी (चतुरंसं विमाणं) के० चोखूणां विमान (अखाडग-संठियं) के० नाटकना अखाडाना आकारे चोखूणा (भणियं) के० कह्यां छे. ॥ १३४ ॥

हवे विमानोना गंध अने स्पर्श वर्णवे छे.

अच्चंतसुरहिगंधा, फासे नवणीयमउयसुहफासा ॥
निच्चुज्जोया रम्मा, सयंपहा ते विरायंति ॥ १३५ ॥

अर्थ—ते विमान (अच्चंतसुरहिगंधा) के० अत्यन्त सुगंध-

[illegible] ऊंडा मानवो, [illegible] विमानो कांगरावो [illegible] विमानो कांगरा विनानो गढ छे. ॥ १२० ॥

ततो वट्टविमाणा, ततो तंससस वेइया होइ ॥
पागारो बोधव्वो, अवसेसेण विमाणाणं ॥ १२१ ॥

अर्थः— ततो के० ते विमान (वट्टविमाणा) के० [illegible] [illegible] ततो के० ते विमान (तंससस) के० त्रिखूणि [illegible] (वेइया) के० वेदिका एटले कांगरा विनानो गढ [illegible] [illegible] (अवसेसेण) के० बाकीनां विमाने (विमाणाण) [illegible] (पागारो) के० कांगरावालो गढ (बोधव्वो) [illegible] ॥ १२१ ॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥ १२२ ॥

[illegible]

[illegible]

आवलियविमाणाणं, अंतरं नियमसो असंखिज्जं ॥
संखिज्जमसंखिज्जं भणियं पुप्फावकिन्नाणं ॥ १३३ ॥

अर्थ—(आवलियविमाणाणं) के० चारे दिशानी पंक्तिमां रहेला विमानोनुं (अंतरं) के० अंतर (नियमसो) के० निश्चयथी (असंखिज्जं) के० असंख्याता योजननुं होय छे. अने (पुप्फावकिन्नाणं) के० चारे दिशानी वचमां रहेला पुष्पावकीर्ण विमानोनुं अंतर (संखिज्जमसंखिज्जं) के० संख्याता अथवा असंख्याता योजननुं (भणियं) के० कह्युं छे. ॥ १३३ ॥

हवे विमानोनी आकृति दृष्टांतथी कहे छे.

वट्टं तु वलयंपिव, तंसं सिंघाडगंपिव विमाणं ॥
चउरंस विमाणं पुण, अरकाडगसंठियं भणियं ॥१३४॥

अर्थ—(वट्टं) के० जे वाटलां विमान छे ते (वलयंपिव) के० वलयाकार होय छे, अने (तंसं विमाणं) के० त्रिखूणां विमान (सिंघाडगंपिव) के० सिंघोडाना आकारे होय छे. (पुण) के० वली (चतुरंसं विमाणं) के० चोखूणां विमान (अरकाडगसंठियं) के० नाटकना अखाडाना आकारे चोखूणा (भणियं) के० कह्यां छे. ॥ १३४ ॥

हवे विमानोना गंध अने स्पर्श वर्णवे छे.

अच्चंतसुरहिगंधा, फासे नवणीयमउयसुहफासा ॥
निच्चुज्जोया रम्मा, सयंपहा ते विरायंति ॥ १३५ ॥

अर्थ—ते विमान (अच्चंतसुरहिगंधा) के० अत्यन्त सुगंध-

[illegible] दिशा मागरो, [illegible] विमानो कांगरावाळो
अने चोखूणा विमानो कांगरा विनानो गढ छे. ॥ १३० ॥

जत्तो वट्टविमाणा, तत्तो तंसस्स वेइया होइ ॥
पागारो बोधव्वो, अवसेसेण विमाणाणं ॥ १३१ ॥

अर्थः— (जत्तो) के० जे दिशाए (वट्टविमाणा) के० [illegible]
विमानो [illegible] (तत्तो) के० ते दिशाए (तंसस्स) के० त्रिखूणा
विमानने (वेइया) के० वेदिका एटले कांगरा विनानो गढ (होइ)
के० छे. अने (अवसेसेण) के० बाकीनी दिशाए (विमाणाणं)
के० विमानोने (पागारो) के० कांगरावाळो गढ (बोधव्वो) [illegible]
[illegible] ॥ १३१ ॥

वट्टेसु पयरेसु, मज्झे वट्टं अणंतरं तंसं ॥
तस्सोवरि चउरंसं, पुणोवि वट्टं तओ तंसं ॥ १३२ ॥

अर्थः— (वट्टेसु पयरेसु) के० देवलोकना सर्व प्रतरे [illegible]
[illegible] (मज्झे) के० मध्ये इंद्रक विमान (वट्टं) के० गोळ
[illegible] छे. अने (अणंतरं) के० त्यार पछी चारे दिशाए एक ए[illegible]
विमान (तंसं) के० त्रण खूणावाळुं छे, (तस्सोवरि) के० त्या[illegible]
पछी चारे दिशाए एक एक विमान (चउरंसं) के० चार खूणा[illegible]
[illegible] छे. वळी (पुणोवि) के० वळी पण (वट्टं) के० गोळविमा[illegible]
[illegible] (तओ) के० त्यार पछी (तंसं) के० त्रण खूणावाळुं. ए[illegible]
[illegible] विमान [illegible], अने [illegible]
[illegible] ॥ १३२ ॥

[illegible]

पुव्वेण पच्छिमेण य, जे वट्टा तेवि दाहिणिल्लस्स ॥
तंस चउरंसगा पुण, सामन्ना हुंति दुण्हंपि ॥ १३८ ॥

अर्थ—(पुव्वेण पच्छिमेण य) के० पूर्वदिशा अने पश्चिमदिशाना विमाननी पंक्तिने विषे (जे वट्टा) के० जे वाटलां विमान छे. (तेवि) ते० ते विमानो पण (दाहिणिल्लस्स) के० दक्षिणदिशाना सौधर्मेंद्रनां छे. (पुण) के० वली तंस के० त्रण खूणवालां अने (चउरंसगा) के० चार खूणवालां जे विमान छे. ते (सामन्ना के० सामान्यपणाथी (दुण्हंपि) के० सौधर्मेंद्र तथा ईशानेंद्र ए बन्नेना (हुंति) के० छे. एटले बन्ने इंद्रो ते विमानोना अर्द्धोअर्द्ध मालीक छे. ॥ १३८ ॥

पढमपयरंमि पढमे, कप्पे उडुनाम इंदयविमाणं ॥
पणयाललक्खजोयण, लक्खं सव्वुवरि सव्वट्ठं ॥१३९॥

अर्थ—(पढमे कप्पे) के० पहेला देवलोकना (पढमपयरंमि) के० पहेला प्रतरने विषे (उडुनाम) के० उडुनामनुं (इंदयविमाणं) के० इंद्रक विमान छे. ते (पणयाललक्खजोयण) के० गोलाकारे पिस्तालीश लाख योजनना प्रमाणवालुं छे. अने (सव्वु रि) के० सवना ऊपर बासठमा प्रतरे (सव्वट्ठं) के० सर्वार्थसिद्ध नामनुं विमान (लक्ख) के० एक लाख योजननुं गोलाकार छे. ॥ १३९ ॥

हवे बासठ प्रतरना मध्यभागमां रहेला इंद्रक विमाननां नाम कहे छे.

उडु चंद रयण वग्गु, वीरिय वरुणे तहय आणंदे ॥
बंभे कंचण रुइमे, वंचे अरुणे य वरुणे य ॥१४०॥

वाला, तेमज (फासे) के० स्पर्शमां (नवणीयमउयसुहफासा) के० माखण सरखा कोमळ अने सुखकारी स्पर्शवाला, (निच्चुज्जोया) के० नित्य प्रकाशवाळा, (रम्मा) के० रमणिक अने (सयंपहा) के० पोतानी मेले प्रकाशीत एवा (ते) के० ते विमानो (विरायति) के० शोभे छे. ॥ १३५ ॥

जे दक्खिणेण इंदा, दाहिणओ आवली मुणेयव्वा ॥
जे पुण उत्तर इंदा,उत्तरओ आवली मुणे तेसिं ॥१३६॥

अर्थ—(जे दक्खिणेण इंदा) के० जे दक्षिण दिशाए सौधर्मेंद्र तथा सनत्कुमारेंद्र छे, तेमना (दाहिणओ) के० दक्षिण दिशानी (आवली) के० पंक्तिमां रहेलां विमानो (मुणेयव्वा) के० जाणवां. पुण के० वली (जे उत्तरइंदा) के० जे उत्तरदिशाए इशानेंद्र तथा माहेंद्र छे. (तेसिं) के० तेमनां (उत्तरओ) के० उत्तरदिशानी (आवली) के० पंक्तिमां रहेलां विमानो (मुणे) के० जाणवां. ॥ १३६ ॥

पुव्वेण पच्छिमेण य, सामण्णा आवली मुणेयव्वा ॥
जे पुण वट्टविमाणा, मज्झिल्ला दाहिणिल्लाणं ॥१३७॥

अर्थ—(पुव्वेण पच्छिमेण य) के० पूर्व दिशा अने पश्चिम दिशानी (आवली) के० विमानोनी पंक्ति ते सौधर्मेंद्र तथा इशानेंद्र बन्ने इंद्रोनी (सामण्णा) के० साधारण सामान्यपणे जाणवी. (पुण) के० वली जे (मज्झिल्ला) के० जे मध्यभागना (वट्टविमाणा) के० वाटलां विमान छे, ते (दाहिणिल्लाण) के० दक्षिण दिशाना सौधर्मेंद्रनां जाणवां. ॥ १३७ ॥

पुव्वेण पच्छिमेण य, जे वट्टा तेवि दाहिणिल्लस्स ॥
तंस चउरंसगा पुण, सामन्ना हुंति दुण्हंपि ॥ १३८ ॥

अर्थ—(पुव्वेण पच्छिमेण य) के० पूर्वदिशा अने पश्चिमदिशाना विमाननी पंक्तिने विषे (जे वट्टा) के० जे वाटलां विमान छे. (तेवि) ते० ते विमानो पण (दाहिणिल्लस्स) के० दक्षिणदिशाना सौधर्मेंद्रनां छे. (पुण) के० वली तंस के० त्रण खूणवालां अने (चउरंसगा) के० चार खूणवालां जे विमान छे. ते (सामन्ना) के० सामान्यपणाथी (दुण्हंपि) के० सौधर्मेंद्र तथा ईशानेंद्र ए बन्नेना (हुंति) के० छे. एटले बन्ने इंद्रो ते विमानोना अर्द्धोअर्द्ध मालीक छे. ॥ १३८ ॥

पढमपयरंमि पढमे, कप्पे उडुनाम इंदयविमाणं ॥
पणयाललक्खजोयण, लक्खं सव्वुवरि सव्वट्ठं ॥१३९॥

अर्थ—(पढमे कप्पे) के० पहेला देवलोकना (पढमपयरंमि) के० पहेला प्रतरने विषे (उडुनाम) के० उडुनामनुं (इंदयविमाणं) के० इंद्रक विमान छे. ते (पणयाललक्खजोयण) के० गोलाकारे पिस्तालीश लाख योजनना प्रमाणवालुं छे. अने (सव्वुवरि) के० सवना ऊपर बासठमा प्रतरे (सव्वट्ठं) के० सर्वार्थसिद्ध नामनुं विमान (लक्खं) के० एक लाख योजननुं गोलाकार छे. ॥ १३९ ॥

हवे बासठ प्रतरना मध्यभागमां रहेला इंद्रक विमाननां नाम कहे छे.

उडु चंद रयण वग्गु, वीरिय वरुणे तहय आणंदे ॥
बंभे कंचण रुइरे, चंदे अरुणे य वरुणे य ॥१४०॥

अर्थ—१ (उडु) के० उडु विमान, २ (चंद) चंद्र विमान, ३ (रयण) के० रजत विमान, ४ (वग्गु) के० वल्गुविमान, ५ (वीरिय) के० वीर्य विमान, ६ (वरुणे) के० वरुण विमान (तहेव) के० तेमज, ७ (आणंदे) के० आनन्द विमान, ८ (बंभे) के० ब्रह्म विमान, ९ (कंचण) के० कांचन विमान, १० (रुइमे) के० रुचिनथ विमान, ११ (वंचे) के० वंच विमान, १२ (अरुण य) के० अरुण विमान, १३ (वरुणे य) के० वरुण विमान, ए तेर विमान. ए तेर विमान पहेला तथा बीजा देवलोके छे. ॥१४०॥

वेरुलिय रुयग रुइरे, अंके फलिहे तहेव तवणिज्जे ॥
मेहे अग्घ हलिद्दे, नलिणे तह लोहियक्खे य ॥१४१॥

अर्थ—१४ (वेरुलिय) के० वैडुर्य विमान, १५ (रुयग) के० रुचक विमान, १६ (रुइरे) के० रुचिर विमान, १७ (अंके) के० अंकविमान, १८ (फलिहे) के० स्फटिक विमान, (तहेव) के० तेमज १९ (तवणिज्जे) के० तपनीय विमान, २० (मेहे) के० मेघविमान २१ (अग्घ) के० अर्घ विमान, २२ (हलिद्दे) के० हरिद्र विमान, २३ (नलिणे) के० नलिन विमान, (तह) के० तेमज २४) लोहियक्खे य) के० लोहिताक्ष विमान.॥१४१॥

वइरे अंजण वरमाल, रिट्ठ देवे य सोम मंगलए ॥
बलभद्दे चक्क गया, सोवत्थिय णंदियावत्ते ॥ १४२ ॥

अर्थ—२५ (वइरे) के० वज्र. ए बार विमान त्रीजे तथा चोथे देवलोके छे ॥ २६ (अंजन) के० अंजन विमान, २७ (वरमाल) के० वरमाल विमान, २८ (रिट्ठ) के० रिष्ट विमान, २९

(दैवेंद) के० देव विमान, ३० (सोम) के० सोम विमान, ३
(मंगल) के० मंगल विमान० ॥ ए त्रण विमान पांचमा देवलो
के. ३२ (बलभद्र) के० बलभद्र विमान, ३३ (चक्र) के० च
विमान, ३४ (गदा) के० गदा विमान, ३५ (सोवस्तिय) के०
स्वस्तिक विमान, ३६ (णंदियावत्ते) नंद्यावर्त्त. ए पांच विमा
छट्ठा देवलोकें छे. ॥ १४२ ॥

आभंकरे य गिद्धी, केऊ गरुले य होइ बोधव्वे ॥
बंभे बंभहिए पुण, बंभुत्तर लंतए चेव ॥ १४३ ॥

अर्थ—३७ (आभंकरे) य के० आभंकर विमान, ३
(गिद्धी) के० गृद्ध विमान, ३९ (केऊ) के० केतु विमान, ४
(गरुले य) के० गरुड विमान. ए चार विमान सातमा देवलोके
(होइ) के० छे ते (बोधव्वे) के० जाणवा ४१ (बंभे) के०
ब्रह्म विमान, ४२ (बंभहिए) के० ब्रह्महित विमान. (पुण) के०
वळी ४३ (बंभुत्तर) के० ब्रह्मोत्तर विमान, ४४ (लंतए) के०
लंतक विमान. ए चार विमान आठमा देवलोकना (चेव) के०
निश्चे जाणवा. ॥ १४३ ॥

महासुक्क सहस्सारे, आणय तह पाणए य बोधव्वे ॥
पुप्फालंकार आरण, तहाविय अच्चुए चेव ॥ १४४ ॥

अर्थ—४५ (महासुक्क) के० महाशुक्र विमान, ४६ (सह
स्सारे) के० सहस्रार विमान, ४७ (आणय) के० आनत विमान
(तह) के० तेमज ४८ (पाणए य) के० प्राणत विमान, ए चार
विमान नवमे तथा दशमे देवलोके (बोधव्वे) के० जाणवां. ४९
(पुप्फ) के० पुष्प विमान, ५० (अलंकार) के० अलंकार वि-

मान, ५१ (आरण) के० आरण विमान, (तहाविय) के० तेमज ५२ (अच्चुए) के० अच्युत विमान. ए चार विमान अगीयारमे तथा बारमे देवलोके (नेत्र) के० निश्चे जाणवा ॥ १४४ ॥

सुदंसण सुपडिवद्धे, मणोरमे चेव होइ पढमतिगे ॥
तत्तो य सवभद्दे, विसालए सुमणे चेव ॥ १४५ ॥

अर्थ—५३ (सुदंसणे) के० सुदर्शन विमान, ५४ (सुपडिवद्धे) के० सुप्रतिबद्ध विमान, ५५ (मणोरमे) के० मनोरम विमान, ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना (पढमतिगे) के० प्रथम त्रिकने विषे (चेव) के० निश्चे (होइ) के० छे. (तत्तो य) के० अने त्यार पछी ५६ (सवभद्दे) के० सर्वभद्र, ५७ (विसालए) के० विशाल, ५८ (सुमणे) के० सुमनस-ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना बीजा त्रिकने विषे (चेव) के० निश्चे छे. ॥ १४५ ॥

सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइयतिगे ॥
सबट्ठसिद्धिनामे, इंदया एव बासट्ठी ॥ १४६ ॥

अर्थ—५९ (सोमणसे) के० सोमनस विमान, ६० (पीइकरे) के० प्रीतिकर विमान, ६१ (आइच्चे) के० आदित्य विमान. ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना त्रीजा त्रीकने विषे (चेव) के० निश्चे (होइ) के० छे. अने पांच अनुत्तर विमानने विषे ६२ (सबट्ठसिद्धिनामे) के० एक सर्वार्थ सिद्धि नामनुं विमान छे. (इंदया एव बासट्ठी) के० ए बासठ इंद्रक विमानना नाम कह्या. १४६

हवे दरेक देवलोके श्रेणीना विमाननी संख्या लाववा माटे उपाय कहे छे.

पढमंतिमपयरावलि, विमाणमुहभूमि तस्समासद्धं ॥
पयरगुणमिट्ठकप्पे, सव्वग्गं पुप्फकिन्नियरे ॥ १४७ ॥

अर्थ—सौधर्म अने ईशान देवलोकना (पढम) के० पहेला (पयरावली विमाण) के० प्रतरना विमाननी पंक्ति ते (मुह) के० मुख कहेवाय, अने (अंतिम) के० छेला प्रतरना विमाननी पंक्ति ते (भूमि) के० भूमि कहेवाय. (तस्समासद्धं) के० ते मुख अने भूमिना विमानोने एकठा करीने तेना अर्द्ध करवा. पछी (पयरगुण) के० वांछित देवलोकना प्रतरे गुणवा. तेवारे (इट्ठ) के० वांछित देवलोके (पुप्फकिन्नियरे) के० आवलिकाना विमानोनी (सव्वग्गं) के० सर्व संख्या आवे. ॥ १४७ ॥

अहिं ते वात दृष्टांत सहित समजावे छे के—सौधर्म तथा ईशान ए बंने देवलोकने विषे पहेला प्रतरना (२४९) विमान ते मुख कहेवाय, अने छेला तेरमा प्रतरना (२०१) विमान ते भूमि कहेवाय. ए बन्ने संख्याने एकठी करीये त्यारे (४५०) थाय. एनुं अर्द्ध करीये त्यारे (२२५) थाय. तेने ए बन्ने देवलोकना तेर प्रतरे गुणीये त्यारे सौधर्म तथा ईशान देवलोकना विमाननी पंक्तिना सर्व विमानोनी संख्या (२९२५) थाय.

हवे ए बन्ने देवलोकना सर्व मळी साठ लाख विमानो छे, तेमांथी (२९२५) ओछा विमान काढीये त्यारे (५९९७०७५) एटला पुष्पावकीर्ण विमान बाकी रहे. ए रीते बाकीना देवलोक पण जाणी लेवुं. ॥ १४७ ॥

तेज वात आगळनी गाथामां कहे छे.

मान, ५१ (आरण) के० आरण विमान, (तहाविय) के० तेमज ५२ (अच्चुए) के० अच्युत विमान. ए चार विमान अगीयारमे तथा बारमे देवलोके (चेव) के० निश्चे जाणवा ॥ १४४ ॥

सुदंसण सुपडिबद्धे, मणोरमे चेव होइ पढमतिगे ॥
तत्तो य सव्वभद्दे, विसालए सुमणे चेव ॥ १४५ ॥

अर्थ—५३ (सुदंसणे) के० सुदर्शन विमान, ५४ (सुपडिबद्धे) के० सुप्रतिबद्ध विमान, ५५ (मणोरमे) के० मनोरम विमान, ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना (पढमतिगे) के० प्रथम त्रिकने विषे (चेव) के० निश्चे (होइ) के० छे. (तत्तो य) के० अने त्यार पछी ५६ (सव्वभद्दे) के० सर्वभद्र, ५७ (विसालए) के० विशाल, ५८ (सुमणे) के० सुमनस–ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना बीजा त्रिकने विषे (चेव) के० निश्चे छे. ॥ १४५ ॥

सोमणसे पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइयतिगे ॥
सव्वट्ठसिद्धिनामे, इंदया एव बासट्ठी ॥ १४६ ॥

अर्थ—५९ (सोमणसे) के० सोमनस विमान, ६० (पीइकरे) के० प्रीतिकर विमान, ६१ (आइच्चे) के० आदित्य विमान. ए त्रण विमान नव ग्रैवेयकना त्रीजा त्रीकने विषे (चेव) के० निश्चे (होइ) के० छे. अने पांच अनुत्तर विमानने विषे ६२ (सव्वट्ठसिद्धिनामे) के० एक सर्वार्थ सिद्धि नामनुं विमान छे. (इंदया एव बासट्ठी) के० ए बासठ इंद्रक विमाननां नाम कह्यां. १४६

हवे दरेक देवलोके श्रेणीना विमाननी संख्या लाववा माटे उपाय कहे छे.

अट्ठणव्ही सयसहस्सा, सत्ताणवई भवे सहस्साइं ॥
पणहत्तरि य विमाणा, हवंति पुप्फावकिण्णाणं ॥१४८॥

अर्थ—(अट्ठणव्ही सयसहस्सा) के० ओगणसाठ लाख, (सत्ताणवई सहस्साई) के० सत्ताणुं हजार, (य) के० अने (पणहत्तरि) के० पंचोत्तर एटला (पुप्फावकीण्णाणं) के० पुप्पावकीर्ण (विमाणा) के० विमानो (हवंति) के० होय छे. ॥१४८॥

तेवण्णे चउवण्णे, पंचावण्णे तहेव वासट्ठे ॥
एएसु पयरेसु अ, न हुंति पुप्फावकीण्णाइ॥ १४९ ॥

अर्थ—(तेवण्णे) के० त्रेपनमु, (चउवण्णे) के० चोपनमु, (पंचावण्णे) के० पंचावनमु (तहेव) के० तेमज (वासट्ठे) के० वासठमुं. (एएसु पयरेसु) के० एटला प्रतरोने विषे (पुप्फावकीण्णाइ) के० पुप्फावकीर्ण विमानो (न हुंति) के० नथी.॥१४९॥

हवे बासठे प्रतरमांनां कोइपण प्रतरने विषे त्रिखूणा चोखूणा अने वाटला विमानो जाणवानो उपाय कहे छे.

इगदिसि पंतिविमाणा, तिविभत्ता तंस चउरंसा वट्टा ॥
तंसेसु सेसमेगं, खिव सेस दुगस्स इक्किक्कं ॥ १५० ॥
तंसेसु चउरंसेसु य, तो रासितिगंपि चउगुणं काउ ॥
वट्टेसु इंदयं खिव, पयरधणं मीलियं कप्पे ॥ १५१ ॥

अर्थ—(इगदिसि पंतिविमाणा) के० एक दिशाना पंक्तिना विमानोने (तिविभत्ता) के० त्रण भागे वहेंचीये एटले अनुक्रमे (तंस चउरंसा वट्टा) के० त्रिखूणा चारखूणा अने वाटला एवा

नं. १

उर्ध्व देवलोके विमानोना मुख-भूमि विगेरे गणितनुं कोष्टक.

क्या देवलोके.	मुख विमान.	भूमि विमान	समास.	समासनुं अर्ध.	प्रतरनी संख्या (गुणाकार माटे)	प्रतर सं-ख्याए गुण-वाथी लब्ध थयेलां) पं-क्ति विमान.	पुष्पावकीर्ण विमान.	सर्व विमान
सौधर्म-ईशान	२४९	२०१	४५०	२२५	१३	२९२५	५९९७०७५	६००००००
सनत्कु-माहेन्द्र	१९७	१५३	३५०	१७५	१२	२१००	१९९७९००	२००००००
ब्रह्म	१४५	१२९	२७४	१३७	६	८३४	३९९१६६	४०००००
लांतक	१२५	१०९	२३४	११७	५	५८५	४९४१५	५००००
शुक्र	१०५	९३	१९८	९९	४	३९६	३९६०४	४००००
सहस्रार	८९	७७	१६६	८३	४	३३२	५६६८	६०००
आनत-प्राणत	७३	६१	१३४	६७	४	२६८	१३२	४००
आरण-अच्युत	५७	४५	१०२	५१	४	२०४	९६	३००
अधः ग्रैवेयक ३	४१	३३	७४	३७	३	१११	०	१११
मध्य ग्रैवेयक ३	२९	२१	५०	२५	३	७५	३२	१०७
उर्ध्व ग्रैवेयक ३	१७	९	२६	१३	३	३९	६१	१००
अनुत्तर	५	०	०	०	१	५	०	५
उर्ध्व देवलोक	२४९	५	२५४	१२७	६२	७८७४	८४८९१४९	८४९७०२३

अट्ठणव्हो सयमहस्सा, सत्ताणवई भवे सहस्साइं ॥
पणहत्तरि य विमाणा, हवंति पुप्फावकिण्णाणं ॥१४८॥

अर्थ—(अट्ठणव्ही सयमहस्सा) के० ओगणसाठ लाख, (सत्ताणवई सहस्साइं) के० सत्ताणुं हजार, (य) के० अने (पणहत्तरि) के० पंचोत्तर एटला (पुप्फावकीण्णाणं) के० पुप्फावकीर्ण (विमाणा) के० विमानो (हवंति) के० होय छे. ॥१४८॥

तेवण्णे चउवण्णे, पंचावण्णे तहेव बामट्ठे ॥
एएसु पयरेसु अ, न हुंति पुप्फावकीण्णाइ ॥ १४९ ॥

अर्थ—(तेवण्णे) के० त्रेपनमुं, (चउवण्णे) के० चोपनमुं, (पंचावण्णे) के० पंचावनमु (तहेव) के० तेमज (बामट्ठे) के० बासठमुं. (एएसु पयरेसु) के० एटला प्रतरोने विषे (पुप्फावकीण्णाइ) के० पुप्फावकीर्ण विमानो (न हुंति) के० नथी.॥१४९॥

हवे बासठे प्रतरमांनां कोइपण प्रतरने विषे त्रिखूणा चोखूणा अने वाटला विमानो जाणवानो उपाय कहे छे.

इगदिसि पंतिविमाणा, तिविभत्ता तंस चउरंसा वट्टा ॥
तंसेसु सेसमेगं, खिव सेस दुगस्स इक्किकं ॥ १५० ॥
तंसेसु चउरंसेसु य, तो रासितिगंपि चउगुणं काउ ॥
वट्टेसु इंदयं खिव, पयरधणं मीलियं कप्पे ॥ १५१ ॥

अर्थ—(इगदिसि पंतिविमाणा) के० एक दिशाना पंक्तिना विमानोने (तिविभत्ता) के० त्रण भागे वहेंचीये एटले अनुक्रमे (तंस चउरंसा वट्टा) के० त्रिखूणा चारखूणा अने वाटला एवा

त्रण भाग थाय, अने एम करता (सेसमेगं) के० जो एक शेष वधे तो (तंसेमु) के० त्रिखूणामांहे (खिव) के० मेलववु. अने (सेसदुगस्स) के० शेष बे वधे तो (इक्किकं) के० एक एक मेलववुं. ॥ १५० ॥ एटले (तंसेमु य चउरंसेमु) के० एक त्रण खूणामां अने एक चार खूणामां मेलववुं. (तो) के० त्यार पछी (रासितिगंपि) के० ए त्रणे राशीमांहेली एक एक राशीने पण (चउगुणं काउ) के० चारगुणा करीने पछी (वट्टेसु) के० वाटला विमानमांहे (इंदयं खिव) के० इंद्रक विमान मेलववुं. पछी (पयरधणं) के० प्रतरना चारे दिशाना विमानो एकठा करवाथी (कप्पे)के० सौधर्मादिक देवलोके विमानोनी सर्व संख्या थाय.१५१

अहिं एज वात दृष्टांत सहित समजावे छे के—सौधर्म तथा ईशान देवलोकना पहेला प्रतरमां एक दिशाए बासठ विमान छे, तेने त्रण भागे वेहेंचीए तो वीश वीशनो एक एक भाग थाय. उपर बे विमान वधे. तेमांहेलुं एक विमान त्रिखूणामां अने बीजुं विमान चोखूणामां मेलवतां एकवीश विमान त्रिखूणावाला, एकवीश विमान चोखूणावाला अने वीश विमान वाटला थाय. पछी ए त्रणे राशीना विमानने चारगुणा करीने वाटलामांहे एक इंद्रक विमान मेलवीये एटले पहेला प्रतरनी चारे दिशानी चारे पंक्ति मलीने चोराशी त्रिखूणा, चोराशी चो खूणा अने एकाशी वाटलां. एम सर्व मलीने बसो ओगणपचास विमान थाय. ॥ ए प्रमाणे बीजा प्रतरोने विषे पण जाणी लेवुं.

हवे सौधर्मादिक बार देवलोकना देवोनां चिन्ह कहे छे.

कप्पेसु य मिय महिसो, वराह सिंहा य छगल सालूरा ॥
हय गय भुयंग खग्गी, वसहा विडिमाइं चिंधाइं ॥१५२॥

अर्थ—(कप्पेसु य) के० बार देवलोक मांहेला पहेला सौ-धर्म देवलोकना देवोने (मिय) के० मगनुं चिन्ह, बीजा ईशान देवलोकना–देवोने (महिसो) के० पाडानुं चिन्ह, त्रीजा सनत्कु-मार देवलोकना देवोने (वराह) के० सूअरनुं चिन्ह. चोथा माहेद्र देवलोकना देवोने (सिहा य) के० सिंहनुं चिन्ह पांचमा ब्रह्म देवलोकना देवोने (छगल) के० बोकडानुं चिन्ह. छट्ठा लांतक देवलोकना देवोने (सालूरा) के० देडकानुं चिन्ह, सातमा शुक्र देवलोकना देवोने (हय) के० घोडानुं चिन्ह, आ-ठमा सहस्त्रार देवलोकना देवोने (गय) के० हाथीनुं चिन्ह, नवमा आनत देवलोकना देवोने (भुयग) के० सर्पनुं चिन्ह दशमा प्राणत देवलोकना देवोने (खग्गी) के० गेंडानुं चिन्ह, अगीयारमा आरण देवलोकना देवोने (वसहा) के० वृषभनुं चिन्ह, अने बारमा अच्युत देवलोकना देवोने (विडिमाई) के० मृग वि-शेषनुं चिन्ह छे. ए (चिंधाइ) के० चिन्हो कह्यां ॥ १५२ ॥

हवे दश वैमानिक इंद्रोना सामानिक देवता तथा आत्मरक्षक देवताओनी संख्या कहे छे.

चुलसी असिइ बावत्तरि, सत्तरि सट्ठी य पन्न चत्ताला ॥ तुल्लसुर तीस वीसा, दससहस्स आयरक्ख चउगु-णिया ॥ १५३ ॥

अर्थ—सौधर्मेंद्रना (चुलसी) के० चोराशी हजार, ईशानें-द्रना (असिइ) के० एंशी हजार, सनत्कुमारेंद्रना (बावत्तरि) के० बहोंतेर हजार, माहेंद्रना (सत्तरि) के० सीत्तेर हजार, ब्रह्में-द्रना (सट्ठी य) के० साठ हजार, लांतकेंद्रना (पन्न) के० प-

चास हजार, शुक्रेंद्रना (चत्ताला) के० चालीश हजार, सहस्रारेंद्रना (तीस) के० त्रीश हजार, आनतमाणतेंद्रना (वीसा) के० वीश हजार, आरणअच्युतेंद्रना (दससहस्स) के० दश हजार (सुरवुर) के० सामानिक देवना जाणवा, अने (आयरक्ख) के० आत्मरक्षक देवो (चउगुणिया) के० सामानिक देवताथी चार गुणां दरेक इंद्रोने जाणवां. ॥ १५३ ॥

उपरना विमानो कोने आधारे रह्यां छे ? ते कहे छे.

दुसु तिसु तिसु कप्पेसु. घणुदहि घणवाय तदुभयं च कमा ॥
सुर भवणपइट्ठाणं, आगासपइट्ठिया उवरिं ॥ १५४ ॥

अर्थ—(दुसु) के० पहेला अने बीजा देवलोकने (घणुदहि) के० घनोदधिनो आधार छे. (तिसु) के० त्रीजा चोथा अने पांचमा देवलोकने (घणवाय) के० घनवातनो आधार छे, (च) के० वली (तिसु कप्पेसु) के० छठ्ठा सातमा अने आठमा देवलोकने (तदुभयं) के० घनोदधि अने घनवातनो आधार छे ते (कमा) के० अनुक्रमे जाणवुं. (उवरिं) के० तेना उपर (सुरभवणपइट्ठाणं) के० देवलोकने आधार ते (आगासपइट्ठिया) के० आकाशने आधारे छे. ॥ १५४ ॥

हवे विमानोना पृथ्वीपिंडनुं अने विमाननुं उंचपणुं पण गाथाथी कहे छे.

सत्तावीससयाइं, पुढवीपिंडो विमाणउच्चत्तं ॥
पंचसया कप्पदुगे, पढमे तत्तो य इक्किक्कं ॥ १५५ ॥

हायइ पुढवीसु सयं, वड्ढइ भवणेसु दुदुदु कप्पेसु ॥
चउगे नवगे पणगे, तहेव जा णुत्तरेसु भवे ॥१५६॥
इगतीससया पुढवी, विमाणमिक्कारसेव य सयाइं ॥
बत्तीसजोयणसया, मिलिया सव्वत्थ नायव्वा ॥ १५७॥

अर्थ—(पढमे) के० पहेला (कप्पदुगे) के० बे देवलोकने विषे (पुढवीपिंडो) के० पृथ्वीना पिंडनुं जाडपणुं प्रमाणांगुलना प्रमाणथी (सत्तावीससयाइं) के० सत्तावीस सो योजननुं छे अने (विमाणउच्चत्तं) के० विमाननुं उचपणुं (पंचसया) के० पांच सो योजननुं छे. (तत्तो य) के० त्यार पछी (पुढवीसु) के० पृथ्वीपिंडमां (इक्किक्कं सयं) के० एक एक सो योजन ॥ १५५ ॥ (हायइ) के० ओछा करवा अने (भवणेसु) के० विमानने विषे (वड्ढइ) के० एक एक सो योजन वधारवा. एवी रीते (दु) के० त्रीजा अने चोथा देवलोकमां (दु) के० पांचमा अने छट्ठा देवलोकमां, (दु कप्पेसु) के० सातमा अने आठमा देवलोकमां, (चउगे) के० नवमा दशमा अगीयारमा अने बारमा देवलोकमां, (नवगे) के० नवग्रैवेयकमां, (तहेव) के० तेमज (पणगे) के० पांच अनुत्तर विमानमां (जा णुत्तरेसु भवे) के० यावत् पांचमु अनुत्तर विमान होय त्यां सुधीमां ॥ १५६ ॥ (इगतीससया) के० एकत्रीश सो योजन जाडपणे (पुढवी) के० पृथ्वीपिंड होय अने (विमाणमिक्कारसेव य सयाइं) के० विमाननुं उचपणुं अगीयार सो योजननुं होय. एटले ए पृथ्वीपिंडना अने विमाननां उचपणाने (मिलिया) के० एकठां करीये तो (सव्वत्थ) के० सर्व स्थानके (बत्तीस जोयण सया) के० बत्रीस सो योजन (नायव्वा) के० जाणवा. ॥ १५७ ॥

ते आ प्रमाणे-पहेला अने बीजा देवलोके पृथ्वीपिंड (२७००) याजन तथा विमान (५००) योजन ॥ त्रीजां अने चोथा देवलोके पृथ्वीपिंड [२६००] योजन तथा विमान (६००) योजन ॥ पांचमा अने छट्ठा देवलोके पृथ्वीपिंड (२५००) योजन तथा विमान [७००] योजन ॥ सातमा अने आठमा देवलोके पृथ्वीपिंड (२४००) योजन तथा विमान (८००) योजन ॥ नवमे दशमे अगियारमे अने बारमे देवलोके पृथ्वीपिंड (२३००) योजन तथा विमान (९००) योजन ॥ नव ग्रैवेयके पृथ्वीपिंड (२२००) योजन तथा विमान (१०००) योजन ॥ पांच अनुत्तर विमाने पृथ्वीपिंड (२१००) योजन तथा विमान (११००) योजन॥ बन्नेने भेगा करीये त्यारे (३२००) योजन थाय ॥

हवे सौधर्मादिक विमानोना वर्ण कहे छे.

पण चउ ति दु वण्णविमाणा, सधय दुसु दुसु य जा सहस्सारो ॥
उवरि सिय भवणवंतर-जोइसियाणं विविहवण्णा॥१५८॥

अर्थ—पहेला देवलोकथी (जा सहस्सारो) के० आठमा सहस्रार देवलोक सुधीना (दुसु दुसु य) के० बन्ने बन्ने देवलोकना (पण चउतिदुवण्ण विमाणा) के० अनुक्रमे पांच चार त्रण अने बे वर्णना विमानो होय छे. तथा (सधय) के० धजा सहित होय छे. ते आ प्रमाणे-पहेला तथा बीजा देवलोकना विमानो काला नीला राता पिला अने धोला होय छे, त्रीजा तथा चोथा देवलोकना विमानो नीला राता पिला अने धोला होय छे. पांचमा तथा छट्ठा देवलोके राता पीला अने धोला होय छे. सातमा तथा आठमा देवलोके पीला अने धोला होय छे, उवरि के० तेना उपरना

विमानो (भिय) के० थोडा होय छे. तथा (भवणवंतर जोइसियाणं) के० भवनपति व्यंतर तथा ज्योतसी देवोना विमानो (विहवण्णा) के० विविधवर्णवाला होय छे. ॥१५८॥

हवे दरेक देवलोकना त्रिखूणा चोखूणा अने वाटला विमानोनी संख्या कहे छे.

पन्नट्ठ अट्ठसीया, दुसत्तरिया य नव नव सयाओ ॥
सोहम्मग इसाणे, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥ १५९ ॥

अर्थ—(सोहम्मगइसाणे) के० सौधर्म अने ईशान देवलोकमां (वट्टा तंसा य चउरंसा) के० वाटला त्रिखूणा अने चउखूणा-विमानो सांथे गणतां (नव नव सयाओ) के० नव सो नव सो उपर (पन्नट्ठ) के० पांसठ, (अट्ठसीया) के० अठ्यासी अने (दुसत्तरिया य) के० बहोतेर छे. अर्थात् सौधर्म अने ईशान देवलोकना सांथे मली वाटला विमान ९६५ त्रिखूणा विमान ९८८ अने चउखूण विमान ९७२ छे. ॥ १५९ ॥

छच्च सया बाणउया, सत्तसया बारसुत्तरा हुंति ॥
छच्च सया छन्नउया, वट्टाइ सणंकुमार माहिंदे ॥१६०॥

अर्थ—(सणंकुमार माहिंदे) के० सनत्कुमार अने माहेंद्र ए बे देवलोकमां सांथे गणतां (छच्च सया बाणउया) के० छसो अने बाणु वाटला विमान, (सत्तसया बारसुत्तरा) के० सात सो बार त्रिखूणा विमान अने (छच्च सया छन्नउया) के० छसो छन्नु चउखूणा एम (वट्टाइ) के० वाटला विगेरेनी संख्या (हुंति) के० होय छे. ॥ १६० ॥

चावत्तरि चुलसीया, छसुत्तरया, दुवेदुवीसयाओ ॥
कप्पंमि बंभलाए, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥ १६१ ॥

अर्थ— (बंभलोए कप्पंमि) के० ब्रह्म देवलोकने विषे (वट्टा) के० वाटला विमान, (तंसा) के० त्रिखूणा विमान, (य) के० अने (चउरंसा) के० चारखूणा विमान ते (दुवेदुवीसयाओ) के० बसो बसो उपर (चोवत्तरी) के० चुमोतर विमान, (चुलसीया) के० चोराशी विमान, अने [छसुत्तरया] के० छोतेर विमान छे. अर्थात् वाटला (२७४) त्रिखूण [२८४] अने चउखुणा [२७६] विमान छे. ॥ १६१ ॥

तेणउय चेव सयं, दो चेव सया सयं च बाणउयं ॥
कप्पंमि लंतगंमि, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥ १६२ ॥

अर्थ—(लंतगंमि कप्पंमि) के० लांतक देवलोकने विषे [तेणउय चेव सयं] के० एक सो त्राणु विमान [वट्टा] के० वाटला, (दो चेव सया) के० बसो विमान (तंसा) के० त्रिखूणा, अने [सयं च बाणउयं] के० एकसो बाणु विमान [चउरंसा] के० चोखूणा अनुक्रमे जाणवा ॥ १६२ ॥

अट्ठासीयं च सयं, छत्तीससयं सयं च बत्तीसं ॥
कप्पंमि महासुक्के, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥ १६३ ॥

अर्थ—(महासुक्के कप्पंमि) के० शुक्र देवलोकने विषे (अट्ठासिय च सयं) के० एकसो अठ्ठासिय (वट्टा) के० वाटला

विमान, (छत्तीस सयं) के० एक सो छत्रीश (तंसा) के० त्रिखुणा विमान (च) के० अने (सय च बत्तीसं) के० एक सो बत्रीस (चउरंसा) के० चोखुणा विमान छे. ॥ १६३ ॥

अट्टुत्तरसय सोडस–सय पुण अट्ठुत्तरं सयं पुण्णं ॥
कप्पंमि सहस्सारे, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥ १६४ ॥

अर्थ—(सहस्सारे कप्पंमि) के० सहस्रार देवलोकने विषे (अट्टुत्तर सय) के० एकसो आठ (वट्टा) के० वाटला विमान, (सोडस सय) के० एकसो सोल (तंसा) के० त्रिखूणा विमान अने (पुण) के० वली (अट्ठुत्तरं सयं पुण्णं) के० बरोबर एकसो आठ विमान (चउरंसा) के० चोखूणा जाणवा. ॥ १६४ ॥

अडसीइ बाणउई, अट्ठासीइ य होइ बोधव्वा ॥
आणयपाणयकप्पे, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥ १६५ ॥

अर्थ—(आणयपाणयकप्पे) के० आनत अने प्राणत देवलोकमां (अडसीइ) के० अठयासी (वट्टा) के० वाटला विमान, (बाणउई) के० बाणुं (तंसा) के० त्रिखूणा विमान, (य) के० अने (अट्ठासीइ) के अठयासी (चउरंसा) के चोखूणा विमान (होइ) के० छे ते (बोधव्वा) के० जाणवा ॥ १६५ ॥

चउसट्ठी बावत्तरि, अडसट्ठी चेव होइ नायव्वा ॥
आरण अच्चुय कप्पे, वट्टा तंसा य चउरंसा ॥ १६६ ॥

अर्थ—(आरणअच्चुय कप्पे) के० आरण अने अच्युत देवलोकमां (चउसट्ठी) के० चोसठ (वट्टा) के० वाटला विमान,

(बावत्तरि) के० बहोंतर (तंसा) के० त्रिखूणा विमान, य के० अने (अडसट्टी) के० अडसठ (चउरंसा) के० चो खूणा विमान (चेव) के० निश्चे (होइ) के० छे ते (नायव्वा) के० जाणवा. ॥१६६॥

पणतीसा चत्ताला, छत्तीसा हेट्ठिमंमि गेविज्जे ॥
तेवीसा अट्ठविसा, चोवीसा चेव मज्झिमए ॥१६७॥

अर्थ—(हेट्ठिमंमि गेविज्जे) के० नीचेना त्रण ग्रैवेयकमां (पणतीसा) के० पांत्रीश वाटला विमान, (चत्ताला) के० चालीश त्रिखूणा विमान, अने (छत्तीसा) के० छत्रीश चोखूणा विमान छे. तथा (मज्झिमए) के० मध्यना त्रण ग्रैवेयकमां (तेवीसा) के० त्रेवीश वाटला विमान, (अट्ठाविसा) के० अठयावीश त्रिखूणा विमान, अने (चोवीसा) के० चोवीश चो खूणा विमान (चेव) के० निश्च छे. ॥ १६७ ॥

इक्कारस सोलस बार–सेव गेविज्जे उवरिमे हुंति ॥
एकं वट्टं तंसा, चउरो य अणुत्तरविमाणे ॥ १६८ ॥

अर्थ—(उवरिमे गेविज्जे) के० उपरना त्रण ग्रैवेयके (इक्कारस) के० अगीयार वाटला विमान, (सोलस) के० सोल त्रिखूणा विमान अने (बारसेव) के० बार चोखूणा विमान (हुंति) के० छे. तथा (अणुत्तर विमाणे) के० पांच अनुत्तर विमानने विषे (एकं वट्टं) के० एक वाटलुं विमान (य) के० अने (चउरो तंसा) के० चार त्रिखूणा विमान छे. ॥ १६८ ॥

पणवीसा बासीया, छवीसं चेव अट्ठवीसा य ॥
छवीसं चउराहिया, वट्टाईयाण सव्वग्गं ॥ १६९ ॥

अर्थ— (पणवीसा बारसगा) के० पचीस सो अने ब्यासी बारना विमान, (तहियं अट्ठसीया य) के० तहीन सो अने अट्ठ्यासी त्रिखूणा विमान, तथा (तहीनं चउरंसिया) के० तहीन सो अने चार अधिक चोखूणा विमान. ए वट्ट लोकमां (वट्टाइ-णाण) के० वाटला विगेरे विमानोनी (सव्वग्गं) के० सर्व एकठी संख्या कही. ॥ १६९ ॥

हवे दरेक देवलोके वट्ट आदिना विमानोनी सर्व संख्या कहे छे.

सत्त सय सत्तवीसा, चत्तारि सया य हुंति चउणउया ॥
चत्तारिय छासिया, सोहम्मे हुंति वट्टाइं ॥ १७० ॥

अर्थ—(सोहम्मे) के० सौधर्म देवलोके (सत्त सय सत्त-वीसा) के० सात सो सत्तावीस विमान वाटलां (य) के० अने (चत्तारिसया चउणउया) के० चार सो चोराणु विमान त्रिखू-णावाला (हुंति) के० होय छे. वली (चत्तारि सय छासिया) के० चार सो छयासी विमान चोखुणावाला. एम (वट्टाई) के० वाटला विगेरे सर्व मलीने सत्तर सो सात विमान चार पंक्तिना (हुंति) के० छे. ॥ १७० ॥

इगतीस सय सहस्सा, अट्ठाणउई सवे सहस्सा य ॥
दोयसया तेणउया, सोहम्मे पुप्फकिन्नाणं ॥ १७१ ॥

अर्थ—(इगतीस सय सहस्सा) के० एकत्रीस लाख (अट्ठा-णउइ सहस्सा) के० अठाणुं हजार (दोयसया) के० बसो अने (तेणउया) के० त्राणु अधिक एटला (सोहम्मे) के० सौधर्म

देवलोकने विषे (पुप्फकिन्नाणं) के० पुष्पावकीर्ण विमानो छे. ए सर्व मली बत्रीश लाख विमान सौधर्म देवलोकमां जाणवां ॥१७१॥

एमेवय ईमाणे, नवरं वट्टाग होइ नाणत्तं ॥
दो सय अट्ठत्तीसा, सेसा जहचेव सोहम्मे ॥१७२॥

अर्थ—(ईसाणे) के० ईशान देवलोकने विषे (एमेवय) के० एज प्रमाणे एटले सौधर्म देवलोकनी पेठे जाणवुं, परंत (नवरं) के० एटलुं विशेष छे के-(वट्टाग) के० वाटला विमाननी (दो सय अट्ठतीसा) के० बसो आडत्रीश (नाणत्तं होइ) के० ए जुदा प्रकारनी संख्या छे. (सेसा) के० बाकीना विमानोनी संख्या (जहचेव सोहम्मे) के० जेम सौधर्म देवलोकमां कही छे तेम जाणवी ॥ १७२ ॥

सतरसमया सत्तु-त्तरा य सोहम्मि आवलिविमाणा ॥
बारस अट्ठारहिया, ईसाणे आवलि विमाणा ॥१७३॥

अर्थ—(सोहम्मि) के० सौधर्म देवलोकने विषे चारे दिशाना सर्व मलीने (सतरसमया सत्तुत्तरा य) के० सत्तर सो अने सात (आवलि विमाणा) के० पंक्तिमां रहेलां विमानो छे. अने (ईसाणे) के० ईशान देवलोकने विषे चारे दिशाना चार पंक्तिना मलीने (बारस अट्ठारहिया) के० बार सो अने अढार अधिक (आवलि विमाणा) के० पंक्तिमां रहेलां विमानो छे. ॥ १७३ ॥

सत्तावीसं लक्खा, अट्ठाणउइ सया सहस्सा य ॥
सत्तसया बासीया, ईसाणे पुप्फकिन्नाणं ॥ १७४ ॥

अर्थ—(सत्तावीसं सयाइं) के० सत्तावीश सय, (चउ-पन्न सहस्सा य) के० अठाणुं हजार अने वळी (पणयाला चा-लीसा) के० पणयाळी ने चाळीशी एटले (पुप्फविमाणं) के० पुष्पावकीर्ण विमानो (ईसाणे) के० ईशान देवलोके छे. ॥ १७४ ॥

पंचसया बावीसा, तिन्नेव सया उ हुंति उप्पन्ना ॥
तिन्नि सया अडयाला, सणंकुमारम्मि वट्टाई ॥१७५॥

अर्थ—(पंचसया बावीसा) के० पांच सो बावीश वाटलां विमान, (तिन्नेव सया उप्पन्ना) के० त्रण सो उप्पन्न त्रिखूणा विमान, अने (तिन्निसया अडयाला) के० त्रण सो अडतालीस चोखूणा विमान, ए (सणंकुमारम्मि) के० सनत्कुमार देवलोकना (वट्टाई) के० वाटलां विगेरे विमानो (हुंति) के० होय छे. ॥१७५॥

सत्तरिसय सगूणं, तिन्नेव सया हवंति उप्पन्ना ॥
तिन्नि सया अडयाला, वट्टाइ महिंद सगस्स ॥१७६॥

अर्थ—(सत्तरिसयसगूणं) के० पूरेपूरा एक सो सीत्तेर वाटलां विमान, (तिन्नेव सया उप्पन्ना) के० त्रण सो उप्पन्न त्रिखूणा विमान, (तिन्नि सया अडयाला) के० त्रण सो अडतालीस चोखूणा विमान ए प्रमाणे (महिंदसगस्स) के० माहेंद्र देवलोकना (वट्टाइ) के० वाटलां विगेरे विमानो (हवंति) के० होय छे. ॥ १७६ ॥

बारस सा छत्तीसा, कप्पंमि सणंकुमार आवलिया ॥
अट्ठसया चोवत्तर, विमाण माहिंद आवलिआ ॥१७७॥

अर्थ—(सणकुमार कप्पंमि) के० सनत्कुमार देवलोकमां (आवलिया) के० पंक्तिमां रहेला सर्वे विमानो (बारसया छव्वीसा) के० बार सो अने छवीस छे, अने (माहिंद) के० माहेंद्र देवलोकमां (आवलिया) के० पंक्तिमां रहेला सर्वे (विमाण) के० विमानो (अठ्ठसया चोवत्तर) के० आठ सो अने चुमोतेर छे.॥१७७॥

एकारस लक्खाई, अठ्ठाणउई भवे सहस्सा य ॥
सत्तसया चोवत्तर,हंति पुप्फावकिन्नाणं ॥ १७८ ॥

अर्थ—(एकारस लक्खाई) के० अगीयार लाख, (अठ्ठाणउई सहस्सा य) के० अठाणु हजार (भवे) के० होय. वली ते उपर (सत्तसया चोवत्तर) के० सात सो चुमोतेर अधिक एटला (पुप्फावकिन्नाणं) के० पुष्पावकीर्ण विमानो सनत्कुमार देवलोकमां (हवंति) के० होय छे. ॥ १७८ ॥

सत्तेव सयसहस्सा, नवनवई खलु भवे सहस्साइं ॥
सयमेगं छवीसं, हवंति पुप्फावकिन्नाणं ॥ १७९ ॥

अर्थ—(सत्तेव सयसहस्सा) के० सात लाख, (नवनवई) के० नवाणुं हजार (भवे) के० होय, वली (सयमेगं छवीसं) के० एक सो छवीस उपर एटला (पुप्फावकिन्नाणं) के० पुष्पावकीर्ण विमानो माहेंद्र देवलोकमां (हवंति) के० होय छे. ॥१७९॥

हवे सौधर्मादिक विमाननुं लांबाणु, पहोलपणुं, तथा विमाननी अंतरनो परिधि अने बहारनो परिधि मापवानी उपाय कहे छे.

रविणो उदयत्थंतर, चउणवइ सहस्स छवीसा ॥
बायाल सट्ठि भागा, कक्कड संकंति दियहंमि ॥१८०॥

अर्थ—(रविणो) के० सूर्यना (उदयत्थंतर) के० उदय अने अस्तना क्षेत्रनुं अंतर (चउणवइ सहस्स) के० चोराणुं हजार (पणसय) के० पांच सो अने (छवीसा) के० छवीस योजन तथा (बायाल सट्ठि भागा) के० एक योजनना साठ भाग करीये तेवा बेतालीस भाग एटलुं (कक्कडसंकंति दियहंमि) के० कर्क संक्रांतिना पहेला दिवसने विषे सूर्य चाले छे. ॥ १८० ॥

एयंमि पुणो गुणए,ति पंच सग नवहि होइ कमभाणं ॥
तिगुणंमि य दोलक्खा,तेसीइ सहस्स पंच सया॥१८१॥

अर्थ—(पुणो) के० वली (एयंमि) के० ए पूर्वे कहेला उदय अस्तना अंतरना योजनने (ति पंच सग नवहि) के० त्रण पांच सात अने नवथी (गुणए) के० गुणीये अर्थात् उदय अस्तना अंतरने त्रण गुणा, पांच गुणा सात गुणा अने नव गुणा योजन करीये त्यारे (कममाणं) के० अनुक्रमे जे प्रमाण (होइ) के० थाय छे. ते कहे छे. त्यारे (तिगुणंमि य) के० त्रणगणुं करीये त्यारे (दोलक्खा के० बे लाख, (तेसीइ सहस्स) के० त्र्यासी हजार, (पंच) सया) के० पांच सो तथा—॥ १८१ ॥

असिइ छसट्ठि भागा, जोयण चउलक्ख बिसत्तरि सहस्सा ॥
छच सया तेत्तीसा, तीसं कला पंचगुणियंमि ॥१८२॥

अर्थ—(असिइ) के० एंशी योजन. अने (छसट्ठि भागा) के० साठीया छ भाग थाय, तथा (पंचगुणियंमि) के० पांच गुणा करिये त्यारे (चउलक्ख) के० चार लाख,

(विमत्तरि सहस्सा) के० एक योजनना साठीया त्रीस भाग उपर थाय ॥ १८२ ॥

सत्तगुणे छलक्खा, इगसट्ठि सहस्स छसय छासीया ॥
चउपन्नकला तह नव,गुणंमि अडलक्ख सङ्ढाओ॥१८३॥

अर्थ—(सत्तगुणे) के० अंतर प्रमाणने सात गणुं करतां (छलक्खा) के० छे लाख, (इगसट्ठि सहस्स) के० एकसठ हजार अने (छसय) छासीया) के० छ सो ने छयासी योजन तथा (चउपन्नकला) के० एक योजनना साठीया चोपन भाग थाय. (तह) के० तेमज (नव गुणंमि) के० अंतर प्रमाणने नव गणुं करीये त्यारे (अडलक्ख सङ्ढाओ) के० साडा आठ लाख, तथा—॥ १८३ ॥

सत्तसया चत्ताला, अट्ठारस कला य इय कमा चउरो॥
चंडा चवला जयणा, वेगा य तहा गई चउरो ॥१८४॥

अर्थ—(सत्तसया चत्ताला) के० सातसो चालीस योजन अने (अट्ठारस कला य) के० एक योजनना साठीया अढार भाग. (इय) के० ए प्रमाणे (कमा) के० चालवानी गतिनो क्रम (चउरो) के० चार प्रकारनो छे. कारण के-(चंडा चवला जयणा) के० चंडा चवला जयना (तहाय) के० अने तेमज (वेगा) के० वेगा ए नामनी (गई चउरो) के० चार गति छे. ए चारे गति एक एकथी वधारे उतावली छे ॥ १८४ ॥

इत्थ य गई चउथि, जयणयरिं नाम केइ मन्नंति ॥
एहिं कमेहि मिमाहिं,गइहिं चउरो सुरा कमसो ॥१८५॥

अर्थ—(इत्थ य) के० अहिं (केइ) के० कोइक आचार्य (चउत्थि गइं) के० चोथी देगा गतिने (जयणयरिं नाम) के० यवनांतर ए नामथी (मन्नंति) के० माने छे. (एहिं कमेहिं) के० ए पूर्वोक्त क्रमेकरीने (चउरो सुरा) के० चार देवता (इमाहिं) गईहिं) के० ए चटादिक चार गतिये करीने (कमसो) के० अनुक्रमे विमानोने मापे. ते एवी रीते के-॥ १८५ ॥

विक्खंभं आयामं, परिहिं अब्भिंतरं च बाहिरियं ॥
जुगवं मिणंति छम्मास, जाव न लहंति ते पारं ॥१८६॥

अर्थ—कोइ एक देवता त्रणगुणी चंडा गतिये करी विमानना (विक्खंभं) के० पहोळपणने मापे. बीजो देवता पांच गुणी चपळा गतिये करी विमानना (आयामं) के० लांबपणाने मापे. त्रीजो देवता सातगुणी यवनागतिये करी विमाननी (अब्भिंतरं परिहिं) के० मांहेली परिधिने मापे. अने चोथो देवता नवगुणी (वेगागतिये) करीने विमाननी (बाहिरियं) के० बहारनी परिधिने मापे. एम ए चारे देवताओ (जाव) के० यावत् (छमास) के० छमासुधी (जुगवं) के० एकी साथे (मिणंति) के० विमानने मापे, तो पण) के० ते देवता केटलाक विमानोना (पारं) के० पारने (न लहंति) के० न पामे. ॥ १८६ ॥

जोयणलक्खपमाणं, निमेसमित्तेण जाइ जो देवो ॥
छम्मासेण य गमणं, एवं रज्जं जिणा बिंति ॥१८७॥

अर्थ—(जो देवो) के० जे कोइ देवता (निमेसमित्तेण) के० एक निमेष मात्रे करीने (जोयण लक्खपमाणं) के० एक लाख योजन प्रमाण (जाई) के० चाले तो (छम्मासेण य गमणं) के० छमास सुधी चालतां जे प्रमाण थाय (एवं) के० ए प्रमाणने (रज्जं) के० एक राज प्रमाण कहेवाय, एम (जिणा बिंति) के० जिनेश्वरो कहे छे. ॥ १८७ ॥

पावंति विमाणाणं, कसिंपि हु अहव तिगुणियाइए ॥
कम चउगे पत्तेयं, चंडाई गइ उ जोइज्जा ॥ १८८ ॥
तिगुणेण कप्प चउगे,पंचगुणेणं तु अट्ठसु मुणिज्जा ॥
गेविज्जे सत्तगुणेण, नवगुणेगुत्तरचउक्के ॥ १८९ ॥

अर्थ—(अहव) के० अथवा (केसिपि विमाणाणं) के० केटलाक विमानोना (तिगुणियाईए) के० त्रिगुणादिक गतिवडे पारने (पावंति) के० पामे छे. ते एवी रीते के (कम चउगे) के० त्रिगुणादि चार क्रमने विषे (पत्तेय) के०दरेक प्रत्ये (चडाइ गइउ)के० (चंडादिक गति जोइज्जा) के० जोडवो.ने एवा रीते के-कोइ देवता (कप्पचउगे) के० पहेला चार देवलोकमां (तिगुणेण) के० त्रिगुणी एवी चंडा चवला पवना अने वेगवती गतिवडे विमाननी पहोलाइ लंबाइ अभ्यंतरपरिधि अने बाह्य परिधिने मापे तो पार पामे. बाकीना (अट्ठसु) के० उपरना आठ देवलोकने विषे (पंचगुणेण) के० पांचगुणा चंडादिक गति वडे विमानोनी पहोलाइ विगेरेने मापे तो पार पामे. एम (मुणिज्जा) के० जाणवुं. (गेविज्जे) के० नव ग्रैवेयकने विषे सात गुणी चंडादिक चारे गति वडे विमाननी पहोलाइ विगेरेने मापे अने (अणुत्तरचउक्के) के० सर्वार्थ सिद्ध विमान विना बाकीना चार विमा-

नर्की पदोत्या विगेरेने (नरग ण) के० नरगुणो घंदादिक गतिथी थाये तो पार पावे ॥ १८८ ॥ १८९ ॥

पणयालीसं लक्खा, सीमंतय माणुसं उडु सिद्धं च ॥
अपइट्ठाणो सव्वट्ट, जंबुद्दीवो इमं लक्खं ॥ १९० ॥

अर्थ—(सीमंतय) के० सीमंत नामनो नरकावास, माणुसं के० मनुष्यक्षेत्र, उडु के० उडु नामनुं विमान, च के० अने सिद्धं के० सिद्धशिला ए चार पदार्थो प्रत्येक (पणयालीसं लक्खा) के० पीस्तालीस लाख योजनना प्रमाणवाळा छे, तथा (अपइट्ठाणो) के० सातमा नरकनो अपइट्ठाण नरकावास, (सव्वट्ट) के० सर्वार्थसिद्ध विमान अने (जंबुद्दीवो) के० जंबुद्वीप (इमं) के० ए त्रण पदार्थो प्रत्येक (लक्खं) के० एक लाख योजनना छे. ॥ १९० ॥

अह भागा सग पुढविसु, रज्जु इक्किक तहय सोहम्मे ॥
माहिंद लंत सहसार-अच्चुय गेविज्ज लोगंते ॥१९१॥

अर्थ—मेरुना मध्य भागे रहेला रुचक प्रदेशथकी (अह) के० नीचे (पुढविसु) के० पृथ्वीने विषे [भागा सग] के० सात भाग करीये तो [रज्जु इक्किक] के० एक एक भागनो एक एक राज प्रमाण थाय छे. (तहय) के० तेमज (सोहम्मे) के० सौधर्म देवलोक, (माहिंद) के० (माहेंद्र देवलोक, (लंत) के० लांतक देवलोक, (सहसार) के० सहस्रार देवलोक, (अच्चुय) के० अच्युत देवलोक, (गेविज्ज) के० नव ग्रैवेयक अने (लोगंते) के० लोकांतने विषे एम अनुक्रमे सात राजलोक जाणवा. नीचेना अने उपरना मळी चौद राजलोक थाय ॥ १९१ ॥

वइसाहठाणठियपय-कडिथकरजुग नरागिई लोगो ॥
उप्पत्तिनासधुवगुण-धम्मादिछदव्वपडिपुण्णो ॥१९२॥

अर्थ-(वइसाहठाणठियपय)के० बे पग पहोळा करीने उभेला, [कडित्थकरजुग] के० केड उपर बे हाथ मूकेला एवा (नराणिई) के० पुरुषनी आकृति समान (लोगो) के० चउद राजलोक छे. ते (उप्पत्तिनासधुवगुण) के० उत्पत्ति नाश अने ध्रुव ए गुणोथी तथा [धम्माइछदव्व) के० धर्मास्तिकायादि छ द्रव्योथी (पडिपुण्णो) के० भरपूर भरेलो छे. ॥ १९२ ॥

कणवि न कओ न धओ, णाहारो गहठिओ सयंसिद्धो॥
अहमुहमहमल्लगठिओ. लहुमल्लगसंपुडसरिसो ॥१९३॥

अर्थ—वळी (कणवि न कओ) के० कोइथी नहिं करायेलो, न (धओ) के० कोइथी नहिं धारण करायेलो, (अणाहारो) के० आधार विनानो, (णहठिओ के० आकाशमां रहेलो, (सयंसिद्धो) के० पोतानी मेळेज सिद्ध अने (अहमुहमल्लगठिओ) के० नीचा मुखवाळा मोटा सराव सरखी आकृतिवाळो तथा उपर (लहु-मल्लगसंपुडसरिसो) के० नाना सराव संपुट सरखो चौदराज लोक छे. ॥ १९३ ॥

पयतलि सग मज्झेगो, पण कुप्परि सिरतलेगरज्जु पिहु॥
सो चउदसरज्जुच्चो, माघवइतलाओ जा सिद्धि ॥१९४॥

अर्थ—(पयतलि) के० लोकना पगतळियाने विषे अर्थात् सातमी नरक नीचे (सग) के० सात राज प्रमाण पहोळो (मज्झेगो) के० मध्य भागे एक राज पहोळो, (कुप्परि) के० कोणीना भागने विषे [पण] के० पांच राज प्रमाण पहोळो, अने (सिरतलेग-रज्जु) के० मस्तकने विषे एकराज (पिहु) के० पहोळो, (सो · के० ते राजलोक (चउदस रज्जुओ) के० चउद राजलोक उंचो

छे. अने ते उंचाइ (सायशुक्लाओ) के० सातमी नरक पृथ्वीना तलियाथी (जा सिद्धि) के० सिद्धशीला सुधी जाणवी. ॥१९४॥

सगवण्ण रेह तिरियं, उद्धं पुण पंच रज्जु चउअंसे ॥
इगरज्जु वित्थरायय, चउदसरज्जुस तसनाडी ॥१९५॥

अर्थ—(सगवण्ण रेह) के० सत्तावन रेखा (तिरियं) के० तिर्छी एटले आडी लखवी. (पुण) के० अने (पंच) के० पांच रेखा (उर्ध्वं) के० उभी लखवी, तथा (रज्जु) के० एक राजना (चउअंसे) के० चा चा भागना चार विभाग एटले खांडवा करवा, चउदराजनी (तस नाडी) के० त्रसनाडी एटले मध्यनाडी (इगरज्जु वित्थरायय) के० एकराज लांबी पहोली छे. अने (चउदस रज्जुच्च) के० चउदराज प्रमाण उंची छे. ॥

तात्पर्य ए छे के—सत्तावन रेखा तिर्छी करवी अने पांच रेखा उभी करवी, एटले सत्तावन रेखाना चउदराजना छप्पन्न खांडवा थाय, अने पांच रेखानी एक राज पहोली त्रसनाडी छे. तेना पा पा भाग करता चार खांडवा थाय, तेमज उंचाइमां पण एक राजना चार खांडवाना प्रमाणे चउदराजना छप्पन्न खांडवा थाय. १९५

हवे चउद राजलोकना खांडवा कहेवानी इच्छाथी प्रथम ऊर्ध्व लोकना सात राजना खांडवा कहे छे.

उड्ढे तिरियं चउरो, दुसु छ दुसु अट्ठ दस य इक्किक्के ॥
बारस दोसु सोलस, दोसु वीसा य चउसु पुणो ॥१९६॥

अर्थ—(उड्ढे) के० उपरना तीर्च्छा लोकने विषे बे पंक्तिमां (तिरियं) के० तीर्च्छा चउरो के० चार खांडवा छे. तेनी उपर

(दुग) के० बे पंक्तिमां (छछ) के० छ खांडवां छे, तेनी उपर (दुग) के० बे पंक्ति मांहेली (इक्कि) के० एक पंक्तिमां [अट्ठ] के० आठ खांडवा छे अने बीजामां (दस य) के० दस खांडवा छे. तेना उपरना (दोसु) के० बे पंक्तिमां (बारस) के० बार बार खांडवा छे. तेनी उपर (दोसु) के० बे पंक्तिमां (सोलस) के० सोल सोल खांडवा छे. (पुणो) के० वली तेनी उपर (चउसु) के० चार पंक्तिमां (वीसा य) के० वीस वीस खांडवा छे.

तेनी भावना आ प्रमाणे छे के चौदराज प्रमाण लोक मांहेली ओगणीसमी रेखाथी उपरना सात राजलोक ऊर्ध्व थाय छे, अने चउदराज लोकमां पा पा राजनो एक एक खांडवो कल्प्यो होवाथी एक राजना चार खांडवा थाय छे. एम चउदे राज लोकना उपर उपरी छप्पन्न खांडवा थाय छे, तेमां ओगणीसमी रेखानी उपर बे पंक्तिने विषे त्रसनाडीमांज चार चार खांडवा छे, पण बाहेर एके खांडवो नथी. ते उपर बे पंक्तिने विषे छ छ खांडवा छे तेमां चार चार त्रस नाडीमां छे अने एक एक खांडवो त्रसनाडीनी ब-हार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर एक पंक्तिने विषे आठ खांडवा छे, तेमां चार खांडवा त्रसनाडीमां छे अने बबे खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर एक पंक्तिने विषे दस खांडवा छे, तेमां चार खांडवा त्रसनाडीमां अने त्रण त्रण खांडवा त्रसनाडीथी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी उपर बे पंक्तिने विषे बार बार खांडवा छे, तेमां चार खांडवा त्रसनाडीमां अने चार चार खांडवा त्रस-नाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर बे पंक्तिने विषे सोल सोल खांडवा छे, तेमां चार चार त्रसनाडीमां अने छ छ खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर चार पंक्तिने विषे वीस वीस खांडवा छे, तेमां चार चार त्रसनाडीमां अने आठ

आठ खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. ॥ १९६ ॥

पुणरवि दोसु सोलस,बारस दोसु य तिसु दस तिसुट्ठ॥
छ दुसु दुसु चउ खंडुय,सव्वे चउरुत्तरा तिसया ॥१९७॥

अर्थ --(पुणरवि) के० वळी पण उपरनी (दोसु) के० बे पंक्तिने विषे (सोलस) के० सोळ खांडवा छे, तेनी उपरनी (दोसु) के० बे पंक्तिने विषे (बारस) के० बार खांडवा छे. (य) के० अने तेनी उपर (तिसु) के० त्रण पंक्तिने विषे (दस) के० दस खांडवा छे, अने तेनी उपर (तिसु) के० त्रण पंक्तिने विषे [अट्ठ] के० आठ खांडवा छे. तेनी उपर (दुसु) के० बे पंक्तिने विषे (छ) के० छ खांडवा छे अने तेनी उपर (दुसु) के० बे पंक्तिने विषे (चउ) के० चार खांडवा छे, (सव्वे) के० सर्व मळी (चउरुत्तरा तिसया) के० त्रण सो चार (खडुया) के० खांडवा थाय छे.

तेनो समजुती ए छे के-पूर्वनी गाथामां वीस खांडवानी चार पंक्ति कही गयां छे तेनी उपर बे पंक्तिने विषे सोळ सोळ खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां अने छ छ खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी उपर बे पंक्तिने विषे बार बार खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां अने चार चार खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर त्रण पंक्तिने विषे दस दस खांडवा छे. तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां छे, अने त्रण त्रण खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी उपर त्रण पंक्तिने विषे आठ आठ खांडवा छे, तेमां चार खांडवा त्रसनाडीमां छे, अने बे बे खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर बे पंक्तिने विषे छ छ खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां छे अने

(दुग्) के० बे पंक्तिमां (च्छ) के० छ खांडवां छे, तेनी उपर (दुग्) के० बे पंक्ति मांहेली (इक्कि) के० एक पंक्तिमां [अठ] के० आठ खांडवा छे अने बीजामां (दस य) के० दश खांडवा छे. तेना उपरना (दोसु) के० बे पंक्तिमां (बारस) के० बार बार खांडवा छे. तेनी उपर (दोसु) के० बे पंक्तिमां (सोलस) के० सोल सोल खांडवा छे, (पुणो) के० वली तेनी उपर (चउसु) के० चार पंक्तिमां (वीसा य) के० वीस वीस खांडवा छे,

तेनो मतलब आ प्रमाणे छे के–[illegible] रेखा मांहेथी ओगणत्रीसमी रेखाथी उपरना सात राजलोक शरु थाय छे, अने चउदराज लोकमां चा चा राजनो एक एक खांडवो करेलो होवाथी एक राजना चार खांडवा थाय छे. एवा चउदे राज लोकना उपर सर्वे छप्पन खांडवा थाय छे, तेमां ओगणत्रीसमी रेखानी उपर बे पंक्तिने विषे त्रसनाडीमांज चार चार खांडवा छे. पण बाहेर एके खांडवो नथी. ते उपर बे पंक्तिने विषे छ छ खांडवा छे तेमां चार चार त्रस नाडीमां छे अने एक एक खांडवो त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर एक पंक्तिने विषे आठ खांडवा छे, तेमां चार खांडवा त्रसनाडीमां छे अने बे खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर एक पंक्तिने विषे दश खांडवा छे, तेमां चार खांडवा त्रसनाडीमां अने त्रण त्रण खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी उपर बे पंक्तिने विषे बार बार खांडवा छे, तेमां चार खांडवा त्रसनाडीमां अने चार चार खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर बे पंक्तिने विषे सोल सोल खांडवा छे, तेमां चार चार त्रसनाडीमां अने छ छ खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर चार पंक्तिने विषे वीस वीस खांडवा छे तेमां चार चार त्रसनाडीमां अने आठ

आठ खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. ॥ १९६ ॥

पुणरवि दोसु सोलस,बारस दोसु य तिसु दस तिसुट्ठ ॥
छ दुसु दुसु चउ खंडुय,सव्वे चउरुत्तरा तिसया ॥१९७॥

अर्थ—(पुणरवि) के० वली पण उपरनी (दोसु) के० बे पंक्तिने विषे (सोलस) के० शोल खांडवा छे, तेनी उपरनी (दोसु) के० बे पंक्तिने विषे (बारस) के० बार खांडवा छे. (य) के० अने तेनी उपर (तिसु) के० त्रण पंक्तिने विषे (दस) के० दश खांडवा छे, अने तेनी उपर (तिसु) के० त्रण पंक्तिने विषे [अट्ठ] के० आठ खांडवा छे. तेनी उपर (दुसु) के० बे पंक्तिने विषे (छ) के० छ खांडवा छे अने तेनी उपर (दुसु) के० बे पंक्तिने विषे (चउ) के० चार खांडवा छे, (सव्वे) के० सर्व मली (चउरुत्तरा तिसया) के० त्रण सो चार (खडुया) के० खांडवा थाय छे.

तेनी समजुती ए छे के—पूर्वनी गाथामां वीश खांडवानी चार पंक्ति कही गयां छे तेनी उपर बे पंक्तिने विषे शोल शोल खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां अने छ छ खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी उपर बे पंक्तिने विषे बार बार खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां अने चार चार खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर त्रण पंक्तिने विषे दश दश खांडवा छे. तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां छे, अने त्रण त्रण खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर त्रण पंक्तिने विषे आठ आठ खांडवा छे, तेमां चार खांडवा त्रसनाडीमां छे, अने बे बे खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर बे पंक्तिने विषे छ छ खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां छे अने

एक एक खांडवो त्रसनाडीना बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी उपर बे पंक्तिने विषे चार चार खांडवा छे ते चारे त्रसनाडीमांज छे, एम उर्ध्व लोकने विषे सात राज प्रमाणमां सर्व मळीने त्रण सो चार खांडवा थाय छे. ॥ १९७ ॥

हवे नीचेना सात राजलोकना खांडवा कहे छे.

उवरीव लोगमज्झा, चउठ्ठाणे सत्तपुढविसु चउ दस ॥
सोल वीसा चउवीस, छवीसा तहय अठ्ठवीसा ॥१९८॥

अर्थ—(उवरिव) के० उपरना सात राजनी पेठे (सत्तपुढविसु) के० नीचेना सातें नरक पृथ्वीने विषे (लोगमज्झा) के० त्रसनाडीमां एक राजलोकना (चउठ्ठाणे) के० चार चार खांडवा छे. रत्नप्रभादि साते नरकरूप सात राजलोकमां अनुक्रमे (चउ) के० चार चार, (दस) के० दश दश, (सोल) के० शोल शोल, (वीसा) के० वीस वीस, (चउवीस) के० चोवीश चोवीश, (छवीसा) के० छवीश छवीश, (तहय) के० तेमज (अठ्ठवीसा) के० अठ्ठावीस अठ्ठावीश खांडवा छे.

समजूती एम छे के-अधो लोकनी सात पृथ्वी सात राजप्रमाण उंची छे. एटले एक एक पृथ्वी एक एक राज प्रमाण उंची छे. अने तेमां पा पा राज प्रमाणनी चार चार पंक्ति छे. तथा साते पृथ्वीमां मध्यनाडी एक राज प्रमाण पहोली छे. रत्नप्रभा पृथ्वी एक राज प्रमाण पहोली होवाथी तेमां फक्त मध्य नाडीनी चारे लाइनमां पा पा राजना चार चार जे खांडवा छे. तेनी बहार एक पण खांडवो नथी. तेनी नीचे बीजी शर्करा प्रभा अढीराज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे दश दश खांडवा छे, तेमां चारा चार खांडवा त्रसनाडीमां छे, अने त्रण त्रण खांडवा त्रसना-

रोनी बहार बन्ने बाजुए छे, तेनी नीचे त्रीजी वालुका प्रभा चार राज पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे सोल सोल खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रस नाडीमां छे, अने छ छ खांडवा त्रस नाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी नीचे चोथी पंकप्रभा पांच राज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे वीश वीश खांडवा छे, तेमां चारचार खांडवा त्रसनाडीमां छे अने आठ आठ खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी नीचे पांचमी धूमप्रभा छ राज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे चोवीश चोवीश खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां छे. अने दस दस खांडवा त्रस नाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी नीचे छट्ठी तमप्रभा साडा छ राज प्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे छवीश छवीश खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां छे, अने अगीयार अगीयार खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. तेनी नीचे सातमी तमस्तमप्रभा सात राजप्रमाण पहोली होवाथी तेनी चारे पंक्तिने विषे अठ्ठावीश अठ्ठावीश खांडवा छे, तेमां चार चार खांडवा त्रसनाडीमां छे, अने बार बार खांडवा त्रसनाडीनी बहार बन्ने बाजुए छे. ॥ १९८ ॥

अह पणसय बारुत्तर, खंडय सोलहिय अट्ठसय सव्वे ॥
चम्भाइ लोगमज्झं, जोयण असंखकोडीहिं ॥ १९९ ॥

अर्थ—(अह) के० हवे (पणसय बारुत्तर) के० पांच सो अने बार नीचेनी सात पृथ्वीरूप सातराजना (खंडय) के० खांडवा थया. तथा उपरनां सातराजना त्रण सो अने चार खांडवा पहेला कह्या छे. ते सव्वे के० सर्वे मली (सोलहिय अट्ठसय

के० आठ सो अने सोल थाय. (यम्माइ) के० रत्नप्रभा पृथ्वी
(लोगमज्झं) के० चौद राजलोकनो मध्य भाग (जोयण असं
कोडीहिं) के० असंख्याता कोडी योजन नीचे छे.

भावार्थ ए छे के—रत्नप्रभा नामनी पहेली पृथ्वीने विषे च
दराज लोकनो मध्यभाग छे. पण ते कये ठेकाणे छे ? ते कहे छ
रुचक समभूतलथकी नीचे असंख्याता कोडी योजन जइये त्य
चउद राजलोकनो मध्यभाग छे. एटले त्यांथी लोक सात रा
उंचो अने सात राज नीचो छे.

उक्तं च पंचमांगे त्रयोदशशतचतुर्थोद्देशके ॥ प्रश्नः । कह
भंते लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥ हे भगवन् । लोकनो मध्यभा
क्यां छे ? उत्तरः—गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्
असंखेज्जतिभागं ओगाहित्ता, एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते
भावार्थ ए छे के—हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख
एंशीहजार योजननो छे तेनी नीचे वीश हजार योजननो घनोद
धिनो पींड छे. तेनी नीचे असंख्याता योजननो घनवातनो पीं
छे. तेनी नीचे असंख्याता योजननो तनवातनो पींड छे. ए स
अवगाहीने नीचे जइये त्यां असंख्याता योजननो आकाश प्रदेश
छे. पण ते आकाश प्रदेश घनवात तथा तनवातना पींडथकी असं
ख्यात गुणो छे. ते आकाश प्रदेशनो असंख्यातमो भाग अवगाहीने
नीचे जइये त्यां चउद राजलोकनो मध्यभाग छे तेथी नीचे सा
राज प्रमाण अधोलोक छे अने उपर सात राजप्रमाण उर्द्ध्वलोक छे

प्रश्नः ॥ कह णं भंते अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? हे
भगवन् ! अधोलोकना सात राजनो मध्यभाग क्यां छे. उत्तरः ।
गोयमा ! चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स सातिरेगं अद्
ओगाहित्ता एत्थ णं अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥ भावार्थ

ए टे के—हे गौतम ! चोथी पंकप्रभा पृथ्वीनो पींड एक वीस हजार योजननो छे, तेनी नीचे वीश हजार योजननो घनोदधि पींड छे, तेनी नीचे असंख्याता योजननो घनवात पींड छे, तेनी नीचे असंख्याता योजननो तनवात पींड छे. ए सर्व अवगाहीने नीचे जइये त्यां असंख्याता योजन प्रमाण आकाश प्रदेश छे. वली आकाश प्रदेश घनवात तनवातथकी असंख्यात गुणो छे. ते आकाश प्रदेशनो अर्द्धथी झाझेरो भाग अवगाहीने नीचे जइये त्यां नीचेना सात राजलोकनो मध्य भाग छे एटले ते स्थानथी नीचे अने उंचे साडा त्रण साडा त्रण राजलोक अधोलोकना छे. ॥ तथा चोत्रं पंचमांगे ॥ प्रश्नः कह णं भंते उड्ढलोगस्स आयाममज्झेपण्णत्ते'॥ हे भगवन् ! उर्द्धलोक सात राज प्रमाण छे तेनो मध्यभाग क्यां छे ? ॥ उत्तरः गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार माहिंदाणं कप्पाणं बंभलोए कप्पे रिहविमाणपत्थडे एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥ भावार्थ ए छे के-रुचक प्रदेशनी उपर नव सो योजनमां ज्योतीषचक्र छे, ते ज्योतीषचक्रने उल्लंघन करी उपरनो भाग उर्द्धलोक कहेवाय छे, ते उपर लोकांतिक सुधी सात राज कांइक उणा छे, अने ओगणचाळीशमी रेखा उपर सात राज पुरा छे. ते उपरना सात राजनो मध्यभाग ते चार देवलोकने उलंघी पांचमा ब्रह्मलोकना रिष्टनामा त्रीजा प्रतरनी पासे लोकांतिक देवतानां विमान छे, तेनी पासे उर्द्धलोकनो मध्यभाग छे. त्यांथी साडा त्रण राज नीचे तथा साडा त्रण राज उपर उर्द्धलोक छे. ए प्रमाणे सर्व लोकना मध्यभाग तथा अधोलोक अने उर्द्धलोकना मध्य भाग कह्या.॥१९९॥

सगरज्जु जोयणमया, अट्ठार ऊग सगरज्जुमाणाइ ॥
अहतिरियउड्ढलोया, निरयनरसुराइ भाविला ॥२००॥

के० आठ सो अने मोक्ष थाय. (यम्माइ) के० रत्नप्रभा पृ
(लोगमज्झं) के० चौद राजलोकनो मध्य भाग (ओयग
कोडीहिं) के० असंख्याता कोडी योजन नीचे छे.

भावार्थ ए छे के—रत्नप्रभा नामनी पहेली पृथ्वीने वि
दराज लोकनो मध्यभाग छे. पण ते कये ठेकाणे छे ? ते
रुचक समभूतलथकी नीचे असंख्याता कोडी योजन जइ
चउद राजलोकनो मध्यभाग छे. एटले त्यांथी लोक सात
उंचो अने सात राज नीचो छे.

उक्तं च पंचमांगे त्रयोदशशतचतुर्थोद्देशके ॥ प्रश्नः । क
भंते लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥ हे भगवन । लोकनो मध्य
क्यां छे ? उत्तरः—गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवासं
खेज्जतिभागं ओगाहित्ता, एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्
भावार्थ ए छे के—हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक
एंशीहजार योजननो छे तेनी नीचे वीश हजार योजननो घ
धिनो पींड छे. तेनी नीचे असंख्याता योजननो घनवातनो
छे. तेनी नीचे असंख्याता योजननो तनवातनो पींड छे. प
अवगाहीने नीचे जइये त्यां असंख्याता योजननो आकाश
छे. पण ते आकाश प्रदेश घनवात तथा तनवातना पींडथकी
ख्यात गुणो छे. ते आकाश प्रदेशनो असंख्यातमो भाग अवगा
नीचे जइये त्यां चउद राजलोकनो मध्यभाग छे तेनी नीचे
राज प्रमाण अधोलोक छे अने उपर सात राजप्रमाण उर्द्धलोक

प्रश्नः ॥ कह णं भंते अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते
भगवन् ! अधोलोकना सात राजनो मध्यभाग क्यां छे. उत्त
गोयमा ! चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स साइरेगं
ओगाहित्ता तत्थ णं अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥ भा

ए छे के—हे गौतम ! चोथी पंकप्रभा पृथ्वीनो पींड एक वीश हजार योजननो छे, तेनी नीचे वीश हजार योजननो घनोदधि पींड छे, तेनी नीचे असंख्याता योजननो घनवात पींड छे, तेनी नीचे असंख्याता योजननो तनवात पींड छे. ए सर्व अवगाहीने नीचे जइये त्यां असंख्याता योजन प्रमाण आकाश प्रदेश छे. पण्डी आकाश प्रदेश घनवात तनवातथकी असंख्यात गुणो छे. ते आकाश प्रदेशनो अर्द्धथी झाझेरो भाग अवगाहीने नीचे जइये त्यां नीचेना सात राजलोकनो मध्य भाग छे एटले ते स्थानथी नीचे अने उंचे साडा त्रण साडा त्रण राजलोक अधोलोकना छे. ॥ तथा चोर्त्त पंचमांगे ॥ प्रश्नः कह णं भंते उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? ॥ हे भगवन् ! उर्द्धलोक सात राज प्रमाण छे तेनो मध्यभाग क्यां छे ? ॥ उत्तरः गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार माहिंदाणं कप्पाणं बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडे एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥ भावार्थ ए छे के—रुचक प्रदेशनी उपर नव सो योजनमां ज्योतीपचक्र छे, ते ज्योतीपचक्रने उल्लंघन करी उपरनो भाग उर्द्धलोक कहेवाय छे, ते उपर लोकांतिक सुधी सात राज कांइक उणा छे, अने ओगणत्रीशमी रेखा उपर सात राज पुरा छे. ते उपरना सात राजनो मध्यभाग ते चार देवलोकने उल्लंघी पांचमा ब्रह्मलोकना रिष्टनामा त्रीजा प्रतरनी पासे लोकांतिक देवतानां विमान छे, तेनी पासे उर्द्धलोकनो मध्यभाग छे. त्यांथी साडा त्रण राज नीचे तथा साडा त्रण राज उपर उर्द्धलोक छे. ए प्रमाणे सर्व लोकना मध्यभाग तथा अधोलोक अने उर्द्धलोकना मध्य भाग कह्या.॥१९९॥

सगरज्जु जोयणसया, अट्ठार ऊग सगरज्जुमाणाइ ॥
अहतिरियउड्ढलोया, निरयनरसुराइ भाविला ॥२००॥

अर्थ—(अहनिरियउड्ढलोगा) के० नीचेना सात राजलोक, मध्यनो तिर्यग्लोक अने उपरना सात राजलोक ए त्रणे लोक अनुक्रमे (सगरज्जु) के० सात राज प्रमाण (तीरछा सवा अढार) के० अढारसो योजन, अने (ऊणसगरज्जूमाणाउ) के० कांइक ओछा सातराज प्रमाणवाळा छे. एटले नीचेनो अधोलोक सातराज प्रमाणथी कांइक आझेरो ऊंचो छे. मध्यलोक अढार सो योजननो ऊंचो छे; अने उपरनो लोक सात राज प्रमाणथी कांइक ओछो एटले असंख्याता योजन ओछो उंचो छे. वळी ते त्रण लोक (निरयनरसुराइ पाविल्ला) के० नारकी मनुष्य अने देवना विशेषे करी भरेला छे. ॥ २०० ॥

इक्किक्करज्जु इक्किक्क–निरय सग पुढवी असुर पढमे ॥
तह वंतर तदुवरि नर–तिरियाइय जोइसा गयणे ॥२०१॥

अर्थ—(इक्किक्करज्जु) के० एक एक राजप्रमाण (इक्किक्क निरय) के० एक एक नरक पृथ्वी छे, तेवी (सग पुढवी) के० सात नरक पृथ्वीना सात राजलोक छे. तेमां (असुर) के० असुर कुमारादिक भुवनपति देवो (पढमे) के० पहेली रत्नप्रभा नरक पृथ्वीने विषे रहेछे, एटले पहेली रत्नप्रभा नरक पृथ्वीना पींड एक लाख एंशी हजार योजननो छे, तेमांथी एक हजार योजन नीचेना मूकी देवा अने एक हजार योजन उपरना मूकी देवा. बाकीना एक लाख अठोतेर हजार योजनमां भुवनपति देवो रहे छे. तह के० तथा वंतर के० व्यंतर देवो तेना उपर रहे छे एटले रत्नप्रभा पृथ्वीना जे उपरना एक हजार [illegible] छे तेमांथी एक सो योजन उपर मूकी देवा अने एक [illegible] ना वच्चेना [illegible] सो [illegible]) के० ते

रत्नप्रभाना उपरना भागने विषे (नरतिरियाइय) के० मनुष्य तिर्यंच विगेरे रहे छे. तथा तेनी उपरना (गयणे) के० आकाशमां (जोइसा) के० ज्योतसी देवता रहे छे ॥ २०१ ॥

हवे उपरना सात राजलोकना अठ्ठावीश खांडवानो विभाग कहे छे अने जेटला खांडवे जेटला देवलोक थाय छे ते कहे छे.

छसु खंडगेसु य दुगं,चउसु दुगं छसु य कप्प चत्तारि॥
चउसु चउ सेसेसु य,गिविज्जणुत्तर य सिद्धं ते॥२०२॥

अर्थ—ओगणत्रीशमी रेखा उपरना (छसु खंडगेसु) के० छ खांडवाने विषे (दुगं) के० सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोक छे, तेना उपरना (चउसु) के० चार खांडवाने विषे (दुगं) के० सनत्कुमार अने माहेंद्र ए बे देवलोक छे. तेना उपरना (छसु) के० छ खांडवाने विषे (कप्पचत्तारि) के० ब्रह्म लांतक शुक्र अने सहस्सार ए चार देवलोक छे, तेना उपर (चउसु) के० चार खांडवाने विषे (चउ) के० आनत प्राणत आरण अने अच्युत ए चार देवलोक छे. ए वीश खांडवा थया. अने पांच राजप्रमाण उर्द्ध-लोक थयो. तेना उपर (सेसेसु) के० बाकीना आठ खांडवा रह्या छे तेमां नीचेना चार खांडवाने विषे (गिविज्ज) के० नव ग्रैवेयक छे अने उपरना चार खांडवाने विषे (अणुत्तर) के० पांच अनुत्तर छे. अने तेना (अंते) के० उपर एटले चौद राजना उपर (सिद्ध) के० सिद्ध भगवंत सहित सिद्धशिला छे. अहिं सूचिरज्जु प्रतररज्जु अने घनरज्जु ए त्रण राज छे. तेनी संख्या ग्रंथांतरथी अथवा लोकनालथी जाणवी ॥ २०२ ॥

हवे लोकांतिक देवता कया देवलोके अने कया विमाने रहे छे ? ते अहिं प्रसंगथी कहे छे के–आ जंबूद्वीपथी तीर्च्छां असं-

ख्याता द्वीप समुद्र जइये त्यारे अरुणवर नामनो द्वीप आवे छे, ते द्वीपनी वेदिकाना छेडाथी अरुणवर नामना समुद्रमां आगल बेंतालीश हजार योज जइये त्यां पाणीना उपरना तलीयाथी उचो अप्कायमय महांधकाररूप तमस्काय नीकल्यो छे, ते अगीयार सो योजन सुधी भींत सरखो थइने पछी तीर्च्छो विस्तार पामतो पामतो सौधर्म ईशान सनत्कुमार अने माहेंद्र ए चार देवलोकने आवरी उंचो ब्रह्म देवलोकना अरिष्ट नामना त्रीजे प्रतरे जइ रह्यो. ए तमस्काय नीचे भींतने आकारे, शरावलाना तलीयाने आकारे अने उपर कूकडाना पांजराना आकारे. एवुं एनुं संस्थान छे. ते धुरथी संख्याता योजन उंचो छे अने नीचेना विस्तारे संख्याता योजन छे, त्यांथी आगलना विस्तारे असंख्याता योजन प्रमाण छे. अहिंथी ए तमस्काय असंख्यातमे द्वीप समुद्रे उठयो छे माटे ए तमस्कायनो परिधि असंख्याता योजन प्रमाण जाणवो.

ए तमस्कायना महत्वपणाने माटे पूर्वना गीतार्थ पुरुषोए एम कह्युं छे के-कोई महर्द्धिक देवता त्रण चपटी वगाडीये तेटला वखतमां एकवीश वार जंबुद्वीपने प्रदक्षिणा करी आवे तेज देवता छ महिने तमस्कायना योजन विस्तारने उल्लंघे, परंतु उपर असंख्याता योजनना विस्तारवाली तमस्कायनी जगति उल्लंघे नहीं. ॥२०२॥

पंचमकप्पे रिट्ठंमि, पत्थडे अट्ठ कण्हराइओ ॥
मम चउरंसक्खाडय,ठिइओ दो दो दिसि चउक्के ॥२०३॥

अर्थ—(पंचमकप्पे) के० पांचमा देवलोकने विषे (रिट्ठंमि पत्थडे) के० त्रीजा रिष्ट नामना प्रतरने विषे (अट्ठकण्हराइओ) के० आठ कृष्णराजीओ छे. ते कृष्णराजी (समचउरंसक्खाडयट्ठिइओ) के० समचतुरस्र नाटकनी रंगभूमि सरखी छे, तथा

(दिसि चउरं) के० चारे दिशामां (दो दो) के० बे बे कृष्ण-राजी छे. ॥ २०३ ॥

ए कृष्णराजीनी समजुती एम छे के-पांचमा देवलोकना त्रीजा अरिष्ट नामना पतरने विषे अरिष्ट विमाननी चारे दिशाये सचित्त अचित्त पृथ्वीमय बे बे कृष्णराजी छे. तेमां उत्तर दिशानी बे कृष्ण-राजी पूर्व पश्चिम दिशाये लांबी छे, अने दक्षिण दिशानी बे कृष्ण-राजी पण पूर्व पश्चिम दिशाये लांबी छे. त्यां बन्ने कृष्णराजीमांहे पहेली पूर्व दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते दक्षिण दिशानी बाहे-रनी कृष्णराजीने फरसे छे, तेमज बीजी दक्षिण दिशानी अभ्यं-तर कृष्णराजी ते पश्चिम दिशानी बाहेरनी कृष्णराजीने फरसे छे, तथा त्रीजी पश्चिम दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते उत्तर दिशानी बाह्य कृष्णराजीने फरसे छे, अने चोथी उत्तर दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते पूर्व दिशानी बाह्य कृष्णराजीने फरसे छे. ए प्रमाणे चारे दिशानी सर्व मली आठ कृष्णराजी छे. तेज अर्थने कहेनारी नीचेनी गाथा छे.

पुव्वावर उत्तर दा–हिणा हि मज्झल्लियाहि पुट्ठाओ ॥
दाहिणउत्तर पुव्वा, वराओ बहि कण्हराईओ ॥२०४॥

अर्थ—(दाहिणउत्तरपुव्वावराओ) के० दक्षिण उत्तर पूर्व अने पश्चिम दिशा तरफनी (बहिकण्हराईओ) के० बाहेरनी कृष्ण-राजीओ (पुट्ठाओ) के० पूर्वथी (पुव्वावरउत्तरदाहिणाहि) के० पूर्व पश्चिम उत्तर अने दक्षिण दिशा तरफनी (मज्झल्लियाहि) के० अंदरनी कृष्णराजीओनी साथे जोडायली छे. ॥ २०४ ॥

पुव्वावरा छलंसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा ॥
अब्भिंतर चउरंसा, सव्वावि य कण्हराईओ ॥ २०५ ॥

ख्याता द्वीप समुद्र जइये त्यारे अरुणवर नामनो द्वीप आवे छे, ते द्वीपनी वेदिकाना छेडाथी अरुणवर नामना समुद्रमां आगल बेंतालीस हजार योजन जइये त्यां पाणीना उपरना तलीयाथी उंचो अप्कायमय महांधकाररूप तमस्काय नीकल्यो छे, ते अगीयार सो योजन सुधी भींत सरखो थइने पछी तीर्च्छो विस्तार पामतो पामतो सौधर्म ईशान सनत्कुमार अने माहेंद्र ए चार देवलोकने आवरी उंचो ब्रह्म देवलोकना अरिष्ट नामना त्रीजे प्रतरे जई रह्यो. ए तमस्काय नीचे भींतने आकारे, शरावलाना तलीयाने आकारे अने उपर कूकडाना पांजराना आकारे. एवुं एनुं संस्थान छे. ते धुरथी संख्याता योजन उंचो छे अने नीचेना विस्तारे संख्याता योजन छे, त्यांथी आगलना विस्तारे असंख्याता योजन प्रमाण छे. अहिंथी ए तमस्काय असंख्यातमे द्वीप समुद्रे उठयो छे माटे ए तमस्कायनो परिधि असंख्याता योजन प्रमाण जाणवो.

ए तमस्कायना महत्वपणाने माटे पूर्वना गीतार्थ पुरुषोए एम कह्युं छे के—कोई महर्द्धिक देवता त्रण चपटी वगाडीये तेटला वखतमां एकवीस वार जंबुद्वीपने प्रदक्षिणा करी आवे तेज देवता छ महिने तमस्कायना योजन विस्तारने उल्लंघे, परंतु उपर असंख्याता योजनना विस्तारवाली तमस्कायनी जगति उल्लंघे नहीं. ॥२०२॥

पंचमकप्पे रिट्ठंमि, पत्थडे अट्ठ कण्हराइओ ॥
सम चउरंसक्खाडय,ट्ठिइओ दो दो दिसि चउक्के ॥२०३॥

अर्थ—(पंचमकप्पे) के० पांचमा देवलोकने विषे (रिट्ठंमि पत्थडे) के० त्रीजा रिष्ट नामना प्रतरने विषे (अट्ठकण्हराइओ) के० आठ कृष्णराजीओ छे. ते कृष्णराजी (समचउरंसक्खाडट्ठिइओ) के० समचतुरस्र आखाडानी रंगभूमि सरखी छे, तथा

([illegible] चउरंस) के० चारे दिशामां (दो दो) के० बे बे कृष्ण-राजी छे. ॥ २०३ ॥

ए कृष्णराजीनी समजुती एम छे के-पांचमा देवलोकना त्रीजा अरिष्ट नामना पतरले विषे अरिष्ट विमाननी चारे दिशाये सचित्त अचित्त पृथ्वीमय बे बे कृष्णराजी छे. तेमां उत्तर दिशानी बे कृष्ण-राजी पूर्व पश्चिम दिशाये लांबी छे, अने दक्षिण दिशानी बे कृष्ण-राजी पण पूर्व पश्चिम दिशाये लांबी छे. त्यां बन्ने कृष्णराजीमांहे पहेली पूर्व दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते दक्षिण दिशानी बाहे-रनी कृष्णराजीने फरसे छे, तेमज बीजी दक्षिण दिशानी अभ्यं-तर कृष्णराजी ते पश्चिम दिशानी बाहेरनी कृष्णराजी ने फरसे छे, तथा त्रीजी पश्चिम दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते उत्तर दिशानी बाह्य कृष्णराजीने फरसे छे, अने चोथी उत्तर दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते पूर्व दिशानी बाह्य कृष्णराजीने फरसे छे. ए प्रमाणे चारे दिशानी सर्व मली आठ कृष्णराजी छे. तेज अर्थने कहेनारी नीचेनी गाथा छे.

पुव्वावर उत्तर दा-हिणा हि मज्झल्लियाहि पुव्वाओ ॥
दाहिणउत्तर पुव्वा, वराओ बहि कण्हराईओ ॥२०४॥

अर्थ—(दाहिणउत्तरपुव्वावराओ) के० दक्षिण उत्तर पूर्व अने पश्चिम दिशा तरफनी (बहिकण्हराईओ) के० बाहेरनी कृष्ण-राजीओ (पुव्वाओ) के० पूर्वथी (पुव्वावरउत्तरदाहिणाहि) के० पूर्व प[illegible] उत्तर अने दक्षिण दिशा तरफनी (मज्झल्लियाहि) के० अन्दरनी कृष्णराजीओनी साथे जोडायली छे. ॥ २०४ ॥

पुव्वावरा छलंसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा ॥
अ[illegible]तर चउरंसा, सव्वावि य कण्हराईओ ॥ २०५ ॥

ख्याता द्वीप समुद्र जइये त्यारे अरुणवर नामनो द्वीप आवे छे, ते द्वीपनी वेदिकाना छेडाथी अरुणवर नामना समुद्रमां आगळ बेंतालीश हजार योजन जइने त्यां पाणीना उपरना तळीयाथी उंचो अप्कायमय महांधकाररूप तमस्काय नीकळ्यो छे, ते अगीयार से योजन सुधी भींत सरखो थइने पछी तीच्छों विस्तार पामतो पामतो सौधर्म ईशान सनत्कुमार अने माहेंद्र ए चार देवलोकने आवरी उंचो ब्रह्म देवलोकना अरिष्ट नामना त्रीजे प्रतरे जइ रह्यो. ए तमस्काय नीचे भींतने आकारे, शरावळाना तळीयाने आकारे अने उपर कूकडाना पांजराना आकारे. एवुं एनुं संस्थान छे. ते धुरथी संख्याता योजन उंचो छे अने नीचेना विस्तारे सख्याता योजन छे, त्यांथी आगळना विस्तारे असंख्याता योजन प्रमाण छे. अहिंथी ए तमस्काय असंख्यातमे द्वीप समुद्रे उडयो छे माटे ए तमस्कायनो परिधि असंख्याता योजन प्रमाण जाणवो.

ए तमस्कायना महत्वपणाने माटे पूर्वना गीतार्थ पुरुषोए एम कह्युं छे के–कोई महर्द्धिक देवता त्रण चपटी वगाडीये तेटला वखतमां एकवीश वार जंबुद्वीपने प्रदक्षिणा करी आवे तेज देवता छ महिने तमस्कायना योजन विस्तारने उल्लंघे, परंतु उपर असंख्याता योजनना विस्तारवाळो तमस्कायनी जगति उल्लंघे नहीं. ॥२०२॥

पंचमकप्पे रिट्ठंमि, पत्थडे अट्ठ कण्हराइओ ॥
सम चउरंसक्खाडय,ट्ठिइओ दो दो दिसि चउक्के ॥२०३॥

अर्थ—(पंचमकप्पे) के० पांचमा देवलोकने विषे (रिट्ठंमि पत्थडे) के० त्रीजा रिष्ट नामना प्रतरने विषे (अट्ठकण्हराइओ) के० आठ कृष्णराजीओ छे. ते कृष्णराजी (समचउरंसक्खाडट्ठिओ) के० समचतुरस्र नाटकनी रंगभूमि सरखी छे, तथा

([illegible] चउ[illegible]) के० चारे दिशायों (दो दो) के०
राजी छे. ॥ २०३ ॥

ए कृष्णराजीनी समजुती एम छे के-पांचमा देवलो
अरिष्ट नामना मतरने विषे अरिष्ट विमाननी चारे दि
अचित्त पृथ्वीमय ते बे कृष्णराजी छे. तेमां उत्तर दिश
राजी पूर्व पश्चिम दिशाये लांबी छे, अने दक्षिण दिशा
राजी पण पूर्व पश्चिम दिशाये लांबी छे. त्यां हवे कृ
पहेली पूर्व दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते दक्षिण दि
रनी कृष्णराजीने फरसे छे, तेमज बीजी दक्षिण दिश
तर कृष्णराजी ते पश्चिम दिशानी बाहेरनी कृष्णराजी
तथा त्रीजी पश्चिम दिशानी अभ्यंतर कृष्णराजी ते उ
बाह्य कृष्णराजीने फरसे छे, अने चोथी उत्तर दिशा
कृष्णराजी ते पूर्व दिशानी बाह्य कृष्णराजीने फरसे छे
चारे दिशानी सर्व मली आठ कृष्णराजी छे. तेज अर्थ
नीचेनी गाथा छे.

पुव्वावर उत्तर दा-हिणा हि मज्झिल्लियाहि पु
दाहिणउत्तर पुव्वा, वराओ बहि कण्हराईओ

अर्थ—(दाहिणउत्तरपुव्वावराओ) के० दक्षिण
अने पश्चिम दिशा तरफनी (बहिकण्हराईओ) के० बा
राजीओ (पुट्ठाओ) के० पूर्वथी (पुव्वावरउत्तरदाहि
पूर्व प[illegible] उत्तर अने दक्षिण दिशा तरफनी (मज्झि
अद[illegible] [illegible]राजीओनी साथे जोडायली छे. ॥ २०
पुव्वावरा छलंसा, तंसा पुण दाहिगुत्तरा ब
अ[illegible] चउरंसा, सव्वावि य कण्हराईओ

अर्थ—(पुव्वावरा) के० पूर्व अने पश्चिम दिशानी (बाह्या) के० बाहेरनी बे कृष्णराजीओ (छलंसा) के० छ खुणावाळी छे. (पुण) के० वळी (दाहिणुत्तरा) के० दक्षिण अने उत्तर दिशानी बाहेरनी बे कृष्णराजीओ (तंसा) के० त्रण खुणावाळी छे. तथा (अभितर) के० अंदरनी (चउरंस ग कण्हराईओ) के० चारे कृष्णराजीओ चउरंसा के० चार खुणावाळी छे. ॥ २०५ ॥

आयामपरिक्खेवेहिं, ताण असंखेज्जजोयण सहस्सा ॥
संखेज्जसहस्सा पुण, विक्खंभे कण्हराईणं ॥ २०६ ॥

अर्थ—ताण कण्हराईणं) के० ते आठे कृष्णराजीओ (आयामपरिक्खेवेहिं) के० लंबाई अने परिधिये करीने (असंखेज्जजोयण सहस्सा) के० असंख्याता हजारो योजन छे. (पुण) के० वळी (विक्खंभे) के० [illegible] करीने (संखेज्ज सहस्सा) के० संख्याता हजारो योजन छे. ॥ २०६ ॥

ईसाणाइदिसासु, एयाणं अंतरेसु अट्ठसु वि ॥
अट्ठविमाणाइ तहा, लोगंतिय कण्हराईणं ॥ २०७ ॥

अर्थ—(ईसाणाइदिसासु) के० ईशानादिक दिशाने विषे ([illegible]) के० ए कृष्णराजीओना [illegible] अंतरेसु अट्ठसु वि) के० आठ [illegible] विषे (अट्ठविमाणाइ) के० आठ विमान [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छे. (तहा) के० [illegible] [illegible] (लोगंतिय [illegible]) के० [illegible] [illegible] छे. ॥ २०७ ॥

[illegible]

अग्नि तहच्चिमाली, वइरोयण पभंकर य चंदाभं ॥
सूराभं सुक्काभं, सुपइट्ठाभं च रिट्ठाभं ॥ २०८ ॥

अर्थ—ईशान खूणामां (अग्नि) के० अर्चि नामनुं विमान छे, (तह) के० तथा पूर्व दिशामां (अच्चिमाली) के० अर्चिमाली नामनुं विमान छे, अग्नि खूणामां (वइरोयण) के० वैरोचन नामनुं विमान छे, दक्षिण दिशामां (पभंकर) के० प्रभंकर नामनुं विमान छे,(य) के० अने नैरुत्य खूणाने विषे (चंदाभं)के० चंद्राभ नामनुं विमान छे, पश्चिम दिशाने विषे (सूराभं) के० सूर्याभ नामनुं विमान छे, वायव्य खूणाने विषे (सुक्काभं) के० शुक्राभ नामनुं विमान छे, उत्तर दिशाने विषे (सुपइट्ठाभं) के० सुप्रतिष्ठाभ नामनुं विमान छे, (च) के० अने मध्यभागने विषे (रिट्ठाभं) के० रिष्टाभ नामनुं विमान छे. ॥ २०८ ॥

हवे ते विमानोमां वसनारा अधिष्ठायक देवोनां पूर्वे कहेल्या अनुक्रम प्रमाणे नाम कहे छे.

सारस्सय माइ-च्चा, वन्ही वरुणा य गद्दतोया य ॥
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गि तह चेव रिट्ठा य॥२०९॥

अर्थ—अर्चि विमानमां (सारस्सय) के० सारस्वत देवता वसे छे, अर्चिमालि विमानमां (आइच्चा) के० आदित्य देवता वसे छे, वैरोचन विमानमां (वन्ही) के० वन्हि देवता वसे छे, प्रभंकर विमानमां (वरुणा य) के० वरुण देवता वसे छे, चंद्राभ विमानमां (गद्द तोया य) के० गर्द्दतोय देवता वसे छे, सूर्याभ विमानमां (तुसिया) के० तुषित नामना देवता वसे छे, शुक्राभ विमानमां (अव्वाबाहा) के० अव्याबाध देवता वसे छे, सुप्रतिष्ठाभ

विमानमां (अग्गि) के० अग्निदेवता वसे छे, [तह चेव] के० तेमज रिष्टाभ विमानमां (रिट्ठा य) के०रिष्टाभ देवता वसे छे.॥२०९॥

हवे ते देवताओनो अनुक्रमे परिवार कहे छे.

पढमजुअलंमि सत्तओ–सयाणि बीयंमि चउदह
सहस्सा ॥
तइए सत्त सहस्सा, नव चेव सयाणि सेसेसु ॥२१०॥

अर्थ—(पढमजुअलंमि के० पहेला युगल ते सारस्वत तथा आदित्य देवताने (सत्तओ सयाणि) के० सात सो सात सो देवतानो परिवार छे, अने (बीयंमि) के० बीजा युगल ते वन्हि तथा वरुण देवताने (चउदह सहस्सा) के० चउद चउद हजार देवतानो परिवार छे. तेमज (तइए) के० त्रीजा युगल ते गर्दतोय तथा तुषित देवताने (सत्तसहस्सा) के० सात सात हजार देवतानो परिवार छे, अने (सेसेसु) के० बाकीना देवतानो (नव सयाणि) के० नव सो नव सो देवतानो परिवार (चेव) के० निश्चे होय छे, ॥ २१० ॥ ए देवतानुं बीजुं भवनद्वार संपूर्ण थयुं.

हवे त्रीजुं देवताना शरीरनी अवगाहनानुं द्वार कहे छे.

भवणवणजोइसोहम्मीसाणे सत्त हत्थ तणुमाणं ॥
दुदुदु चउक्क गेवि–ज्जणुत्तरे हाणि इक्किकं ॥ २११ ॥

अर्थ—(भवणवणजोइसोहम्मीसाणे के० भवनपति, व्यंतर, ज्योतषी तथा सौधर्म अने ईशान देवलोक सुधीना देवताओनुं (सत्त हत्थ तणुमाणं) के० शरीर प्रमाण सात हाथनुं उत्कृष्टुं जाणवुं. त्यार पछी (दु) के० त्रीजो अने चोथो देवलोक, (दु)

के० पांचमा अने छठ्ठो देवलोक. (दु) के० सातमो अने आठमो देवलोक, (चउक्क) के० नवमो, दशमो अगीयारमो बारमो देवलोक, तथा (गेविज्ज) के० नव ग्रैवेयक अने (अणुत्तरे) के० पांच अनुत्तर ए छ ठेकाणे अनुक्रमे [हाणि इक्किक्कं] के० एक एक हाथनी हानी करवी. एटले त्रीजा चोथा देवलोके छ हाथनुं, पांचमा छठ्ठे देवलोके पांच हाथनुं, सातमां आठमा देवलोके चार हाथनुं, नवमा दशमा अगीयारमा बारमा देवलोके त्रण हाथनुं. नव ग्रैवेयके बे हाथनुं अने पांच अनुत्तर विमाने एक हाथनुं शरीर जाणवुं. ॥ २११ ॥

हवे विशेषे सागरोपमना आयुष्यनी वृद्धिये करी सनत्कुमारादिकने विषे शरीरनुं मान कहे छे.

कप्प दुग दु दु दु चउगे, नवगे पणगे य जिठ्ठठिइ अयरा ॥
दो सत्त चउद ट्ठारस, बावीसिगतीससितित्तीसा ॥२१२॥
विवरे ताणिक्कुणे, इक्कारसगा उ पाडिए सेसा ॥
हत्थिक्कारस भागा, अयरे अयरे समहियंमि ॥ २१३ ॥
चय पुव्वसराराओ, कमेण ईगुत्तराइ वुड्ढीए ॥
एवं ठिई विसेसा, सणंकुमाराइ तणुमाणं ॥ २१४ ॥

अर्थ—(कप्पदुग) के० पहेला अने बीजा देवलोकमां, (दु) के० त्रीजा अने चोथा देवलोकमां (दु) के० पांचमां अने छठ्ठा देवलोकमां (दु) के० सातमा अने आठमा देवलोकमां, (चउगे) के० नवमा दशमा अगीयारमा अने बारमा देवलोकमां, (नवगे) के० नव ग्रैवेयकमां (य) के० अने (पणगे) के० पांच अनुत्तर

विमानमां, (जिट्ठठिइ) के० उत्कृष्ट स्थिति आ प्रमाणे-पहेला बे देवलोके, (दो अयरा) के० बे सागरोपमनी, बीजा बे देव लोके (सत्त) के० सात सागरोपमनी, त्रीजा बे देवलोके (चउद) के० चउद सागरोपमनी, चोथा बे देवलोके (अट्ठारस) के० अढार सागरोपमनी, नवमाथी बारमा सुधीना चार देवलोके (बावीस) के० बावीस सागरोपमनी, नव ग्रैवेयके (इगतीस) के० एकत्रीश सागरोपमनी, अने पांच अनुत्तर विमानने विषे (तित्तीसा) के० तेत्रीश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति छे. ॥ २१२ ॥ [विवरे] के० अधिक स्थितिमांहेथी ओछी स्थिति काढी नाखीयें. पछी बाकी रहे तेमांथी (ताणिक्कूणे) के० एकेक ओछो करीयें, वली (इक्कारसगा उ पाडिए) के० एक हाथना पाडेला अगीयारीया भागने स्थानके जे (सेसा) के० बाकी रहेला (इक्कारसभागा) के० एक हाथना अगीयारीया भाग तेने देवताना आयुष्यमां (अयरे अयरे समहियंमि) के० एक एक सागरोपम अधिक थयुं थके ॥ २१३ ॥ (चय पुव्वसरीराओ) के० पूर्व पूर्वना शरीरमांथी एक एक भाग ओछो करवो अने (कमेण) के० अनुक्रमे करीने (इगुत्तराइ वुड्ढीए) के० एक एक सागरोपम आयुष्य स्थितिमां वधारवो. (एवं ठिइ विसेसा) के० एवीरीते आयुष्यनी स्थितिना विशेषथकी एटले सागरोपमनी वृद्धिये करी (सणंकुमाराइ तणु-माणं) के० सनत्कुमारादिक देवलोकना देवतानुं शरीरप्रमाण थाय ॥ २१४ ॥

समजुती एम छे के-पूर्वाचार्योए देवताना शरीरनुं प्रमाण तेमना सागरोपमना आयुष्य प्रमाण उपरथी मांडी आप्युं छे. जेम के ईशान तथा माहेंद्र देवलोके जे कांइ अधिक आयुष्य कह्युं छे ते अहिं न गणवुं. सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवतानुं देहमान

सात हाथनुं कह्युं छे. हवे स
कहे छे. त्यां, विद्वरे ए
आयुष्य स्थितिमांथी आ
रहे तेमांथी एक ओछो कर
करवा तेमांथी विश्लेषकरी
प्रमाणे हाथना शेष वधेला
पमनुं आयुष्य वधार्युं.
शरीर प्रमाण थाय छे.

अहिं एज वातने स्प
तथा ईशान देवलोके उ
सनत्कुमार तथा माहेंद्रे सा
सागरोपममांथी वे सागरोप
पमवाला आयुष्यवाला देव
छे, ते बे सागरोपम काढ
एक ओछो करीये त्यारे
देवलोकना देवनानुं सात
पुरा राखीये अने सातमा
चार भाग काढी लेवा.
एटले सनत्कुमार तथा माहें
ष्यवाला देवनानुं शरीर प्र
चार भाग करीये तेवा चार
एम एक एक सागरोपम

विमानमां, (जिट्ठठिइ) के० उत्कृष्ट स्थिति आ प्रमाणे-पहेला बे देवलोके, (दो अयरा) के० बे सागरोपमनी, बीजा बे देव लोके (सत्त) के० सात सागरोपमनी, त्रीजा बे देवलोके (चउद) के० चउद सागरोपमनी, चोथा बे देवलोके (अट्ठारस) के० अढार सागरोपमनी, नवमाथी बारमा सुधीना चार देवलोके (बावीस) के० बावीस सागरोपमनी, नव ग्रैवेयके (इगतीस) के० एकत्रीश सागरोपमनी, अने पांच अनुत्तर विमानने विषे (तित्तीसा) के० तेत्रीश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति छे. ॥ २१२ ॥ [विवरे] के० अधिक स्थितिमांहेथी ओछी स्थिति काढी नाखीये. पछी बाकी रहे तेमांथी (नाणिकूणे) के० एकेक ओछो करीये, वली (इक्कारसगा उ पाडिए) के० एक हाथना पाडेला अगीयारीया भागने स्थानके जे (सेसा) के० बाकी रहेला (हत्थिक्कारसभागा) के० एक हाथना अगीयारीया भाग तेने देवताना आयुष्यमां (अयरे अयरे समहियंमि) के० एक एक सागरोपम अधिक थयुं थकुं ॥ २१३ ॥ (चय पुव्वसरीराओ) के० पूर्व पूर्वना शरीरमांथी एक एक भाग ओछो करवो अने (कमेण) के० अनुक्रमे करीने (इगुत्तराइ वुड्ढीए) के० एक एक सागरोपम आयुष्य स्थितिमां वधारवो. (एवं ठिइ विसेसा) के० एवीरीते आयुष्यनी स्थितिना विशेषणावडे एटले सागरोपमनी वृद्धिये करी (सणंकुमाराइ तणुमाणं) के० सनत्कुमारादिक देवलोकना देवतानुं शरीरप्रमाण थाय ॥ २१४ ॥

समजूती एम छे के पूर्वाचार्ये देवताना शरीरनुं प्रमाण तेमना सागरोपमना आयुष्य प्रमाण उपरथी कांई अधिकुं कर्युं छे. कांई ईशान तथा माहेंद्र देवलोके जे कांई अधिक आयुष्य कह्युं छे ते अहिं न गणवुं. सौधर्म तथा ईशान देवलोकना देवतानुं देहमान

गनुं, छ सागरोपमना आयुष्यवाला देवतानुं शरीर प्रमाण छ हाथ अने अगीयारीया एक भागनुं, तथा सात सागरोपमना आयुष्यवाला देवतानुं शरीर प्रमाण बराबर छ हाथनु जाणवुं.

वली थोडुं दृष्टांत कही समजावे छे के—जेम ब्रह्म तथा लांतक देवलोके चउद सागरोपमनी उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति छे, तेमांथी सनत्कुमार तथा महेंद्र देवलोकना सात सागरोपमना सात आंक काढी नाखवा बाकी सात रहे तेमांथी एक ओछो करवो, बाकी छ रहे. पछी एक हाथना अगीयारीया भाग मांहेला पांच पडता मूकी बाकी छ भाग रहे ते अने पांच हाथ. एटलुं आठ सागरोपम आयुष्यवाला देवतानुं शरीर प्रमाण जाणवुं, एरीते एक एक सागरोपमनुं आयुष्य वधतां एक एक अगीयारीओ भाग शरीर ना प्रमाणमांथी घटाडवो, ए सर्व यंत्र उपरथी जाणी लेवुं, ॥ एज वात नीचेनी गाथाथी कहे छे—



कोष्टक नं. १

उर्ध्व देवलोके आयुष्यने अनुसारे देह प्रमाणनुं कोष्टक.

सागरोपमे	हाथ	हाथना अगीआरीआ भाग	सागरोपमे	हाथ	हाथना अगीआरीआ भाग
१	७	— ०	१८	४	— ०
२	७	— ०	१९	३	— ३
३	६	— ४	२०	३	— २
४	६	— ३	२१	३	— १
५	६	— २	२२	३	— ०
६	६	— १	२३	२	— ८
७	६	— ०	२४	२	— ७
८	५	— ६	२५	२	— ६
९	५	— ५	२६	२	— ५
१०	५	— ४	२७	२	— ४
११	५	— ३	२८	२	— ३
१२	५	— २	२९	२	— २
१३	५	— १	३०	२	— १
१४	५	— ०	३१	२	— ०
१५	४	— ३	३२	१	— १
१६	४	— २	३३	१	— ०
१७	४	— १			

हत्थस्सिगारसंसा, अहिगयर समाइगेगवयहीणा ॥
वीतीयरदेहपमाणं, कम्म क्खिकरेणं पुव्वंगे ॥२१५॥

अर्थ—(हत्थस्सिगारसंसा) के० एक हाथना अगीयार भाग करवा. (अहिगयरसमा) के० सागरोपमनुं आयुष्य वधारीये अने (इगेगवयहीणा) के० शरीर प्रमाणमांथी एक एक भाग ओछो करीये. एम (विनीयरदेहपमाण) के० बीजा बीजा देवलोकना

गनुं, छ सागरोपमना आयुष्यवाला देवतानुं शरीर प्रमाण छ हाथ अने अगीयारीया एक भागनुं, तथा सात सागरोपमना आयुष्यवाला देवतानुं शरीर प्रमाण बराबर छ हाथनु जाणवुं.

वली बीजुं दृष्टांत कही समजावे छे के-जेम ब्रह्म तथा लांतक देवलोके चउद सागरोपमनी उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति छे, तेमांथी सनत्कुमार तथा महेंद्र देवलोकना सात सागरोपमना सात आंक काढी नाखवा बाकी सात रहे तेमांथी एक ओछो करवो, बाकी छ रहे. पछी एक हाथना अगीयारीया भाग मांहेला पांच पडता मूकी बाकी छ भाग रहे ते अने पांच हाथ. एटलुं आठ सागरोपम आयुष्यवाला देवतानुं शरीर प्रमाण जाणवुं, एरीते एक एक सागरोपमनुं आयुष्य वधतां एक एक अगीयारीओ भाग शरीर ना प्रमाणमांथी घटाडवो, ए सर्व यंत्र उपरथी जाणी लेवुं. ॥ एज वात नीचेनी गाथाथी कहे छे—



कोष्टक नं. १

उर्ध्व देवलोके आयुष्यने अनुसारे देह प्रमाणनुं कोष्टक.

सागरोपमे	हाथ	हाथना अगीआरीआ भाग	सागरोपमे	हाथ	हाथना अगीआरीआ भाग
१	७	— ०	१८	४	— ०
२	७	— ०	१९	३	— ३
३	६	— ४	२०	३	— २
४	६	— ३	२१	३	— १
५	६	— २	२२	३	— ०
६	६	— १	२३	२	— ८
७	६	— ०	२४	२	— ७
८	५	— ६	२५	२	— ६
९	५	— ५	२६	२	— ५
१०	५	— ४	२७	२	— ४
११	५	— ३	२८	२	— ३
१२	५	— २	२९	२	— २
१३	५	— १	३०	२	— १
१४	५	— ०	३१	२	— ०
१५	४	— ३	३२	१	— १
१६	४	— २	३३	१	— ०
१७	४	— १			

हत्थस्सिगारसंसा, अहिगयर समाइगेगवयहीणा ॥
वीतीयरदेहपमाणं, कम्म क्खिकरेणं पुन्नंगे ॥२१५॥

अर्थ—(हत्थस्सिगारसंसा) के० एक हाथना अगीयार भाग करवा. (अहिगयरसमा) के० सागरोपमनुं आयुष्य वधारीयें अने (इगेगवयहीणा) के० शरीर प्रमाणमांथी एक एक भाग ओछो करीये. एम (विनीयरदेहपमाण) के० बीजा बीजा देवलोकना

गनुं, छ सागरोपमना आयुष्यवाला देवतानुं शरीर प्रमाण छ हाथ अने अगीयारीया एक भागनुं, तथा सात सागरोपमना आयुष्यवाला देवतानुं शरीर प्रमाण बराबर छ हाथनु जाणवुं.

वली बीजुं दृष्टांत कही समजावे छे के–जेम ब्रह्म तथा लांतक देवलोके चउद सागरोपमनी उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति छे, तेमांथी सनत्कुमार तथा महेंद्र देवलोकना सात सागरोपमना सात आंक काढी नाखवा बाकी सात रहे तेमांथी एक ओछो करवो, बाकी छ रहे. पछी एक हाथना अगीयारीया भाग मांहेला पांच पडता मूकी बाकी छ भाग रहे ते अने पांच हाथ. एटलुं आठ सागरोपम आयुष्यवाला देवतानुं शरीर प्रमाण जाणवुं, एरीते एक एक सागरोपमनुं आयुष्य वधतां एक एक अगीयारीओ भाग शरीर ना प्रमाणमांथी घटाडवो, ए सर्व यंत्र उपरथी जाणी लेवुं. ॥ एज वात नीचेनी गाथाथी कहे छे—



ब्रह्म देवलोके

प्रतरे	सागरो०-छठीया भाग
१	७ — ३
२	८ — ०
३	८ — ३
४	९ — ०
५	९ — ३
६	१०

लांत के

	साग० पांचीया भाग
१	१० — ४
२	११ — ३
३	१२ — २
४	१३ — १
५	१

शुक्र देवलोके.

प्रतर.	साग० चारीया भाग.
१	१४ — ३
२	१५ — ०
३	१६ — १
४	१७ — ०

महस्रारे.

१	१६ — १
२	१७ — २
३	१७ — ३
४	१८ — ०

आनत प्राणते.

१	१८ — २
२	१९ — ०
३	१९ — २
४	२० — ०

आरण अच्युते

१	२० — २
२	२१ — ०
३	२१ — २
४	२२ — ०

कोष्टक नं. ३

नव ग्रैवेयके.

प्रतरे	सागरोपम.
१	२३
२	२४
३	२५
४	२६
५	२७
६	२८
७	२९
८	३०
९	३१

पांच अनुत्तरे.

१	३३
२	३३
३	३३
४	३३
५	३३

भवधारणिज्ज एमा, उत्तरवेउव्वि जोयणा लक्खं ॥
गेविज्जणुत्तरेसु, उत्तर वेउव्विया नत्थि ॥ २१६ ॥

अर्थ—(एमा) के० ए पूर्वे कहेलुं शरीरनुं प्रमाण ते (भवधारणिज्ज) के० भव धारणीय शरीर संबंधी जाणवुं. (देवता जीवे त्यां सुधी जे शरीर धारण करे ते भवधारणीय शरीर कहेवाय छे.) वळी (उत्तरवेउव्वि) के० देवता उत्तर वैक्रिय शरीर करे तो (जोयणा लक्खं) के० एक लाख योजननुं करे. परंतु (गेविज्ज-

णुत्तरेसु) के० नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर निवासी देवोने (उत्तरवेउव्विया नत्थि) के० उत्तर वैक्रिय शरीर नथी, परंतु भवधारणीय शरीर छे. ते देवताओने उत्तरवैक्रिय शरीर धारण-करवानी शक्ति छे, परंतु ते शरीर करवानुं कांइ काम पडतुं नथी, तेथी ते उत्तर वैक्रिय शरीर करता नथी. ॥ २१६ ॥

हवे भवधारणीय तथा उत्तर वैक्रिय शरीरनी जघन्य अवगाहना कहे छे,

साहाविय वेउव्विय, तणू जहन्ना कमेण पारंभे ॥
अंगुल असंखभागो, अंगुलसंखिज्जभागो य ॥२१७॥

अर्थ—(साहाविय) के० स्वाभाविक ते भवधारणीय अने (वेउव्विय) के० वैक्रिय ए बन्ने (तणू) के० शरीर (जहन्ना) के० जघन्यथी (कमेण) के० अनुक्रमे (पारंभे) के० आरंभनी वखते (अंगुल असंखभागो) के० अंगुलना असंख्यातमा भागे (य) के० अने (अंगुलसंखिज्जभागो) के० अंगुलना संख्यातमा भागे एटले भवधारणीय शरीर अंगुलना असंख्यातमा भागे तथा वैक्रिय शरीर अंगुलना संख्यातमे भागे होय छे. ॥ २१७ ॥ ए देवताने विषे अवगाहना संबंधी बीजुं द्वार संपूर्ण थयुं. ॥

हवे देवताने उत्पातविरहकालनुं तथा चवन विरहकालनुं ए बे द्वार साथे कहे छे.

सामन्नेणं चउविह, सुरेसु बारस मुहुत्त उक्कोसा ॥
उववायविरहकालो, अह भवणाईसु पत्तेयं ॥ २१८ ॥

अर्थ—(सामन्नेणं) के० सामान्यथी (चउविह सुरेसु) के० चार निकायना देवताने विषे (उववायविरहकालो) के० उपज-

वानो विरहकाल (उक्कोसा) के० उत्कृष्टथी (बारस मुहुत्त) के० बार मुहूर्त्तनो जाणवो. त्यार पछी अवश्य उपजे. पंचसंग्रह ग्रन्थमां कह्युं छे के-गर्भज तिर्यंच मनुष्य देवता अने नारकी ए चारेने उत्कृष्टथी उपपात विरहकाल बार मुहूर्त्तनो, संमूर्च्छिम मनुष्यने चोवीस मुहूर्त्तनो अने विकलेंद्रिय तथा संमूर्छिम जीवोने अंतर मुहूर्त्तनो होय छे. (अह) के० हवे भवणाईसु के० भवनपति विगेरे चारे निकायने विषे (पत्तेयं) के० प्रत्येकनुं विरहकालनुं प्रमाण कहे छे. ॥ २१८ ॥

भवण वण जोइ सोहम्मी–साणेसु मुहुत्त चउवीसं ॥
तो नव दिण वीस मुहू,बारस दिण दस मुहुत्ता य ॥२१९॥
बावीस सद्ध दियहा,पणयाल असीइ दिण सयं तत्तो ॥
संखिज्जा दुसु मासा,दुसु वासा तिसु तिगेसु कमा ॥२२०॥
वासाण सयसहस्सा,लक्ख तह चउसु विजयमाईसु ॥
पल्लिया असंखभागो. सव्वट्ठे संखभागो य ॥ २२१ ॥

अर्थ—(भवण वण जोइ सोहम्मीसाणेसु) के० भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्म अने ईशानवासी देवताने विषे (मुहुत्त चउवीसं) के० चोवीस मुहूर्त्तनो उत्कृष्टथी उपजवानो विरहकाल छे. (तो) के० त्यार पछी त्रीजो देवता उपजे. सनत्कुमार देवलोके (नव दिण वीस मुहू) के० नव दिवस अने वीस मुहूर्त, माहेंद्र देवलोके (बारस दिण दस मुहुत्ताय) के० बार दिवस अने दस मुहूर्त. ॥ २१९ ॥ ब्रह्म देवलोके [बावीस सद्धदियहा] के० साडा बावीस दिवस. लांतक देवलोके (पणयाल) के० पिस्तालीस दिवस. शुक्र देवलोके (असीइ) के० एंशी दिवस, सहस्रार देवलोके

(सयं) के० सा दिवस, (तत्तो) के० त्यार पछी (दुसु) के० आनत अने प्राणत ए बे देवलोके प्रत्येके (संखिज्जमासा) के० संख्याता मास, (दुसु) के० आरण अने अच्युत ए बे देवलोके (वासा) के० संख्यातावर्ष, हवे नव ग्रैवेयकना (तिसु तिगेसु) के० त्रण त्रिकने विषे (कमा) के० अनुक्रमे करीने उपजवानो विरहकाल कहे छे. ॥ २२० ॥ पहेला त्रीके (वासाणसया) के० संख्यातावर्ष शत, बीजा त्रीके (सहस्सा) के० संख्याता हजार वर्ष, अने त्रीजा त्रीके (लक्खा) के० संख्याता लाख वर्ष उपजवानो विरहकाल जाणवो. (तह) के० तेमज (चउसु विजयाईसु के० पहेला चार विजय ते विजय विजयंत जयंत अने अपराजित ए चार विमानने विषे (पलिया असंख भागो) के० अद्धा पल्योपमनो असंख्यातमो भाग, अने (सव्वट्ठे) के० सर्वार्थ सिद्धने विषे (संखभागो य) के० अद्धा पल्योपमनो संख्यातमो भाग उत्पात विरहकाल होय छे. ॥ २२१ ॥

हवे देवताओनो जघन्य विरहकाल अने पछी च्यवन विरहकाल संक्षेपथी कहे छे.

सव्वेसिंपि जहन्नो, समओ एमेव चवणविरहोऽवि ॥
इग दु ति संखमसंखा,इग समए हुंति य चवंति॥२२२॥

अर्थ—(सव्वेसिंपि) के० भुवनपतिथी मांडीने सर्वार्थ सिद्ध सुधीना सर्व स्थानके (जहन्नो) के० जघन्यथी (समओ) के० एक समय उपजवानो विरहकाल होय. (एमेव) के० ए उत्पात विरहनी पेठे (चवणविरहोऽवि) के० च्यवनविरह पण उत्कृष्ट तथा जघन्यथी जाणवो. (इग) के० एक, (दु) के० बे, (ति) के० त्रण एम यावत् (संखं) के० संख्याता अने (असंख्य)के० असंख्याता देवता

(इग समए) के० एक समयने विषे (हुंति) के० उपजे छे, (य) के० अने (चवंति) के० चवे छे. तात्पर्य ए छे के-भुवनपतियी आरंभीने सहस्रार देवलोक सुधी जघन्यथी एक समयमां जो उपजे तो एक बे अथवा त्रण उपजे तथा चवे. अने उत्कृष्टथी संख्याता अथवा असंख्याता उपजे तथा चवे. कारण के-सहस्रार देवलोक सुधी तो तिर्यंच पण जाय छे माटे असंख्याता उपजे अने चवे. ए आठमा सहस्रार देवलोकथी उपरना देवता एक समये संख्याता उपजे अने संख्याता चवे. कारण के-त्यां मनुष्यज जाय छे, अने त्यांथी चवेलो देवता पण मनुष्यज थाय छे. माटे मनुष्य संख्याताज छे, तेथी आनतादि देवता संख्याता उपजे अने संख्याता चवे.॥२२२॥ ए उपपात तथा चवन संख्या द्वार कह्युं. ॥

हवे देवगतिमां कइ कइ गतिना जीवो आवे छे ? ते आगति द्वार कहे छे.

नर पंचिंदिय तिरिया, णुप्पत्ती सुरभवे पजत्ताणं ॥
अज्झवसाय विसेसा, तेसिं गइ तारतम्मं तु ॥२२३॥

अर्थ—(पजत्ताणं) के० पर्याप्ता एवा (नर) के० मनुष्य तथा पर्याप्ता (पंचिंदियतिरियाण) के० पंचेंद्रिय तिर्यंच ए बे गतिना जीव (सुरभवे) के० देवगतिमांहे (उप्पत्ती) के० उपजे छे. तेमां पण विशेष कारण कहे छे के-कोइ जीव भुवनपति, कोइ व्यंतर, कोइ ज्योतषी, कोइ वैमानिक थाय, तेमां पण कोइ ऋद्धिवंत, कोइ महर्द्धिक, कोइ अल्प ऋद्धिवंत, कोइ बहु आयुष्य-वालो, कोइ थोडा आयुष्यवालो इत्यादिक विशेषपणानुं कारण पोताना (अज्झवसायविसेसा) के० अध्यवसायना विशेषपणाये करीने (तेसिं) के० ते देवतानी (गइतारतम्मं) के० गतिनुं

भिन्नभिन्नपणुं छे. अध्यवसाय ए मननो व्यापार छे, ते
दार तोव्र, तीव्रतर तीव्रतम एम जूदो जूदा होवाथी जूदी
देवगति पामे छे. ॥ २२३ ॥

वली कयाकया जीवो देवगति पामे ते कहे छे.

नरतिरि असंखजीवी, मव्वे नियमेण जंति दे
नियआउय समहीणा–उएसु ईसाण अंतेसु

अर्थ—(असंखजीवी) के० असंख्याता आयुष्य
तिरि) के० युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच (सव्वे
(नियमेण) के० निश्चेयी (देवेसु जंति) के० देव
ते (नियआउय) के० पोताना युगलिक भवमां
होय तेना (सम) के० तुल्य आयुष्ये अथवा (ही
ओछा आयुष्ये (ईसागअंतेसु) के० एटला आयु
देवलोकसुधीना देवतामां उपजे, पण अधिक आयु
के–युगलीया मनुष्यने उत्कृष्ट आयुष्य त्रण पल्यो
ते आयुष्य ईशानदेव लोक सुधी होय छे माटे ।

अहिं विशेष समजवानुं ए छे के–पल्य
भागे असंख्याता आयुष्यवाला युगलिया, पंखि
छप्पन अंतर द्वीपवाला तिर्यंच, मनुष्य युग
भुवनपति तथा व्यंतरने विषे उपजे, पण ज्
उपजे नहीं. कारण के–उद्यानदीमांहे पल्य
आयुष्यछे माटे, अने बीजा युगलिया पण
आयुष्य प्रमाणे अथवा ओछे आयुष्ये ईश
... देवलोकमां उपजवानो निषे

जंति सम्मुच्छिमतिरिया, भवणवणेसु न जोइमाईसु ॥
जं तेसिं उववाओ, पलियासंखंमआउसु ॥ २२५ ॥

अर्थ—(सम्मुच्छिमतिरिया) के० सम्मूर्छिमतिर्यंच मरीने (भवणवणेसु) के० भवनपतिने विषे तथा व्यंतरने विषे (जंति) के० जाय छे, पण (जोइमाईसु) के० ज्योतिषी विगेरेमां (न) के० न जाय. (जं) के० कारणके (तेसिं) के० ते सम्मूर्छिमतिर्यंच उत्कृष्टथी (पलियासंखंमआउसु) के० पल्योपमना असंख्यातमा भागना आयुष्यवाला देवतामांज (उववाओ) के० उपजे छे, पण तेथी वधारे आयुष्यवालामां उपजे नहीं. ॥ २२५ ॥

हवे अध्यवसाय विशेषे गतिनुं तरतमपणुं कहे छे.

बालतवे पडिबद्धा, उक्कडरोसा तवेण गारविया ॥
वेरेण य पडिबद्धा, मरिउं असुरेसु जायंति ॥२२६॥

अर्थ—(बालतवे) के० अज्ञानतपने विषे (पडिबद्धा) के० आसक्त थयेला, (उक्कडरोसा) के० उत्कृष्ट रोष धरनारा, (तवेण गारविया) के० तपथी अहंकार करनारा, (य) के० अने (वेरेण पडिबद्धा) के० वैरथी प्रतिबंध करनारा एवा जीवो (मरिउं) के० मृत्यु पामीने (असुरेसु जायंति) के० असुरकुमारमां उपजे छे. ॥ २२६ ॥

रज्जुग्गह विसभक्खण, जलजलणपवेस तण्हछुहदुहओ ॥
गिरिसिरपडणाउ मुया, सुहभावा हुंति वंतरिया ॥२२७॥

अर्थ—(रज्जुग्गह) के० गले दोरडानो फांसो खाई मरनारा, (विसभक्खण) के० विष खाई मरनारा, (जलजलणपवेस) के० पाणि अथवा अग्निमां प्रवेश करी मरनारा, (तण्हछुहदुहओ)

के० तरस अथवा भूखना दुःखथी मरनारा, अने (गिरिसिरपड-णाउ मुया) के० पर्वतना शिखरउपरथी पडीने मरनारा जीवो (सुहभावा) के० जो शूलपाणीनी पेठे शुभ भावथी मरे तो (वंतरिया हुंति) के० व्यंतर देवता थाय छे. ॥ २२७ ॥

तावस जा जोइसिया, चरगपरिवाय बंभलोगा जा ॥
जा सहसारो पंचिंदि–तिरिय जा अच्चुओसड्ढा ॥२२८

अर्थ—(तावस) के० कंदमूलनुं भक्षण करनारा वनवासी तपस्वीओ मरीने (जा जोइसिया) के० भुवनपतिथी आरंभी ज्योतषी देवता सुधी जाय. तथा (चरगपरिवाय) के० चार पांच भेगा थई भिक्षा मागे ते चरक अने कपिलमति परिव्राजक त्रि-दंडिया ते मरीने (बंभलोगो जा) के० भुवनपतिथी आरंभी उत्कृष्टा ब्रह्मदेव लोक सुधी जाय. तथा (पंचिंदितिरिय) के० गर्भज पर्याप्ता पंचेंद्रिय तिर्यंच ते हाथी बलद विगेरे जीवो कंबल सबलनी पेठे सम्यक्त्व देशविरति सहित मरीने उत्कृष्टथी (जा सहसारो) के० सहस्रार देवलोक सुधी जाय अने (सड्ढा) के० श्रावक मनुष्य मरीने उत्कृष्टथी (जा अच्चुओ) के० बारमा अच्युत देवलोक सुधी जाय ॥ २२८ ॥

जइलिंग मिच्छदिट्ठी, गेविज्जा जाव जंति उक्कोसं ॥
पयमवि असद्दहंतो, सुतत्थं मिच्छदिट्ठीओ ॥ २२९ ॥

अर्थ—(जइलिंग मिच्छदिट्ठी) के० साधुना वेषने धारण करनारो मिथ्यादृष्टि जीव क्रियाना बलेकरी अंगारमर्दकाचार्यनी पेठे (उक्कोसं) के० उत्कृष्टथी (गेविज्जा जाव जंति) के० नवग्रैवेयक सुधी उत्पन्न थाय. वली ते मिथ्यादृष्टि कोने कहेवाय ?

तो के जे (सुतत्थं) के० सूत्र तथा अर्थना (पयमवि) के० एक पदने पण (असद्दहंतो) के० सद्दहे नहीं तो ते (मिच्छदिट्ठीओ) के० मिथ्या दृष्टि जाणवो. ॥ २२९ ॥ अहिं सूत्रनुं लक्षण कहे छे.

सुत्त गणहररइयं, तहेव पत्तेयबुद्धरइयं च ॥
सुयकेवलिणा रइयं, अभिन्नदसपुविणा रइयं ॥२३०॥

अर्थ—(गणहररइयं) के० सौधर्म स्वामी प्रमुख गणधरनां रचेलां आचारांगादिक, (तहेव) के० तेमज (पत्तेयबुद्धरइयं) के० नेमिराजा विगेरे प्रत्येक बुद्धना रचेला नेमिप्रव्रज्यादिक, वली (सुयकेवलिणारइयं) के० चउद पूर्वधर श्रुतकेवली शय्यंभवसूरि प्रमुखनां रचेलां दश वैकालिकादिक, अने (अभिन्नदसपुविणा रइयं) के० संपूर्ण दश पूर्वधरनां रचेलां ग्रंथो ते सर्व (सुत्तं) के० सूत्र कहेवाय ॥ २३० ॥

अत्थं भासइ अरिहा, सुत्तं गुत्थंति गणहरा निउणा ॥
सासणस्स हियट्ठाए, तओ सुत्तं पवत्तइ ॥ २३१ ॥

अर्थ—(अरिहा) के० अरिहंत प्रभु (अत्थं) के० अर्थने कहे. ते उपरथी (निउणा) के० चतुर एवा (गणहरा) के० गणधरो (सुत्तं) के० सूत्रने (गुत्थंति) के० गुंथे छे. (तओ) के० त्यार पछी (सासणस्स हियट्ठाए) के० शासन हितार्थे (सुत्तं पवत्तइ) के० सूत्र प्रवर्त्ते ॥ २३१ ॥

पयमक्खरंपि एगं, जो नवि रोएइ सुत्तनिद्दिट्ठं ॥
सेसं रोयइ अ बहु, मिच्छादिट्ठी मुणेयव्वो ॥२३२॥

अर्थ—जो के० जेने (सुत्तनिद्दिट्ठं) के० सूत्रमां कहेलुं

(पयमक्खरंपि एगं) के० एक पद अथवा एक अक्षर (नरोएइ) के० न रुचे. (अ) के० अने (सेसं) के० ते सिवायनुं बीजुं (बहु रोयइ) के० बहु रुचे. ते (मिच्छादिट्ठि) के० मिथ्या दृष्टि जीव (मुणेयव्वो) के० जाणवो. ॥ २३२ ॥

छउमत्थसंजयाणं, उववाओ उक्कोस सव्वट्ठे ॥
तेसिं सड्ढाणंपि य, जहन्नओ होइ सोहम्मे ॥ २३३ ॥

अर्थ—(छउमत्थसंजयाणं) के० छद्मस्थसाधुओनुं (उववाओ) के० उपजवुं (उक्कोस) के० उत्कृष्टथी (सव्वट्ठे) के० सर्वार्थसिद्ध विमान सुधी होय छे. अने (तेसिं) के० ते साधुओनुं तथा (सड्ढाणंपिय) के० श्रावकनुं (जहन्नओ) के० जघन्यथी (सोहम्मे) के० सौधर्म देवलोकने विषे उपजवुं (होइ) के० होय छे. ॥ २३३ ॥

लंतंमि चउदपुव्विस्स, तावसमाईण वंतरेसु तहा ॥
एसो उववायविहि,नियकिरियठियाण सव्वोवि ॥२३४॥

अर्थ—(चउदपुव्विस्स) के० चउद पूर्वधर साधुनुं (लंतंमि) के० लांतक देवलोक सुधी उपजवुं होय. (तहा) के० तेमज (तावसमाईण) के० तापस सन्यासी शाक्यादिकनुं जघन्यथी (वंतरेसु) के० व्यंतर देवलोकने विषे उपजवुं होय. (एसो) के० आ पूर्वे कहेलो (सव्वोवि) के० सर्व पण (उववायविहि) के० उपजवानो विधि ते (नियकिरियठियाण) के० पोतपोतानी क्रियाने विषे सावधान रहेलानो जाणवो अने महापना सूत्रमां तो तापसने जघन्यथी भवनपतिमां उपजवुं कर्युं छे. ॥ २३४ ॥

अणुवय महव्वएहि य, बालतवाकामनिज्जराए य ॥
देवाउयं निबंधइ, सम्मदिट्ठी य जो जीवो ॥ २३५ ॥

अर्थ—(अणुव्रय महव्वएहि य) के० अणुव्रत अथवा महाव्रतने पालनारो, (बालतवाकामनिज्जराए य) के० बालतप तथा अकाम निर्जरानो करनार, एवो (जो) के० जे (सम्मद्दिट्ठी य) जीवो के० सम्यक् दृष्टि जीव छे ते (देवाउयं निबंधइ) के० देवतानुं आयुष्य बांधे छे. ॥ २३३ ॥ उक्तम् ॥

नाणस्स केवलीणं, धम्मायरियस्स सव्वसाहूणं ॥
माई अवण्णवाई, किब्बिसियभावणं कुणइ ॥ २३६ ॥

अर्थ—(नाणस्स) के० ज्ञानना, (केवलीणं) के० केवलीनां, (धम्मायरियस्स) के० धर्माचार्यना अने (सव्वसाहूणं) के० सर्व साधुना (अवण्णवाई) के० अवर्णवादने बोलनारो अने (माई) के० कपट करनारो जीव (किब्बिसियभावणं) के० किल्बीषिक एटले पापी भावनाने (कुणइ) के० करे छे, एटले किल्बिषिक देवपणे उत्पन्न थाय छे. ॥ २३६ ॥

कोऊय भूइकम्मे, पसिणापसिणे निमित्तमाजीवे ॥
इड्ढिरससायगरुओ, अभिओगं भावणं कुणई ॥२३७॥

अर्थ—(कोउयभूइकम्मे) के० कौतुक अथवा स्नानादिक भूतिकर्म करनार, (पसिणापसिणे) के० प्रश्नथी निमित्त कहेनार, अथवा प्रश्न विना निमित्त कहेनार, (निमित्तमाजीवे) के० निमित्तियाना कर्मथी आजीविका करनार, तेमज (इड्ढिरससायगरुओ) के० ऋद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव करनारो जीव (अभिओगं भावणं) के० अभियोगिक भावनाने (कुणइ) के० करे छे. एटले सेवक देवपणे उत्पन्न थाय छे. ॥ २३७ ॥

हवे अभियोगिक भावनानुं स्वरूप कहे छे.

दुविहो खलु अभिओगो, दव्वे भावे य होइ नायव्वो॥
दव्वंमि होइ जोगा, विज्जा मंता य भावंमि ॥२३८॥

अर्थ—[अभिओगो] के० अभियोग (दुविहो) के० बे प्रकारनो छे. (खलु) के० निश्चे, ते (दव्वे भावे) के० द्रव्य अभियोग अने भाव अभियोग (नायव्वो) के० जाणवा योग्य [होइ] के० होय छे. तेमां (दव्वंमि) के० द्रव्य अभियोगने विषे (जोगा होइ) के० मनादि निमित्त जोग होय छे (य) के० अने (भावंमि) के० भाव अभियोगने विषे (विज्जा मंता) के० आगमादि विद्या अने मंत्रो होय छे. ॥ २३८ ॥

हवे संघयणना विशेषपणाथी देवतानी गति विशेष होय छे, माटे संघयणनुं स्वरूप कहे छे.

वज्जरिसहनारायं, पढमं बीयं च रिसहनारायं ॥
नारायमद्धनाराय–कीलिआ तहय छेवट्ठं ॥ २३९॥
एए छ संघयणा, रिसहो पट्टो य कीलिया वज्जं ॥
उभओ मक्कडबंधो, नाराओ होइ विन्नेओ ॥२४०॥

अर्थ—जे शरीरनां हाडकानो अति मजबुत बंध ते संघयण कहेवाय. तेना छ भेद छे, (पढमं) के० पहेलो (वज्जरिसहनारायं) के० वज्रऋषभ नाराच १, (बीयं) के० बीजो (रिसहनारायं) के० ऋषभ नाराच २, त्रीजो (नारायं) के० नाराच ३, चोथो (अद्धनाराय) के० अर्द्ध नाराच ४, पांचमो (कीलिया) के० कीलिका ५, (तहयं) के० तेमज छट्ठा (छेवट्ठं) के० सेवार्त ॥ ६ ॥ २३९ ॥ (एए) के० ए पूर्वे कहेला (छ संघयणा) के०

छ संघयण जाणवा. तेमां (रिसहो) के० ऋषभ ते (पट्टो) के० पाटो जाणवा. (य) के० अने (कीलिया) के० खीलो ते (वज्ज) के० वज्र कहेवाय. तथा (उभओ मक्कडबंधो) के० बन्ने बाजुए मर्कटबंध एटले हाडकाना मर्कटाकारे बंध (नाराओ) के० ते नाराच (विन्नेओ) के० जाणवा योग्य (होइ) के० होय छे. ॥ २४० ॥

कीलिका रहित ते बीजो ऋषभनाराच, फक्त मर्कटबंध ते त्रीजो नाराच, एक बाजुए मर्कटबंध अने एक बाजुए कीलिका ते अर्द्ध नाराच. जेमां हाडकानो सबंध एकली खीली सरखा ते कीलिका, अने जेमां बे हाडकाना छेडा परस्पर फक्त अडेला पण खीली विगेरे कांइ न होय ते सेवार्त अथवा छेवटुं संघयण जैन शास्त्रमां कयुं छे.

हवे कया जीवोने केटला संघयण होय ? ते कहे छे.

छ गब्भ तिरि नराणं, समुच्छिमपणिंदि विगल छेवट्ठं ॥
सुरनेरइया एगिं-दिया य सव्वे असंघयणा ॥ २४१ ॥

अर्थ—(गब्भतिरि नराणं) के० गर्भज तिर्यंच तथा मनुष्यने (छ) के० छ संघयण होय. वळी (समुच्छिमपणिंदि) के० समूर्च्छिम पंचेंद्रि तिर्यंच, तथा समूर्च्छिम मनुष्य अने (विगल के० बेइंद्रिय तेंद्रिय तथा चउरिन्द्रियरूप विकलेंद्रियने एक (छेवट्ठं) के० सेवार्त नामे छेवटुं संघयण होय. वळी (सुर) के० देवता, (नेरइया) के० नारकी अने (सव्वे एगिंदिया) के० सर्वे एकेंद्रिय जीवो (असंघयणा) के० संघयण रहित होय छे, कारण हाडकानी रचना ते संघयण कहेवाय. ते देवता नारकी तथा एकेंद्रियमां नथी.

तो पण देवतामां अस्थिरूप संघयण विना जे शक्ति छे तेने पण उपचारथी संघयण कहेवाय. कारण देवतामां पण चक्रवर्तीथी पण अधिक शक्ति होय छे, तेथी देवतामां वज्रऋषभनाराच संघयण होय छे तेमज अल्पशक्ति एकेंद्रियमां पण होय छे, तेथी एकेंद्रियने छेवट्ठुं संघयण कहेवाय. परंतु मूल भांगे तो देवतामां संघयण नथी ॥ २४१ ॥

हवे संघयणथकी गति कहे छे.

छेवट्ठेण उ गम्मइ, चउरो जा कप्प कीलियाइसु ॥
चउसु दुदुकप्प वुड्ढी, पढमेणं जाव सिद्धीवि ॥ २४२ ॥

अर्थ—(छेवट्ठेण) के० छेवट्ठे संघयणे करी अध्यवसायना विशेषपणायकी जीव (चउरो जाकप्प) के० भुवनपति व्यंतर ज्योतिषी अने वैमानिकना चोथा देवलोक सुधी (उ गम्मइ) के० जाय छे. त्यार पछी (कीलियाइसु चउसु) के० किलिकादिक चार संघयणने पाछलथी गणतां चारे संघयणे करी (दुदुकप्पवुड्ढी) के० बे बे देवलोकनी वधती वधती उपजे. ते आ प्रमाणे—कीलिका संघयणवालो जीव पांचमा तथा छठ्ठा देवलोक सुधी जाय, अर्द्धनाराच संघयणवालो शुक्र अने सहस्रार देवलोक सुधी जाय. नाराच संघयणवालो जीव आनत अने प्राणत देवलोक सुधी जाय. ऋषभनाराच संघयणवालो जीव आरण अने अच्युत देवलोक सुधी जाय, अने (पढमेणं) के० वज्रऋषभनाराच संघयणवालो जीव (जावसिद्धीवि)के० भुवनपतिथी आरम्भी मोक्ष सुधी जाय ॥२४२॥

हवे शरीरनी आकृतिने संस्थान कहेवाय छे. ते संस्थान छ प्रकारना छे. तेनां नाम तथा लक्षण कहे छे.

समचउरंस नग्गोह, साई वामण य खुज्ज हुंडे य ॥
जीवाण छ संठाणा, सवत्थ सुलक्खणं पढमं ॥२४३॥
नाहीए उवरि बीयं, तइयमहो पिट्ठि उयर उरवज्जं ॥
सिरगीव पाणि पाए, सुलक्खणं तं चउत्थं तु ॥२४४॥
विवरीयं पंचमगं, सवत्थ अलक्खणं भवे छट्ठं ॥
गब्भयनरतिरिय छहा,सुरा समा हुंडया सेसा ॥२४५॥

अर्थ—१ (समचउरंस) के० समचतुरस्र, २ (नग्गोह) के० न्यग्रोधपरिमण्डल, ३ (साइ) के० सादि, ४ (वामण) के० वामन ५ (खुज्ज) के० कुब्ज, ६ (हुंडे य) के० हुंडक. ए (जीवाण) के० जीवोना (छ संठाणा) के० छ संस्थान जाणवा. तेमां (सवत्थ) के० ए छ संस्थानमां (सुलक्खणं पढमं) के० सारा लक्षणवालुं पहेलुं संस्थान जाणवुं, पद्मासने बेसवाथी चारे बाजुए सरखी आकृतिवालुं होय ते पहेलुं समचतुरस्र संस्थान कहेवाय. ॥ २४३ ॥

जे वडवृक्षनी पेठे (नाहीए उवरि) के० नाभिनी उपर सारा लक्षणवालुं अने नीचे हीन होय ते (बीयं) के० बीजुं न्यग्रोधपरिमंडल संस्थान कहेवाय. (तइयं) के० त्रीजु सादि संस्थान ते (अहो) के० नाभिनी नीचे सारा लक्षणवालुं अने नाभिनी उपर हीन लक्षणवालुं जाणवुं. (पिट्ठि) के० पृष्ठ, (उयर) के० उदर अने (उरवज्जं) के० छाति तेने वर्जीने बाकीना (सिर) के० मस्तक, [गीव] के० कंठ, (पाणि) के० हाथ अने (पाए) के० पग एटला (सुलक्खणं) के० सारालक्षणवाला होय (तं) के० ते (चउत्थं) के० चोथुं वामन संस्थान जाणवुं. ॥ २४४ ॥

(विवरीयं) के० चोथा संस्थान थकी विपरीत लक्षणवालुं एटले पूठ उदर हृदय ए सारा लक्षणवाला अने मस्तक कंठ हाथ पग लक्षण हीन होय ते (पंचमगं) के० पांचमुं कुब्ज संस्थान जाणवुं अने सव्वत्थ के० सर्व प्रकारे (अलक्खणं) के० लक्षण रहित होय ते (छट्ठं भवे) के० छट्ठुं हुंडक संस्थान जाणवुं. (गब्भयनरतिरिय) के० गर्भज मनुष्य अने गर्भज तिर्यंच (छहा) के० छ संस्थानवाला होय छे. (सुरा समा) के० देवता समचतुरस्र संस्थानवाला होय छे, अने (सेसा) के० बाकीना जीवो (हुंडया) के० हुंडक संस्थानवाला होय छे ॥ २४५ ॥

हवे देवता चवीने कइ गतिमां उपजे ? ते आगति कहे छे.

जंति सुरा संखाउय, गब्भय पज्जत्त मणुयतिरिएसु ॥
पज्जत्तेसु य बायर, भूदगपत्तेयगवणेसु ॥ २४६ ॥

अर्थ—सामान्यथी चारे निकायना (सुरा) के० देवता चवीने युगलिया मनुष्य विना (संखाउय) के० संख्याता आयुष्यवाला (गब्भय) के० गर्भज अने (पज्जत्त) के० पर्याप्ता एवा (मणुयतिरिएसु) के० मनुष्य अने तिर्यंचने विषे तथा (पज्जत्तेसु) के० पर्याप्ता (बायर) के० बादर एवा (भूदगपत्तेयगवणेसु) के० पृथ्वीकाय अप्काय अने प्रत्येक वनस्पतिकायमां (जंति) के० जाय छे. अर्थात् ए पांच गतिमां उपजे. बीजी एके गतिमां उपजे नहीं. ॥ २४६ ॥

तत्थवि सणंकुमार-प्पभिइ एगिंदिएसु नो जंति ॥
आणयपमुहा चविउं, मणुएसु चेव गच्छंति ॥२४७॥

अर्थ—(तत्थवि) के० तेमां पण (सणंकुमारप्पभिइ) के०

सनत्कुमारथी आरंभी सहस्रार देवलोक सुधीना देवता चवीने (एगि दिएसु) के० एकेंद्रियने विषे (नो जंति) के० उपजे नहीं. वली (आणयपमुहा) के० आनत देवलोकथी आरंभी पांच अनुत्तर विमान सुधीना देवता (चविउं) के० चवीने (मणुएसु) के० संख्याता आयुष्यवाला पर्याप्ता मनुष्यमांहे (चेव) के० निश्चे [गच्छंति] के० जाय छे. ॥ २४७ ॥

हवे जे देवताने जेवी रीते देवांगना साथे संभोग छे अने जे देवताने सर्वथा संभोग नथी ते कहे छे.

दो कप्प कायसेवी, दो दो दो फरिसरूवसद्देहिं ॥
चउरो मणेणुवरिमा, अप्पवियारा अणंतसुहा ॥२४८॥

अर्थ—(दोकप्प कायसेवी) के० भुवनपति व्यंतर ज्योतषी तथा सौधर्म अने ईशान ए बे देवलोक सुधीना देवता अति उत्कट कामवेदनाथी मनुष्यनी पेठे विषय सुख भोगवे. ते उपरना (दो) के० सनत्कुमार तथा माहेंद्र देवलोकना देवता देवांगनानां (फरिस) के० स्तन भुज विगेरे अंगस्पर्शथी भोगसुख पामे छे. ते उपरना [दो] के० ब्रह्म अने लांतक देवलोकना देवता देवांगनानां (रूव) के० रूप देखीने विषय सुख पामे छे. ते उपरना (दो) के० शुक्र अने सहस्रार देवलोकना देवता देवांगनानां (सद्देहिं) के० गीतहास्य विलासादिना शब्द सांभलवाथी संभोग सुखनी तृप्ति पामे छे. ते उपरना (चउरो) के० आनतादि चार देवलोकना देवताओ (मणेण) के० मनमां देवांगनानुं स्मरण करवाथी तृप्ति पामे छे. तेथी (उवरिमा) के० उपरना एटले नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तरना देवताओ तो (अप्पवियारा) के० अल्पविकारीपणाने लीधे विषय सुखथी रहित होवाथी (अणंतसुहा) के० अनंत सुखवाला छे. ॥ २४८ ॥

कयुं छे के—

जं च कामसुहं लोए, जं च दिव्वं महासुहं ॥
वीयरायसुहस्सेय–णंतभागंपि नग्घइ ॥ २४९ ॥

अर्थ—(लोए) के० लोकमां (जं कामसुहं) के० जे कामसुख छे. (च) के० अने (जं) के० जे (दिव्वं महासुहं) के० देव संबंधी महासुख छे. ते सुख (वीयरायसुहस्सेय) के० वीतराग एटले रागद्वेष रहित एवा प्रभुना सुखना (णंतभागंपि) के० अनंता भागने पण (नग्घइ) के० पामता नथी. अर्थात् प्रभुने जे सुख छे तेना अनंतमा भागनुं सुख देवताने पण नथी ॥ २४९ ॥

हवे देवीओनी उत्पत्तिनुं स्थान कहे छे.

उववाओ देवीणं, कप्पदुगं जा परो सहस्सारा ॥
गमणागमणं नत्थी, अ्‌च्चुअपरओ सुराणंपि ॥ २५० ॥

अर्थ—(देवीणं) के० देवीओनुं (उववाओ) के० उपजवुं ते (कप्पदुगं जा) के० भुवनपतिथी आरंभी ईशान देवलोक सुधी छे. तेथी उपरना देवलोकमां देवीओनुं उपजवुं नथी. परन्तु देवताना उपभोग माटे सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी अपरिग्रहिता देवीओ उपरना देवलोकमां जाय ता (परो सहस्सारा) के० उपरना सहस्सार देवलोक सुधी जाय, त्यांथी उपरना देवलोकमां (गमणागमणं नत्थी) के० देवीओनुं जवुं आववुं नथी. अने (अच्चुअपरओ सुराणंपि) के० अच्युत देवलोकथी उपर तो देवताओनुं पण जवुं आववुं नथी. तेमज नव ग्रैवेयक तथा पांच अनुत्तर विमानवासी देवताओने तीने आववानु प्रयोजन नथी. तीर्थंकरना कल्याणिक अवसरे पण पोताना स्थानके रहा छता नमस्कारादिक करे छे.

कदापि कोइ संदेह थाय तो मन वर्गणाथी प्रश्न करे. केवली केवलज्ञानथी जाणी तेनो उत्तर आपे-तेने ते देवता अवधिज्ञानथी जाणे परन्तु अंहि आवे नही ॥ २५० ॥

हवे किल्बिषिया देवोनां स्थानक कहेछे.

तिपलिय तिसार तेरस,सारा कप्पदुग तइय लंत अहो॥
किव्बिसि न हुंति उवरिं,अच्चुअ परओऽभिआगाई॥२५१॥

अर्थ—देवताओमां पण अशुभ कर्मना उदयथी चंडाल सरखा किल्बिषिया देवता थाय छे. ते (कप्पदुग) के० पहेला बे देवलोकना नलीये (तिपलिय) के० त्रण पल्योपमना आयुष्यवाला वसे छे. तेमज (तइय) के० त्रीजा सनत्कुमारना नलिये [तिसार] के० त्रण सागरोपमना आयुष्ये वसे छे. वली (तेरस सारा) के० तेर सागरोपमना आयुष्यवाला (लंत अहो) के० लांतक देवलोकनी नीचे वसे छे. (उवरिं) के० लांतक देवलोकथी उपरना देवलोकमां (किव्बिसि) के० किल्बिषिया देवता (न हुंति) के० नथी. वली (अच्चुअपरओ) के० बारमा अच्युत देवलोकथी उपरना देवलोकमां (अभिओगाइ) के० अभियोगिक तथा सामानिकादि देवो नथी. कारण ग्रैवेयक तथा अनुत्तरमां वसनारा सर्व देवो स्वयंव इंद्र सरखा छे ॥ २५१ ॥

हवे सौधर्म तथा ईशान देवलोकमां अपरिग्रहिता देवीओना विमाननी संख्या, तथा देवीओनुं आयुष्य, अने कया विमान वासी देवताओने कइ देवीओ भोग योग्य छे ? ते कहे छे.

अपरिग्गहदेवीणं, विमाण लक्खा छ हुंति सोहम्मे ॥
पलियाई समयाहिय,ठिइ जासिं जाव दसपलिया ॥२५२॥

ताओ सणंकुमारा–नेवं वड्ढंति पलियदमगेहिं ॥
जा बंभ सुक्क आणय, आरण देवाण पन्नासा ॥२५३॥
ईसाणे चउ लक्खा,साहिय पलियाइ समय अहिअ ठिइ॥
जा पनर पलिय जासिं, ताओ माहिंद देवाणं॥२५४॥
एएण कमेण भवे, समयाहिय पलिय दसगवुड्ढीए ॥
लंतसहसारपाणय, अच्चुअ देवाण पणपन्ना ॥२५५॥

अर्थ—(सोहम्मे) के० सौधर्म देवलोकने विषे [अपरिग्गह देवीणं] के० अपरिग्रहिता देवीओना (विमाण) के० विमान ते (छ लक्खा) के० छ लाख (हुंति) के० छे. तेमां जे देवीओनुं एक पल्योपमनुं पूर्ण आयुष्य छे. ते देवीओ सौधर्म देवलोकवासी देवताने भोग योग्य जाणवी. अने (जासिं) के० जे देवीओनुं (ठिइ) के० आयुष्य (पलियाई समयाहिय) के० एक पल्योपमथी आरंभी समय समय अधिक वधतां (जाव दसपलिया) के० दश पल्योपमनुं आयुष्य होय ॥ २५२ ॥ (ताओ) के० ते देवीओ (सणंकुमारा) के० सनत्कुमार देवताने भोग योग्य जाणवी, पण उपरना देवताने (न) के० भोग योग्य नथी. (एवं) के० एवी एज प्रमाणे (पलियदसगेहिं) के० दश पल्योपमथी एक एक समय (वड्ढंति) के० वधारतां (जा) के० जेटलामां वीशपल्योपमनुं आयुष्य पूर्ण थाय तेटला आयुष्यवाली देवीओ (बंभ) के० ब्रह्मदेव लोकना देवताने भोग योग्य जाणवी. त्यार पछी समय समय वधारतां त्रीशपल्योपम थाय तेटला आयुष्यवाली देवीओ (शुक्र) के०शुक्र देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी. त्यार पछी समय समय वधारतां ज्यांसुधीमां चालीश पल्योपम थाय. तेटला आयुष्य

वाली देवीओ (आणय) के० आनत देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी. त्यार पछी समय समय वधारता जेटलामां (पन्नासा) के० पचास पल्योपम थाय तेटला आयुष्यवाली देवीओ (आरण देवाण) के० आरण देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी ॥ २५३ ॥ (ईसाणे) के० ईशान देवलोकमां अपरिग्रहिता देवीओना (चउ लक्खा) के० चार लाख विमान छे. तेमां (साहिय पलियाइ) के० जे देवीओनुं साधिक एक पल्योपमनुं आयुष्य छे ते ईशान देवलोकना देवतानेज भोग योग्य जाणवी. त्यार पछी (समय अहिय) के० समय समय अधिक वधारतां (जामि) के० जे देवीओनुं (आ पनर पल्लिय ठ्रिइ) के० ज्यां सुधी पनर पल्योपमनी आयुष्य स्थिति थाय, (ताओ) के० तेटला आयुष्यवाली देवीओ (माहिंद देवाणं) के० माहेंद्र देवलोकना देवताओने भोग योग्य जाणवी ॥ २५४ ॥ (एएण कमेण) के० ए अनुक्रमे करीने (समयाहियपलियदसगवुड्ढीए) के० एक एक समयथी आरंभीने दश दश पल्योपमनी वृद्धि (भवे) के० होय. जेथी पचीस पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ (लंत) के० लांतक देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी. पांत्रीश पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ (सहस्सार) के० सहस्रार देवलोकना देवताओने भोग योग्य जाणवी. पीस्तालीश पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ (पाणय) के० प्राणत देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी. अने (पणपन्ना) के० पंचावन पल्योपम सुधीना आयुष्यवाली देवीओ (अच्चुअदेवाण) के० अच्युत देवलोकना देवताने भोग योग्य जाणवी. ॥ २५५ ॥

हवे छ लेश्यानुं स्वरूप तथा देवताने केटली लेश्या होय ते कहे छे.

पंथाओ परिभट्ठा, छ प्पुरिसा अडविमज्झयारंमि ॥
जंबूतरुस्स हिट्ठा. परोपरं ते विचिंतंति ॥ २५६ ॥

अर्थ—(पंथाओ) के० मार्गथी (परिभट्ठा) के० भूला प-ड्या (छ प्पुरिसा) के० छ पुरुषो (अडविमज्झयारंमि) के० अरण्यना मध्ये (जंबूतरुस्स हिट्ठा) के० जंबुवृक्षनी नीचे उभा रह्या अने (ते) के० ते पुरुषो (परोपरं) के० परस्पर (विचिंतंति) के० विचार करवा लाग्या. ॥ २५६ ॥

निम्मूलखंधसाली–गुच्छेपक्केपडियसडियाइं ॥
जह एएसिं भावा, तह लेसाओ नायव्वा ॥ २५७ ॥

अर्थ—तेमां एक पुरुष जांबुनां फळनी इच्छाथी जांबुना वृक्षने (निम्मूल) के० मूळमांथी उखाडी नाखवानो विचार करवा लाग्यो, बीजो पुरुष (खंध) के० थडने तोडी पाडवानी इच्छा करवा लाग्यो, त्रीजो पुरुष (साली) के० मोटी डाळीने छेदी नाखवानी इच्छा करवा लाग्यो, चोथो पुरुष (गुच्छे) के० काचा पाका फळ लागेला गुच्छाने छेदवानो विचार करवा लाग्यो, पांचमो पुरुष वृक्ष उपर लागेला (पक्के) के० पाकां फळोनेज तोडवानी इच्छा करवा लाग्यो, अने छठ्ठो पुरुष तो (पडिय सडियाइं) के० नीचे खरी पडेलां फळोने लेवानी इच्छा करवा लाग्यो. (जह) के० जेवी रीते (एएसिं) के० ए छ पुरुषना (भावा) के० कषाय भावो थया. (तह) के० तेवा (लेसाओ) के० छ लेश्याना भावो (नायव्वा) के० जाणवा ॥ २५७ ॥

णिद्धजिमुतवण्णाभा, गवलयरीट्ठ समप्पभा ॥
खंजण वण्ण संकासा,लेसाओ कण्ह वण्णओ॥२५८॥

अर्थ—(णिद्धजिमुतवण्णाभा) के० स्निग्ध मेघसमान वर्णवाली, (गवलरीट्ठसमप्पभा) के० भेंसना शींग अथवा अरिष्टरत्नना समान कांतिवाली, (खंजण वण्ण संकासा) के० गाडाना पैडानी मेसना वर्ण सरखी (कण्हवण्णओ) के० कृष्णवर्णनी पहेली (लेसाओ) के० कृष्ण लेश्या जाणवी ॥ २५८ ॥

पलवासोय संकासा, चासपिच्छसमप्पभा ॥
वेरुलीयरयणाभा, वण्णाओ, नीललेसाओ ॥ २५९ ॥

अर्थ—(पल्लवासोयसंकासा) के० अशोक वृक्षना पल्लव समान कांतिवाली. (चासपिच्छसमप्पभा) के० चास पक्षीना पीच्छाना समान वर्णवाली, अने (वेरुलीयरयणाभा) के० वडुर्यरत्नना समान कांतिवाली वर्णथी नीललेसाओ के० बीजी नील लेश्या जाणवी ॥ २५९ ॥

अलसीकुसुमाइवण्णाभा,जारिसीकोइलनलपीच्छच्छदा॥
पारावयगीवसमा, वण्णाओ काउलेसाओ ॥ २६० ॥

अर्थ—(अलसीकुसुमाइ वण्णाभा) के० अलसी पुष्प विगेरेना सरखी कांतिवाली, (जारिसीकोइलतुलपीच्छच्छदा) के० जरसी अथवा कोयलना पीच्छना समान वर्णवाली. वली (पारावयगीवसमा) के० पारेवाना कंठ समान कांतिवाली वण्णाओ के० वर्णथी (काउलेसाओ) के० त्रीजी कापोत लेश्या जाणवी॥२६०॥

तेउलेसा भवे वण्णा, हिंगुलरागसन्निभा ॥
तरुणाइच्चसमा कंती, दीवसमा होइ सुअतुंडा ॥ २६१ ॥

अर्थ—(हिंगुलरागसन्निभा) के० हिंगलाना रंग सरखी, (तरुणाइच्च समाकंति) के० उगता सूर्यना सरखी कांतिवाली, (दीव-

समा) के० दीवा सरखी, (सुभतुंडा) के० पोपटनी चांच समान (वण्णा) के० वर्णथी (तेउलेसा) के० चोथी तेजो लेश्या (भवे) के० श्रेष्ठ (होइ) के० होय छे. ॥ २६१ ॥

हरियालमज्झरागा, हरिद्दायसमप्पभा ॥
सणासण कुसुम समा, वण्णाओ पम्हलेसाओ ॥२६२॥

अर्थ—(हरियाल मज्झरागा) के० हरतालना मध्यरंग समान, (हरिद्दाय समप्पभा) के० हलदरना रंग समान कांतिवाली, (सणासण कुसुम समा) के० सरगवाना फुल समान (वण्णाओ) के० वर्णथी पांचमी (पम्हलेसाओ) के० पद्मलेश्या जाणवी ॥ २६२ ॥

सुक्कलेसा भवे वण्णा, संखकुंदसमप्पभा ॥
खीरवरदुधधवला, मुत्ताहलहाररययसमा ॥ २६३ ॥

अर्थ—(संखकुन्दसमप्पभा) के० शंख अथवा मोगराना पुष्प समान उज्ज्वल, (खीरवरदुधधवला) के० क्षीर समुद्रना दुध समान उज्ज्वल, तथा (मुत्ताहलहाररययसमा) के० मुक्ताफलना हार अथवा रूप्य समान (वण्णा) के० वर्णथी (सुक्कलेसा) के० छठी शुक्ललेश्या (भवे) के० होय छे. ॥ २६३ ॥

जह कडुओ तुंबरसो, निंबरसो कडुयरोहिणीयरसो ॥
एत्तोवि अणंतगुणो, रसो उ कण्हाए नायव्वो ॥२६४॥

अर्थ—(जह) के० जेवो (कडुओतुंबरसो) के० कडवी तुंबीनो रस होय, (निंबरसो) के० लींबडानो रस होय, (कडुयरोहिणी यरसो) के० कडवी गलोनो रस होय, (एत्तोवि) के० एनाथी पण (अणंतगुणो) के० अनंतगुणो (रसो) के० कडवो

रस (कन्हाए) के० कृष्ण लेश्यानो (नायव्वो) के० जाणवो ॥२६४॥

जह नियगडुस्स य रसो,तिक्खो जह हत्थिपीप्पलीए य ॥
एत्तोवि य णंतगुणो, रसो उ नीललेसाए ॥ २६५ ॥

अर्थ—(जह) के० जेवो (नियगडुस्स) रसो के० सुंठ पींपर अने मरीच त्रिकटुनो (तिक्खो) के० तीखो रस होय, (जह) के० जेवो (हत्थिपीप्पलीए) के० गजपीपरनो तीखो रस होय. (एत्तोवि) के० एथी पण (अणंतगुणो) के० अनंतगुणो (रसो) के० तीखो रस (नीललेस्साए) के० नीललेश्यानो जाणवो. ॥ २६५ ॥

जह तरुणचूयरसो, कविट्ठ कयस्स वावि जारिस रसो ॥
एत्तोवि अणंतगुणो,रसो य काओय लेसाओ ॥२६६॥

अर्थ—(जह) के० (तरुणचूयरसो) के० काचा आंबाना फळनो रस होय, (वावि) के० अथवा पण (कविट्ठ कयस्स) के० काचा कोठ फळनो (जारिस रसो) के० जेवो रस होय, (एत्तोवि) के० एनाथी पण (अणंतगुणो) के० अनंतगुणो (रसो) के० कसायलो रस (काओय लेसाओ) के० कापोतलेश्यानो जाणवो. ॥ २६६ ॥

जह परिणयअंबरसो, पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ॥
एत्तोवि अणंतगुणो, रसोय तेऊए नायव्वो ॥ २६७ ॥

अर्थ—(जह) के० जेवो (परिणय अंबरसो) के० पाकेला आंबाना फळनो रस होय, (वावि) के० अथवा (पक्ककविट्ठस्स) के० पाकेला को० फळनो (जारिसओ) के० जेवो रस होय.

(एत्तोवि) के० एनाथी पन अणंतगुणो के० अनंतगुणो रसो) के० मीठास (नेऊर) के० नेओ लेश्यानो (नायव्वो) के० जाणवो. ॥ २६७ ॥

पम्हाए एरिसरसो. वरवारुणि आसवाण जारिसओ ॥
महुमेरगस्सव रसो. तत्तोविय होइ णंतगुणो ॥२६८ ॥

अर्थ— पम्हाए के० पद्मलेश्यानो (एरिसरसो) के० एवो रस छे. केवो ? ते कहे छे. (वरवारुणि) के० श्रेष्ठ मदिरानो तथा (आसवान) के० विविध आसवोनो (जारिसओ) के० जेवो रस होय छे. वली (महुमेरगस्सव रसो) के० मद्य तथा मैरेयमदिरानो जेवो रस छे. (तत्तोविय) तेनाथी पन (णंतगुणो) के० अनंतगुणो (पद्मलेश्यानो रस होय) के० होयछे.॥२६८॥

खज्जूर मुद्दीयरसो. खीररसो खंडसक्कररसो वा ॥
एत्तोवि अणंतगुणो. रसो सुक्काओ नायव्वो ॥ २६९ ॥

अर्थ—जेवो (खज्जूरमुद्दीयरसो] के० खजूर अने द्राक्षनो रस होय, तेमज जेवो (खीररसो के० दुधनो रस होय, वा के० अथवा जेवो (खंडसक्कररसो) के० खांड अने साकरनो रस होय, (एत्तोवि) के० एनाथी पन (अणंतगुणो) के० अनंतगुणो (रसो) के० मीठो रस (सुक्काओ) के० शुक्ललेश्यानो (नायव्वो) के० जाणवो. ॥ २६९ ॥

हवे लेश्यानो स्पर्श केवो होय ? ते कहे छे.

जिम्हा न ला काऊनिन्निवि फासो य अप्पसत्थाओ ॥
गोजिम्भकरसय तओ.णंतगुणो होइ फासो य ॥२७०॥

अर्थ—(किन्हा नीला काऊ) के० कृष्णलेश्या, नील
अने कापोतलेश्या. (तिन्निवि फासोय) के० ए त्रणे ले
पण स्पर्श [अप्पसत्थाओ के० माठो जाणवो. जेवो (गोजिब्भ
वय) के० गायनी जिभ अने करवत, (तओ) के० तेथी (
तगुणो) के० अनंतगुणो (फासो) के० ए त्रणे लेश्यानो
[होइ] के० होय छे. ॥ २७० ॥

तेऊ पम्हा सुक्का पसत्थलेसाओ एरिसो फासो ॥
बुरनवणीयसिरीसो, णंतगुणो होइ तत्तोवि ॥ २७१

अर्थ—(तेऊ पम्हा सुक्का) के० तेजोलेश्या, पद्मलेश्या
शुक्ललेश्या, ए त्रण सारी लेश्या छे. तेनो (एरिसो फासो)
एवो स्पर्श होय छे. केवो होय छे ? तो के० (बुरनवणीय
के० बुरनामनी वनस्पति तथा माखण अने सिरीसना फुल
स्पर्श जे स्पर्श छे. (तत्तोवि) के० तेनाथी पण ए त्रण ले
अणंतगुणो के० अनंतगुणो श्रेष्ठ स्पर्श (होइ) के० छे. ॥२७

हवे देवताने कई कई लेश्या होय ? ते कहे गाथाथी कहे

किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्कलेसाओ ।
भवणवण पढमचउलेस, जोइसकप्पदुगे तेऊ ॥२७२
कप्पतिय पम्हलेसा, लंताइसु सुक्कलेस हुंति सुरा ॥

अर्थ—(किण्हा) के० कृष्णलेश्या, (नीला) के० नी
लेश्या, (काऊ) के० कापोतलेश्या, तेऊ के० तेजोलेश्
(पम्हा के० पद्मलेश्या, य के० अने सुक्का) के० शुक्ललेश्
ए छ (लेसाओ) के० लेश्या जाणवी. हवे क्या क्या देवता
कई कई जात ने लेश्या कहेला छे. तेना कृष्णलेश्या अने नी

लेश्या एवा बे भेद छे. आत्माने कृष्ण पीत विगेरे द्रव्यपुद्गल संयोग ते द्रव्यलेश्या. तथा शुभाशुभ परिणाम ते भावलेश्या. ए अधिकार आगल नारकीना अधिकारमां कहेशे. (भवणवण) के० भवनपति तथा व्यंतर देवताने (पढम चउलेस) के० पहेली चार एटले कृष्ण नील कापोत अने तेजो ए चार लेश्या होय छे. त्यां परमाधामीने एक कृष्णलेश्या होय छे. अने (जोइसकप्पदुगे) के० ज्योतषी तथा पहेला बे देवलोकने विषे (तेऊ) के० तेजोलेश्या होय छे. ॥ २७२ ॥ ते उपरना (कप्पतिय) के० सनत्कुमार माहेंद्र अने ब्रह्म ए त्रण देवलोकने विषे (पम्ह लेसा) के० एक पद्मलेश्या होय छे. तथा (लंताइसु) के० लांतक देवलोकथी आरंभी उपरना सर्व लोकने विषे (सुरा) के० देवता (सुक्कलेस) के० शुक्ललेश्यावाला (हुंति) के० होय छे.

भवनपति व्यंतर अने ज्योतषी देवोना शरीरनो वर्ण प्रथम देवोना अधिकारमां कह्यो छे. अहिं वैमानिक देवोना शरीरनो वर्ण अर्द्धी गाथाथी कहे छे.

कणगाभ पउमकेसर-वन्ना दुसुतिसु उवरि धवला ॥२७३॥

अर्थ—सौधर्म अने ईशान ए (दुसु) के० देवलोकमां देवतानां शरीर (कणगाभ) के० राता सुवर्ण समान कांतिवाला जाणवा. तथा सनत्कुमार माहेंद्र अने ब्रह्म ए (तिसु) के० त्रण देवलोकना देवतानां शरीर (पउमकेसर वन्ना) के० कमलना केसरना जेवा वर्णवाला जाणवा. अने (उवरि) के० ते उपरना सर्व देवलोकना देवतानां शरीर (धवला) के० उज्वल वर्णवाला जाणवा. ॥ २७३ ॥

हवे देवताना आहारनुं तथा श्वासोश्वासनुं स्वरूप कहे छे.

अर्थ—(किण्हा नीला काऊ) के० कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्या, (तिन्निवि फासोय) के० ए त्रणे लेश्यानो पण स्पर्श [अप्पसत्थाओ)के०माठो जाणवो. जेवो(गोजिब्भ काचय) के० गायनी जिभ अने करवत, (तओ) के० तेथी (अणंतगुणो) के० अनंतगुणो (फासो) के० ए त्रणे लेश्यानो स्पर्श [होइ] के० होय छे. ॥ २७० ॥

तेऊ पम्हा सुक्का पसत्थलेसाओ एरिसो फासो ॥
बुरनवणीयमिरीसो, णंतगुणो होइ तत्तोवि ॥ २७१ ॥

अर्थ—(तेऊ पम्हा सुक्का) के० तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या, ए त्रण सारी लेश्या छे. तेनो (एरिसो फासो) के० एवो स्पर्श होय छे. केवो होय छे ? तो के० (बुरनवणीयसमो) के० बूरनामनी वनस्पति तथा माखण अने सिरीषना फुल सरखो जे स्पर्श छे. (तत्तोवि) के० तेनाथी पण ए त्रण लेश्यानो (अणंतगुणो) के० अनंतगुणो श्रेष्ठ स्पर्श (होइ)के० छे. ॥२७१॥

हवे देवताने कइ कइ लेश्या होय ? ते दोढ गाथाथी कहे छे.

किण्णा नीला काऊ, तेऊ पम्हा य सुक्कलेसाओ ॥
भवणवण पढमचउलेस, जोइसकप्पदुगे तेऊ ॥२७२ ॥
कप्पतिय पम्हलेसा, लंताइसु सुक्कलेस हुंति सुरा ॥

अर्थ—(किण्हा) के० कृष्णलेश्या, (नीला) के० नीललेश्या, (काऊ) के० कापोतलेश्या, (तेऊ) के० तेजोलेश्या, (पम्हा) के० पद्मलेश्या, य के० अने (सुक्क) के० शुक्ललेश्या. ए छ (लेस्साओ) के० लेश्या जाणवी. नीर तथा कर्मनो जेम करी संबंध थाय ते लेश्या कहेवाय छे. तेना द्रव्यलेश्या अने भाव

रहित अने (निरुवकट्ठस्स) के० रोग रहित एवा (जंतुणो) के० प्राणीनो (एग उसासनिसासे) के० एक श्वासोश्वास (एसो) के० ए (पाणुत्ति वुच्चइ) कहेवाय छे. ॥ २७६ ॥

एगा कोडि सत्तसट्ठी, लक्खा सत्तहत्तरी सहस्सा य ॥
दोय सया सोलहिया, आवलिया इगमुहुत्तेण ॥२७७॥

अर्थ—(एगा कोडी) के० एक क्रोड, (सत्तसट्ठी लक्खा) के० सडसठ लाख (सत्तहत्तरी सहस्साय) के० सत्योतेर हजार, (दोय सया) के० अने (सोलहिया) के० शोल अधिक एवी (आवलिया) के० आवलिका (इगमुहुत्तेण) के० एक-मुहूर्तमां थाय छे. ॥ २७७ ॥

लवसत्तहत्तरीए, होइ मुहुत्तो इमंमि ऊसासा ॥
सगतीससयतिहुत्तर, तीसगुणा ते अहोरत्ते ॥ २७८ ॥

अर्थ—वसो पंचोतेरमी गाथामां ओगणपचास श्वासोश्वासे एक लव कह्यो छे तेवा (लवसत्तहत्तरीए) के० सत्योतेर लवे (मुहुत्तो होइ) के० एक मुहूर्त थाय छे. अने (इमंमि) के० एक मुहूर्तमां [सगतीससय तिहुत्तर] के० साडत्रीस सो अने तहोतेर (ऊसासा) के० श्वासोश्वास थाय. हवे त्रीस मुहूर्ते अहोरात्री थाय छे माटे साडत्रीस सो अने तहोतेरने (तीसगुणा) के० त्रीस-गुणा करीये त्यारे (अहोरत्ते) के० एक अहोरात्रमां (ते) के० ते श्वासोश्वास केटला थाय ! तो के- ॥ २७८ ॥

एगं च सयसहस्सं, ऊसासाणं तेर सहस्सा य ॥
नउयसएणं अहिया,दिवसनिसि हुंति विन्नेया॥२७९॥

दसवाससहस्साइं, जहन्नमाउं धरंति जे देवा ॥
तेसिं चउत्थाहारो, सत्तहिं थोवेहिं ऊसासो ॥ २७४ ॥

अर्थ—भवनपति तथा व्यंतर देवोमां (जे देवा) के० जे देवना (दसवाससहस्साई) के० दश हजार वर्षनुं (जहन्नमाउं) के० जघन्य आयुष्य (धरंति) के० धारण करे छे. (तेसिं) के० ते देवताने (चउत्थाहारो) के० चोथ पछी एटले एक अहोरात्रीने आंतरे आहारनी इच्छा होय. अने ते इच्छा मनोहर पुद्गलोथी पूर्ण करे. तथा तेमने (सत्तहिं) थोवेहिं) के० सात स्तोक करीने (ऊसासो) के० एक श्वासोश्वास होय. ॥ २७४ ॥

हवे पूर्वे कहेला स्तोकनुं प्रमाण कहे छे.

आहिवाहिविमुक्कस्स, नीसासूसास एगगो ॥
पाणु सत्त इमो थोवो, सोवि सत्तगुणो लवो ॥२७५॥

अर्थ—(आहि) के० आधि ते मननी पीडा अने (वाहि) के० व्याधि ते शरीरनी पीडा. ते बंने पीडाथी (विमुक्कस्स) के० मुक्त थयेला एवा पुरुषनो (एगगो) के० एक एवो (नीसासू-स्सास) के० श्वासोश्वास ते (पाणु) के० एक प्राण कहीये. अने (सत्त इमो) के० एवा सात प्राणे (थोवो) के० एक स्तोक कहीये. (सोवि सत्तगुणो) के० तेवा सात स्तोक (लवो) के० एक लव थाय ॥ २७५ ॥

हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स जंतुणो ॥
एगे ऊसासनिस्सासे, एसो पाणुत्ति वुच्चइ ॥ २७६ ॥

अर्थ—(हट्ठस्स) के० हृष्ट, (अणवगल्लस्स) के० रोग

रहित अने (निरुवकिट्ठस्स) के० रोग रहित एवा (जंतुणो) के० प्राणीनो (एग उसासनिसासे) के० एक श्वासोश्वास (एसो) के० ए (पाणुत्ति वुचइ) कहेवाय छे. ॥ २७६ ॥

एगा कोडि सत्तसट्ठी, लक्खा सतहत्तरी सहस्सा य ॥
दोय सया सोलहिया, आवलिया इगमुहुत्तेण ॥२७७॥

अर्थ—(एगा कोडी) के० एक क्रोड, (सत्तसट्ठी लक्खा) के० सडसठ लाख (सतहत्तरी सहस्साय) के० सत्योतेर हजार, (दोय सया) के० अने (सोलहिया) के० शोल अधिक एटली (आवलिया) के० आवलिका (इगमुहुत्तेण) के० एक-मुहूर्तमां थाय छे. ॥ २७७ ॥

लवसत्तहत्तरीए, होइ मुहुत्तो इमंमि ऊसासा ॥
सगतीससयतिहुत्तर, तीसगुणा ते अहोरत्ते ॥ २७८ ॥

अर्थ—वसो पंचोतेरमी गाथामां ओगणपचास श्वासोश्वासे एक लव कह्यो छे तेवा (लवसत्तहत्तरीए) के० सत्योतेर लवे (मुहुत्तो होइ) के० एक मुहूर्त थाय छे. अने (इमंमि) के० एक मुहूर्तमां (सगतीससय तिहुत्तर) के० साडत्रीस सो अने तहोतेर (ऊसासा) के० श्वासोश्वास थाय. एवे त्रीस मुहूर्ते अहोरात्री थाय छे माटे साडत्रीस सो अने तहोतेरने (तीसगुणा) के० त्रीस-गुणा करीये त्यारे (अहोरत्ते) के० एक अहोरात्रमां (ते) के० ते श्वासोश्वास केटला थाय ! तो के- ॥ २७८ ॥

एगं च सयसहस्सं, ऊसासाणं तेर सहस्सा य ॥
नउयसएणं अहिया, दिवससिसि हुंति विन्नेया ॥२७९॥

अर्थ—(एगं सयसहस्सं) के० एक लाख. (तेरसहस्सा) के तेर हजार (य) के० अने (नउयसएणं अहिया) के० सो नेवुं अधिक एटला (ऊसासाणं) के० श्वासोश्वासनी (दिवसनिसि) के० रात्रि अने दिवस मलीने (हुंति) के० छे, एम (विन्नेया) के० जाणवुं. ॥ २७९ ॥

मासेवि य ऊसासा, लक्खा तित्तीस सहस पणनउई ॥
सत्तसयाइं जाणह, कहियाइं पुव्वसूरीहिं ॥ २८० ॥

अर्थ—(य) के० वली (मासेवि) के० एक मासने विषे (ऊसासा) के० ते श्वासोश्वास (लक्खातित्तीस) के० तेत्रीस लाख (सहसपणनउइ) के० पंचाणुं हजार, अने (सत्त सयाइं) के० सात सो थाय. एम (पूव्वसूरिहिं) के० पूर्वना आचार्योए (कहियाइं) के० कर्युं छे. ते (जाणह) के० जाणवुं. ॥ २८० ॥

चत्तारी य कोडिओ, लक्खा सत्तेव हुंति नायव्वा ॥
अडयालीस सहस्सा, चारिसया एग वरिसेणं ॥२८१॥

अर्थ—(य के० वली (चत्तारी कोडिओ) के० चार क्रोड (लक्खा सत्तेव) के० सात लाख (अडयालीस सहस्सा) के० अडतालीस हजार अने (चारिसया) के० चार सो उपर एटला श्वासोश्वास (एग वरिसेणं) के० एक वर्षे (हुंति) के० थाय छे. एम (नायव्वा) के० जाणवुं. ॥ २८१ ॥

चत्तारी कोडिसया, कोडीओ सत्त लक्ख अडयाला ॥
चत्तालीस सहस्सा, वाससए हुंति नायव्वा ॥ २८२ ॥

अर्थ—(चत्तारी कोडि सया) के० चार सो क्रोड, (को-

दीओ सव) के० सात क्रोड, (लखाव अडयाला) के० अ
ताळीस लाख, (चत्ताळीस सहस्सा) के० चाळीस हजार एट
श्वासोश्वास (वाससए) के० सो वर्षे हुंति के० थाय छे. ते (
यवा) के० जाणवा. ॥ २८२ ॥

लक्खं तेर सहस्सा, नउयसयं अयरसंखयादेवे ॥
पक्खेहिं ऊसासो, वाससहस्सेहिं आहारो ॥ २८३ ॥

अर्थ—मनुष्यने एक अहोरात्रिमां (लक्खं) के० एक ल
(तेर सहस्सा) के० तेर हजार अने (नउयसयं) के० एक
नेवुं, एटला श्वासोश्वास होय, परंतु (देवे) के० देवताने
(अयरसंखया के० सागरोपमनी संख्याये करीने एटले जे देवत
जेटला सागरोपमनुं आयुष्य होय ते देवताने तेटला (पक्खेहिं के
पखवाडे करीने (ऊसासो) श्वासोश्वास होय छे. अने (वा
सहस्सेहिं) के० तेटला हजार वर्षे (आहारो) के० आहार हो
छे. दृष्टांत जेम सर्वार्थसिद्धिना देवताने तेत्रीश सागरोपमनुं आयु
छे तो तेमने तेत्रीश पखवाडीये एक श्वासोश्वास थाय अने तेत्री
हजार वर्षे आहारनी इच्छा थाय छे ॥ २८३ ॥

जे देवतानुं दस हजार वर्षथी उपर अने एक सागरोपम
कांइक ओछुं आयुष्य होय ते देवताना आहार अने श्वासोश्वास
व्याख्यान करे छे.

दसवास सहस्सुवरिं, समयाई जावसागरं ऊणं ॥
दिवस मुहुत्तपहुत्ता, आहारूसास सेसाणं ॥ २८४ ॥

अर्थ—जे देवतानुं (दसवास सहस्सुवरिं) के० दस हजा
वर्ष उपरांत (समयाई) के० एक समयथी मांडीने (जावसाग

उर्ग) के० यावत् एक सागरोपममां कांइक ओछुं आयुष्य होय देवताने (दिवस मुहुत्तपहुत्ता) के० दिवस पृथक्त्वे अने मुहूर्त्तपृथक्त्वे (आहारुसास) के० आहार अने श्वासोश्वास होय छे. भावार्थ ए छे के-दश हजार वर्षथी उपरांत एक समयादिकनी वृद्धि अनुक्रमे दिवस पृथक्त्वे आहार अने मुहूर्त पृथक्त्वे उश्वास ... जवुं ते त्यांसुधी ध्यारशुं के-ज्यांसुधी पूर्ण सागरोपमायु मध्ये उश्वास अने एक हजार वर्षथी आहार थाय. (सेसाणं) के० बीजा देवतानुं पण एज प्रमाणे जाणवुं. ॥ २८४ ॥

हवे आहारना त्रण भेद कहे छे.

सरिरेणोयाहारो, तयाय फासेण लोमआहारो ॥
पक्खेवाहारो पुण, कावलिओ होइ नायव्वो ॥२८५॥

अर्थ—(सरिरेण के० फक्त शरीरथी जे आहार थाय ते ओयाहारो के० ओजाहार कहेवाय. जोके शरीर तो पांच जातना छे तोपण जीव तैजस अने कार्मण शरीरे करी उत्पत्ति प्रदेशे आवीने पूर्वना शरीरने त्यजी दे. विग्रह अथवा अविग्रह गतिवाळो जीव प्रथम समये औदारिक शरीर योग्य पुद्गलाहार करे अने बीजा समयथी आरंभी कार्मण साथे ज्यांसुधी पूर्ण नीपजे त्यां औदारिक मिश्र आहार करे ते सर्व ओजसू केतां तैजस शरीर तेणे करी आहार करे ते प्रथम ओजाहार कहेवाय. (तयायफासेण) के० त्वचा एटले चामडी द्वारा स्पर्शेंद्रिये करीने करातो आहार जेमके शरीरे तेल चोपडवाथी चीकाश थाय, शरीरे पाणी छांटवाथी तृषा शांति थाय ते (लोम आहारो)के० लोमाहार कहेवाय. (पुण)के० वळी (पक्खेवाहारो) के० प्रक्षेपाहार ते (कावलिओ होइ)के०कोळीया मुखमां नाखवा रूप कवलाहार नायव्वो)के०जाणवो ॥२८५॥

तेज वात आ नीचेनी गाथाथी कहे छे.

जोएणकम्मएणं, आहारेई अणंतरं जीवो ॥
तेण परं मीसेणं, जाव सरीरस्स निप्पत्ति ॥ २८६ ॥

अर्थ जीव (कम्मएणं जोएण) के० कार्मण काययोग व (अणंतरं) के० प्रथम समये औदारिक शरीर योग्य पुद्गल (आहारेई) के० आहरे. (अणंतरं) के० त्यार पछी बीजे सम (तेण परं मीसणं) के० औदारिकनी साथे मिश्र एटले औद रिक मिश्रनो आहार करे, ते (जावसरीरस्स निप्पत्ति) के० ज्य सुधीमां शरीरनी पूर्ण प्राप्ती थाय त्यां सुधी औदारिकमिश्र आ हार करे २८६ ॥

हवे ते त्रणे आहार कइ कइ अवस्थामां होय ते कहे छे

ओयाहारा सव्वे, अपजत्त पजत्त लोमआहारो ॥
सुरनिरय इगिंदि विणा, सेस भवत्था सपक्खेवा ॥२८७

अर्थ-(सव्वे अपजत्त) के० सर्व एकेंद्रियथी आरंभी पंचे द्रिय सुधीना अपर्याप्ता जीवो (ओयाहारा) के० ओजाहार जाणवा. अने (पजत्त) के० पर्याप्ता जीवोने (लोमआहारो के० लोम आहार होय वली (सुरनिरयइगिंदि विणा) के देवना नारकी अने एकेन्द्रि ए त्रण विना (सेस) के० बाकीन (भवत्था) के० बेइंद्रि तेइंद्रि चउरेंद्रि पंचेंद्रि तिर्यंच अने मनुष्य सर्वे जीवो (सपक्खेवा) के० कवलाहारी पण जाणवा. ॥ २८७

सचित्ताचित्तोभय-रूवो आहार सव्वतिरियाणं ॥
सव्वनराणं च तहा, सुरनेरइयाण अचित्तो ॥ २८८ ॥

अर्थ-(सवतिरियाणं) के० सर्वे तिर्यंचने (सचित्ताचित्तो

ऊगं) के० यावत् एक सागरोपममां कांइक ओछुं आयुष्य ... देवताने (दिवस मुहुत्तपहुत्ता) के० दिवस पृथक्त्वे अने ... (आहारूसास) के० आहार अने श्वासोश्वास होय छे. ... वार्थ ए छे के-दश हजार वर्षथी उपरांत एक समयादिकनी ... अनुक्रमे दिवस पृथक्त्वे आहार अने मुहूर्त पृथक्त्वे उश्वास ... जवुं ते त्यांसुधी वधारवुं के-ज्यांसुधी पूर्ण सागरोपमायु ... उश्वास अने एक हजार वर्षथी आहार थाय. (सेसाणं) के० ... देवतानुं पण एज प्रमाणे जाणवुं. ॥ २८४ ॥

हवे आहारना त्रण भेद कहे छे.

सरिरेणोयाहारो, तयाय फासेण लोमआहारो ॥
पक्खेवाहारो पुण, कावलिओ होइ नायव्वो ॥२८५॥

अर्थ—(सरिरेण के० फक्त शरीरथी जे आहार थाय ते ओयाहारो के० ओजाहार कहेवाय. जोके शरीर तो पांच जातना छे तोपण जीव तेजस अने कार्मण शरीरे करी उत्पत्ति प्रदेशे आवीने पूर्वना शरीरने त्यजी दे. विग्रह अथवा अविग्रह गतिवालो जीव प्रथम समये औदारिक शरीर योग्य पुद्गलाहार करे अने बीजा समयथी आरंभी कार्मण साथे ज्यांसुधी पूर्ण नीपजे त्यां औदारिक मिश्र आहार करे ते सर्व ओजस् केतां तेजस् शरीर तेणे करी आहार करे ते प्रथम ओजाहार कहेवाय. (तयायफासेण) के० त्वचा एटले चामडी द्वारा स्पर्शेंद्रिये करीने करातो आहार जेमके शरीरे तेल चोपडाय चोकाश थाय, शरीरे पाणी छांटवाथी तृषा शांति थाय ते (लोम आहारो) के० लोमाहार कहेवाय. (पुण) के० वली (पक्खेवाहारो) के० प्रक्षेपाहार ते (कावलिओ होइ) के० कोलीया मुखमां नाखवा ते कवलाहार नायव्वो) के० जाणवो ॥२८५॥

हेत्र वात आ नीचेनी गाथाथी कहे छे.

जोएणकम्मएणं, आहारेई अणंतरं जीवो ॥
तेण परं मीसेणं, जाव सरीरस्स निप्पत्ति ॥ २८६ ॥

अर्थ-जीव (कम्मएणं जोएण) के० कार्मण काययोग वडे (अणंतरं) के० प्रथम समये औदारिक शरीर योग्य पुद्गलने (आहारेइ) के० आहरे. (अणंतरं) के० त्यार पछी बीजे समये (तेण परं मीसणं) के० औदारिकनी साथे मिश्र एटले औदारिक मिश्रनो आहार करे, ते (जावसरीरस्स निप्पत्ति) के० ज्यां सुधीमां शरीरनी पूर्ण प्राप्ती थाय त्यां सुधी औदारिकमिश्र आहार करे ॥ २८६ ॥

हवे ते त्रणे आहार कइ कइ अवस्थामां होय ते कहे छे

ओयाहारा सव्वे, अपजत्त पजत्त लोमआहारो ॥
सुरनिरय इगिंदि विणा, सेस भवत्था सपक्खेवा ॥२८७॥

अर्थ-(सव्वे अपजत्त) के० सर्वे एकेंद्रियथी आरंभी पंचेंद्रिय सुधीना अपर्याप्ता जीवो (ओयाहारा) के० ओजाहारी जाणवा. अने (पजत्त) के० पर्याप्ता जीवोने (लोमआहारो) के० लोम आहार होय वली (सुरनिरयइगिंदि विणा) के० देवता नारकी अने एकेन्द्रि ए त्रण विना (सेस) के० बाकीना (भवत्था) के० बेइंद्रि तेइंद्रि चउरेंद्रि पंचेंद्रि तिर्यंच अने मनुष्य ए सर्वे जीवो (सपक्खेवा) के० कवलाहारी पण जाणवा. ॥ २८७ ॥

सचित्ताचित्तोभय-रूवो आहार सव्वतिरियाणं ॥
सव्वनराणं च तहा, सुरनेरइयाण अचित्तो ॥ २८८ ॥

अर्थ-(सव्वतिरियाणं) के० सर्वे तिर्यंचने (सचित्ताचित्तो-

मयत्वो) के० सचित्त अचित्त अने सचित्ताचित्त एटले ,
एम त्रण प्रकारनो (आहार) के० आहार होय छे. (तह) के०
तेमज (सव्वनराणं) के० सर्व मनुष्योने पण त्रण प्रकारनो
होय छे. (च) के० अने (सुरनेरइयाण) के० देवता तथा ना-
रकीने (अचित्तो) के० अचित्त आहार होय छे. ॥ २८८ ॥

आभोगाणाभोगा, सव्वेसिं होइ लोमआहारो ॥
निरयाणं अमणुन्नो, परिणमइ सुराण समणुन्नो ॥२८९॥

अर्थ–जेम वर्षाकालमां शीतल पुद्गलनो स्पर्श थवाथी बहुमूत्र प्रसवे, तेम सर्व जीवोने अपर्याप्तावस्थामां तो अजाणपणे आहार परिणमे, परंतु पर्याप्तावस्थाये (सव्वेसिं) के० सर्व जीवोने कोइ वखते (लोमआहारो) के० लोमाहार (आभोग) के० जाणतां अने कोइ वखते (अणाभोग) के० अजाणतां (होइ) के० होय छे. तेमां एकेंद्रियने तथा संमूर्च्छिम मनुष्यने मनरहितपणाने लीधे सर्वथा अजाणतांज आहार परिणमे छे. वली (निरयाणं) के० नारकीने अशुभकर्मना उदयथी (अमणुन्नो) के० अमनोज्ञ एटले मनने सारो न लागे तेवो आहार (परिणमइ) के० परिणमे छे अने (सुराणं) के० देवताओने शुभकर्मोदयथी (समणुन्नो) के० मनोज्ञ एटले मनने सारो लागे तेवो आहार परिणमे छे. ॥ २८९ ॥

हवे नारकी तिर्यंच तथा मनुष्यने आहारनुं काल मान एटले अंतर कहे छे.

तह विगलनारयाणं, अंतमुहुत्तो स होइ उक्कोसो ॥
पंचिंदितिरिनराणं, साहाविय छट्ठ अट्ठमओ ॥ २९० ॥

अर्थ–(तह) के० तेमज (विगल) के० बेइंद्रि तेइंद्रि अने चउ-

रंद्रि तथा (नारयाणं) के० नारकी एनुं अंतर जीवोने एक वार आहार लीधा पछी (उक्कोसो (के० उत्कृष्टथी (अंतमुहुत्तो) के० एक अंतमुहूर्त गया पछी (स) के० आहारनी इच्छा (होइ) के० होय छे. पृथ्वीकायादि एकेंद्रिय जीवोने तो आहारनी इच्छा निरंतर सदा रहे छे. वली (पंचिंदितिरि) के० पंचेंद्रिय तिर्यचने (साहाविओ) के० स्वाभाविक एटले रोगादिकना कारण विना उत्कृष्टथी (छट्ठ) के० बे अहोरात्रिने अंतरे आहारनी इच्छा थाय अने (नराणं) के० मनुष्यने उत्कृष्टथी (अट्ठमओ) के० त्रण अहोरात्रिने अंतरे आहारनी इच्छा थाय. आ आहारनुं अंतर देवकुरु उत्तरकुरु भरत अने एरवतमां पण सुखमाकाले त्रण पल्योपमना आयुष्यवाला तिर्यच अने मनुष्य आश्री जाणवुं. ॥ २९० ॥

हवे आहारक तथा अनाहारक जीवो कया ? ते कहे छे.

विग्गहगइमावन्ना, केवलिणो समुहया अजोगी य ॥
सिद्धा य अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा ॥ २९१ ॥

अर्थ—जे जीवो समश्रेणीमूकीने विदिशाये उत्पन्न थाय ते (विग्गहगइमावन्ना) के० विग्रहगतिने पामेला जीवो चार समय सुधी, अनाहारी होय. आठ समय प्रमाण केवली समुद्घात छे. तेमां त्रीजे चोथे अने पांचमे समये केवल कार्मण काययोगी होय तेवा (केवलिणो समुहया) के० केवल समुद्घात करता केवली भगवंतो पण त्रण समय सुधी, तेमज (अजोगी य) के० शैलेसीकरण करतां अयोगी नामना चौदमे गुण ठाणे रहेला जीवो अंतर मुहूर्त सुधी, (य) के० अने (सिद्धा) के० आठ कर्मनो क्षय करी सिद्ध थयेला जीवो अनंत काल सुधी (अणाहारा) के० अनाहारक जाणवा. अने (सेसा) के० ते विना बीजा (जीवा)

के० जीवो (आहारगा) के० आहारक जाणवा. ॥ २९१ ॥

हवे देवताना स्वरूपनुं वर्णन करे छे.

केसट्ठि मंस नह रोम–रुहिर वस चम्म मुत्त पुरिसेहिं॥
रहिया निम्मलदेहा, सुगंधनिस्सास गयलेवा ॥२९२॥

अर्थ–सर्व देवता पूर्व भवमां करेलां शुभकर्मना उदयथी (केस) के० केश, (अट्ठि) के० हाडकां. (मंस) के० मांस, (नह) के० नख, (रोम) के० रुंवाडा, (रुहिर) के० रुधिर, (वस) के० चरबी, (चम्म) के० चामडी, (मुत्त) के० मूत्र अने (पुरिसेहिं) के० विष्टा. एटली वस्तुये करीने (रहिया) के० रहित. तथा (निम्मलदेहा) के० निर्मल शरीरवाला, (सुगंध निस्सास) के० कपूर तथा कस्तुरीना समान श्वासवाला अने (गयलेवा) के० रज परसेवादिकना लेपरहित होय छे. ॥ २९२ ॥

अंत मुहुत्तेणं चिय, पज्जत्ता तरुणपुरिससंकासा ॥
सव्वंगभूसण धरा, अजरा निरुया समा देवा ॥२९३॥

अर्थ–वली उत्पन्न थया पछी (अंतमुहुत्तेणं) के० एक अंतर मुहूर्तमां (चिय) के० निश्चे (पज्जत्ता) के० पूर्ण पर्याप्ति पामा थइने (तरुणपुरिससंकासा) के० युवान पुरुष सरखा, (सव्वंग भूसणधरा) के० सर्वांगे आभूषणने धारण करनारा, (अजरा) के० निरा . . (निरुया) के० रोगरहित, अने (समा) के० . . . वाला (देवा) के० देवता . . . छे. श्रीवीतरागभिन्नभूषणा . . . छे के देवता आभरण तथा वस . . . जाणवा. सर्वे . . . स्नान

करे, अलंकार सभाये अलंकार पहेरे, व्यवसाय सभाये पुस्तक वांची धार्मिक उपगरण लइ, पछी सुधर्मा सभाये सिद्धायतनने विषे जिनप्रतिमाने पूजे छे, माटे देवता उत्पत्तिसमयथी वस्त्राभूषण सहित होय छे. ॥ २९३ ॥

अणिमिसनयणा मण–कज्ज साहणा पुप्फदाम
अमिलाणा ॥
चउरंगुलेण भूमि,न छिवंति सुरा जिणा विंति ॥२९४॥

अर्थ–(अणिमिसनयणा) के० देवपणाना कारणे अनिमेष नेत्रवाला, (मणकज्जसाहणा) के० मनथी सर्व कार्यने करनारा. (पुप्फदामअमिलाणा) के० कंठमां सप्फुल्लित पुष्पमाला जेमनी करमाय नहि एवा देवता कोइ कारणे मनुष्य लोकमां आव्या छतां (चउरंगुलेण) के० चार अंगुलवडे (भूमि) के० पृथ्वीने (न छिवंति) के० स्पर्श करता नथी, अर्थात् पृथ्वीथी चार आंगुल उंचा उभा रहे छे एम (जिणा विंति) के० जिनेश्वर कहे छे. ॥ २९४ ॥

हवे देवता मनुष्यलोकमां कया कारणे आवे ते कहे छे.

पंचसु जिणकल्लाणेसु, चेव महरिसितवाणुभावाओ ॥
जम्मंतरनेहेण य, आगच्छंति सुरा इहयं ॥ २९५ ॥

अर्थ——(पंचसु जिणकल्लाणेसु) के० तीर्थंकरना जन्मादिक पांच कल्याणकने विषे, तथा (महरिसितवाणुभावाओ) के० महोटा ऋषिओना तपना प्रभावथी, (य) के० वली (जम्मंतर नेहेण) के० जन्मांतरना स्नेह करीने, (जेम स्नेहथी शालिभद्रना

पिता अथवा रीपथी संगम देवता आव्यो हतो तेम) एवा कारणथी (सुरा) के० देवता (इहयं) के० अहियां (आगच्छंति) के० आवे छे. ॥ २९५ ॥

देवता कारण विना मनुष्यलोकमां केम न आवे ? ते कहे छे.

संकंतदिव्वपेमा, विसयपसत्ता समत्तकत्तव्वा ॥
अणहीणमणुयकज्जा, नरभवमसुहं न इंति सुरा ॥२९६॥

अर्थ—उत्पन्न थया पछी तुरत देवांगनानो जेमना हृदयमां (संकंत दिव्व पेमा) के० दिव्यप्रेम प्रसरी रहेलो छे एवा, तथा (विसयपसत्ता) के० देवांगनानी साथे स्पर्श गीतादिक विषयमां आसक्त थयेला, वली (समत्तकत्तव्वा) के० जेमना स्नान वनविहार नाटक विलोकन विगेरे देवकार्य पूरा थया नथी एवा, अने (अणहीणमणुयकज्जा) के० देवताने मनुष्याधिन कांइ कार्य नथी एवा कारणने लीधे (सुरा) के० देवता (असुहं) के० दुर्गंधमय एवा (नरभवं) के० मनुष्यलोकने विषे (न इंति) के० आवता नथी ॥ २९६ ॥

चत्तारि पंच जोयण, सयाइ गंधो य मणुयलोगस्स ॥
उड्ढं वच्चइ जेणं, न हु देवा तेण आवंति ॥ २९७ ॥

अर्थ—जेणं के० जेकारणमाटे मणुयलोगस्स के० मनुष्यलोक संबंधी मृतकशरीर तथा मूत्र पुरिस विगेरेनो (गंधो य) के० दुर्गंध (चत्तारि पंच जोयण सयाइ) के० चारसो पांचसो योजन (उड्ढं वच्चइ) के० उंचे जाय छे (तेण) के० तेकारणमाटे (देवा) के० देवता (हु) के० निश्चे आ मनुष्य लोकमां (न आवंति) के० आवता नथी. २९७

हवे देवताने भवप्रत्ययिक अवधिज्ञाननुं क्षेत्र कहे छे.

दोकप्प पढमपुढविं, दो दो दो बीय तइयगं चउथिं ॥
चउ उवरिम ओहीए, पासंति पंचमं पुढविं ॥ २९८ ॥

अर्थ—(दोकप्प) के० पेहेल्ला बे देवलोकना उत्कृष्टआयुष्य-वाला देवता अवधिज्ञानथी (पढमपुढविं) के० पहेली नरकं पृथ्वी सुधी देखे छे. तेउपरना (दो) के० सनत्कुमार अने माहेंद्र देवलोकना उत्कृष्ट आयुष्यवाला देवता (बीय) के० बीजी शर्करप्रभासुधी देखे. ते उपरना ब्रह्म अने लांतक ए बे देवलोकना उत्कृष्ट आयुष्यवाला देवता (तइयगं) के० त्रीजी वालुकाप्रभासुधी देखे. ते उपरना शुक्र अने सहस्रार देवलोकना देवता (चउथिं) के० चोथी पंकप्रभासुधी देखे. तेना (उवरिम) के० उपरना (चउ) के० आनत प्राणत आरण अने अच्युत ए चार देवलोकना देवता (ओहिए) के० अवधिज्ञानथी (पंचमं पुढविं) के० पांचमी धूमप्रभा नरक पृथ्वी सुधी (पासंति) के० देखे छे. अहिं एटलुं विशेष के आनत प्राणतना देवताथी आरण अच्युत देवलोकना देवता पांचमी पृथ्वीना प्रतरे अतिविशुद्ध पर्यायवंत देखे. एवीरीते ज्यां ज्यां बे बे जोडला छे त्यां पहेलायकी बीजो सुविशेष देखे एम जाणवुं ॥ २९८ ॥

छट्ठिं छगेविज्जा, सत्तमिईयरे अणुत्तर सुरा उ ॥
किंचूणलोगनालिं, असंखदीवुदहि तिरियं तु ॥२९९॥

अर्थ—त्रण नीचेना अने त्रण मध्यना एम (छगेविज्जा) के० छ ग्रैवेयकना देवता अवधिज्ञानथी (छट्ठिं) के० छट्ठी तमःप्रभा सुधी देखे अने (ईयरे)के० उपरना त्रण ग्रैवेयकना देवता (सत्तमि)

के० सातमी नरकपृथ्वी सुधी देखे. (उ) के० वली (अनुत्तर सुरा) के० पांच अनुत्तर निवासी देवताओ (किंचूणलोगनालि) के० कांइक ऊणी पंचास्तिकायरूप चउदराजप्रमाण लोकनालने देखे अने उंचे पोताना विमाननी ध्वजा सुधी देखे. (तु) के० वली (तिरियं) के० तिर्छु (असंखदीवुदहि) के० असंख्याता द्वीप समुद्र सुधी देखे ॥ २९९ ॥

बहुययरं उवरिमगा, उड्ढं स विमाण चूलियधयाइं ॥
ऊणद्धसागरे संख–जोयणा तप्परमसंखा ॥ ३०० ॥

अर्थ—(उवरिमगा) के० उपर उपरना देवलोकना देवता तिर्छु (बहुययरं) के० असंख्याता असंख्याता मेदेकरी अधिकुं अधिकुं देखे. अने (उड्ढं) के० उचुं (सविमाण चूलियधयाइं) के० पोताना विमाननी चूलिकानी ध्वजा सुधी देखे. अथवा (ऊणद्धसागरे) के० अर्द्धसागरोपमथी ओछा उत्कृष्टा आयुष्यवाला देवता (संख जोयणा) के० तिर्छु संख्याता योजन सुधी देखे अने (तप्परं) के० अर्द्धा सागरोपमथी अधिक आयुष्यवाला देवता तिर्छु (असंखया)के० असंख्याता योजन सुधी देखे.॥३००॥

पणवीसं जोयण लहु,नारय भवण वण जोइ कप्पाणं ॥
गेविज्जणुत्तराण य, जहसंखं ओहि आगारा ॥३०१॥

अर्थ—दशहजार वर्षना आयुष्यवाला भुवनपति अने व्यंतर देवता (लहु) के० जघन्यथी (पणवीसं जोयण) के० पचीस योजन सुधी देखे. अहिं तात्पर्य ए छे के–एवो भुवनपति जघन्यथी तो पचीस योजन देखे अने उत्कृष्टथी असुर कुमार निकायना देवता असंख्याता द्वीपसमुद्र देखे तथा नव निकायना देवता संख्याता

योजनना अवधि क्षेत्रवाला होवाथी संख्याता द्वीपसमुद्र सुधी देखे. ज्योतषी देवता जघन्य अने उत्कृष्ट संख्याता योजनना अवधिक्षेत्र वाला होवाथी संख्याता द्वीपसमुद्र देखे, व्यंतरदेवता जघन्यथी पचीस योजन देखे अने उत्कृष्टथी संख्याता योजनना अवधिक्षेत्र-वाला होवाथी संख्याता द्वीपसमुद्र देखे.

हवे गाथाना पाछला त्रण पदोथी नारकी देवता तिर्यंच अने मनुष्यना अवधिज्ञाननुं संस्थान कहे छे.

१ (नारय) के० नारकी, २ (भवण) के० भवनपति, ३ (वण) के० व्यंतर, ४ (जोइ) के० ज्योतषी, ५ (कप्पाणं) के० बार देवलोक, ६ (गेविज्ज) के० नवग्रैवेयक, ७ (अणुत्तराणय) के० पांच अनुत्तर ए सातना (जहसंखं) के० यथासंख्याये करीने (ओहि आगारा) के० अवधिज्ञानना आकार एटले संस्थान कहे छे. ॥ २०१ ॥

तप्पागारे पल्लग, पडहग झल्लरि मुइंग पुप्फ जवे ॥
तिरियमणुएसु ओही,नाणाविह संठिओ भणिओ ॥२०२॥

अर्थ—नारकीनुं अवधिज्ञान (तप्पागारे) के० पाणी उपर तरवाना त्रापाने आकारे, भुवनपतिनुं अवधिज्ञान (पल्लग) के० पालाने आकारे, व्यंतरनुं अवधिज्ञान (पडहग) के० ढोलने आकारे, ज्योतषीनुं अवधिज्ञान (झल्लरि) के० झल्लरीने आकारे, बार देवलोकना देवतानुं अवधिज्ञान (मुइंग) के० मृदंगने आकारे, नवग्रैवेयकना देवतानुं अवधिज्ञान (पुप्फ) के० पुष्पथी भरेली चंगेरीना आकारे, अने पांच अनुत्तर विमानवासी देवोनुं अवधिज्ञान (जवे) के० कुमारीकन्याना गल्कंचुवाने आकारे होय छे. वळी

(तिरियमणुसुए) के० तिर्यंच अने मनुष्यने विषे (ओही) के० अवधिज्ञान (नाणाविह संठिओ) के० नानाप्रकारना संस्थानवाळुं (भणिओ) के० कह्यं छे. ॥ ३०२ ॥

हवे उपर कहेला संस्थानोनुं स्वरूप कहे छे.

तप्पेण समागारो, तप्पागारो, स चाइयंतमसो ॥
उद्घाययओ पल्लो, उवरि रुद्दोहमंसित्तो ॥ ३०३ ॥

अर्थ—(तप्पेण समागारो) के० वहाणने आकारे जे अवधिज्ञान ते (तप्पागारो) के० तापाकार अवधिज्ञान कहेवाय. (स) के० ते अवधिज्ञान (चाइयंतमसो) के० नारकीनुं छे० (उद्घाययओ) के० उर्ध्व लंबाइवाळो (उवरि रुद्दो) के० उपर विस्तार वाळो अने अहमंसित्तो के० नीचे सांकडो एवो (पल्लो) के० पल्य होय छे. ॥ ३०३ ॥

सवायओ समोविय, पडहो हिट्ठोवरि पइयासो ॥
चम्मावणद्ध विच्छिन्न, वलयरूवा उ झल्लरिया ॥३०४॥

अर्थ—(सव्वायओ समोविय) के० सर्व बाजुएथी सरखो छतां पण (हिट्ठोवरि पइयासो) के० नीचे अने उपर थाळीने आकारे पाथरो, वळी (चम्मावणद्ध) के० चामडायी ढांकेलो एवो (पडहो) के० पडह होय छे. (उ) के० वळी (वलयरूवा) के० गोळ वलयने आकारे (झल्लरिया) के० झाल्लर होय छे. ॥ ३०४ ॥

उद्घायओ मुयंगो, हिट्ठो रुद्दो तहोवरि तणुओ ॥
पुप्फसिहावली रहिया, चंगेरी पुप्फचंगेरी ॥ ३०५ ॥

अर्थ—(उद्घायओ) के० ऊंची आकृतिवाळो, (हिट्ठोरुद्दो)

के० नीचे विस्तारवाळो, (तहोवरि तणुओ) के० तेमज उपर सांकडो एवो (मुयंगो) के० मृदंग होय छे. (पुप्फसिहावली रहिया) के० पुष्प समूहथी रचेली (चंगेरी) के० एटले नीचेनी पहगी सहित छाबडी ते (पुप्फचंगेरी) के० पुष्पचंगेरी कहेवाय छे. ॥३०८॥

जवनालउत्ति भन्नइ, उप्भोसए कंचुओ कुमारीए ॥
एए अवद्धाकारा, देवा जाणंति जिणवुत्ता ॥ ३०६ ॥

अर्थ—(कुमारीए) के० कुमारिकाना (उप्भोसए) के० उंची फरेली ने वाहुवाळ्या (कंचुओ) के० कंचुवाने (जवनालउत्ति भन्नइ) के० जवनाल एम कहेवाय छे. (एए अवद्धाकारा) के० ए अवधिज्ञानना आकारने (देवा) के० देवता (जाणंति) के० जाणे छे अने ए अवधिज्ञानना आकारो (जिणवुत्ता) के० जिनेश्वरे कह्या छे. ॥ ३०६ ॥

हवे नारकी देवता मनुष्य अने तिर्यंच ए चारेमां कोने कइ दिशाए अवधिज्ञान वधारे ? ते कहे छे.

उड्ढं भवणवणाणं, बहुगो वेमाणियाण हो ओही ॥
नारय जोइस तिरियं, नरतिरियाणं अणेगविहो ॥३०७॥

अर्थ—(भवणवणाणं) के० भुवनपति तथा व्यंतर देवताओने अवधिज्ञान (उड्ढं) के० उंचुं (बहुगो) के० घणुं होय छे. तिर्छु तथा नीचुं थोडुं होय छे. तेमज (वेमाणियाण) के० वैमानिक देवताने (ओही) के० अवधिज्ञान (अहो) के० नीचुं घणुं होय छे उंचु तथा तिर्छु थोडुं होय छे. वळी (नारय जोइस) के० नारकी अने ज्योतिषीने अवधिज्ञान (तिरियं) के० तिर्छु घणुं होय छे. उंचुं नचुं थोडुं होय छे. तथा (नरतिरियाणं) के० मनुष्य अने तिर्यंचने

(अणेगविहो) के० अनेक प्रकारनुं एटले कोइने उंचुं वधारे कोइ
नीचुं वधारे अने कोइने तिछुं वधारे एम विचित्र प्रकारेहोयछे॥३०

हवे देवतानुं द्वार पूर्ण करी नारकीनुं द्वार कहे छे.

इय देवाणं भणियं, ठिइपमुहं नारयाण वुच्छामि ॥
इग तिन्नि सत्तदस सतर,अयर बावीस तित्तीसा ॥३०
सत्तय पुढवीसु ठिई, जिट्ठोवरिमाइ हिट्ठपुढवीए ॥
होइ कमेण कणिट्ठा, दस वास सहस्स पढमाए ॥३०

अर्थ—(इय) के० ए प्रकारे (देवाणं) के० देवतानां (ठि
पमुहं) के० स्थितिप्रमुख एटले स्थिति, भुवन, शरीरप्रमाण
अवगाहना, उपपात विरहकाल, च्यवनविरहकाल, एक समय उपजे
संख्या, एक समय च्यवनसंख्या, गति अने आगतिरूप नव द्वा
(भणियं) के० कह्यां. हवे (नारयाण) के० नारकीना एज न
द्वार ए पूर्वोक्त अनुक्रमे (वुच्छामि) के० कहीश. पहेली रत्नप्र
पृथ्वीने विषे उत्कृष्टि स्थिति (इग) के० एक सागरोपमनी, बीजी
शर्करापभाने विषे (तिन्नि) के० त्रण सागरोपमनी, त्रीजी वालुका
प्रभाने विषे (सत्त) के० सात सागरोपमनी, चोथी पंकप्रभाने वि
(दस) के० दस सागरोपमनी, पांचमी धूमप्रभाने विषे (सतर)
के० सत्तर सागरोपमनी, छट्ठी तमःप्रभाने विषे (बावीस) के० बावीस
सागरोपमनी, अने सातमी तमस्तमःप्रभाने विषे (तित्तीसा) के० ते
त्रीस सागरोपमनी, ए सर्व (अयर) के० सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति
जाणवी. ॥३०८॥ ए पूर्वे कहेली (सत्तय पुढवीसु) के० सातें नार
पृथ्वीने विषे (ठिई) के० स्थिति कही. तेमां (उवरिमाइ) के० उप
रली आदिनी जे (जिट्ठा) के० उत्कृष्ट स्थिति होय, अर्थात् उपरनी
नारकीनी जे उत्कृष्ट स्थिति होय ते (हिट्ठ पुढवीए) के० नीचेनी
(पृथ्वीनी कणिट्ठा) के० जघन्य स्थिति (कमेण) के० अनुक्रमे

करीने (होइ) के० होय छे. जेम रत्नप्रभानी उत्कृष्टी एक सागरोपमनी स्थिति ते शर्कराप्रभाए कनिष्ट एटले जघन्य स्थिति जाणवी. अने (पढमाए) के० पहेली रत्नप्रभाने विषे (दस वीस सहस्स) के० दश हजार वर्षनी जघन्य स्थिति जाणवी. ॥३०९॥

नवइ सम सहस्स लक्खा,पुव्वाणं कोडि अयर दस भागा ॥
इक्किक्कभागवुड्ढी, जा अयरं तेरसे पयरे ॥ ३१० ॥
इय जिट्ठ जहण्णा पुण,दस वास सहस्स लक्ख पयरदुगे॥
सेसेसु उवरि जिट्ठा, अहो कणिट्ठाओ पइं पुढवी ॥३११॥

अर्थ—रत्नप्रभा पृथ्वीना पहेला प्रतरने विषे उत्कृष्टी स्थिति (नवइ सम सहस्स) के० नेवुं हजार वर्षनी, बीजा प्रतरने विषे (लक्खा) के० नेवुं लाख वर्षनी, त्रीजा प्रतरने विषे (पुव्वाणं कोडी) के० एक पूर्व कोडीनी, चोथा प्रतरने विषे (अयर दस भागा) के० एक सागरोपमना दशमा भागनी, त्यार पछी दरेक प्रतरे (इक्किक्कभागवुड्ढी) के० एक एक भागनी वृद्धी करवी के (जा) के० ज्यां सुधीमां (तेरसे पयरे) के० तेरमा प्रतरे (अयरं) के० एक सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति थाय ॥ ३१० ॥ (इय जिट्ठ) के० ए उत्कृष्टी स्थिति कही, (पुण) के० वली (जहण्णा) के० जघन्य स्थिति ते (पयरदुगे) के० पहेला बे प्रतरने विषे अनुक्रमे (दस वास सहस्स) के० पहेला प्रतरे दश हजार वर्षनी अने बीजा प्रतरे (लक्ख) के० दश लाख वर्षनी जाणवी. (सेसेसु) के० त्रीजाथी आरंभीने बाकीना प्रतरोने विषे (उवरि जिट्ठा) के० उपरना प्रतरोने विषे जे उत्कृष्टी स्थिति होय ते (अहो कणिट्ठाओ) के० नीचेना प्रतरोने विषे जघन्य स्थिति जाणवी. एम (पइं पुढवी) के० दरेक पृथ्वीने विषे समजवुं. ॥ ३११ ॥

रत्न प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य.

प्रतरे.	जघन्य.	उत्कृष्ट.
१ ले	१०००० वर्ष	९००००
२ जे	१० लाख वर्ष	९० लाख वर्ष
३ जे	९० लाख वर्ष	पूर्वकोड वर्ष
४ थे	पूर्वकोड वर्ष	$\frac{1}{10}$ सागरोपम
५ मे	$\frac{1}{10}$ सागरो॰	$\frac{2}{10}$ सागरो॰
६ ठे	$\frac{2}{10}$,,	$\frac{3}{10}$,,
७ मे	$\frac{3}{10}$,,	$\frac{4}{10}$,,
८ मे	$\frac{4}{10}$,,	$\frac{5}{10}$,,
९ मे	$\frac{5}{10}$,,	$\frac{6}{10}$
१० मे	$\frac{6}{10}$,,	$\frac{7}{10}$,,
११ मे	$\frac{7}{10}$,,	$\frac{8}{10}$,,
१२ मे	$\frac{8}{10}$,,	$\frac{9}{10}$,,
१३ मे	$\frac{9}{10}$,,	१ सागरो॰

हवे बीजी नरकपृथ्वी आदिकमां उत्कृष्टी स्थिति कहेवाने यंत्र कथन करूं छुं.

उवरि खिइ ठिइ विसेसो,सगपयर विहत्तु इच्छ संगुणिओ ॥
उवरिमखिइ ठिइ सहिओ इच्छियपयरंमि उक्कोसा॥२१२॥

अर्थ—(उवरि खिइ) के० उपरनी पृथ्वीनी (ठिइ) के० उत्कृष्टी स्थितिने (इत्थ) के० वांछित नरकपृथ्वीनी उत्कृष्टी स्थिति साथे (विसेसो)के० विश्लेष करवो एटलेअधिक स्थितिमांथो ओछीस्थिति काढी नांखवी. पछी ते विश्लेष एटलेवधेला आंकने (सगपयर) के०वांछित पृथ्वीना पतरे (विहत्तु)के०वहेंचीए. ते वहेंचतां जे आंक आवे तेने (इच्छ) के० ईष्टप्रतरनी संख्याये (सगुणिओ) के० गुणीये. ते गुणतां जे आंक आवे ते (उवरिमखिइ) के० उपरनी पृथ्वीनी (ठिइसहिओ) के० उत्कृष्टी स्थितिए सहित करीए त्यारे (इच्छिय· पयरम्मि) उक्कोसा के० वांछित प्रतरे उत्कृष्टी स्थिति थाय. ॥२१२॥

तेज वात उदाहरण सहित समजावे छे के-बीजी शर्करा प्रभाने विषे उत्कृष्टी स्थिति त्रण सागरोपमनी छे अने पहेलो रत्नप्रभानी उत्कृष्टी स्थिति एक सागरोपमनी छे ते त्रण सागरोपममांथी काढी नाखीये त्यारे बाकी बे रहे. ते बे सागरोपमने शर्कराप्रभाना अगीयार प्रतरे भाग आपीये. त्यारे एक एक प्रतरे एक एक सागरोपमना अगीयारीया बबे भाग आवे. प्रथम प्रतरे फक्त बेज भाग वधे तेने उपरनी रत्नप्रभानी एक सागरोपमनी स्थिति साथे जोडीये त्यारे शर्कराप्रभाना प्रथम प्रतरे एक सागरोपम अने एक सागरोपमना अगीयारीया भाग उपर आवे, एटली शर्कराप्रभाना प्रथम प्रतरे उत्कृष्टी स्थिति जाणवी. एरीते दरेक प्रतरे बे भाग वधारता अगीयारमे प्रतरे त्रण सागरोपम पूर्णायु थाय. अने पहेला प्रतरनी उत्कृष्टी स्थिति ते बीजे प्रतरे जघन्य स्थिति जाणवी. एज प्रमाणे त्रीजी चोथी पांचमी अने छट्ठी नरक पृथ्वीनुं करण करवुं. ए सर्व नरक पृथ्वीनुं आयुष्य प्रमाण यन्त्रमां छे. त्यांथी जाणीलेवुं ॥

૨
શર્કરા પ્રભામાં જઘન્યોત્કૃષ્ટ આયુષ્ય.

પ્રતરે,	જઘન્ય.	ઉત્કૃષ્ટ.
૧ લે	૧ સાગર.	૧ ૨/૧૧ સાગર.
૨ જે	૧ ૨/૧૧ "	૧ ૪/૧૧ "
૩ જે	૧ ૪/૧૧ "	૧ ૬/૧૧ "
૪ થે	૧ ૬/૧૧ "	૧ ૮/૧૧ "
૫ મે	૧ ૮/૧૧ "	૧ ૧૦/૧૧ "
૬ ઠે	૧ ૧૦/૧૧ "	૨ ૧/૧૧ "
૭ મે	૨ ૧/૧૧ "	૨ ૩/૧૧ "
૮ મે	૨ ૩/૧૧ "	૨ ૫/૧૧ "
૯ મે	૨ ૫/૧૧ "	૨ ૭/૧૧ "
૧૦ મે	૨ ૭/૧૧ "	૨ ૯/૧૧ "
૧૧ મે	૨ ૯/૧૧ "	૩ "

३

वालुका प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य.

प्रतरे	जघन्य	उत्कृष्ट
१ ले	३ साग०	३ ४/९ साग०
२ जे	३ ४/९ ,,	३ ८/९ ,,
३ जे	३ ८/९ ,,	४ ३/९ ,,
४ थे	४ ३/९ ,,	४ ७/९ ,,
५ मे	४ ७/९ ,,	५ २/९ ,,
६ ठे	५ २/९ ,,	५ ६/९ ,,
७ मे	५ ६/९ ,,	६ १/९ ,,
८ मे	६ १/९ ,,	६ ५/९ ,,
९ मे	६ ५/९ ,,	७ ,,

४

पंक प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य.

प्रतरे	जघन्य	उत्कृष्ट
१ ले	७	७ ३/७
२ जे	७ ३/७	७ ६/७
३ जे	७ ६/७	८ २/७
४ थे	८ २/७	८ ५/७
५ मे	८ ५/७	९ १/७
६ ठे	९ १/७	९ ४/७
७ मे	९ ४/७	१०



५

धूम प्रभामां जघन्योत्कृष्ट आयुष्य.		
१ ले	१०	११ २/५
२ जे	११ २/५	१२ ४/५
३ जे	१२ ४/५	१४ १/५
४ थे	१४ १/५	१५ ३/५
५ मे	१५ ३/५	१७

तमःप्रभामां		
१ ले	१७	१८ २/३
२ जे	१८ २/३	२० १/३
३ जे	२० १/३	२२
तमस्तमप्रभामां		
१ ले	२२	३३

हवे नारकीनी वेदनानुं स्वरूप कहे छे.

सत्तसु खित्तजवेयणा,अण्णुण्णकयावि पहरणेहि विणा॥
पहरणकयावि पंचसु,तिसु परमाहम्मियकयावि ॥२१३॥

अर्थ—(सत्तसु) के० साते नरक पृथ्वीने विषे (खित्तजवेयणा) के० क्षेत्र वेदना छे, तथा (पहरणेहि विणा) के० शस्त्र विना (अण्णुण्णकयावि) के० परस्पर मांहोमांहे करेली वेदना पण होय. अने (पंचसु) के० पहेली पांच नरक पृथ्वीने विषे (पहरणकयावि) के० परस्पर शस्त्रे करेली वेदना होय. तथा (तिसु) के० पहेली त्रण नरक पृथ्वीने विषे (परमाहम्मियकयावि) के० परमाधामिनी करेली वेदना होय छे ॥ २१३ ॥

नरकने विषे, क्षेत्रस्वभावथीज दश प्रकारनो पुद्गलपरिणाम दुःख आपनारो छे, ते कहे छे.

बंधण गइ संठाणा, भेया वण्णा य गंध रस फासा ॥
अगुरुलहु सद्द दसहा,असुहा विय पुग्गला निरए॥३१४॥

अर्थ—१ (बंधण) के० क्षणे क्षणे आहारादिक नाना प्रकारना पुद्गलनुं बंधन प्रदिप्त अग्निथकी पण अत्यन्त दारुण होय. २ (गइ) के० गति ते उंट सरखी होय. ३ (संठाण) के० अत्यंत तीव्र हुंडक संस्थान होय. ४ (भेया) के० भेदन थवुं ते जाणवुं ५ (वण्णा) के० नरकावासानो वर्ण सर्वत्र अंधकारमय तथा अपवित्र वस्तुओथी भरेलो होय, ६ (गंध) के० श्वानादिकना मृत कलेवरोथी अत्यंत दुर्गंध होय. ७ (रस) के० रस ते कडवी तुंबडी करतां पण अत्यंत कडवो स्वाद होय, ८ (फासा) के० स्पर्श ते वींछीना कांटा सरखो अथवा कौंचना रोम करतां पण खराब स्पर्श होय. ९ (अगुरुलहु) के० अगुरुलघु परिणाम अत्यंत दुःख आपनारो होय. १० (सद्द) के० शब्द ते विलापादिक अत्यंत भयकारी होय. एम (निरए) के० नारकीने विषे (दसहा) के० दश प्रकारना (असुहा पुग्गला) के० अशुभ पुद्गलो (विय) के० निश्चे होय छे. ॥ ३१४ ॥

निरया दसविह वेयणा,सी उसिगं खुह पिवास कंडुहि॥
परवसं जर दाहं, भय सोगं चेव वेयंति ॥ ३१५ ॥

अर्थ—(निरया) के० नारकीना जीवोने (दसविह वेयणा) के० दस प्रकारनी वेदना छे. तेमां १ (सी) के० शीतवेदना ते पोष अथवा माघमहिने हिमाचलमां वस्त्ररहित माणसने जेवी शीत लागे तेथी अनंतगुणी शीत नारकीना जीवोने होय. २ (उसिणं) के०

उष्णवेदना ते ग्रीष्मऋतुमां मध्याह्न वखते मेघ रहित आकाश छतां अति पित्तप्रकोपथी व्याकुळ थयेला छत्ररहित पुरुषने जेवी उष्णवेदना होय तेथी अनंत गुणी वेदना नारकीना जीवोने होय. ३ (खुह) के० क्षुधा वेदना ते अही जीवना सर्व अन्न घृतादि पदार्थो नारकीना जीवोने खावा आपीये तोपण तेमनी क्षुधा शांत थाय नहीं. ४ (पिवास) के० तृषावेदना ते नारकीना जीवोने सर्व समुद्रना अने नदीओना पाणी पाइये तोपण तेमनी तृषा शांत थाय नहीं. ५ (कंडुहिं) के० नारकीना जीवोने करवत अथवा छरीवती खणतां पण तेमनी खसनी खरज मटे नहीं. ६ (परवसं) के० नारकी जीव निरंतर परवश होय. ७ (जर) के० नारकीना जीवने अहिंना रहेनारा पुरुषो करता अनंत गुणो ज्वर एटले ताव होय. ८ (दाहं) के० नारकीना जीवोने दाघज्वर होय, (९) भय के० नारकीना जीवोने भय अने १० (सोग) के० शोक मनुष्यो करतां अनंतगुणो होय. नारकीना जीवोने विभंग ज्ञानपण अति दुःख आपनारुं छे. परमाधामी देवोपण तरवार विगेरे शस्त्रो देखाडी महा दुःख आपे छे. तेथी नारकीजीवो सर्वदा शोक करता रहे छे. ए (वेयंनि) के० नारकीनी सेववेदना (चेव) के० निश्चे कही.॥३१५॥

नेरइयाणुप्पाओ, उक्कोसं पंचजोयणसयाइं ॥
दुक्खेण भिन्नयाणं, वेयणसयपच्चमाणाणं ॥ ३१६ ॥

अर्थ—(दुक्खेण भिन्नयाणं) के० दुःखथी भेदाना अने (वेयणसयपच्चमाणाणं) के० सेंकडो वेदनाथी पचाता एवा (नेरइयाण) के० नारकी जीवोनुं (उक्कोसं) के० उत्कृष्टथी (पंचजोयणसयाइं) के० पांच सो योजन उंचाइथी (उप्पाओ) के० पडवु थाय छे. ॥ ३१६ ॥ ए नारकीनुं स्थितिद्वार कह्युं.

हवे नारकीनुं भवनद्वार कहे छे. तेमां प्रथम साते नरक पृथ्वीना गोत्र तथा नाम कहे छे,

रयणप्पह सक्करपह, वालुयपह पंकपह य धूमपहा ॥
तमपहा तमतमपहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइं ॥२१७॥

अर्थ—पहेली (रयणप्पह) के० घणां रत्नो होवाथी रत्नप्रभा, बीजी (सक्करपह) के० घणां कांकरा होवाथी शर्कराप्रभा, त्रीजी (वालुयपह) के० घणी रेती होवाथी वालुकाप्रभा, चोथी (पंकपहय) के० घणो कादव होवाथी पंकप्रभा, पांचमी (धूमपहा) के० घणो धूमाडो होवाथी धूमप्रभा, छठ्ठी (तमपहा) के० अंधकार होवाथी तमप्रभा, सातमी (तमतमपहा) के० घणा गाढ अंधकार होवाथी तमःतमप्रभा ए कमेण के० अनुक्रमे (पुढवीण) के० साते नरक पृथ्वीना (गोत्ताइं) के० गोत्र एटले अर्थ सहित नाम कह्यां ॥ २१७ ॥

हवे साते नरक पृथ्वीनां नाम तथा संस्थान कहे छे.

घम्मा वंसा सेला, अंजण रिट्ठा मघा य माघवई ॥
नामेहिं पुढवीओ, छत्ताईच्छत्तसंठाणा ॥ २१८ ॥

अर्थ—१ (घम्मा) के० घम्मा, २ (वंसा) के० वंसा, ३ (सेला) के० सेला ४ (अंजण) के० अंजणा, ५ (रिट्ठा) के० रिट्ठा, छठ्ठी (मघा) के० मघा, (य) के० अने, ७ (माघवई) के० माघवती. ए उपर कहेलां (नामेहिं) के० नामवाली (पुढवीओ) के० साते नरक पृथ्वी जाणवी. ते पृथ्वीओ (छत्ताईच्छत्तसंठाणा) के० छत्रातिछत्र संस्थाना एटले उपरा उपरी छत्रने आकारे छे.

उष्णवेदना ते ग्रीष्मऋतुमां मध्याह्न वखते मेघ रहित आकाश छत अनि पित्तप्रकोपथी व्याकुल थयेला छत्ररहित पुरुषने जेवी उष्ण वेदना होय तेथी अनंत गुणी वेदना नारकीना जीवोने होय. (सुह) के० क्षुधा वेदना ते अढी द्वीपना सर्व अन्न घृतादि पदार्थ नारकीना जीवोने खावा आपीये तोपण तेमनी क्षुधा शांत थाय नहीं. ४ (पिवास) के० तृषावेदना ते नारकीना जीवोने सर्व समुद्रना अने नदीओना पाणी पाइये तोपण तेमनी तृषा शांत थाय नहीं. ५ (कंडुहिं) के० नारकीना जीवोने करवत अथवा छरीवती खणतां पण तेमनी खसनी खरज मटे नहीं. ६ (परवसं) के० नारकी जीव निरंतर परवश होय. ७ (जर) के० नारकीना जीवने अहिंना रहेनारा पुरुषो करता अनंत गुणो ज्वर एटले ताव होय. ८ (दाहं) के० नारकीना जीवोने दाघज्वर होय, (९) भय के० नारकीना जीवोने भय अने १० (सोग) के० शोक मनुष्यो करतां अनंतगुणो होय. नारकीना जीवोने विभंग ज्ञानपण अति दुःख आपनारुं छे. परमाधामी देवोपण तरवार विगेरे शस्त्रो वेराही महा दुःख आपे छे. तेथी नारकीजीवो सर्वदा शोक करता रहे छे. ए (वेयंति) के० नारकीनी दशवेदना (वेंत) के० निश्चे कही.॥११५॥

नेरइयाणुप्पाओ, उक्कोसं पंचजोयणसयाइं ॥
दुक्खेण भिन्नयाणं, वेयणसयपच्चमाणाणं ॥ ११६ ॥

अर्थ—(दुक्खेण भिन्नयाणं) के० दुःखथी भेदाता अने (वेयणसयपच्चमाणाणं) के० सेंकडो वेदनाथी पचाता एवा (नेरइयाण) के० नारकी जीवोनु (उक्कोसं) के० उत्कृष्टथी (पंचजोयणसयाइं) के० पांच सो योजन उंचाथी (उप्पाओ) के० पडवु थाय छे. ॥ ११६ ॥ ए नारकीनुं स्थितिद्वार कह्युं.

हवे नारकीनुं भवनद्वार कहे छे. तेमां प्रथम साते नरक पृथ्वीना गोत्र तथा नाम कहे छे,

रयणप्पह सक्करपह, वालुयपह पंकपह य धूमपहा ॥
तमपहा तमतमपहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइं ॥३१७॥

अर्थ—पहेलो (रयणप्पह) के० घणां रत्नो होवाथी रत्नप्रभा, बीजी (सक्करपह) के० घणां कांकरा होवाथी शर्कराप्रभा, त्रीजी (वालुयपह) के० घणी रेती होवाथी वालुकाप्रभा, चोथी (पंकपहय) के० घणो कादव होवाथी पंकप्रभा, पांचमी (धूमपहा) के० घणो धूमाडो होवाथी धूमप्रभा, छठ्ठी (तमपहा) के० अंधकार होवाथी तमप्रभा, सातमी (तमतमपहा) के० घणा गाढ अंधकार होवाथी तमःतमप्रभा ए कमेण के० अनुक्रमे (पुढवीण) के० साते नरक पृथ्वीना (गोत्ताइं) के० गोत्र एटले अर्थ सहित नाम कह्यां ॥ ३१७ ॥

हवे साते नरक पृथ्वीनां नाम तथा संस्थान कहे छे.

घम्मा वंसा सेला, अंजण रिठ्ठा मघा य माघवई ॥
नामेहिं पुढवीओ, छत्ताइच्छत्तसंठाणा ॥ ३१८ ॥

अर्थ—१ (घम्मा) के० घम्मा, २ (वंसा) के० वंसा, ३ (सेला) के० शेला ४ (अंजण) के० अंजणा, ५ (रिठ्ठा) के० रिष्टा, छठ्ठी (मघा) के० मघा, (य) के० अने, ७ (माघवई) के० माघवती. ए उपर कहेलां (नामेहिं) के० नामवाली (पुढवीओ) के० साते नरक पृथ्वी जाणवी. ते पृथ्वीओ (छत्ताइच्छत्तसंठाणा) के० छत्रातिछत्र संस्थाना एटले उपरा उपरी छत्रने आकारे छे.

उष्णवेदना ते ग्रीष्मऋतुमां मध्याह्न वखते मेघ रहित आकाश छतां अति पित्तप्रकोपथी व्याकुल थयेला छत्ररहित पुरुषने जेवी उष्णवेदना होय तेथी अनंत गुणी वेदना नारकीना जीवोने होय. ३ (खुह) के० क्षुधा वेदना ते अढी द्वीपना सर्व अन्न घृतादि पदार्थो नारकीना जीवोने खावा आपीये तोपण तेमनी क्षुधा शांत थाय नहीं. ४ (पिवास) के० तृषावेदना ते नारकीना जीवोने सर्व समुद्रना अने नदीओना पाणी पाइये तोपण तेमनी तृषा शांत थाय नहीं. ५ (कंडुहिं) के० नारकीना जीवोने करवत अथवा छरीवती खणतां पण तेमनी खसनी खरज मटे नहीं. ६ (परवसं) के० नारकी जीव निरंतर परवश होय. ७ (जर) के० नारकीना जीवने अहिंना रहेनारा पुरुषो करता अनंत गुणो ज्वर एटले ताव होय. ८ (दाहं) के० नारकीना जीवोने दाहज्वर होय, (९) भय के० नारकीना जीवोने भय अने १० (सोग) के० शोक मनुष्यो करतां अनंतगुणो होय. नारकीना जीवोने विभंग ज्ञानरुप अति दुःख आपनारुं छे. परमाधामी देवोपण तरवार विगेरे शस्त्रो वैगरेथी महा दुःख आपे छे. तेथी नारकीजीवो सर्वदा शोक करता रहे छे. ए (वेयंति) के० नारकीनी क्षेत्रवेदना (वेर) के० निश्चे कही.॥३१५॥

नेरइयाणुप्पाओ, उक्कोसं पंचजोयणसयाइं ॥
दुक्खेण भिन्नयाणं, वेयणसयपञ्चमाणाणं ॥ ३१६ ॥

अर्थ—(दुक्खेण भिन्नयाणं) के० दुःखथी भेदाया अने (वेयणसयपञ्चमाणाणं) के० सेंकडो वेदनाथी पचाता एवा (नेरइयाण) के० नारकी जीवोनुं (उक्कोसं) के० उत्कृष्टथी (पंचजोयणसयाइं) के० पांच सो योजन उंचापणी (उप्पाओ) के० पडवु थाय छे. ॥ ३१६ ॥ ए नारकीनुं स्थितिद्वार कहुं.

गयणं च पइट्टाणं, वीस सहस्साइं घणुदहीपिंडो ॥
घणतणुवायागासा, असंखजोयण जुया पिंडो ॥१८

अर्थ—समाणांगुले करी (रयणपुहवि) के० एक लाख ऐंशी
हजार (असीय) के० ऐंशी, (बत्तिस) के० बत्रीस, (अट्टवीस)
अट्टावीस (वीसा) के० वीस. (अट्टार) के० अढार, (सोल)
के० सोळ, अने (अट्ट) के० आठ, ए सर्व योजनना (सहस्सा)
के० सहस्र एटले हजार जाणवा. एटले रत्नप्रभानुं एक लाख ऐंशी
हजार योजननुं, शर्कराप्रभानुं एक लाख बत्रीस हजार योजननुं,
वालुका प्रभानुं एक लाख अट्टावीस हजार योजननुं, पंकप्रभानुं
एक लाख वीस हजार योजननुं, धूमप्रभानुं एक लाख अढार
हजार योजननुं, तमप्रभानुं एक लाख सोळ हजार योजननुं, अने
तमतमप्रभानुं एक लाख आठ हजार योजननुं पृथ्वी पीठ जाणवुं.
घणी (घणुदहि घणवाय तणुवाया) के० घनोदधि घनवात तनु
वात—॥ १८१ ॥ (गयणं च) के० अने आकाश ए चारे एक
एक पृथ्वीना नीचे (पइट्टाणं) के० आश्रय एटले आधारभूत
जाणवा. एटले सर्वपृथ्वी घनोदधि उपर छे, घनोदधि घनवात
उपर छे, घनवात तनुवात उपर छे अने तनुवात आकाश उपर
प्रतिष्ठित छे, एम सर्व पृथ्वीना तळने विषे जाणवुं परंतु एटलुं विशेष
छे के—सातमी नरक पृथ्वीना तळे घनोदधि घनवात तनुवात अने
तेनी नीचे असंख्याताकाश वर्तुल छे ॥ ॥ हवे घनोदधि विगेरे चारेनुं
मध्यभागे पीठ स्थूलपणुं कहे छे ॥ (घणुदहीपिंडो) के० घनोद-
धिनो पिंड मध्यभागे (वीस सहस्साइं) के० वीस हजार योजन
जाडपणे छे अने (घणतणुवायागासा) के० घनवात तनुवात अने
आकाश (असंखजोयणजुया पिंडो) के० ए त्रणेनो पिंड अस
ंख्याता योजननो छे. तेमां घनवातथी असंख्यात योजन तनुवात.

अर्थात् सौथी उपर नानुं, तेनी नीचे मोटुं, वळी तेनी नीचे
एवी आकृतिये छे. ॥ ३१८

तत्थ सहस्सा सोलस, खरकंडं पंकबहुलकंडं तु ॥
चुलसीइ सहस्साई, असीइ जलबहुलकंडं तु ॥ ३१९

अर्थ—पहेली रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाख एंशी हज
योजननो जाडपणे छे. (तत्थ) के० तेमां पहेलो (खरकंडं)
खरकांड (सहस्सा सोलस) के० सोलहजार योजननो छे, (
के० अने बीजो (पंकबहुलकंडं) के० पंकबहुलकांड (चुलसी
सहस्साई) के० चोराशी हजार योजननो छे. (तु) के० त्र
त्रीजो (जलबहुलकंडं) के० जलबहुलकांड (असीइ) के० एं
हजार योजननो छे. ॥ ३१९ ॥

एवं असी उ लक्खा, खरकंडाइ हि धम्मपुढवीए ॥
सेसा पुढवी सक्ला, पुढविओ हुंति बाहुल्ले ॥३२०॥

अर्थ—(एवं) के० ए प्रमाणे (खरकंडाइ) के० खरकांड वि
(धम्मपुढवीए) के० धर्मा पृथ्वीमां अनुक्रमे त्रणे पृथ्वीकांड एक
करता (असीउलक्खा) के० एक लाख एंशी हजार पृथ्वीपिंड था
(सेसा पुढवी सक्ला) के० बाकी शर्करा प्रभादी आदिकने पृथ्वीन
जाडपणो (बाहुल्ले) के० पणुपणाने (पुढविओ) के० गोत्र प्रमाणे
हुंति के० होय छे. ॥ ३२० ॥

हवे पृथ्वीनो पींड तथा पृथ्वीनो आधार कहे छे.

असीइ बत्तिस अडविस,वीसा अट्ठार सोल अडसहस्सा ॥
लक्खुवरि पुढविपिंडो,घणुदहि घणवाय तणुवाया॥३२

गयणं च पइट्ठाणं. वीस सहस्साइं घणुदहीपिंडो ॥
घणतणुवायागासा. असंखजोयण जुया पिंडो ॥१२२॥

अर्थ—प्रमाणांगुले करी (लक्खुवरि) के० एक लाख योजन उपर (असोइ) के० एंशी, (बत्तिस) के० बत्रीस, (अडवीस) के० अठ्ठावीस (वीसा) के० वीस. (अढार) के० अढार, (सोल) के० सोळ, अने (अड) के० आठ. ए सर्व योजनना (सहसा) के० सहस्र एटले हजार जोडवा. एटले रत्नप्रभानुं एक लाख एंशी हजार योजननुं, शर्कराप्रभानुं एक लाख बत्रीस हजार योजननुं, वालुका प्रभानुं एक लाख अठ्ठावीस हजार योजननुं, पंकप्रभानुं एक लाख वीस हजार योजननुं, धूमप्रभानुं एक लाख अढार हजार योजननुं, तमप्रभानु एक लाख सोळ हजार योजननुं, अने तमतमप्रभानुं एक लाख आठ हजार योजननुं पृथ्वी पींड जाणवुं. वळी (घणुदहि घणवाय तणुवाया) के० घनोदधि घनवात तनवात—॥ १२१ ॥ (गयणं च) के० अने आकाश ए चारे एक एक पृथ्वीना नीचे (पइट्ठाणं) के० आश्रय एटले आधाररूप जाणवा. एटले धर्म्मापृथ्वी घनोदधि उपर छे, घनोदधि घनवात उपर छे, घनवात तनुवात उपर छे अने तनुवात आकाश उपर प्रतिष्ठित छे, एम सर्व पृथ्वीना तळने विषे जाणवुं परंतु एटलुं विशेष छे के—सातमी नरक पृथ्वीना तळे घनोदधि घनवात तनुवात अने तेनी नीचे अलोकाकाश बहुल छे ॥ ॥ हवे घनोदधि विगेरे चारेनुं मध्यभागे पींड स्थूलपणुं कहे छे ॥ (घणुदहीपिंडो) के० घनोदधिनो पिंड मध्यभागे (वीस सहस्साइं) के० वीस हजार योजन जाडपणे छे अने (घणतणुवायागासा) के० घनवात तनुवात अने आकाश (असंखजोयणजुया पिंडो) के० ए त्रणेनो पिंड असंख्याता योजननो छे. तेमां घनवातथी असंख्याता योजन तनुवात

उदही) के० घनोदधि, (घण) के० घनवात अने (तणुवायाण) के० तनुवात ए घण वलयनी मध्ये (अइमंग्वं) के० यथा संख्याये करीने (सतिभाग गाऊयं) के० घनोदधिमां एक गाउ अने एक गाउनो त्रीजो भागघनवात वलयमां (गाउय) के० एक गाउ, (च) के० अने (मइ) के० तेमज तनुवातमां (गाउय तिभागो) के० एक भागनो त्रीजो भाग (तिविज्ज) के० नाखीये त्यारे बीजी शर्कराप्रभानो वलयविष्कंभ (होइ) के० होय छे, (एवं कमेण) के० ए अनुक्रमे (बीयाए) के० बीजी नरक पृथ्वीमां सर्वमली बार योजन, बे गाउ, अने एक गाउना भाग करीये तेवा बे भाग एटलो बीजी नरक पृथ्वीथी चारे दिशाये अलोक छे. हवे (तइयाइसु) के० वालुकाप्रभादि पांचे नरक पृथ्वीना वलयमां (तंरि) के० जे शर्कराप्रभावलयमां नाखेलुं तेने पण कमसो के० अनुक्रमे करीने (दुतिचउपंचछगुणं) के० बे गुणु, त्रण गुणु, चार गुणु, पांच गुणु अने छ गुणु करीने (विव) के० मेलववुं एटले वालुकादिकना वलयनो विष्कंभ होय, ॥ ३२४ ॥ ३२५ ॥

छसतिभागा पउणाय-पंच वलयाण जोयणपमाणं ॥
एगं बारसभागा, सत्त कमा वीय पुढवीए ॥ ३२६ ॥

अर्थ—बाजी शर्कराप्रभाना (वलयाण) के० वलयोनुं (जोयणपमाणं) के० योजनप्रमाण ते घनोदधिवलय (छ सति भागा) के० छ योजन अने एक योजनना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग एटलुं जाणवुं, अने घनवातवलय (पउणा पंच) के० पोणा पांच योजननुं जाणवुं. तथा तनुवातना वलयनुं प्रमाण (एगं) के० एक योजन अने (बारस भागा सत्त) के० एक योजनना बार भाग करीये तेवा सात भाग (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवा. सर्व

अने तनुवातथी असंख्याता योजन आकाश जाणवुं ॥ ३२२ ॥

न फुसंति अलोगं चउ–दिसंपि पुढवी य वलयसंगहिया॥

अर्थ—(वलयसंगहिया) के० घनोदधि घनवात अने तनुवात सम्बन्धी वलयवडे विंटलायेली (पुढवी) के० रत्नप्रभादिक पृथ्वी (चउदिसंपि) के० चारे दिशाये पण (अलोगं) के० अलोकने (न फुसंति) के० फरस करती नथी. साते नरक पृथ्वीना तले मध्य भागमां घनोदधि वीशहजार योजन छे. अने घनवातादिक असंख्याता योजन छे.त्यार पछी प्रदेशे घटता घटता आप आपणी पृथ्वीने छेडे थोडा थया थका वलयाकारे पृथ्वीने वींटी रह्या छे.

रयणाए वलयाणं, छद्ध पंचम जोयण सड्ढं ॥ ३२३ ॥

अर्थ—(रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना (वलयाणं) के० त्रणे वलयनो विष्कंभ एटले छेडे जाडपणुं अनुक्रमे कहे छे. तेमां घनोदधि (छ) के० छ योजन जाडो, घनवात (अद्धपंचम) के० साडा चार योजन जाडो, अने तनुवात (जोयणसड्ढं) के० दोढ योजन जाडो छे. ॥ ३२३ ॥

विक्खंभो घणउदही, घणतणुवायाण होइ जहसंखं॥
सतिभाग गाऊयं,गाऊयं च तह गाउय तिभागो॥३२४॥
पढममहीवलयेसु, खिविज्ज एयंकमेण वीयाए ॥
दुतिचउपंचछगुणं, तइयाइसु तंपि खिव कमसो ॥३२५॥

अर्थ—(विक्खंभो) के० ए त्रणेने माथे जोडतां पहेली नरक पृथ्वीनी चारे दिशाए बार योजन दूर अलोक छे. (पढम महीवलयेसु) के० पहेली नरक पृथ्वीना त्रण वलयमां एटले (घण-

उदही) के० घनोदधि, (घण) के० घनवात अने (तणुवायाण) के० तनुवात ए त्रण वलयनी मध्ये (जहसंखं) के० यथा संख्याये करीने (सतिभाग गाऊयं) के० घनोदधिमां एक गाउ अने एक गाउनो त्रीजो भागघनवात वलयमां (गाउय) के० एक गाउ, (च) के० अने (तह) के० तेमज तनुवातमां (गाउय तिभागो) के० एक भागनो त्रीजो भाग (खिविज्ज) के० नाखीये त्यारे बीजी शर्कराप्रभानो वलयविष्कंभ (होइ) के० होय छे, (एवं कमेण) के० ए अनुक्रमे (बीयाए) के० बीजी नरक पृथ्वीमां सर्वमली चार योजन, बे गाउ, अने एक गाउना भाग करीये तेवा बे भाग एटलो बीजी नरक पृथ्वीथी चारे दिशाये अलोक छे. हवे (तइया-इसु) के० वालुकाप्रभादि पांचे नरक पृथ्वीना वलयमां (नेयं) के० जे शर्कराप्रभावलयमां नाखेलुं तेने पण कमसो के० अनुक्रमे करीने (दुतिचउपंचछगुणं) के० बे गुण, त्रण गुण, चार गुण, पांच गुण अने छ गुण करीने (खिव) के० मेलववुं एटले वालुकादिकना वलयनो विष्कंभ होय, ॥ ३२४ ॥ ३२५ ॥

छसतिभागा पउणाय पंच वलयाण जोयणपमाणं ॥
एगं बारसभागा, सत्त कमा बीय पुढवीए ॥ ३२६ ॥

अर्थ—बीजी शर्कराप्रभाना (वलयाण) के० वलयोनुं (जोय-णपमाणं) के० योजनप्रमाण ते घनोदधिवलय (छ सति भागा) के० छ योजन अने एक योजनना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग एटलुं जाणवुं, अने घनवातवलय (पउणा पंच) के० पोणा पांच योजननुं जाणवुं. तथा तनुवातना वलयनुं प्रमाण (एगं) के० एक योजन अने (बारस भागा सत्त) के० एक योजनना बार भाग करीये तेवा सात भाग (कमा) के० अनुक्रमे करीने जाणवा. सर्व

एकठा करतां चार योजन बे गाउ अने एक योजनना करीने तेना बे भाग. एटलो बीजी नरकपृथ्वीथी चारे अन्तर छे ॥ ३२६ ॥

जोयण सत्तिभागुण, पंच एवं च वलयपरिमाणं

बारस भागा अट्ठओ, तइयाए जहक्कमं नेयं ॥३

अर्थ—(एवं) के० एरीतीते (तइयाए) के० त्रीजी प्रभाना (वलयपरिमाणं) के० वलयनुं परिमाण ते (जहक्कमं) अनुक्रमे करीने (नेयं) के० जाणवुं. तेमां घनोदधिवलयनुं प्रमाण योजन (सत्तिभागुण) के० छ योजन बे गाउ गाउना त्रण भाग करीए तेना बे भाग अधिक एटलुं जाणवुं. घनवातनुं वलय (पंच) के० पांच योजननुं जाणवुं. अने वलय एक योजन अने (बारस भागा अट्ठओ) के० एक बार भाग करीए तेवा आठ भागनुं जाणवुं. ए सर्व मलीने तेर एक गाउ अने एक गाउना त्रण भाग करीए तेवो एक भाग एटलो वालुकाप्रभानो चारे दिशाये अन्तर छे. ॥ ३२७ ॥

सत्त सभागा पंचओ, चउगाठो जोयणा सउब्भोए

[illegible], [illegible] भागमेयं तु ॥ ३२८

अर्थ—(चउथीए) के० चोथी पंकप्रभाना [illegible] [illegible] के० घनोदधि [illegible] (वलयाणं) के० वलयोनुं [illegible] के० प्रमाण (एयं) के० आ [illegible] छे ते [illegible] घनोदधिनुं प्रमाण (सत्त [illegible]) के० सात योजननुं [illegible] [illegible] के० [illegible] योजननुं, अने [illegible] [illegible] के० [illegible] बे योजननुं, [illegible] [illegible] चार दिशाये अन्तर छे. ॥ ३२८ ॥

सतिभागसत्त तह अट्ठ, छट्ठ वलयाणमाणमेयं तु ॥
जोयणमेगं बारस, भागा दस पंचमीई तहा ॥ ३२९ ॥

अर्थ—(तहा) के० तेमज (पंचमीई) के० पांचमी धूमप्रभा पृथ्वीना (वलयाणमाणे) के० वलयोनुं प्रमाण (एयं) के० आ प्रमाणे जाणवुं. घनोदधिनुं प्रमाण (सतिभागसत्त) के० त्रीजा भागे सहित सात योजननुं, (अट्ठ) के० तथा घनवातनुं प्रमाण (अट्ठ छट्ठ) के० साडा पांच योजननुं, अने तनुवातनुं प्रमाण (जोयणमेगं) के० एक योजन अने एक योजनना (बारस भागा दस) के० एक योजनना बार भाग करीये तेवा दश भागनुं, सर्व मली चौद योजन बे गाउ अने एक गाउना त्रण भाग करीये तेवा बे भाग एटलो धूमप्रभाथी चारे दिशाये अलोक छे. ॥ ३२९ ॥

अट्ठतिभागूणाइं, पउणाइं छच्च वलयपरिमाणं ॥
छट्ठीए जोयण तहा, बारस भागा य इकारा ॥ ३३० ॥

अर्थ—(तहा) के० तेमज (छट्ठी) के० छट्ठी तमप्रभा नरक पृथ्वीनां (वलयपरिमाणं) के० वलयोनुं प्रमाण आ प्रमाणे— (अट्ठतिभागूणाइं जोयण) के० त्रीजे भागे ओछा आठ योजन एटले सात योजन बे गाउ तथा एक गाउना त्रण भाग करीये तेवा बे भाग एटलुं घनोदधिनुं वलय प्रमाण जाणवुं, तथा (पउणाइं छच्च) के० पोणा छ योजननुं घनवातनुं प्रमाण जाणवुं. अने (बारस भागाय इकारा) के० एक योजनना बार भाग करीये तेवा अगीयार भाग एटलुं तनुवातनुं प्रमाण जाणवुं. सर्व मली पंदर योजन एक गाउ अने एक गाउना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग, एटलुं तमप्रभाथकी चारे दिशाए अन्तर छे ॥ ३३० ॥

अट्ठ य छच्चिय दोन्नि य, घणोदहिपाइयाग माणं तु
सत्तममहिए नेयं, जहसंखेणं च तिण्हंपि ॥ ३३१ ॥

अर्थ—(सत्तममहिए) के० सातमी तमतमप्रभा ... (घणोदहिपाइयागमाणं) के० घनोदधिविगेरे वलयोनुं प्रमा... आ प्रमाणे-घनोदधिवलयनुं प्रमाण (अट्ठय) के० आठ ... घनवातनुं प्रमाण (छच्चिय) के० छ योजननुं, अने ... प्रमाण (दोन्नि य) के० बे योजननुं. एम (तिण्हंपि) के० ... वलयनुं प्रमाण (जहसंखं) के० यथा संख्याये करीने ... ए सर्वे मली सोल योजनने तमतमप्रभाथी चारे दिशा... अलोक छे. ॥ ३३१ ॥

अहिं कोइने शंका थाय के-प्रथम तो " वीस सहस्साई ... दहिपिंडो " एटले घनोदधिनो पींड वीस हजार योजननो छे ए... कह्युं छे अने हवणां "(छ अद्धपञ्चम जोयण सड्ढं)" एटले घनोदधि... वलय छ योजन, घनवातनुं साडा चार योजन अने तनुवातनुं दो... योजन केम कहो छो ? तो तेनुं ग्रंथकार समाधान करे छे ॥

मज्झेच्चिय पुढविअहे, घणुदहिपमुहाण पिंडपरिमाणं ॥
भणियं तओ कमेणं, हायइ जा वलय परिमाणं ॥ ११...

अर्थ—जे " वीस सहस्साई घणुदहि पिंडो " ए पाठ कह्यो छे तेना (पुढविअहे) के० नरक पृथ्वीनी नीचे (मज्झेच्चिय) के० निश्चे मध्यभागे (घणुदहिपमुहाण) के० घनोदधि विगेरेनुं (पिंड-परिमाणं) के० पिंड परिमाण (भणियं) के० कह्युं छे. (तओ) के० त्यारपछी (कमेण) के० अनुक्रमे (हायइ) के० घटतुं थाय ते (जावलयपरिमाणं) के० तेटलुं वलयनुं परिमाण छ योजन

इत्यादिक कह्युं छे. तेटलुं जाणवुं एमां विरोध नथी ॥ ३३२ ॥

हवे प्रत्येक नरकपृथ्वीमां नरकावासानी संख्या कहे छे.

तीस पणवीस पनरस, दस तिन्नि पणूण एगलक्खाइं ॥
पंच य नरया कमसो, चुलसी लक्खाइं सत्तसुवि ॥३३३॥

अर्थ—जे नारकी जीवोने उपजवाना स्थानको ते नरकावासा कहेवाय छे. ते पहेली नरकपृथ्वीमां (तीस) के० त्रीश लाख, बीजीमां (पणवीस) के० पचीश लाख, त्रीजीमां (पनरस) के० पंदर लाख, चोथीमां (दस) के० दश लाख, पांचमीमां (तिन्नि) के० त्रण लाख, छट्ठीमां (पणूण एग लक्खाइं) के० एक लाखमां पांच ओछा, अने सातमीमां (पंच य) के० फक्त पांच (नरया) के० नरकावासा (कमसो) के० अनुक्रमे जाणवा. (सत्तसुवि) के० साते नरक पृथ्वीना एकठा करीये एटले (चुलसी लक्खाइं) के० चोरासी लाख नरकावासा थाय छे ॥ ३३३ ॥

सातमी नरक पृथ्वीमां पांच नरकावासा क्यां छे ? ते कहे छे.

पुव्वेण होइ कालो,अवरेण अपइट्ठ ओ महाकालो ॥
रुरु दाहिणपासे, उत्तरपासे महारुरु ॥ ३३४ ॥

अर्थ—(अपइट्ठओ) के० मध्यमां रहेला अप्रतिष्ठान नामना नरकावासथी (पुव्वेण) के० सातमी पृथ्वीमां पूर्व दिशाने विषे (कालो) के० कालनामनो नरकावास (होइ) के० छे. (अवरेण) के० पश्चिम दिशामां (महाकालो) के० महाकाल नरकावास छे. (दाहिणपासे) के० दक्षिण दिशामां (रुरो) के० रुरु नामनो नरकावास छे, अने (उत्तरपासे) के० उत्तर दिशामां (महारुरु) के० महारुरु नामनो नरकावास छे. ॥ ३३४ ॥

हवे साते नरकना प्रतरोनी जूदी जूदी संख्यां कहे छे.

तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्निग पयर सवि गुणवन्ना॥
सीमंताई अपइ–ट्ठाणंता इंदया मज्झे ॥ ३३५ ॥

अर्थ—पहेली नरक पृथ्वीमां (तेर) के० तेर प्रतर, बीजीमां (इक्कारस) के० अगीयार, त्रीजीमां (नव) के० नव, चोथीमां (सग) के० सात, पांचमीमां (पण) के० पांच, छट्ठीमां (तिन्नि) के० त्रण, अने सातमीमां (इग) के० एक. ए (सव्वि) के० सर्वमली (गुणवन्ना) के० ओगण पचास (पयर) के० प्रतर जाणवा. ए सर्वे प्रतरना (मज्झे) के० मध्ये (सीमंताई) के० सीमंतथी आरंभी (अप्पइट्ठाणंता) के० अप्रतिष्ठान सुधी एटले पहेला प्रतरना मध्यमां सीमन्त नामनो अने ओगणपचासमा प्रतरमां अप्रतिष्ठान नामनो (इंदया) के० इन्द्रका एटले मुख्य नरकावास छे. ॥ ३३५ ॥

हवे साते नरकपृथ्वीना मली ओगणपचास प्रतरना मध्यभागना इंद्रक नरकवासनां नाम कहे छे.

सीमन्तओ त्थ पढमो, बीओ पुण रोरूयत्ति नायव्वो॥
भंमो तत्थय तइओ, चउत्थो पुण होइ उज्झंतो॥३३६॥
संभंतमसंभंतो, विप्भंतो चेव सत्तमो नेओ ॥
अट्ठमओ तत्तो पुण, नवमो सीउत्ति नायव्वो॥३३७॥
वक्कंतमवक्कंतो, विक्कंतो तह चेव रोरूओ निरओ ॥
पढमाए पुढवीए, तेरस नीरींदया एए ॥ ३३८ ॥

अर्थ—(भन्य) के० इवे (पढमो) के० पहेलो (सीमंतओ) के० सीमन्त, (पुण) के० वली (बीओ) के० बीजो (रोरुयत्ति) के० रोरुओ (नायव्वो) के० जाणवो० (तय्यय) के० ते पहेली नरकमां (तइओ) के० त्रीजो (रंभो) के० रंभ, (पुण) के० वली (चउत्थो) के० चोथो (उब्भंतो) के० उद्भ्रांतनामनो (होइ) के० होय छे—॥ ३३६ ॥ (संभंतमसंभंतो) के० पांचमो संभ्रांत अने छट्ठो असंभ्रांत, वली (सत्तमो) के० सातमो (विब्भंतो) के० विभ्रांत (चेव) के० निश्चे (नेओ) के० जाणवो० (पुण) के० वली (अट्ठमओ) के० आठमो (भत्तो) के० भक्त अने (नवमो) के० नवमो (सीउत्ति) के० शीतनामनो (नायव्वो) के० जाणवो—॥ ३३७ ॥ (वक्कंत मवक्कंतो) के० दशमो वक्रांत अने अगीयारमो अवक्रांत, बारमो (विक्कंतो) के० विक्रल, (तह) के० तथा तेरमो (रोरुओ निरओ) के० रोरुक नामनो नरकावास (चेव) के० निश्चे जाणवो. (पढमाए पुढवीए) के० पहेली नरकपृथ्वीना (एए) के० ए पूर्वे कहेला (तेरस) के० (तेर नीरीदया) के० मध्यना इंद्रक नरकावास कह्या—॥ ३३८ ॥

थणीए थणकेय तहा, मणए त्रणके य दोइ नायव्वे ॥
घट्टे तह संघट्टे, जिब्भे अवजिब्भीए चेव ॥ ३३९ ॥
लोले लोलावत्ते, तहेव घणलोलुए य बोधव्वे ॥
बीयाए पुढवीए, इक्कारस इंदया एए ॥ ३४० ॥

अर्थ—पहेलो (थणीए) के० स्तनिक, (तहा) के० तथा बीजो (थणकेय) के० स्तनकेत, त्रीजो (मणए) के० मणक, (य) के० अने चोथो (त्रणके) के० त्रणक, ए (दोइ) के० बे (नायव्वे) के० जाणवा पांचमो (घट्टे) के० घट्ट, अने (तह) के० तथा छट्ठो

(संवट्टे) के० संवट्ट, सातमो (तिम्मे) के० तिम्म अने आठमो (अवतिम्मीए) के० अवतिम्म (नेरइ) के० निश्चे होय—॥ ३३९ ॥ नवमो (लोले) के० लोल, दशमो (लोलावत्ते) के० लोलावर्त, (तहेव) के० तेमज अगीआरमो (थणलोलुए) के० थणलोलुक (पायडो) के० नामनो. (बीयाए पुढवीए) के० बीजी नरकपृथ्वीना (एए) के० ए पूर्वे कहेला (इगारस) के० अगीआर (इंदया) के० इंद्रक नरकावास छे० ॥ ३४० ॥

तत्तो तविओ तवणो, तावणो पंचमो निदिट्ठोय ॥
छट्ठो पुण पज्जलिओ, उज्जलिओ सत्तमो नीरओ ॥ ३४१ ॥
संजलिओ अट्ठमओ,संपज्जलिओ य नवमओ भणिओ॥
तइयाए पुढवीए, एए नव होंति नीरइंदा ॥ ३४२ ॥

अर्थ—पहेलो (तत्तो) के० तप्त, बीजो (तविओ) के० तपित, त्रीजो (तवणो) के० तपन, चोथो (तावणो) के० तापन, (य) के० अने (पंचमो) के० पांचमो (निदिट्ठो) के० निदाघ, (पुण) के० वली (छट्ठो) के० छट्ठो (पज्जलिओ) के० प्रज्वलित, अने (सत्तमो) के० सातमो (उज्जलिओ नीरओ) के० उज्वलित नरकावास. ॥ ३४१ ॥ (अट्ठमओ) के० आठमो (संजलिओ) के० संज्वलित, (य) के० अने (नवमओ) के० नवमो (संपज्ज लिओ) के० संप्रज्वलित (भणिओ) के० कह्यो छे. (तइयाए पुढवीए) के० त्रीजी नरक पृथ्वीना (एए) के० ए पूर्वे कहेला (नव) के० नव (नीरइंदा) के० मोटा इन्द्रक नरकावास (होंति) के० छे. ॥ ३४२ ॥

आरे मारे मारे, वच्चे तमए य होइ नायव्वे ॥
खाडखडे खंडखडे, इंदयनिरया चउत्थीए ॥ ३४३ ॥

अर्थ—पहेलो (आरे) के० आर, बीजो (मारे) के० मार, त्रीजो (मारे) के० मार, चोथो (वच्चे) के० वर्च, पांचमो (तमए) के० तम, (होइ) के० छे. छट्ठो (खाडखडे) के० खाडखड अने सातमो (खंडखडे) के० (खण्डखड) ए सात इंदयनिरया) के० इन्द्रक नरकावास (चउत्थीए) के० चोथी नरकपृथ्वीने विषे जाणवा. ॥ ३४३ ॥

खाए तमए य तहा, ऊसे अंधे य तहय तिमिसे य ॥
एए पंचमपुढवी, पंचयनीरइंदया हुंति ॥ ३४४ ॥

अर्थ—पहेलो (खाए) के० खात, बीजो (तमए य) के० तमक, (तहा) के० तेमज त्रीजो (ऊसे) के० ऊस, चोथो (अंधेय) के० अन्ध, (तहय) के० तेमज पांचमो (तिमिसेय) के० तिमिस. (एए) के० ए नामना (पंचयनीरइंदया) के० पांच इन्द्रक नरकावास (पंचमपुढवी) के० पांचमी नरकपृथ्वीने विषे (हुंति) के० छे. ॥ ३४४ ॥

हिम वद्दल लल्लखे, तिन्निउ नीरइंदया उ छट्ठीए ॥
एक्को य सत्तमाए, अपइट्ठाणो य बोधव्वो ॥ ३४५ ॥

अर्थ—पहेलो (हिम) के० हिम, बीजो (वद्दल) के० वद्दल, त्रीजो (लल्लखे) के० लल्लख, (तिन्निउ) के० ए त्रण (नीरइंदया) के० इन्द्रक नरकावास (छट्ठीए) के० छट्ठी नरकपृथ्वीने विषे छे. (य) के० अने (सत्तमाए) के० सातमी नरकपृथ्वीने विषे

(एक्को) के० एक (पयाइछागो) के० प्रमतिष्ठान नामनो नरकावास (बोधवो) के० जाणवो ॥ ३४५ ॥

हवे दरेकप्रतरे ए मध्यना इंद्रक नरकावासाथी केटली श्रेणिओ निकले छे ? तथा ते दरेक श्रेणिमां केटला नरकावासा छे ? ते कहे छे.

तेहिंतो दिसि विदिसि,विणिग्गया अट्ठ निरयआवलीया॥ पढमपयरे दिसि गुण–वन्न विदिसासु अडयाला॥३४६॥

अर्थ—प्रत्येक प्रतरे (तेहिंतो) के० ते मध्यना इंद्रक नरकावासाथी (दिसि) के० चारे दिशामां अने (विदिसि) के० विदिशामां (अट्ठ निरयआवलीया) के० आठ नरक पंक्तिओ (विणिग्गया) के० निकलेली छे. तेमां (पढमपयरे) के० पहेला प्रतरने विषे (दिसि) के० चारे दिशामां चारे पंक्तिने विषे (गुणवन्न) के० ओगणपचास अने (विदिसासु) के० विदिशामां (अडयाला) के० अडतालीस नरकावासा होय छे. ॥ ३४६ ॥

वीयाइसु पयरेसु, इग इग हीणा उ हुंति पंतीओ ॥ जा सत्तमीयपयरे, दिसि इक्किको विदिसि नत्थि॥३४७॥

अर्थ—(वीयाइसु पयरेसु) के० बीजाथी आरंभीने जे प्रतरो छे तेमां (इग इग हीणाउ पंतीओ) के० दरेक प्रतरे एक एक नरकावासे ओछी पंक्तिओ (हुंति) के० होय छे. जेथी (जासत्तमीयपयरे) के० सातमी नरक पृथ्वीना छेल्ला ओगणपचासमा प्रतरने विषे (दिसि) के० चारे दिशामां (इक्किको) के० एक एक, अने (विदिसि) के० विदिसामां (नत्थि) के० एक पण नथी. ॥३४७॥

हवे दरेक प्रतरे दिशा तथा विदिशानी आवलीना मल्या सर्व नरकावासानी संख्या जाणवा माटे करण कहे छे.

इट्ठपयरेगदिसि संखा, अडगुणा चउविणा सइगसंखा ॥
जह सीमंतयपयरे, एगुणनउया सया तिन्नि ॥ ३४८ ॥
अपइट्ठाणे पंच उ, पढमो मुहमंतिमो हवइ भूमि ॥
मुहभूमिसमासद्धं, पयरगुणं होइ सव्वधणं ॥ ३४९ ॥

अर्थ—(इट्ठपयर) के० वांछितप्रतरनी (एगदिसि) के० एक दिशाने विषे (संखा) के० जे नरकावासानी संख्या छे ते आवलीनी अपेक्षाये छे. आवली आठ छे माटे ते संख्याने (अडगुणा) के० आठगुणी करीये, पण विदिशामां एक एक नरकावास ओछो होवाथी (चउविणा) के० चार ओछा करीये. पछी (स) के० एक इंद्रक नरकावास सहित करीये एटले (इगसंखा) के० एक प्रतरे नरकावासानी संख्या थाय. (जह) के० जेम रत्नप्रभाना (सीमंतयपयरे) के० सीमंत नामना पहेला प्रतरमां एकदिशाना नरकावासानी संख्या ओगणपचास छे, तेने आठगुणा करीये त्यारे त्रणसो बाणुं थाय. तेमांथी चार ओछा करता त्रण सो अठयासी रहे. तेमां एक इंद्रक मेलवीये त्यारे (एगुणनउया सया तिन्नि) के० त्रण सो ने नेव्याशी थाय. एवीजरीते बीजे प्रतरे एज प्रमाणे गणतां त्रण सो एक्याशी आवलिका गत नरकावासा होय. ॥३४८॥ एवीज रीते छेल्ला ओगणपचासमा (अपइट्ठाणे) के० अपइट्ठाण प्रतरे एक दिशाये एक नरकावासो छे, तेने आठ गुणो करता आठ थाय तेमांथी विदिशाना चार काढी नाखीये. बाकी चार रहे तेनी साथे एक इंद्रक मेलवतां सातमा नरके आवलिका गत नरकावासा (पंच) के० पांच थाय. ॥

हवे एक एक पृथ्वीने विषे आवलिकागत नरकावासा जाणवामाटे पाछली गाथाना पाछला त्रण पदेकरी करणांतर कहे छे, (पढमो) के० पहेला सीमंतक प्रतरना त्रणसो नेव्यासी आवलिकागत नरकावासाने (मुह) के० मुख कहीये अने (अंतिमो) के० छेल्ला ओगणपचासमा अपइठाण प्रतरना पांच नरकावासा ने (भूमि हवइ) के भूमी कहेवाय. पछी (मुहभूमि) के० मुखना त्रण सो अने नेव्यासी तथा भूमिना पांच तेने (समास) के० एकठाकरीये त्यारे त्रण सो अने चोराणुं थाय. तेनुं (अद्धं) के० अर्द्ध करतां एक सो अने सत्ताणुं थाय. तेने (पयरगुणं) के० ओगणपचास प्रतरे गुणतां (सव्वघणं होइ) के० सर्वे ओगणपचासे प्रतरना आवलिकामां रहेला नरकावासानी संख्या नव हजार छ सो अने त्रेपन थाय, एटला साते पृथ्वीना आवलिकागत नरकावासा जाणवा. बाकी व्यासी लाख नेवुं हजार त्रण सो ने सडतालीश पुष्पावकीर्ण जाणवा. ॥ ३५९ ॥



नं. २
नरकावासनुं कोष्टक.

	कई नरके!	मुख	भूमि	समास:	समासनुं अर्ध.	प्रतर	पंक्तिबंध.	पुष्पाव-कीर्णक	सर्व संख्या.
०	सातें नरकनुं	३८९	५	३९४	१९७	४९	९६५३	८३९०३४७	८४०००००
१	रत्नप्रभाया:	३८९	२९३	६८२	३४१	१३	४४३३	२९९५५६७	३००००००
२	शर्करा प्रभाया:	२८५	२०५	४९०	२४५	११	२६९५	२४९७३०५	२५०००००
३	वालुका प्रभाया:	१९७	१३३	३३०	१६५	९	१४८५	१४९८५१५	१५०००००
४	पंक प्रभाया:	१२५	७७	२०२	१०१	७	७०७	९९९२९३	१००००००
५	धूम प्रभाया:	६९	३७	१०६	५३	५	२६५	२९९७३५	३०००००
६	तमः प्रभाया:	२९	१३	४२	२१	३	६३	९९९३२	९९९९५
७	तमस्तमः प्रभाया:	०	०	०	०	१	१	०	५

अहिं एजवात ग्रंथकार कहे छे—

छण्णवइसय तिवण्णा, सत्तसु पुढवीसु आवलीनिरया ॥
सेस तियासी लक्खा,तिसय सियाला नवइ सहस्सा।३५०।

अर्थ—(सत्तसु पुढवीसु) के० साते नरक पृथ्वीमां (आवली निरया) के० आवलिकामां रहेला नरकावासा (छण्णवइसय) के० छन्नु सो अने (तिवण्णा) के० त्रेपन छे. अने (शेष) के० बाकी (तियासी लक्खा) के० ज्यासी लाख, (नवइ सहस्सा) के० नेवुं हजार, (तिसय) के० त्रण सो अने (सियाला) के० सडतालीश. एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा जाणवा. सर्वमलीने चोरासी लाख नरकावासा छे. ॥ ३५० ॥

तिण्णि सया अउणनउया,दोतिणउया य हुंति पुढवीए ॥
दोसय पंचासीया, पंचुत्तर दोत्ति बीयाए ॥ ३५१ ॥

अर्थ—(पुढवीए) के० पहेली नरकपृथ्वीने विषे (तिण्णि सया) के० त्रण सो अने (अउणनउया) के० नेव्यासी नरकावासानुं मुख तथा (दोतिणउयाय) के० बसो अने त्राणु नरकावासानी भूमि (हुंति) के० छे. (बीयाए) के० बीजी नरक पृथ्वीने विषे (दोसय पंचासीया) के० बसोने पंचासी नरकावासानुं मुख अने (पंचुत्तर दोत्ति) के० बसोने पांच नरकावासानी भूमि छे. ॥ ३५१ ॥

सत्ताणुयं सयं च, तित्तीस सयं सयं च पणवीसं ॥
सत्तुत्तरि अउणत्तरी, सत्तत्तिसा य गुणतीसा ॥ तेरस
मुह भूमिओ ॥ ३५२ ॥

अर्थ—त्रीजी नरकपृथ्वीने विषे (सत्ताणुयं सयं च) के० एक सो सत्ताणु नरकावासानुं मुख अने (तित्तीससयं) के० एक सो तेत्रीश नरकावासानी भूमि छे. चोथी नरकपृथ्वीने विषे (सयं च पणवीसं) के० एक सो पचीस नरकावासानुं मुख अने (स त्तरि) के०सित्योतेर नरकावासानी भूमि छे. पांचमी नरकपृथ्वीने विषे (अडणवई) के० ओगणोचर नरकावासानुं मुख अने (सत तिसा) के० साडत्रीस नरकावासानी भूमि छे. छठ्ठी नरकपृथ्वीने विषे (गुणतीसा) के० ओगणत्रीस नरकावासानुं मुख अने (तेरस) के० तेर नरकावासानी भूमि छे. ए (मुहभूमिओ) के० मुख अने भूमि कह्या. परंतु सातमी नरकने विषे प्रतरो नथी माटे मुख अने भूमि नथी ॥ २५२ ॥

सत्तट्ठि पणसय पण–नवइ सहस्स लक्ख गुणतीसं ॥
रयणाए सेढिगया,चउयाल सया य तित्तीसा ॥२५३॥

अर्थ—(रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीमां (लक्ख गुण-तीसं) के० ओगणत्रीस लाख, (पण नवइ सहस्स) के० पंचाणु हजार, (पणसय) के० पांच सो अने (सत्तट्ठि) के० सडसठ एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे. तथा (सेढिगया) के० श्रेणिमां रहेला (चउयालसया य तित्तीसा) के० चुमालीस सो अने तेत्रीस नरकावासा छे. सर्व मळी त्रीस लाख नरकावासा रत्नप्रभा पृथ्वीमां जाणवा. ॥ २५३ ॥

सत्ताणवइ सहस्सा, चउवीसं लक्ख तिसय पंचहिया ॥
बीयाए सेढिगया, छव्वीससया य पणनउया ॥२५४॥

अर्थ—(बीयाए) के० बीजी नरकपृथ्वीमां (चउवीस

लक्ख) के० चोवीसलाख, (सत्ताणवइ सहस्सा) के० सत्ताणु हजार, (तिसय) के० त्रण सो अने (पंचहिया) के० पांच अधिक एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे. तथा (सेढिगया) के० श्रेणिमां रहेला (छव्वीस सया) के० छवीस सो (य) के० अने (पणनउया) के० पंचाणु नरकावासा छे. सर्व मली पच्चीस लाख नरकावासा बीजी शर्कराप्रभा नरकपृथ्वीमां जाणवा. ॥ ३५४ ॥

पंचसया पन्नरसा, अडनउय सहस्स लक्ख चउदस य॥
तइयाए सेढीगया, पणसीयाओ चउदसया ॥ ३५५॥

अर्थ—(तइयाए) के० त्रीजी नरकपृथ्वीमां (चउदस लक्ख) के० चउद लाख, (अडनउय सहस्स) के० अठाणु हजार, (पंचसया) के० पांच सो अने (पन्नरसा) के० पनर एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे. अने (सेढीगया) के० श्रेणिमां रहेला (चउदसया) के० चउद सो अने (पणसीयाओ) के० पंचाशी नरकावासा छे. सर्व मली पनर लाख नरकावासा त्रीजी वालुकाप्रभा नरकपृथ्वीमां जाणवा. ॥ ३५५ ॥

तेणउया दोन्निसया, नवनवई सहस्स नव य लक्खा य॥
पंकाए सेढीगया, सत्तसया हुंति सत्तहिया ॥ ३५६॥

अर्थ—(पंकाए) के० चोथी पंकप्रभा नरकपृथ्वीमां (नव य लक्खा) के० नव लाख, (नवनवइ सहस्स) के० नवाणुं हजार, (दोन्निसया) के० बसो अने (तेणउया) के० त्राणु, एटला पुष्पावकीर्ण नरकावासा छे, अने (सेढीगया) के० श्रेणिमां रहेला (सत्तसया) के० सात सो अने (सत्तहिया) के० सात अधिक एटला नरकावासा (हुंति) के० छे. सर्व मली दश लाख नरकावासा चोथी पंकप्रभा नरकपृथ्वीमां जाणवा. ॥ ३५६ ॥

वाचों [अंतो वट्टा] के० मांहेला भागमां गोलाकार, (बहि चउरंस
के० बहार चोरस अने (हिट्ठा) के० नीचे (खुरप्पसंठाणा)
खुरपाना फळने घाट कापवाना एक जातना हथीयार सरखा आ
स्थानो अने [नरगदुगंधा] के० अत्यंत दुर्गंधवाळा (मंडीया)
रहेला छे. ते नरकावासा देवलोकना आवलिकागत विमाननी
वृत्त त्रिखूणा अने चोखूणा अनुक्रमे जाणवा. (अने पुष्पावकी
नरकावासा अनेकप्रकारना संस्थानवाला जाणवा. ॥ २५९ ॥

हवे नरकावासानुं लांबपणुं पहोळापणुं अने उंचाणुं कहे छे.

तिसहस्सुच्चा सव्वे, संखमसंखिज्ज वित्थडायामा ॥
पणयाललक्ख सीमं-तओ य लक्खं अपइट्ठाणो ॥२६

अर्थ—सातें नरकपृथ्वीमां जेटला नरकावासा छे ते (सव्वे)
के० ते नरकावासा [तिसहस्सुच्चा] के० त्रण हजार योजन उं
छे. तथा (वित्थडायामा) के० पहोळाइये अने लांबा
[संखमसंखिज्ज] के० कोइक संख्याता योजन अने कोइक अ
संख्याता योजन छे, पण तेमां (सीमंतओ) के० पहेला सीम
नामनो इन्द्रक नरकावासो [पणयाललक्ख] के० पीस्तालीस ला
योजन लांबो अने पहोळो छे. (य) के० अने सातमी
के० छेल्ली सातमीमां इन्द्रक नरकावासो ... के०
लाख योजन लांबो अने पहोळो छे. ए आवलिकागत नरका
शिवाय बाकीना नरकावासा छे ते थोडाके संख्याता अने घणा
बाकी असंख्याता कोडाकोडी योजन जाणवा. ॥ २६० ॥

छिट्ठा चरमो सहस्सं, उवरिमे कुड्डओ सहस्सं तु ॥
मज्झे सहस्स सुसिरा, तिन्नि सहस्सुच्चया निरया ॥२६

अर्थ—सर्वे नरकावासा (हिट्ठो) के० नीचे (पणो सहस्सं) के० एक हजार योजननी पाठ उंची पीठिकावाळा, (तु) के० वळी (उप्पिंसे) के० उपरना भागमां (कुहभो सहस्सं) के० एक हजार योजनना शिखराकारे संकोचवाळा अने (मज्झे) के० मध्यभागने विषे (सहस्स सुसिरा) के० एक हजार योजननी पोलाणवाळा छे, एम सर्व मळीने (तिन्नि सहस्स) के० त्रण हजार योजन (उच्चया) के० ऊंचा (निरया) के० नरकावासा छे. ॥ ३६१ ॥

छसु हिट्ठुवरि जोगण, सहस्स बावन्नसड्ढ चरिमाए ॥
पुढवीनिरयरहियं, निरया सेसंमि सव्वासु ॥ ३६२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभादि साते नरकपृथ्वीना जे एक लाख ऐंशी हजार योजन विगेरे पृथ्वीपिंड कह्या छे तेमां (छसु) के० पहेली रत्नप्रभादिक छ पृथ्वीओमां (हिट्ठुवरि) के० नीचे अने उपर (जोयण सहस्स) के० एक एक हजार योजन शेष नरकावासाथी रहित जाणवुं, अने (चरिमाए) के० सातमी नरकपृथ्वीने विषे नीचे अने उपर (बावन्न सड्ढ) के० साडीबावन हजार साडीबावन हजार योजन (पुढवीनिरयरहिय) के० शेष नरकावासाथी रहित जाणवु. (सेसंमि सव्वासु) के० बाकी सघळी पृथ्वीने विषे (निरया) के० नरकावासा जाणवा. ॥ ३६२ ॥

हवे दरेक नरक पृथ्वीमां प्रतरे प्रतरे केटलुं अंतर छे ? ते कहे छे.

बिसहस्सुणा पुढवी, तिसहस्स गुणिएहिं नियय पयरेहिं ॥
ऊणा रूवूणनियपयर, भाइया पत्थडंतरं ॥ ३६३ ॥

—

वासा [अंतो वट्टा] के० महिला भागमां गोळाकार, (बहि चउरंसा) के० बहार चोरस अने (हिट्ठा) के० नीचे (खुरप्पसंठाणा) के० खुरपना फळाने घास कापवाना एक जातना हथीयार सरखा आका-रवाळा अने [परमदुग्गंधा] के० अत्यंत दुर्गंधमय [संठीया] के० रहेला छे. ते नरकावासा देवलोकना आवळिकागत विमाननी पेठे वृत्त त्रिखुणा अने चोखुणा अनुक्रमे जाणवा. अने पुष्पावकीर्ण नरकावासा अनेकप्रकारना संस्थानवाळा जाणवा. ॥ ३५९ ॥

हवे नरकावासानुं लांबपणुं पहोळपणु अने उंचपणु कहे छे.

तिसहस्सुच्चा सव्वे, संखमसंखिज्ज वित्थडायामा ॥
पणयाललक्खसीमंतओ य लक्खं अपइठाणो ॥३६०॥

अर्थ—साते नरकपृथ्वीओमां जेटला नरकावासा छे ते (सव्वे) के० सर्व नरकावासा [तिसहस्सुच्चा] के० त्रण हजार योजन उंचा छे. तथा (वित्थडायामा) के० पहोळपणे अने लांबपणे [संखमसंखिज्ज] के० कोइक संख्याता योजन अने कोइक असं-ख्याता योजन छे, पण तेमां पहेलीमां के० प्रथम सीमंत नामनो इन्द्रक नरकावासो [पणयाललक्ख] के० पीस्तालीश लाख योजन लांबो अने पहोळो छे. य के० अने [illegible] के० छेल्लो अप्रतिष्ठान इन्द्रक नरकावास [illegible] के० एक लाख योजन लांबो अने पहोळो छे. ए अप्रतिष्ठानने टाळी [illegible] चार नरकावासा छे ते संख्याते योजने [illegible] अने बाकी [illegible] असंख्याता कोडाकोडी योजन जाणवा. ॥ ३६० ॥

हिट्ठा घणो सहस्सं, उप्पिं संकुडओ सहस्स तु ॥
मज्झे सहस्स सुसिरा, तिन्नि सहस्सुसिया निरया ॥३६१॥

अर्थ—सर्वे नरकावासा (हिट्ठा) के० नीचे (घणो सहस्सं) के० एक हजार योजननी घाट उंची पीठिकावाला, (तु) के० वली (उप्पिंसे) के० उपरना भागमां (कुट्टओ सहस्सं) के० एक हजार योजनना शिखराकारे गोपडावाला अने (मज्झे) के० मध्यभागने विषे (सहस्स सुसिरा) के० एक हजार योजननी पोलाणवाला छे, एम सर्वे मलीने (तिन्नि सहस्स) के० त्रण हजार योजन (उच्चया) के० ऊंचा (निरया) के० नरकावासा छे. ॥ २६१ ॥

छसु हिट्ठुवरि जोयण, सहस्स बावन्नसड्ढ चरिमाए ॥
पुढवीनिरयरहियं, निरया सेसंमि सव्वासु ॥ २६२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभादि साते नरकपृथ्वीना जे एक लाख एंशी हजार योजन विगेरे पृथ्वीपिंड कह्या छे तेमां (छसु) के० पहेली रत्नप्रभादिक छ पृथ्वीओमां (हिट्ठुवरि) के० नीचे अने उपर (जोयण सहस्स) के० एक एक हजार योजन शेष नरकावासाथी रहित जाणवुं, अने (चरिमाए) के० सातमी नरकपृथ्वीने विषे नीचे अने उपर (बावन्न सड्ढ) के० साडीबावन हजार साडीबावन हजार योजन (पुढवीनिरयरहियं) के० शेष नरकावासाथी रहित जाणवुं. (सेसंमि सव्वासु) के० बीजी समस्त पृथ्वीने विषे (निरया) के० नरकावासा जाणवा. ॥ २६२ ॥

हवे दरेक नरक पृथ्वीमां प्रतरे प्रतरे केटलुं अंतर छे ? ते कहे छे.

तिसहस्सुणा पुढवी.तिसहस्स गुणिएहिं नियपयरेहिं॥
ऊणा निरूवूणपयर, भाईया पत्थडंतरयं ॥ २६३ ॥

अर्थ—(पुढवी) के० पहेली नरक पृथ्वीना पिंडमांथी (विमहस्सुणा) के० एक हजार उपरथी अने एक हजार नीचेथी एम बे हजार योजन ओछा करीये. पछी दरेक प्रतर त्रण त्रण हजार योजन उंचा छे माटे (तिसहस्स गुणिएहिं) के० त्रण हजारवडे गुणेला (नियपयरेहिं) के० पोतपोताना प्रतरोनी जे संख्या थाय ते (ऊणा) के० ओछी करवी. पछी (रूवूण) के० एक रूप करीने (नियपयरभाईया) के० पोत पोताना प्रतरना जेटला आंतरा होय तेथी भागाकार करवो एटले (पत्थडंतरयं) के० प्रतर प्रतरनुं अंतर प्रमाण थाय छे. ॥ २६३ ॥

हवे ते उदाहरणथी स्पष्ट समजावे छे के-रत्नप्रभा पृथ्वीनो पिंड एक लाख एंशी हजार योजननो छे. तेमांथी बे हजार योजन काढीये एटले बाकी एक लाख अठ्ठोतेर हजार रहे. हवे ए पृथ्वीना तेर प्रतर छे ते दरेक त्रण त्रण हजार योजन उंचा छे माटे तेरने त्रण हजारे गुणीये त्यारे ओगणचालीस हजार थाय. एटला एक लाख अठ्ठोतेर हजारमांथी काढीये बाकी एक लाख ओगणचालीस हजार रहे, तेने तेर प्रतरनी वचमां बार आंतरा छे. माटे बारे भाग आपीये एटले एक एक आंतरे अगीयार हजार त्रासी अने त्याशी योजन, अने ते उपर एक योजनना त्रण भाग करीये तेवो एक भाग एटलुं रत्नप्रभाना प्रतर प्रतर वच्चे अन्तर जाणवुं. एवीज रीते बीजी नरक पृथ्वीओने विषे पण पोतपोताना प्रतरे भाग दीधाथी जे आंक आवे ते प्रत्येक अन्तर जाणवुं. एज भावनो गाथाथी कहे छे.

तेसीया पंचसया, इक्कारस चेव जोयणसहस्सा ॥
रयणाए पत्थडंतर-मेगो चिय जोयणतिभागो ॥२६४॥

अर्थ—(रयणाए) के० पहेली रत्नप्रभा पृथ्वीमां (इक्कारस

जोयणसहस्सा) के० अगीयार हजार, (पंचसया) के० पांचसो अने (तेसीया) के० त्यासी एटला योजन, तथा (एगो जोयण-तिभागो) के० एक योजनना त्रण भाग करीये तेमो एक भाग. एटलुं (पत्थडंतरं) के० प्रतरे प्रतरे अन्तर (बिय) के० निश्चे जाणवुं. ॥ ३६४ ॥

सत्ताणवइ सयाइं, वीयाए पत्थडंतरं होइ ॥

पणहत्तरि तिण्णि सया, बारस सहस्स तइयाए॥३६५॥

अर्थ—(बीयाए) के० बीजी नरकपृथ्वीने विषे अगीयार प्रतरना दश आंतरामां (सत्ताणवइ सयाइं) के० नव हजार अने सात सो योजननुं (पत्थडंतरं होइ) के० प्रतरे प्रतरे आंतरुं होय. (तइयाए) के० त्रीजी नरकपृथ्वीने विषे नव प्रतरना आठ आंतरामां (बारस सहस्स) के० बार हजार, (तिण्णिसया) के० त्रण सो अने (पणहत्तरि) के० पंचोतेर योजननुं प्रतरे प्रतरे अंतर होय. ॥ ३६५ ॥

छावट्ठिसयं सोलस, सहस्स एगो य दो विभागाइ ॥

अड्ढाइज्ज सयाइं, पणवीस सहस्स धूमाए ॥ ३६६ ॥

अर्थ—चोथी नरकपृथ्वीना सात प्रतरना छ आंतरामां (सोलस सहस्स) के० सोल हजार (छावट्ठिसयं) के० एक सो ने छासठ योजन (य) के० अने (एगो दो विभागाइ) के० एक योजनना त्रण भाग करीये तेवा बे भाग एटलुं प्रतरे प्रतरे अंतर होय. पांचमी (धूमाए) के० धूमप्रभा नरकपृथ्वीने विषे पांच प्रतरना चार आंतरामां (पणवीस सहस्स) के० पचीस हजार अने (अड्ढाइज्ज सयाइं) के० अढीसो अर्थात् बसो पचास योजननुं प्रतरे प्रतरे अंतर छे. ॥ ३६६ ॥

बावन्न सहस्साइं. पंचेव हवंति जोयणसयाइं ॥
पत्थडअंतरमेयं, छट्ठीपुढवीए नेयव्वं ॥ ३६७ ॥

अर्थ—(छट्ठीपुढवीए) के० छठी तमप्रभा नरकपृथ्वीने विषे त्रण प्रतरना बे आंतरामां (बावन्न सहस्साइं) के० बावन हजार अने (पंचेव जोयणसयाइं) के० पांचसो योजन. (एयं) के० एटलुं (पत्थडअंतरं) के० प्रतरे प्रतरे अंतर (नेयव्वं) के० जाणवुं. ॥ ३६७ ॥ (सप्तम्यां त्वेक एव प्रतर इति तदंतरं न संभवति ॥ उक्तं नारकाणां प्रसंगवशाद्भवनद्वारम् ॥ अर्थ-वली सातमी तमस्तमप्रभा नरकपृथ्वीमां एकज प्रतर होवाथी तेमां आंतरुं संभवे नहीं.एम ए प्रसंगने अनुसरी नारकी जीवोनुं भवनद्वार कह्युं.

अथ नारकाणामवगाहनाद्वारमारभ्यते ॥

हवे ते नारकी जीवोनुं अवगाहना द्वार एटले शरीरप्रमाणद्वार कहे छे.

पउणट्ठधणु छ अंगुल, रयणाए देहमाणमुक्कोसं ॥
सेसासु दुगुणदुगुणं,पण धणुसय जाव चरिमाए॥३६८॥

अर्थ—(रयणाए) के० पहेली रत्नप्रभा नरकपृथ्वीमां नारकीओनुं (उक्कोसं) के० उत्कृष्टुं (देहमाणं) के० शरीर प्रमाण (पउणट्ठधणु) के० पोणा आठ धनुष्य अने (छ अंगुल) के० छ अंगुलनुं होय छे. अने (सेसासु) के० बाकीनी छ पृथ्वीमां (दुगुणदुगुणं) के० प्रथमनी नरक करतां बमणुं बमणुं अनुक्रमे जाणवुं. ते (जाव चरिमाए) के० छेल्लामां छेल्ली नरकपृथ्वीने विषे

(पण धणुसय) के० पांच सो धनुष्यनुं उत्कृष्ट शरीर प्रमाण होय. ॥ जेमके:रत्नप्रभामां साग धनुष्य त्रणहाथ छ आंगुल, शर्करप्रभामां पन्नर धनुष्य बे हाथ बार अंगुल, वालुका प्रभामां एकत्रीश धनुष्य एक हाथ. पंकप्रभामां बासठ धनुष्य बे हाथ, धूमप्रभामां एक सो पचीस धनुष्य, तमप्रभामां अढी सो धनुष्य, अने तमतमप्रभामां पांच सो धनुष्यनुं उत्कृष्ट शरीर प्रमाण होय. ॥ ३६८ ॥

हवे रत्नप्रभाना प्रतर प्रतरे जूदुं जूदुं देहमान कहे छे.

रयणाएपढमपयरे. हत्थतियं देहमाणमणुपयरं ॥
छप्पणंगुलसड्ढा, वुड्ढी जा तेरसे पयरे ॥ ३६९ ॥

अर्थ—(रयणाएपढमपयरे) के० रत्नप्रभा पृथ्वीना पहेला प्रतरे (हत्थतियं देहमाणं) के० त्रण हाथनुं उत्कृष्ट शरीर प्रमाण छे. त्यार पछी (अणुपयर) के० प्रतरे प्रतरे (छप्पणंगुलसड्ढा) के० साडा छप्पन अंगुलनी (वुड्ढी) के० वृद्धि करवी के-जेथी (जा तेरसे पयरे) के० तेरमा प्रतरे पोणा आठ धनुष्य अने छ अंगुलनुं प्रमाण पूर्ण थाय. ॥ ३६९ ॥

हवे शर्करादिकना प्रतरे प्रतरे उत्कृष्टुं देहमान कहे छे.

जं देहपमाणं उवरि-माए पुढवीए अंतिमे पयरे ॥
तं चिय हिट्ठिमपुढवी-पढमपयरंमि बोधव्वं ॥ ३७० ॥

अर्थ—(उवरिमाए पुढवीए) के० उपर उपरनी पृथ्वीना (अंतिमे पयरे) के० छेल्ला प्रतरने विषे उत्कृष्टुं (जं देहपमाणं) के० जे शरीर प्रमाण होय (तं) के० ते प्रमाण (चिय) के० निश्चे (हिट्ठिमपुढवीपढमपयरंमि) के० नीचेनी पृथ्वीना पहेला प्रतरे (बोधव्वं) के० जाणवुं ॥ ३७० ॥

तं चेगूणगसगपयर, भइयं वीयाइ पयर वुड्डिभवे ॥
निकर तिअंगुल करसत्त,अंगुला सट्टि गुणवीसं॥३७१॥
पण धणु अंगुलवीसं, पनरसधणु दुन्नि हत्थ सड्ढा य॥
वासट्ठि धणुहसड्ढा,पण पुढवी पयर वुड्ढि इमा ॥३७२॥

अर्थ—(तं च) के० ते शर्करादिक पृथ्वीना पहेले मतरे जे देहमान आवे तेने (एगूणग) के० एक उणे (सगपयर) के० पोत पोताने प्रतरे (भइयं) के० भाग आपवो. तेम करतां जे आंक आवे ते शर्करादिक पृथ्वीना (वीयाइ पयर) के० बीजा प्रतरादिकने विषे (वुड्ढिभवे) के० वृद्धि होय, पण ते वृद्धि बीजी नरकपृथ्वीथी आरंभी छट्ठी पृथ्वी सुधी एटले पांच पृथ्वीना बीजा प्रतरे अनुक्रमे जाणवी. हवे शर्कराप्रभाना प्रथम प्रतरे सात धनुष्य त्रण हाथ अने छ अंगुल देहमान छे, तेमां (निकर तिअंगुल) के० त्रण हाथ अने त्रण अंगुलनी वृद्धि करीये, तथा त्रीजा नरके प्रथम प्रतरे पन्नर धनुष्य बे हाथ अने बार अंगुलनुं देहमान छे तेमां (करसत्त अंगुला सट्ठि गुणवीस) के० सात हाथ ने साडी ओगणीश अंगुलनी वृद्धि करीये–॥ ३७१ ॥ चोथा नरकना पहेले प्रतरे एकत्रीश धनुष्य अने एक हाथनुं शरीर प्रमाण छे. तेमां (पण धणु अंगुलवीसं) के० पांच धनुष्य ने वीश अंगुलनी वृद्धि करीये. पांचमा नरकना पहेले प्रतरे साडीबासठ धनुष्यनुं देहमान छे, तेमां (पनरस धणु दुन्नि हत्थ सड्ढाय) के० पन्नर धनुष्य ने अढीहाथनी वृद्धि करीये. छट्ठा नरकना पहेले प्रतरे एक सो पचीस धनुष्यनुं देहमान छे, तेमां (वासट्ठि धणुहसड्ढा) के० बासठ धनुष्य अने बे हाथनी वृद्धि करीये. एम (पण पुढवी पयर वुड्ढि इमा)के० पांच नरक पृथ्वीना प्रतरोने विषे ए प्रमाणे वृद्धि करवी. ॥ ३७२ ॥

एम वात विस्तार सहित समजावे छे के-शर्कराप्रभाना पहेला प्रतरे सात धनुष्य त्रण हाथ अने छ अंगुल देहमान छे. ते सात धनुष्यना अठ्ठावीस हाथ थाय तेनी साथे उपरना त्रण हाथ मेळवतां एकत्रीस हाथ थाय. तेना अंगुल करवामाटे चोवीसे गुणीये तो सात सो चुमालीस अंगुल थाय, तेमां उपरना छ अंगुल मेळवतां सर्व मळी सात सो पचास अंगुल थाय. तेने शर्करा प्रभाना अगीयार प्रतरने एके ऊणा करी दशे भाग आपीये तो एक एक भागे पंचोतेर अंगुल आवे. तेना त्रण हाथ अने त्रण अंगुल थाय. एटली शर्कराप्रभा पृथ्वीना पहेला प्रतरने विषे देहमाननी वृद्धि थाय. एम बीजा प्रतरथी आरंभी दरेक प्रतरे एवीज रीते वृद्धि करवी. ए प्रमाणे बीजीथी छठ्ठी सुधी प्रत्येक नरक पृथ्वीने विषे जाणवुं. समजणमाटे यंत्र स्थापना जोवी. सातमी नरके एकज प्रतर छे माटे त्यां उत्कृष्ट पांचसो धनुष्यनुंज देहमान छे.

हवे नारकीनुं उत्कृष्ट तथा जघन्य उत्तरवैक्रिय शरीर प्रमाण कहे छे.

इय साहाविय देहा, उत्तरवेउव्विओ य तद्दुगुणो ॥
दुविहावि जहन्नकमा, अंगुल असंख संखंसो ॥३७३॥

अर्थ—(इय) के० ए पूर्वे सातै नरकना नारकीओनुं (साहाविय देहो) के० स्वाभाविक एटले भवधारणीय शरीर प्रमाण कयुं. (तद्दुगुणो) के० तेनाथी बमणुं (उत्तरवेउव्विओय) के० उत्तर वैक्रिय-शरीर जाणवुं. जेमके रत्नप्रभाने विषे पन्नर धनुष्य बे हाथ अने बार अंगुल उत्तर वैक्रिय शरीर होय. अने सातमीनरके एक हजार धनुष्य उत्तर वैक्रिय शरीर होय. ए भवधारणीय अने उत्तर वैक्रिय शरीरनुं प्रमाण कयुं. हवे (दुविहावि जहन्न कमा) के० अनुक्रमे बे प्रकारे जघन्य शरीर प्रमाण कहे छे. एक भवधारणीय बीजुं

उत्तरवैक्रिय. ए बन्ने शरीर जघन्यथी साते नरकमां अनुक्रमे (अंगुल असंख संखंसा) के० अंगुलनो असंख्यातमो भाग तथा संख्यातमो भाग होय. अहिं भवधारणीय शरीर उत्पत्ति वेळाये अंगुलने असंख्यातमे भागे अने उत्तरवैक्रिय शरीर आरंभती वखते अंगुलना संख्यातमे भागे होय एम जाणवुं. नारकीनुं अवगाहना द्वार पूर्ण थयुं ॥

हवे नारकीना जीवोनुं उत्पत्तिविरह तथा चवनविरहनुं द्वार दोढ गाथाथी कहे छे.

मत्तसु चउवीस मुहू,सग पनर दिणेग दु चउ छमासा॥
उववाय चवणविरहो, ओहे बारस मुहुत्त गुरू ॥२७॥
लहुओ दुहावि समओ,संखा पुण सुरसमा मुणेयव्वा॥

अर्थ—(सत्तसु) के० साते नरकमां अनुक्रमे पहेले पहेलीए (चउवीस मुहू) के० चोवीश मुहूर्त, बीजीए (सग) के० सात दिवस, त्रीजीए (पनर दिण) के० पन्नर दिवस, चोथीए (एग) के० एक मास, पांचमीए (दु) के० बे मास, छट्ठीए (चउ) के० चार मास, अने सातमीए (छ मासा) के० छमास सुधी (उववायचवणविरहो) के० उपपात तथा चवननो विरहकाल जाणवो. एटले के साते नरकमां नारकी जीवो घणुं करीने निरंतर उपजे छे अने चवे छे, परंतु (ओहे) के० सामान्यपणे सातेमां न उपजे अने न चवे तो (लहुओ) के० जघन्यथी साते नरके (दुहाविसमओ) के० साथे पण एक समय अने जुदो पण एक समय विरह पडे अने (गुरू) के० उत्कृष्टथी (बारस मुहुत्त) के० बार मुहूर्तनो विरहकाल जाणवो. (पुण) के० वळी नारकीना जीवोनी उपपात तथा चवननी (संखा) के० संख्या तो (सुरसमा) के०

देवताना गरखो एटले एक समयमां एक बे त्रण छेवट संख्याता अने असंख्याता मुधीनी मुगेयद्धा के० जाणवो. ए नारकीनुं उपपातविरहद्वार तथा चवनविरहद्वार कधुं.

हवे कयो जीव नरके जाय ते गतिद्वार कहे छे.

संखाउ पजत्त पणिंदि-तिरिनरा जंति निरएसु ॥३७५॥

अर्थ—(संखाउ) के० संख्याता आयुष्यवाला (पजत्त) के० पर्याप्ता (पणिंदि तिरिनरा) के० पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य नरकायु बांधे तो (जंति निरएसु) के० नरकमां जाय छे. ॥३७५॥

हवे कया जीवो नरकायु बांधे ? ते कहे छे.

मिच्छदिट्ठि महारंभ,परिग्गहो तिव्वकोह निस्सीलो ॥
नरयाऊय निबंधइ, पावमई रुद्दपरिणामो ॥ ३७६ ॥

अर्थ—(मिच्छदिट्ठि) के० मिथ्यात्वी, (महारंभ) के० महोटा आरंभ करनारो, (परिग्गहो) के० बहुपरिग्रहधारी, (तिव्वकोह) के० आकरा क्रोधवालो, (निस्सीलो) के० शील रहित, (य) के० वली (पावमई) के० पापबुद्धिवालो अने (रुद्दपरिणामो) के० रौद्रपरिणामि एवो जीव (नरयाउ) के० नरकनुं आयुष्य (निबंधइ) के० बांधे छे. ॥ ३७६ ॥

हवे विशेषपणाथी जूदी जूदी नरकगतिए जनारा जीवो कहे छे.

असन्नि सरिसिव पक्खी,सीह उरगि त्थि जंति जाछट्ठिं ॥
कमसो उक्कोसेणं, सत्तम पुढवी मणुयमच्छा ॥३७७॥

अर्थ—(असन्नि) के० असंज्ञी सम्मूर्च्छिम पंचेंद्रिय पर्याप्तो तिर्यंच जो नरकायु बांधे तो पहेली नरके जाय, त्यां ते जघन्यथी

दश हजार वर्ष अने उत्कृष्टथी पल्योपमना असंख्यातमा भागना आयुष्ये उत्पन्न थाय तथा (सरिसिव) के० भूजपरिसर्प ते नोलीया दिक जीवो बोजी नरक सुधी जाय, (पक्खी) के० गीध सीचाणादिक मांसाहारी पक्षीओ रौद्र अध्यवसायने लीधे त्रीजी नरक सुधी जाय, (सीह) के० सिंह चित्रा बीलाडा विगेरे हिंसकजीवो चोथी नरकसुधी जाय, (उरगि) के० उरपरिसर्प ते दरेक जातिना सर्पो पांचमी नरकसुधी जाय, (त्थि) के० स्त्रीओ दे नरकायुबांधनारा स्त्रीरत्न प्रमुख ते (जाछट्ठि) के० छट्ठी नरकसुधी जंति के० जाय छे. वली गर्भजपर्याप्ता (मणुयमच्छा) के० मनुष्य अने मच्छ ते (उक्कोसेणं) के० उत्कृष्टथी (सत्तमपुढवी) के० सातमी नरक सुधी जाय. ए (कमसो) के० अनुक्रमे उत्कृष्टगति कही, अने जघन्यथी रत्नप्रभाना पहेला प्रतरसुधी जाय. बाकीनी सर्व मध्यम गति जाणवी ॥ ३७७ ॥

हवे केटलाक अतिक्रूर तिर्यचनी मार्ग करीने गति कहे छे.

वाला दाढी पक्खी, जलयर नरगागया उ अइक्रूरा ॥
जंति पुणो नरएसु, बाहुल्लेणं न उण नियमा ॥३७८॥

अर्थ—(वाला) के० व्याल एटले सर्प विगेरे, (दाढी) के० दाढवाला ते सिंह विगेरे, (पक्खी) के० पक्षी ते गीध विगेरे अने (जलयर) के० जलचर ते मत्स्य विगेरे. एटली जातना जीवो (नरगागया) के० नरकथी आव्या होय तो पण (अइक्रूरा) के० अति क्रूरपणाने लीधे (बाहुल्लेणं) के० घणुंकरीने (पुणो) के० पण (नरएसु) के० नरकने विषे (जंति) के० जाय छे. परन्तु (नउण नियमो) के० तेनो निश्चय नथी. कारण कोई जीव नरकथी आवी सम्यक्त्व पामी सारा संघयणने लीधे मोक्ष पण पामे छे. ॥ ३७८ ॥

हवे नारकीने संघयण अने लेश्या कहे छे.

दो पढमपुढविगमणं, छेवट्ठे कीलियाइ संघयणे ॥
इगिइगपुढविवुड्ढी, आइतिलेस्सा उ नरएसु ॥ ३७९ ॥

अर्थ—(छेवट्ठे) के० छेवट्ठा संघयणवाळो जीव (दो पढमपुढविगमणं) के० पहेली बे नरकपृथ्वी सुधी जाय, अने (कीलियाइ संघयणे) के० कीलिकादिक संघयणवाळाजीवोनी (इगिइगपुढविवुड्ढी) के० एक एक नरकपृथ्वीनी वृद्धि करवी. जेम कीलिका संघयणवाळा त्रीजी नरकपृथ्वी सुधी जाय. अर्द्धनाराचवाळा चोथी सुधी, नाराचवाळा पांचमी सुधी, ऋषभनाराचवाळा छट्ठी सुधी अने वज्रऋषभनाराचवाळा सातमी नरकपृथ्वी सुधी जाय. ए उत्कृष्टी गति जाणवी. जघन्यथी तो सर्व संघयणवाळा जीवो रत्नप्रभाना पहेला प्रतर सुधी जाय. ॥ हवे नारकीने लेश्या कहे छे. ॥ (उ) के० वळी (नरएसु) के० नारकीने विषे (आइतिलेस्सा) के० कृष्ण नील अने कापोत ए प्रथमनी त्रण लेश्या होय. ॥ ३७९ ॥

हवे ए लेश्याओने विशेषे विवरीने कहे छे.

दुसु काऊ तइयाए, काऊ, नीला य नील पंकाए ॥
धूमाए नीलकिण्हा,दुसु किण्हा हुंति लेसाओ॥३८०॥

अर्थ—(दुसु) के० पहेली बे नरकमां (काऊ) के० एक कापोतलेश्या होय. परन्तु पहेली करतां बीजीमां अतिमलीन लेश्या होय. (तइयाए) के० त्रीजी नरकमां (काऊनीला य) के० कापोत अने नील लेश्या होय. तेमां पल्योपमना असंख्यातमा भागे अधिक एवा त्रण पल्योपमना आयुष्यवाळाने कापोत अने तेथी अधिक आयुष्यवाळाने नील लेश्या होय छे. अने (पंकाइ) के० पंकप्रभामां

न ल) के० नील लेश्या एकज होय छे. (धूमाए) के० धूमप्रभामां (नीलकिण्हा) के० नील अने कृष्ण लेश्या होय छे. तेमां जे जीवोनुं पल्योपमना असंख्यातमा भागे अधिक दश पल्योपमनुं उत्कृष्ट आयुष्य होय तेमने नील लेश्या अने एथी वधारे आयुष्यवालाने कृष्ण लेश्या होय छे. अने (दुसु) के० छट्टी अने सातमी नरकने विषे (किण्हा) के० कृष्णलेश्या छे. तेमां एटलुं विशेष छे के-प्रथमनी कृष्णलेश्या करता छेल्ली वे नारकीनी कृष्ण लेश्या विशेषे कृष्ण लेश्य होय छे. (लेस्साओ हुंति) के० माते नरकमां लेश्याओ होय छे ते कही. ॥ ३८० ॥

हवे उपर कहेली नारकीनी लेश्या वर्णरूप छे ? अथवा भाव रूप छे ? ते मूत्रकार कहे छे.

सुरनारयाण ताओ, दवलेस्सा अवट्ठिया भणिया ॥
भावपरावत्तीए, पुण एसिं हुंति छल्लेस्सा ॥ ३८१ ॥

अर्थ—(सुरनारयाण) के० देवना तथा नारकीने (ताओ) के० ते कहेली (दवलेस्सा) के० द्रव्यलेश्या (अवट्ठिया) के० क्षेत्रसंबंधी (भणिया) के० कही छे. कांइ वर्णरूप न जाणवी. (पुण) के० वली द्रव्यक्षेत्रकालादिथी तेवी तेवी सामग्री पामीने (भावपरावत्तीए) के० परिणामना विपर्यास एटले फेरफारे करीने (एसिं) के० ए देवना तथा नारकीने (छल्लेस्सा) के० छलेश्या (हुंति) के० होय छे. ॥ ३८१ ॥

हवे नरकथकी निकलेला जीवो कइ गतिमां जाय ? ते कहे छे.

निरउवट्टा गब्भय, पजत्तसंखाउ लद्धि एएसिं ॥
चक्कि हरिजुअल अरिहा, जिण जइ दिसि सम्म
पुहविकमा ॥ ३८२ ॥

अर्थ—(निरउवट्टा) के० नरकथकी निकलेला जीवो (गब्भय) के० गर्भज (पज्जत्त) के० पर्याप्ता तथा (संखाउ) के० संख्याता आयुष्यवाला थाय. (हवे (एएसिं) के० ए सातें नरकथी निकलेला जीवोने (लद्धि) के० केवी केवी लब्धी एटले पदवी प्राप्त थाय ? ते कहे छे. पहेली नरकपृथ्वीथी निकलेलो जीव (चक्कि) के० चक्रवर्ति थाय, बीजी पृथ्वी सुधीनो निकलेला जीव (हरिजुअल) के० वासुदेव तथा बलदेव थाय. त्रीजी नरक पृथ्वीसुधीनो निकलेलो जीव (अरिहा) के० अरिहंत थाय, चोथी नरक पृथ्वी सुधीनो निकलेलो जीव (जिण) के० सामान्य केवली थाय. पांचमी नरक पृथ्वी सुधीनो निकलेलो जीव (जइ) के० सर्व विरति साधु होय, छट्ठी नरक पृथ्वी सुधीनो निकलेलो जीव (दिसि) के० देशविरति श्रावक होय अने सातमी नरक पृथ्वीथी निकलेलो जीव (सम्म) के० सम्यक्त्वधारी होय. ए (पुढविकमा) के० नरक पृथ्वीनो अनुक्रमे लब्धी कही. ॥१८२॥

हवे नारकी जीवो अवधिज्ञानथी केटलुं क्षेत्र जोइशके ते कहे छे.

रयणाए ओहि गाउ अ, चत्तारि अद्धुट्ठ गुरु लहु कमेण ॥
पइपुढवि गाउयद्धं, हायइ जा सत्तमि इगद्धं ॥१८३॥

अर्थ—(रयणाए) के० रत्नप्रभा पृथ्वीने विषे नारकी जीवोने (ओहि) के० अवधिज्ञान (गाउअ चत्तारि) के० चार गाउनुं होय छे ते गुरु के० उत्कृष्ट जाणवुं. अने (अद्धुट्ठ) के० साडाप्रण गाउनुं अवधिज्ञान (लहु) के० जघन्यथी होय छे. ए (कमेण) के० अनुक्रमे जाणवुं. त्यार पछी (पइपुढवि) के० दरेक पृथ्वीए (गाउयद्धं हायइ) के० उत्कृष्टथी अने जघन्यथी

अर्द्धो अर्द्धो गाउ ओछुं करवुं, जेथी (जावतमि) के० यावत् सातमी नरकने विषे (इगद्धं) के० उत्कृष्टथी एक गाउ अने जघन्यथी अर्द्धो गाउ अवधिज्ञान होय छे. ॥ ३८३ ॥ ए नरकद्वार पूर्ण थयुं. ॥

हवे मनुष्यद्वार कहे छे। अहिं मनुष्यना भवन विना आठ द्वार कहे छे, तेमां स्थितिद्वार अने अवगाहना द्वार प्रथम कहे छे.

गब्भनर तिपलियाऊ, तिगाउ उक्कोस ते जहन्नेणं ॥
मुच्छिम दुहावि अंतमुहु,अंगुल असंखभाग तणू॥३८४॥

अर्थ—(गब्भनर) के० गर्भज मनुष्य उत्कृष्टथी (तिपलियाऊ) के० त्रण पल्योपमना आयुष्यवाला जाणवा. अने (ते) के० ते गर्भज मनुष्य (उक्कोस) के० उत्कृष्टथी (तिगाउ) के० त्रण गाउना देहमानवाला जाणवा. तथा (जहन्नेणं) के० जघन्यथी गर्भज मनुष्यनुं अने (मुच्छिम) के० समूर्छीम मनुष्यनुं (दुहावि) के० जघन्य अने उत्कृष्टथी (अंतमुहु) के० अंतर्मुहूर्त्तनुं आयुष्य होय छे. तथा गर्भज मनुष्यनुं जघन्यथी (अंगुल असंखभाग तणू) के० अंगुलना असंख्यातमा भागनुं शरीर होय छे. ३८४ ॥

हवे उपपात उद्वर्त्तना विरहकाल कहे छे.

बारस मुहुत्त गब्भे, इयरे चउवीस विरह उक्कोसो ॥
जम्ममरणेसु समओ,जहण्ण संखा सुरसमाणा ॥३८५॥

अर्थ—(गब्भे) के० गर्भज मनुष्यने जन्म आश्री तथा मरण आश्री विरहकाल उत्कृष्टथी (बारस मुहुत्त) के० बार मुहूर्त्तनो होय छे. एटले एक गर्भज मनुष्य उपन्या पछी बीजो उत्कृष्टथी बार मुहूर्त्तने आंतरे उपजे. मरण पण एज प्रमाणे जाणवुं.

अने (इयरे) के० समूर्छिम मनुष्यने (उक्कोसो) के० उत्कृष्टथी जन्ममरणनो विरह) के० विरहकाल (चउवीस) के० चोवीस मुहूर्त्तनो जाणवो. वली गर्भज तथा समूर्छिम मनुष्यने (जन्ममरणेसु) के० जन्ममरणने विषे विरहकाल (समओ) के० एक समयनो जाणवो. तथा गर्भज अने समूर्च्छिम मनुष्यनी उपजवानी (जहण्णसंखा) के० जघन्यसंख्या (सुरसदाणा) के० देवताना सरखी जाणवी. एटले एक समये एक बे प्रमुखथी आरंभी संख्याता असंख्याता उपजे तथा मरण पामे एम जाणवुं. ॥ १८८ ॥

हवे कया जीव मरी मनुष्यगतिमां आवे ? ते गतिद्वार कहे छे.

सत्तममहिनेरईए, तेऊ वाऊ असंख नरतिरिए ॥
मुत्तूण सेसजावा, उप्पज्जंति नरभवंमि ॥ १८९ ॥

अर्थ—(सत्तममहिनेरईए) के० सातमी नरकपृथ्वीना नारकी, (तेऊ) के० तेउकायना जीवो, (वाऊ) के० वायुना जीवो तेमज (असंख नरतिरिए) के० असंख्याता आयुष्यवाला युगलीया मनुष्य अने तिर्यंच. ए पांच जातीना जीवोने (मुत्तूण) के० मूकीने (सेस जीवा) के० बाकीना सर्वे जीवो (नरभवंमि) के० मनुष्य भवने विषे (उप्पज्जंति) के० उपजे छे. ॥ १८९ ॥

सुरनेरइएहिं चिय, हवंति हरि अरिह चक्कि बलदेवा ॥
चउविहसुर चक्किबला, वेमाणि हुंति हरि अरिहा ॥ १९० ॥

अर्थ—(हरि) के० वासुदेव, (अरिह) के० अरिहंत, (चक्कि) के० चक्रवर्त्ती अने (बलदेवा) के० बलदेव ए चार (सुरनेरइएहिं) के० देवता अने नारकीनी गतिथी आवेला (चिय) के० निश्चे (हवंति) के० होय छे. वली (चक्किबला) के० चक्रवर्त्ती तथा

चन्देव (चउविहसुर) के० चार निकायना देवतानी गतिथी आ-वेला होय छे. तेमज (हरि अरिहा) के० वासुदेव अने अरिहंत (वेमाणिय) के० वैमानिक देवगतिना आवेला (हुंति) के० होय छे. ॥ ३८७ ॥

हरिणो मणुस्स रयणाइं, हुंति नाणुत्तरेहिं देवेहिं ॥
जहसंभवमुववाओ, हयगयएगिंदियरयणाणं ॥ ३८८ ॥

अर्थ—(हरिणो) के० वासुदेव अने चक्रवर्तीना (मणुस्स रयणाइं) के० मनुष्यरूप पांच रत्न ते (अणुत्तरेहिं देवेहिं) के० पांच अनुत्तरना आवेला देवो (न हुंति) के० न होय. तात्पर्य ए छे के-वासुदेव वैमानिक देवताथी सदा आवेलो होय छे. तेवो जो वैमानिकथी आव्या होय तो पांच मनुष्य रत्न बीजा स्थानथी आवेला होय छे. वळी चक्रवर्तीनां चौद रत्न छे, तेमां चक्रादि सात एकेंद्रिय छे अने पुरोहितादि सात पंचेंद्रिय छे. तेमां पण हस्ती अने अश्व ए बे तिर्यंच छे. बाकीना पांच मनुष्य छे. ते पांच रत्न सातमी नारक, तेउकाय, वाउकाय तिर्यंच अने अनुत्तरविमानथी आवेला न होय, परंतु जो देवविमानथी आव्या होय तो पांच मनुष्य बीजा देव स्थानथी आवेला जाणवा. तथा (हयगयएगिंदियरयणाणं) के० हस्ती, अश्व अने एकेंद्रिय सात रत्न ए सर्वनो (जहसंभवमुववाओ) के० यथा संभव उत्पत्ति जाणवी. [illegible]

ईशान देवलोक सुधीना देवता एकेंद्रि रत्नो होय. ॥ ३८८ ॥

ए उपरना नात्पर्य अर्थवाली पण गाथा कहे छे.

मंडलिय मणुअरयणं, अह सत्तम तेउवाउवज्जेहिं ॥
वासुदेव मणुअरयणा, अणुत्तरविमाणवज्जेहिं ॥३८९॥

अर्थ—(अह सत्तम तेउवाउवज्जेहिं) के० नीचेनी सातमी नरकपृथ्वी तथा तेउकाय अने वाउकायना जीवोने वर्जी बाकीना जीवो (मंडलियमणुअरयणं) के० मंडलिक राजा तथा पांच मनुष्य-रत्नपणे उत्पन्न थाय छे. वली (अणुत्तरविमाणवज्जेहिं) के० पांच अनुत्तर विमानना जीवो वर्जीने बीजा जीवो वासुदेव (मणुअ-रयणा) के० वासुदेव अने पांच मनुष्यरत्नपणे उत्पन्न थाय छे. ॥ ३८९ ॥

तिरित्थि मणु असंखाउ–एहिं कप्पाओ जावसहस्सारो ॥
हयगयरयणुववाओ, नेरइएहिं च सव्वेसिं ॥ ३९० ॥

अर्थ—(तिरि) के० हस्ती अने अश्वरूप तिर्यंचरत्न तथा (त्थि) के० स्त्रीरत्न ते (मणुअसंखाउएहिं) के० संख्याता आयुष्यवाला मनुष्य अने (कप्पाओ जावसहस्सारो) के० सहस्रार देवलोक सुधीना देवताओ थाय छे. (च) के० वली (नेरइएहिं सव्वेसिं) के० साते नारकीना जीवो (हयगयरयणुववाओ) के० अश्व अने हस्ती रत्नपणे उत्पन्न थाय छे. ॥ ३९० ॥

एगिंदिय रयणाइं, असुरकुमारेहिं जावईसाणे ॥
उववज्जंति य नियमा, सेसट्ठाणेसु पडिसेहो ॥३९१॥

पछी (चक्की) के० एक चक्रवर्ती, त्यार पछी (केसव) के० एक वासुदेव, त्यार पछी (दुचक्की) के० बे चक्रवर्ती, त्यार पछी, (केसव) के० एक वासुदेव, त्यार पछी (चक्की) के० एक चक्रवर्ती एम अनुक्रमे थया ते तेना विशेष समजुती यन्त्रमां जोवी.॥३०६॥

उसहे भरहो अजीए, सगरो मघवं सणंकुमारो य ॥
धम्मस्स य संतिस्स य, जिणन्तरे चक्कवट्टीयुगं ॥३०७॥
संतिकुंथु जिनवरो, अरिहं ना चेव चक्कवट्टी य ॥
अरमल्लिअंतरे पुन, होइ सुभुमो य कोरवो ॥३०८॥
मुणिसुव्वयमिजिणे, हुंति दुवे पउमनाम हरिसेणा ॥
नमिनेमि य जयनामा, नेमिपासंतरे बंभो ॥३०९॥

अर्थ—(उसहे) के० ऋषभदेवना वारने (भरहो) के० भरत चक्रवर्ती अने (अजीए) के० अजितनाथना वारने (सगरो) के० सगर चक्रवर्ती थयेल छे. (य) के० वळी (मघवं) के० मघवा तथा (सणंकुमारो) के० सनत्कुमार चक्कवट्टीयुगं) के० ए बे चक्रवर्ती (धम्मस य संतिस्स य जिणन्तरे) के० धर्मनाथ अने शांतिनाथनी वचमां थया छे. ॥ ३०७ ॥ वळी (संति) के० शांतिनाथ, (कुंथु) के० कुंथुनाथ तथा (अरिहं) के० अरनाथ (ना) के० ते त्रणे (जिनवरो) के० जिनेश्वर तथा (चक्कवट्टी) के० चक्रवर्ती (ईव) के० निश्चे थया छे. (पुण) के० वळी अरमल्लि अंतरे के० अरनाथ तथा मल्लिनाथना वचमां सुभुमो कोरवो) के० सुभुम चक्रवर्ती होइ के० थयो छे. ॥ ३०८ ॥ तेमज मुणिसुव्वयजिण) के० मुनिसुव्रत प्रभु नमिनाथ प्रभुना वारे (पउ- [illegible]) के० पद्मनाभ अने हरिषेण ए (दुवे) के० बे चक्र



पछी (चक्की) के० एक चक्रवर्ती, त्यार पछी (केसव) के० एक वासुदेव, त्यार पछी (दुचक्की) के० बे चक्रवर्त्ती, त्यार पछी, (केसव) के० एक वासुदेव, त्यार पछी (चक्की) के० एक चक्रवर्ती एम अनुक्रमे थया छे. तेनी विशेष समजुती यन्त्रमां जोवी.॥३९६॥

उसहे भरहो अजीए, सगरो मघवं सणंकुमारो य ॥
धम्मस्स य संतिस्स य, जिणन्तरे चक्कवट्टीयुगं ॥३९७॥
संतिकुंथु जिनवरो, अरिहं ता चेव चक्कवट्टी य ॥
अरमल्लिअंतरे पुण, होइ सुभुमो य कोरव्वो ॥३९८॥
मुणिसुव्वयमिजिणे, हुंति दुवे पउमनाम हरिसेणा ॥
नमिनेमि य जयनामा, नेमिपासंतरे बंभो ॥३९९॥

अर्थ—(उसहे) के० ऋषभदेवना वखते (भरहो) के० भरत चक्रवर्ती अने (अजीए) के० अजितनाथना वखते (सगरो) के० सगर चक्रवर्ती थयेल छे. (य) के० वली (मघवं) के० मघवा तथा (सणंकुमारो) के० सनत्कुमार (चक्कवट्टीयुगं) के० ए बे चक्रवर्ती (धम्मस्स य संतिस्स य जिणन्तरे) के० धर्मनाथ अने शांतिनाथनी वचमां थया छे. ॥ ३९७ ॥ वली (संति) के० शांतिनाथ, (कुंथु) के० कुंथुनाथ तथा (अरिहं) के० अरनाथ (ता) के० ते त्रणे (जिनवरो) के० जिनेश्वर तथा (चक्कवट्टी) के० चक्रवर्ती (चेव) के० निश्चे थया छे. (पुण) के० वली अरमल्लिअंतरे के० अरनाथ तथा मल्लीनाथना वचमां (सुभुमो कोरव्वो) के० सुभुम चक्रवर्ती होइ के० थयो छे. ॥ ३९८ ॥ तेमज (मुणिसुव्वयमिजिणे) के० मुनिसुव्रत प्रभु नमिनाथ एमना वखते (पउमनाम हरिसेणा) के० महापद्म अने हरिषेण ए (दुवे) के० बे चक्र-

मनुष्यने (हुंति) के० थया छे. तथा (नमिनेमिय) के० नमिनाथ अने नेमनाथना वचमां (जयनामा) के० जय नामनो चक्रवर्त्ती थयो छे. अने (नेमिपासंतरे) के० नेमनाथ तथा पार्श्वनाथना वचमां (बंभो) के० ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ती थयो छे. ॥ ३९९ ॥

हवे वासुदेवनां सात रत्न कहे छे.

चक्कं धणुहं खग्गो, मणी गया तहय होइ वणमाला ॥
संखो सत्त इमाइं, रयणाइं वासुदेवस्स ॥ ४०० ॥

अर्थ—(चक्कं) के० चक्र, (धणुहं) के० धनुष्य, (खग्गो) के० खड्ग, (मणी) के० मणि, (गया) के० गदा, (तहय) के० तेमज (वणमाला) के० वनमाला अने (संखो) के० संख-(इमाइं) के० ए (सत्तरयणाइं) के० सात रत्न (वासुदेवस्स) के० वासुदेवनां (होइ) के० होय छे. ॥ ४०० ॥

जंबुद्वीपमां उत्कृष्टथी अने जघन्यथी एक वखते केटलां रत्न होय ते कहे छे.

जंबूद्दीवे चउरो, सयाइं वीसुत्तराइं उक्कोसं ॥
रयणाइं जहन्नं पुण, हुंति विदेहंमि छप्पन्ना ॥ ४०१ ॥

अर्थ—(जंबूद्दीवे) के० जंबुद्वीपने विषे (उक्कोसं) के० उत्कृष्टथी (चउरो सयाइं) के० चार सो अने (वीसुत्तराइं) के० वीस अधिक एटले चारसो वीस (रयणाइं) के० रत्नो होय छे. (पुण) के० वली (जहन्नं) के० जघन्यथी (विदेहंमि) के० महाविदेह क्षेत्रमां (छप्पन्ना) के० छप्पन्नरत्न हुंति के० होय छे. उत्कृष्टा त्रीस चक्रवर्त्ती होय त्यारे चारसो वीस अने जघन्यथी चार होय त्यारे छप्पन्न रत्न होय छे. ॥ ४०१ ॥ मनुष्यनुं गतिद्वार पूर्ण थयुं.

हवे मनुष्य मरीने क्यां जाय ? ते आगति द्वार कहे छे.

संख नरा चउसु गईसु, जंति पंचसुवि पढमसंघयणे ॥

इगदुति जा अट्ठसयं, इगसमए जंति ते सिद्धिं ॥२०२॥

अर्थ—(संख) के० संख्याता आयुष्यवाला (नरा) के० मनुष्य ते (चउसु गईसु) के० चारे गतिमां (जंति) के० जाय छे. तेमां जे मनुष्य (पढमसंघयणे) के० पहेला संघयणवाला होय ते (पंचसुवि) के० मोक्ष सहित पांचे गतिने विषे पण जाय छे. मोक्षमां केटला जाय ? ते कहे छे. (ते) के० ते मनुष्य (इगसमए) के० एक समयमां जघन्यथी (इगदुति) के० एक बे त्रण अने उत्कृष्टथी (जाअट्ठसयं)के० यावत् एक सो आठ सुधी (सिद्धिं) के० मोक्षप्रत्ये (जंति) के० जाय छे. ॥ २०२ ॥

हवे त्रण वेदआश्री सिद्धिगति कहे छे.

वीसित्थि दस नपुंसग, पुरिसट्ठसयं तु एगसमएणं ॥

सिज्झइ गिहि अन्न सलिंग, चउदस अट्ठाहिय सयं च ॥२०३॥

अर्थ—(इत्थि) के० स्त्रीवेदे उत्कृष्टथी (वीस) के० वीस मोक्षे जाय. (नपुंसग) के० नपुंसकवेदे (दस) के० दस मोक्षे जाय. (तु) के० अने (पुरिस) के० पुरुषवेदे उत्कृष्टथी (एगसमएणं) के० एक समये (अट्ठसयं) के० एकसो आठ (सिज्झइ) के० मोक्षे जाय. वली (गिहि) के० गृहस्थलिंगे (चउ) के० चार, (अन्न) के० तापसादिकलिंगे (दस) के० दस, (च) के० अने (सलिंग) के० साधुलिंगे (अट्ठाहियसयं)के०एकसो आठ मोक्षे जाय छे.॥२०३॥

गुरुलहुमज्झिम दोचउ-अट्ठसयं उड्ढहो तिरियलोए ॥

चउबावीसट्ठसयं, दुसमुद्दे तिन्नि सेसजले ॥ २०४ ॥

.. अर्थ—(गुरु) के० उत्कृष्ट अवगाहनावी एटले पांचसो धनुष प्रमाण शरीरवाला अने (लहु) जघन्य अवगाहनावी एटले बे हाथ प्रमाण शरीरवाला, तथा (मज्झिम) के० मध्यम अवगाहनावी एटले . हाथथी उपर अने पांचसो धनुष्यथी ओछा शरीर प्रमाणवाला उत्कृष्टथी (दो चउ अट्ठसयं) के० चार अने एक सो आठ मोक्षने विषे जाय. वली (उड्ढो तिरीयलोए) के० उर्द्धलोक अधोलोक अने तिर्च्छालोके चउ बावीसट्ठसयं) के० चार बावीस अने एक सो आठ अनुक्रमे उत्कृष्टथी मोक्ष जाय. अहिं उर्द्धलोक ते० चूलिका ते नंदनवन जाणवुं, अधोलोक ते अधोग्राम विगेरे जाणवा अने तिर्च्छो लोक प्रसिद्ध छे. वली (समुद्द) के० समुद्रमां दु के० बे तथा (सेसजले) के० गंगादिक नदीना इत्यादि जल विगेरेमां (तिन्नि) के० त्रण उत्कृष्टथी मोक्ष जाय छे. ॥ ४०४ ॥

अधोग्राम क्यां छे ? ते कहे छे.

जोयणसयदसगंते, समधरणीए अहे अहोगामा ॥
बायालीससहस्सेहिं, गंतु मेरुस्स पच्छिमओ ॥४०५॥

अर्थ—(मेरुस्स पच्छिमओ) के० मेरुपर्वतनी पश्चिम दिशा तरफ (बायालीससहस्सेहिं गंतु) के० बेंताळीस हजार योजन जइये त्यारे (समधरणीए अहे) के० समभूतला पृथ्वीथी नीचे (जोयणसयदसगंते) के० एक हजार योजनने अंतरे ते (अहोगामा) के० अधोग्राम छे. ॥ ४०५ ॥

हवे चारे गतिमांहेथी आवेला केटला केटला जीवो मोक्षे जाय ते कहे छे.

नरयतिरिया गया दस, नरदेव गईओ वीस अट्ठसयं ॥
दस रयणा सक्कर वा–लुयाओ चउ पंक भूदगओ ॥४०६॥

अर्थ—(नरयतिरियागया) के० नरक अने तिर्यंच गति
नीकलीने मनुष्यगति पामेला (दस) के० दस जीवो उत्कृ
एक समये मोक्षे जाय, (नरदेव) के० मनुष्य मरीने फरी मनु
थयेला अथवा देवगतिथी चवीने मनुष्य थयेला जीवो (वी
अट्ठसयं) के० वीस अने एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय. अथ
मनुष्य मरीने मनुष्य थयेला वीस, अने देवगतिथी चवीने मनु
थयेला एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय छे. वली (रयणा सक
वालुयाओ) के० रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा ए त्र
नरकथी नीकलीने मनुष्य थयेला जीवो उत्कृष्टथी एक समये (दस
के० दश मोक्षे जाय, तथा (पंकभूदगओ) के० पंकप्रभा पृथ्वी
काय अने अप्कायथी नीकलीने मनुष्य थयेला जीवो (चउ) के
चार मोक्षे जाय छे. ॥ ४०६ ॥

छच्च वणस्सइ दस तिरि,तिरित्थि दस मणुय वीस नारीअ
असुराइ वंतरा दस, पण तद्देवी उ पत्तेयं ॥ ४०७ ॥
जोइ दस देवि वीसं, विमाणियट्ठसय वीस देवीओ ।

अर्थ—(वणस्सइ) के० वनस्पतिकायथकी मनुष्य थये
(छच्च) के० छ, (तिरि) के० पचेंद्रिय तिर्यंचथी मनुष्य थये
(दस) के० दश, (तिरित्थि) के० तिर्यंचनी स्त्रीथी मनुष्य गति
पामेला जीवो पण दश मोक्षे जाय. (मणुय दस) के० मनुष्य
गतिथी फरी मनुष्य थयेला दस के० दश अने (नारीओ) के०
मनुष्यनी स्त्रीथी फरी मनुष्य गति पामेला (वीस) के० वीस
जीवो मोक्षे जाय छे. वली (असुराइ) के० असुरादि दशनिकायथी
अने (वंतरा) के० व्यंतरनी सर्व जातिथी मनुष्य थयेला जीवो
(दस) के० दश मोक्षे जाय, तेमज (तद्देवीउ) के० असुरादिक

दश निकायनी अने व्यंतरदेवोनी देवीओथी मनुष्य थयेला (पत्तेयं) के० दरेक (पण) के० पांच पांच मोक्ष जाय. ॥ ४०७ ॥ (जोइ) के० ज्योतषी देवोथी मनुष्य थयेला जीवो (दस) के० दश मोक्षे जाय, अने (देवि) के० ज्योतिषिनी देवीओथी मनुष्य थयेला जीवो (वीसं) के० वीश मोक्षे जाय. वली (वेमाणियदुसय) के० वैमानिक देवथकी मनुष्य थयेला जीवो एकसो आठ तथा (देवीओ) के० वैमानिक देवीथी मनुष्य थयेला जीवो (वीस) के० वीश मोक्षे जाय ॥

हवे वेदआश्री सिद्धि कहे छे, तथा सिद्धिगतिनो उपपात विरहकाल कहे छे.

तह पुव्वेएहिंतो, पुरिसो होऊण अट्ठसयं ॥ ४०८ ॥
सेसट्ठभंगएसु, दस दस सिज्झंति समएगं ॥
विरहो छमास गुरुओ,लहु समओ चवणमिह नत्थि॥४०९॥

अर्थ—(तह) के० तथा (पुव्वेएहिंतो) के० पुरुषथी करी (पुरिसो) के० पुरुष (होऊण) के० थया होय तो एक समये उत्कृष्टथी (अट्ठसयं) के० एक सो आठ जीवो मोक्षे जाय. तात्पर्य ए छे जे-पुरुषवेदवाली देव मनुष्य अथवा तिर्यंचथी नीकलेलो कोई जीव पुरुष थाय कोई स्त्री थाय अने कोइ नपुंसक पण थाय. एवीज रीते स्त्री वेदवाली देवी विगेरेथी नीकलेलो कोइ जीव स्त्री थाय कोई पुरुष थाय अने कोइ नपुंसक पण थाय. एमज नपुंसक वेदवाला नारकी विगेरेथी निकलेलो कोइ जीव नपुंसक थाय कोइ स्त्री थाय अने कोइ पुरुष पण थाय. एम ए नव भांगाओथी पहेला भांगावाला एटले पुरुष वेदथी पुरुषवेदे थयेला मनुष्यो

एक समये एक सो आठ मोक्षे जाय. ॥ ४०८ ॥ अने (समग्ग भंगएसु) के० बाकीना आठ भांगामां तो (समएणं) के० एक समयमां (दस दस सिज्झंति) के० दस दस जीवो मोक्ष पामे छे. हवे पाछला बे पदे करीने सिद्ध गतिनो उत्पात विरहकाल कहे छे. मोक्ष जवानो (गुरुओ) के० उत्कृष्टो (विरहो) के० विरहकाल (छमास) के० छमहिनानो जाणवो. अने (लहु) के० जघन्य विरहकाल (समओ) के० एक समयनो जाणवो, परन्तु (इह) के० ए मोक्षथकी (चवण) के० चववुं (नत्थि) के० नथी थतुं. अर्थात् मोक्षे गयेलाने फरी संसारमां आववुं नथी. ॥ ४०९ ॥

अड सग छ पंच चउ, तिन्नि दुन्नि इक्कोय सिज्झमाणेसु ॥
बत्तीसाइसुसमया, निरंतरं अंतरं उवरि ॥ ४१० ॥
बत्तीसा अडयाला, सट्ठी बावत्तरी य बोधव्वा ॥
चुलसीई छन्नवइ, दुरहिय मट्ठुत्तरसयं च ॥ ४११ ॥

अर्थ—(बत्तीसाइसु सिज्झमाणेसु) के० बत्रीशने आदि देइने मोक्षे जतां जीवोने (अड सग छ पंच चउ तिन्नि दुन्नि इक्कोय) के० अनुक्रमे आठ सात छ पांच चार त्रण बे अने एक (समया) के० समय (निरंतरं) के० आंतरा विना मोक्षे जाय. एथी (उवरि) के० उपर (अंतरं) के० अंतरपडे. भावार्थ ए छे के-एक समये एक बेथी आरंभी बत्रीश सुधी मोक्षे जाय तो आठ समय सुधी मोक्षे जाय, पछी अंतर पडे. ॥ ४१० ॥ ते बत्रीश विगेरेनी संख्या कहे छे. (बत्तीसा) के० बत्रीश, (अडयाला) के० अडतालीश, (सट्ठी) के० साठ, (बावत्तरी) के० बहोंतेर, (चुलसीइ] के० चोराशी, (छन्नवइ) के० छन्नु, (दुरहिय) के० एक सो बे अने

(अट्टुत्तरसयं च) के० एक सो आठ. एम अनुक्रमे जाणवा. भावार्थ ए छे के-एकथी आरंभी बत्रीस जीवो सुधी समये समये मोक्षे जाय तो आठ समय सुधी जाय. पछी एकादि समयनुं अंतर पडे. तेत्रीसथी आरंभी अडतालीस सुधी समये समये मोक्षे जाय तो सात समय सुधी जाय. पछी अंतर पडे. ओगणपचासथी आरंभी साठ सुधी समये समये मोक्षे जाय तो छ समय सुधी जाय, पछी अंतर पडे. एकसठथी आरंभी बहोंतर सुधी समये समये मोक्षे जाय तो पांच समय सुधी जाय, पछी अंतर पडे. तहुंतेरथी आरंभी चोरासी सुधी समये समये मोक्षे जाय तो चार समय सुधी पछी अंतर पंचाशीथी आरंभी छन्नु सुधी समये समये मोक्षे जाय तो त्रण समय सुधी, पछी अंतर पडे. सत्ताणुथी आरंभी एक सो बे सुधी समये समये मोक्षे जाय तो बे समय सुधी, अने एक सो त्रणथी आरंभी एक सो आठ सुधी मोक्षे जाय तो एकज समये मोक्षे जाय. बीजे समये अंतर पडे.॥४११॥

हवे सिद्धक्षेत्रनुं स्वरूप कहे छे.

पणयाल लक्ख जोयण-विक्खंभा सिद्धिसिल फलिहविमला ॥
तदुवरिगजोयणंते, लोगंतो तत्थ सिद्धठिई ॥ ४१२ ॥

अर्थ—सर्वार्थसिद्ध विमानथी बार योजन उपर (पणयाल-लक्ख जोयणविक्खंभा) के० पीस्तालीस लाख योजन विस्तारवाली अने (फलिहविमला) के० स्फटिकरत्न समान निर्मल (सिद्धि सिल) के० सिद्धशीला छे. (तदुवरिगजोयणंते) के० ते सिद्धशीलाना उपर एक योजनने अंते (लोगंतो) के० लोकांत छे. (तत्थ) के० त्यां (सिद्धठिई) के० सिद्धनो निवास छे. ॥ ४१२ ॥

बहुमज्झदेसभाए, अट्ठेव जोयणाइं बाहुलं ॥
चरमंते सुइनणुइ, अंगुलसंखीज्जइ मागं ॥ ४१३ ॥

अर्थ—ते सिद्धशीला (बहुमज्झदेसभाए) के० मध्यभागने विषे (अट्ठेव जोयणाइं) के० आठ योजन (बाहुलं) के० जाडी छे. अने (चरमंते) के० छेडे (सुइनणुइ) के० अतिशातली थतां (अंगुलसंखीज्जइमागं) के० अंगुलना संख्यातमे मागे अर्थात् माखीनी पांख समान पातली छे. ॥ ४१३ ॥

अंजण सुवण्णवण्णा, सा पुढवी निम्मला सहावेगं ॥
उत्ताणछत्तसंठाण–संठिय भणिया जिणवरेहिं ॥४१४॥

अर्थ—(अंजणसुवण्णवण्णा) के० स्वेतांजन समान सुवर्णवाली (सा पुढवी) के० ते सिद्धशीला (सहावेगं) के० स्वामाविक रीते (निम्मला) के० निर्मल छे. वली ते सिद्धशीला (उत्ताणछत्तसंठाणसंठिय) के० उंधा उघाडेला छत्रना सरखा संस्थाने रहेली (जिणवरेहिं) के० जिनेश्वरोए (भणिया) के० कही छे. ॥ ४१४ ॥

ईसीपब्भाराए, उवरि खलु जोयणंमि जो कोसो ॥
कोसस्स य छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥४१५॥

अर्थ—(ईसीपब्भाराए) के० ए इषत्प्राग्भार नामनी सिद्धशीलाना (उवरि) के० उपरना (जोयणंमि) के० एक योजनना उपरनो (जो कोसो) के० जे एक गाउ छे. (कोसस्स छब्भाए) के० ते गाउना उपरना छट्ठा भागमां (सिद्धाणोगाहणा) के० सिद्ध जीवोनी अवगाहना (भणिया) के० कही छे. ॥४१५॥

तिन्नीसया तित्तीसा, धणुहतिभागोय कोसछब्भागो ॥
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिमओगाहणा भणिया ॥४१६॥

अर्थ—(कोसछब्भागो) के० उपरनो एक गाउनो छठ्ठो भाग ते (तिन्नीसया तित्तीसा) के० त्रण सो तेत्रीश धनुष्य अने उपर (धणुतिभागो) एक धनुष्यनो त्रीजो भाग (एसा) के० एटलुं प्रमाण क्षेत्र (खलु) के० निश्चे (सिद्धाणं) के० सिद्धोनी (मज्झिमा ओगाहणा) के० मध्यम अवगाहना (भणिया) के० कही छे. ॥ ४१६ ॥

एगा होई रयणी, अट्ठेवय अंगुलाइं साहिया ॥
एसा खलु सिद्धाणं, जहन्न ओगाहणा भणिया ॥४१७॥

अर्थ—(एगा रयणी) के० एक हाथ अने (अट्ठेवय अंगुलाइं साहिया) के० उपर आठ आंगुल अधिक. (एसा) के० एटली (सिद्धाणं) के० सिद्धोनी (जहन्न ओगाहणा) के० जघन्य अवगाहना (खलु)के०निश्चे (भणिया होई) के०कहीछे.॥४१७॥

सिद्धना आठ गुणो कहे छे.

सम्मत्त नाण दंसण, विरियं सुहुम तहेव अवगाहणा ॥
अगुरु अव्वाबाहं, अट्ठगुणा हुंति सिद्धाणं ॥ ४१८ ॥

अर्थ—(सम्मत्त) के० सम्यक्त्व, (नाण) के० ज्ञान, (दंसणं) के० दर्शन, विरियं के० वीर्य, (सुहुम) के० सूक्ष्मत्व, (तहेव) के० तेमज (अवगाहणा) के० अवगाहना, (अगुरु) के० अगुरुलघु, (अव्वाबाहं) के० अव्याबाधपणुं. ए (अट्ठ गुणा) के०

वहुमज्झदेसभाए, अट्ठेव जोयणाइं बाहुल्लं ॥
चरमंते सुइगणुइ, अंगुलसंखीज्जइ भागं ॥ ४१३ ॥

अर्थ—ते सिद्धशीला (वहुमज्झदेसभाए) के० मध्यभागने विषे (अट्ठेव जोयणाइं) के० आठ योजन (बाहुल्लं) के० जाडी छे. अने (चरमंते) के० छेडे (सुइतणुइ) के० अनिशातली थतां (अंगुलसंखीज्जइभागं) के० अंगुलना संख्यातमे भागे अर्थात् माखीनी पांख समान पातली छे. ॥ ४१३ ॥

अंजण सुवण्णवण्णा, सा पुढवी निम्मला सहावेगं ॥
उत्ताणछत्तसंठाण-संठिय भणिया जिणवरेहिं ॥४१४॥

अर्थ—(अंजणसुवण्णवण्णा) के० स्वेतांजन समान सुवर्णवाली (सा पुढवी) के० ते सिद्धशीला (सहावेगं) के० स्वाभाविक रीते (निम्मला) के० निर्मल छे. वली ते सिद्धशीला (उत्ताणछत्तसंठाणसंठिय) के० उंधा उघाडेला छत्रना सरखा संस्थाने रहेली (जिणवरेहिं) के० जिनेश्वरोए (भणिया) के० कही छे. ॥ ४१४ ॥

ईसीपब्भाराए, उवरि खलु जोयणंमि जो कोसो ॥
कोसस्स य छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥४१५॥

अर्थ—(ईसीपब्भाराए) के० ए इषत्प्राग्भार नामनी सिद्धशीलाना (उवरि) के० उपरना (जोयणंमि) के० एक योजनना उपरनो (जो कोसो) के० जे एक गाउ छे. (कोसस्स छब्भाए) के० ते गाउना उपरना छट्ठा भागमां (सिद्धाणोगाहणा) के० सिद्ध जीवोनी अवगाहना (भणिया) के० कही छे. ॥४१५॥

तिन्नीसया तित्तीसा, धणुत्तिभागोय कोसछब्भागो ॥
एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिम ओगाहणा भणिया ॥४१६॥

अर्थ—(कोसछब्भागो) के० उगाउनो एक भागनो छट्ठो भाग ते (तिन्नीसया तित्तीसा) के० त्रण सो तेत्रीश धनुष्य अने उपर (धणुत्तिभागो) एक धनुष्यनो त्रीजो भाग एटला के० एटलुं प्रमाण ते (खलु) के० निश्चे (सिद्धाणं) के० सिद्धोनी (मज्झिमा ओगाहणा) के० मध्यम अवगाहना भणिया के० कही छे. ॥ ४१६ ॥

एगा होई रयणी, अट्ठेवय अंगुलाइं साहिया ॥
एसा खलु सिद्धाणं, जहन्न ओगाहणा भणिया ॥४१७॥

अर्थ—(एगा रयणी) के० एक हाथ अने (अट्ठेवय अंगुलाइं साहिया) के० उपर आठ आंगुल अधिक. (एसा) के० एटली (सिद्धाणं) के० सिद्धोनी (जहन्न ओगाहणा) के० जघन्य अवगाहना (खलु) के० निश्चे (भणिया होई) के० कही छे.॥४१७॥

सिद्धना आठ गुणो कहे छे.

सम्मत्त नाण दंसण, विरियं सुहुमं तहेव अवगाहणा ॥
अगुरु अव्वाबाहं, अट्ठगुणा हुंति सिद्धाणं ॥ ४१८ ॥

अर्थ—(सम्मत्त) के० सम्यक्त्व, (नाण) के० ज्ञान, (दंसण) के० दर्शन, विरियं के० वीर्य, (सुहुम) के० सूक्ष्मत्व, (तहेव) के० तेमज (अवगाहणा) के० अवगाहना, (अगुरु) के० अगुरुलघु, (अव्वाबाहं) के० अव्याबाधपणुं, ए (अट्ठ गुणा) के०

आठ गुणो (सिद्धाणं) के० सिद्धना (हुंति) के० होय छे॥४१८॥
ए मनुष्यद्वार पूर्ण थयुं.

हवे तिर्यंचना भुवन विना आठ द्वार कहे छे. अहिं एकेंद्री बे इंद्री ते इंद्री अने चउरेंद्री अने पंचेंद्री ए पांच प्रकारना तिर्यंच जाणवा. तेमां पृथ्वीकाय अप्काय तेउकाय वाउकाय अने वनस्पतिकाय ए पांच एकेंद्री जाणवा. सर्वे मली नव भेद थाय. तेमां पण पंचेंद्रीना समुर्च्छिम अने गर्भज मली अगीयार भेद थाय. परंतु अहिं सामान्यथी तिर्यंचना नव भेदनुं स्थिति द्वार कहे छे.

बावीस सग ति दस वास, सहस्स गणितिदिण बेंदियाईसु ॥
बारस वासुणु पणदिण, छम्मास तिपलिय ट्ठिइ जिट्ठा॥४१९॥

अर्थ—पृथ्वीकायनी (बावीस) के० बावीस हजार वर्षनी, अप्कायनी (सग) के० सात हजार वर्षनी, वाउकायनी (ति) के० त्रण हजार वर्षनी, वनस्पतिकायनी (दस वासस हस्स) के० दस हजार वर्षनी, (अगणि) के० तेउकायनी (तिदिण) के० त्रण दिवसनी, (बेंदियाईसु) के० बे इंद्रिय विगेरेनी एटले बे इंद्रियनी (बारस वास) के० बार वर्षनी, तेइंद्रियनी (उणुपणदिण) के० ओगण पचास दिवसनी, चउरिंद्रियनी (छम्मास) के० छमासनी, अने पंचेंद्रियनी (तिपल्लिय) के० त्रण पल्योपमनी. ए (ठिइ जिट्ठा) के० उत्कृष्ट स्थिति एटले आयुष्य जाणवुं. ए सामान्यथी तिर्यंचनी स्थिति कही. ॥ ४१९ ॥

हवे अहिं पृथ्वीकायना भेद अने आयुष्य कहे छे.

सण्हाय सुद्ध वालुय, मणोसिला सकरा य खरपुढवी ॥
इग बार चउद सोलस,ड्ढारस बावीस सम सहस्सा॥४२०॥

अर्थ—(सण्हाय) के० मारवाड देशनी सुकुमाल माटीनी (इग) के० एक हजार वर्षनी, (सुद्ध) के० गोपीचंदनादिक सुकुमाल माटीनी (बार) के० बार हजार वर्षनी, (वालुय) के० नदी प्रमुख वेलुनी (चउद) के० चउद हजार वर्षनी, (मणोसिला) के० मनसीलनी (सोलस) के० सोल हजार वर्षनी, (सकराय) के० शर्करा हरताल सुरमादिकनी (अड्ढारस) के० अढार हजार वर्षनी, अने (खरपुढवी) के० शीला पाषाण तथा रत्न विगेरेनी (बावीस समसहस्सा) के० बावीश हजार वर्षनी उत्कृष्ट स्थिति जाणवी. ॥ ४२० ॥

हवे पंचेंद्रितिर्यंचना जूदा जूदा भेदनी स्थिति कहे छे.

गब्भ भुय जलयरोभय,गब्भोरग पुव्वकोडि उक्कोसा ॥
गब्भचउप्पय पक्खिसु,तिपलिय पलिया असंखंसो॥४२१॥

अर्थ—(गब्भ) के० गर्भज एवा (भुय) के० भुजपरिसर्प नोलीया विगेरे तथा (जलयरोभय) के० गर्भज अने संमूर्छिम एवा जलचर, वली (गब्भोरग) के० गर्भज उरपरिसर्प. ए सर्वेनी (उक्कोसा) के० उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति (पुव्वकोडि) के० एक पूर्व कोडी वर्षनी जाणवी. तथा (गब्भ चउप्पय) के० गर्भजचतुष्पद ते गाय भेंस विगेरेनी (तिपलिय) के० त्रण पल्योपमनी, अने (पक्खिसु) के० मोर सारस विगेरे पक्षिनी (पलिया असंखंसो) के० पल्योपमना असंख्यातमा भागनी आयुष्य स्थिति जाणवी. ॥ ४२१ ॥

हवे एक पूर्वनु ममाण कहे छे.

पुव्वस्स उ परिमाणं,सय्यरि खलु वास कोडिलक्खाओ॥
छप्पन्नं च सहस्सा, बोधव्वा वासकोडीणं ॥ ४२२ ॥

अर्थ—चोरासी लाख वर्षनुं एक पूर्वांग थाय अने ते पूर्वांगने बीजा पूर्वांग साथे गुणाकार करीये त्यारे (पुव्वस्स) के० एक पूर्वनुं (परिमाणं) के०ममाण (बोधव्वा) के० जाणवुं. ते एक पूर्वमां केटला वर्ष थाय ? तो कहे छे के-(सय्यरिवास कोडिलखाओ) के० सीत्तेर लाख क्रोड वर्ष अने (छप्पन्नं सहस्सा वासकोडीणं) के० छप्पन्न हजार क्रोड वर्ष (७०५६००००००००००) एटली संख्याना वर्षे एक पूर्व ममाण थाय. ॥ ४२२ ॥

हवे संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय थलचर विगेरेनी उत्कृष्ट आयुस्थिति कहे छे.

समुच्छिपणिंदि थलखयर,उरगभुयगाण जिट्ठ ठिइ कमसो॥
वाम सहस्सा चुलसी,बिसत्तरि तिपण्ण बायाला ॥४२३॥

अर्थ—(समुच्छि) के० संमूर्च्छिम एवा (पणिंदिथल-खयरउरगभुयगाण) के० पंचेंद्रि थलचर ते गाय भेंस, विगेरे, खेचर ते बगला चकला विगेरे, उरपरिसर्प ते अजगर विगेरे, अने भुजपरि सर्प ते नोळीया विगेरे. ते सर्व जीवोनी (कमसो) के० अनुक्रमे करीने (जिट्ठ ठिइ) के० उत्कृष्टि आयुष्य स्थिति (वाससहस्सा चुलसी) के० चोराशी हजार वर्ष, (बिसत्तरि) के० बहोंतेर हजार वर्ष, (तिपण्ण) के० त्रेपन हजार वर्ष अने (बायाला) के० बेंतालीस हजार वर्षनी, एटले संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय गाय विगेरेनी

चोरासी हजार वर्षनी, संमूर्च्छिम पक्षीनी बहोतेर हजार वर्षनी, संमूर्च्छिम उरपरिसर्पनी त्रेपन हजार वर्षनी, अने संमूर्च्छिम भुजपरिसर्पनी बेंतालीस हजार वर्षनी उत्कृष्टी आयु स्थिति होय छे. ॥ ४२३ ॥

हवे ए जीवोनी कायस्थिति कहे छे.

एसा पुढवाईणं, भवट्ठिई संपयं तु कायठिई ॥
चउएगिंदिसु णेया, उसप्पिणीओ असंखिज्जा ॥४२४॥

अर्थ—(पुढवाईणं) के० पृथ्वीकायादिक जीवोनी (एसा) के० ए पूर्वे कहेली आयुष्यरूप (भवट्ठिइ) के० भवस्थिति कही. (तु) के० वली एज जीवोनी (संपयं) के० हमणां (कायठिई) के० फरी फरी मरण पामी तेजकायामां उपजे ते कायस्थिति कहे छे. (चउ एगिंदिसु) के० वनस्पति विना बाकीना पृथ्वीकायादि चार एकेंद्रिजीवोनी उत्कृष्टी कायस्थिति (असंखिज्जा उसप्पिणीओ) के० असंख्याता उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालनी (णेया) के० जाणवी. ॥ दश कोडा कोडी सागरोपमे एक उत्सर्पिणी अने दश कोडा कोडी सागरोपमे एक अवसर्पिणी थाय छे. ए कालमान भरत तथा एरवतनी अपेक्षाये जाणवु. ए काल प्रमाणथी कायस्थिति कही, क्षेत्रथी तो जेटला चउदराजना आकाश प्रदेश छे तेटली संख्याए असंख्याता लोक कल्पीने ते लोकना एक एक प्रदेशे समय समय काढतां असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी थाय छे. ॥ ४२४ ॥

ता उ वणंमि अणंता, संखिज्जा वाससहस्स विगलेसु ॥
पंचिंदितिरिनरेसु, सत्तट्ठ भवा उ उक्कोसा ॥ ४२५ ॥

हवे एक पूर्वनु प्रमाण कहे छे.

पुव्वस्स उ परिमाणं, सयरि खलु वास कोडिलक्खाओ॥ छप्पन्नं च सहस्सा, बोधव्वा वासकोडीणं ॥ ४२२ ॥

अर्थ—चोरासी लाख वर्षनुं एक पूर्वांग थाय अने ते पूर्वांगने बीजा पूर्वांग साथे गुणाकार करीये त्यारे (पुव्वस्स) के० एक पूर्वनुं (परिमाणं) के० प्रमाण (बोधव्वा) के० जाणवुं. ते एक पूर्वमां केटला वर्ष थाय ? तो कहे छे के–(सयरिवास कोडिलक्खाओ) के० सीत्तेर लाख क्रोड वर्ष अने (छप्पन्नं सहस्सा वासकोडीणं) के० छप्पन्न हजार क्रोड वर्ष (७०५६००००००००००) एटलां संख्याना वर्षे एक पूर्व प्रमाण थाय. ॥ ४२२ ॥

हवे संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय थलचर विगेरेनी उत्कृष्ट आयुःस्थिति कहे छे.

समुच्छिपणिंदि थलखयर, उरगभुयगाण जिट्ठ ठिइ कमसो॥ वास सहस्सा चुलसी, बिसत्तरि तिपण्ण बायाला ॥४२३॥

अर्थ—(समुच्छि) के० संमूर्च्छिम एवा (पणिंदियथलखयरउरगभुयगाण) के० पंचेंद्रि थलचर ते गाय भेंस, विगेरे, खेचर ते बगला चकला विगेरे, उरपरिसर्प ते अजगर विगेरे, अने भुजपरिसर्प ते नोळीया विगेरे. ते सर्व जीवोनी (कमसो) के० अनुक्रमे करीने (जिट्ठ ठिइ) के० उत्कृष्टि आयुष्य स्थिति (वाससहस्सा चुलसी) के० चोराशी हजार वर्ष. (बिसत्तरि) के० बहोंतेर हजार वर्ष, (तिपण्ण) के० त्रेपन हजार वर्ष अने (बायाला) के० बेंतालीस हजार वर्षनी, एटले संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय गाय विगेरेनी

हवे एक पूर्वनु प्रमाण कहे छे.

पुव्वस्स उ परिमाणं,सयरि खलु वास कोडिलक्खाओ॥
छप्पन्नं च सहस्सा, बोधव्वा वासकोडीणं ॥ ४२२ ॥

अर्थ—चोराशी लाख वर्षनुं एक पूर्वांग थाय अने ते पूर्वांगने बीजा पूर्वांग साथे गुणाकार करीये त्यारे (पुव्वस्स) के० एक पूर्वनुं (परिमाणं) के०प्रमाण (बोधव्वा) के० जाणवुं. ते एक पूर्वनां केटला वर्ष थाय ? तो कहे छे के-(सयरिवास कोडिलक्खाओ) के० सीत्तेर लाख क्रोड वर्ष अने (छप्पन्नं सहस्सा वासकोडीणं) के० छप्पन्न हजार क्रोड वर्ष (७०५६००००००००००) एटली संख्याना वर्षे एक पूर्व प्रमाण थाये. ॥ ४२२ ॥

हवे संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय थलचर विगेरेनी उत्कृष्ट आयुस्थिति कहे छे.

समुच्छिपणिंदि थलखयर,उरगभुयगाण जिठ्ठ ठिइ कमसो॥
वास सहस्सा चुलसी,विसत्तरि तिपण्ण बायाला ॥४२३॥

अर्थ—(समुच्छि) के० संमूर्च्छिम एवा (पणिंदियथल खयरउरगभुयगाण) के० पंचेंद्रि थलचर ते गाय भेंस, विगेरे, खेचर ते बगला चकला विगेरे, उरपरिसर्प ते अजगर विगेरे, अने भुजपरिसर्प ते नोलीया विगेरे. ते सर्व जीवोनी (कमसो) के० अनुक्रमे करीने (जिठ्ठ ठिइ) के० उत्कृष्ट आयुष्य स्थिति (वाससहस्सा चुलसी) के० चोराशी हजार वर्ष, (विसत्तरि) के० बहोंतेर हजार वर्ष, (तिपण्ण) के० त्रेपन हजार वर्ष अने (बायाला) के० बे तालीस हजार वर्षनी, एटले संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय गाय विगेरेनी

हवे एक पूर्वनु प्रमाण कहे छे.

पुव्वस्स उ परिमाणं,सयरि खलु वास कोडिलक्खाओ
छप्पन्नं च सहस्सा, बोधव्वा वासकोडीणं ॥ ४२२ ॥

अर्थ—चोरासी लाख वर्षनुं एक पूर्वांग थाय अने ते पू
गने बीजा पूर्वांग साथे गुणाकार करीये त्यारे (पुव्वस्स) के०
पूर्वनुं (परिमाणं) के०प्रमाण (बोधव्वा) के० जाणवुं. ते एक पू
केटला वर्ष थाय ? तो कहे छे के-(सयरिवास कोडिलक्खाओ
के० सीत्तेर लाख क्रोड वर्ष अने (छप्पन्नं सहस्सा वासकोडीणं
के० छप्पन्न हजार क्रोड वर्ष (७०५६००००००००००) ए
संख्याना वर्षे एक पूर्व प्रमाण थाय. ॥ ४२२ ॥

हवे संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय थलचर विगेरेनी उत्कृष्ट आयुस्थि
कहे छे.

समुच्छिपणिंदि थलखयर,उरगभुयगाण जिट्ठ ठिइ कमसो
वास सहस्सा चुलसी,बिसत्तरि तिपण्ण बायाला ॥४२३॥

अर्थ—(समुच्छि) के० संमूर्च्छिम एवा (पणिंदियथल
उरगभुयगाण) के० पंचेंद्रि थलचर ते गाय भेंस, विगेरे, खेचर
बगला पक्ष्या विगेरे, उरपरिसर्प ते अजगर विगेरे, अने भुजप
सर्प ते नोळीया विगेरे. ते सर्व जीवोनी (कमसो) के० अनुक्र
करीने (जिट्ठ ठिइ) के० उत्कृष्टि आयुष्य स्थिति (वाससहस्स
चुलसी) के० चोराशी हजार वर्ष, (बिसत्तरि) के० बहोंतेर हजा
वर्ष, (तिपण्ण) के० त्रेपन हजार वर्ष अने (बायाला) के० बे
तालीस हजार वर्षनी, एटले संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय गाय विगेरेन

(तो) के० तेथी असंख्यातगणु (बायर वाउ) के० बादर वायुकायनुं होय, तेथी असंख्यातगणु (अगणी) के० बादर अग्निकायनुं शरीर जाणवुं, तेथी असंख्यातगणु बादर (आउ) के० बादर अप्कायनुं शरीर जाणवुं, तेथी असंख्यातगणु (पुढवी) के० बादर पृथ्वीकायनुं शरीर जाणवुं, अने तेथी असंख्यातगणु (निगोय) के० बादर निगोदनुं शरीर जाणवुं. एम ए दशे शरीर एक बीजाथी असंख्यगुणा छे. तो पण ते दरेक शरीर आंगुलना असंख्यातमा भागनुं जाणवुं. (तु) के० वली (पत्तेयतरुसरीरं) के० प्रत्येक वनस्पतिकायनुं शरीर (अहियं जोयण सहस्सं) के० एक हजार योजनथी अधिक होय छे. ॥ ४२९ ॥

अहिं कोइने शंका थाय के—पूर्वे कहेला जीवोनां शरीर उत्सेधांगुलना मानथी कह्यां छे अने समुद्र द्रह विगेरेनुं प्रमाण प्रमाणांगुलथी छे. तो एक हजार योजनना उंडा द्रहादिकमां पद्मनाल विगेरेनुं शरीर केम घटे? त्यां ग्रंथकार उत्तर कहे छे के—

उस्सेहंगुलजोयण—सहस्समाणे जलासए यं ॥
तं वल्लिपउमपमुहं, अओ परं पुढविरूवं तु ॥ ४३० ॥

अर्थ—(उस्सेहंगुल) के० उत्सेधांगुलनी (जोयणसहस्समाणे) के० एक हजार योजनना प्रमाणवाला (जलासए) के० जलाशय (नेयं) के० जाणवां. (तं) के० ते (वल्लिपउमपमुहं) के० वेल तथा कमल प्रमुख एक हजार योजनथी अधिक होय छे. (अओ परं) के० एथी अधिक उंडा जलाशयोमां पद्म वेली विगेरे ते (पुढविरूवं) के० पृथ्वीकायरूप जाणवां. ॥४३०॥

जोयणसहस्समहियं, वणस्सइदेहमाणमुद्दिट्ठं ॥
तं च किल समुद्दगयं, जलरुहनालं हवइ नेयं ॥४३१॥

अर्थ—(जोयणसहस्समहियं) के० एक हजार योजनथी अधिक (वणस्सइदेहमाणं) के० प्रत्येक वनस्पतिकायनुं शरीरप्रमाण (उद्दिट्ठं) के० कहुं छे. (तं) के० ते (किल) के० निश्चे (समुद्दगयं) के० समुद्रमां रहेला (जलरुहनाले) के० कमलनाल (हवइ) के० होय छे. (नन्नं) के० ते विना बीजी वनस्पतिनुं शरीर तेवुं न होय. ॥ ४३१ ॥

हवे बेइंद्रियादिक जीवोनां विशेष नामग्रहणपूर्वक उत्कृष्टी शरीरप्रमाण कहे छे. ॥

बारस जोयण संखो, तिकोस गुम्मी य जोयणं भमरो ॥
मुच्छिम चउपय भुय उरग.गाऊ धणु जोयण पहुत्तं ४३२॥

अर्थ—(संखो) के० शंखविगेरे बेन्द्रीयजीवोनुं शरीर (बारस जोयण) के० बार योजननुं होय छे. (गुम्मीय) के० कानखजुरादिक तेइन्द्रियजीवोनुं शरीर (तिकोस) के० त्रण गाउनुं जाणवुं. (भमरो) के० भ्रमर विगेरे चउरिन्द्रियजीवोनुं शरीर (जोयणं) के० एक योजननुं होय छे. वळी (मुच्छिमचउप्पय) के० संमूर्छिम चार पगवाला गाय विगेरे जीवोनु (गाऊपहुत्तं) के० बे गाउथी नव गाउसुधीनुं, (भुय) के० संमूर्छिम नोळीयादि भूजपरिसर्पनुं (धणुपहुत्तं) के० बे धनुष्यथी नवधनुष्य सुधीनुं, अने (उरग) के० उरपरिसर्पनुं (जोयणपहुत्तं) के० बे योजनथी नवयोजन सुधीनुं उत्कृष्टी शरीर जाणवुं. ॥ ४३२ ॥

गब्भचउप्पय छगाउ–याइ भुयगा उ गाउयपुहुत्तं ॥
जोयणसहस्समुरगा, मच्छा ऊभयावि य सहस्सं ॥४३३॥
पक्खिदुग धणुपुहुत्तं, मव्वाणंगुल असंखभागलहु ॥

अर्थ—(गब्भचउप्पय) के० गर्भज चतुष्पद हाथी वगेरेनुं शरीर (छगाउयाइ) के० छगाउनुं होय छे. (उ) के० वली (भुयगा) के० गर्भज भुजपरिसर्पनुं शरीर (गाउयपहुत्तं) के० वेगाउथी नव गाउ सुधीनुं होय छे. (उरगा) के० गर्भज उरपरिसर्पनुं शरीर (जोयणसहस्सं) के० एक हजार योजननुं होय छे. तथा (उभयावि) के० गर्भज अने संमूर्च्छिम (मच्छा) के० मत्स्योनुं शरीर (सहस्सं) के० एक हजार योजननुं होय छे. ॥ ४३३ ॥ वली (दुग) के० गर्भज अने समूर्च्छिम एवा (पक्खि) के० पक्षीओनुं शरीरप्रमाण (धणुप्पहुत्तं) के० वे धनुष्यथी नव धनुष्य सुधीनुं होय छे. अने (सव्वाणं) के० एकेंद्रियथी आरम्भी पंचेंद्रितिर्यंच सुधीना सर्व जीवोनुं (लहु) के० जघन्य शरीर (अंगुलअसंखभाग) के० अंगुलना असंख्यातमा भागनु होयछे. ॥

हवे वेन्द्री विगेरे जीवोनो उपपात चवन विरहकाल कहे छे.

विरहो विगलामन्नीण, जम्ममरणेसु अंतमूहु ॥४३४॥
गब्भे मुहुत्त बारस, गुरुओ लहु समय संख सुरतुल्ला ॥

अर्थ—(विगल) के० वेंद्री तेंद्री अने चउरेंद्री तथा (असन्नीण) के० सम्मूर्छिम पंचेंद्रितिर्यंच ए दरेक जीवोनो (जम्ममरणेसु) के० जन्ममरण आश्री विरहकाल (अंतमूहु) के० एक अन्तर्मुहूर्तनो (गुरूओ) के० उत्कृष्टथी जाणवो. ॥ ४३४ ॥ अने (गब्भे) के० गर्भज पंचेंद्रितिर्यंचनो उपपात चवन विरहकाल (गुरुओ) के० उत्कृष्टथी (मुहुत्तबारस) के० बारमुहूर्तनो जाणवो, तथा सर्वनो (लहु) के० जघन्यथी विरहकाल (समय) के० एक समयनो जाणवो. वली ए वेन्द्री विगेरे जीवोनी एक समये उत्पत्ति (सुरतुल्ला) के० देवतानी पेठे एक बे यावत् संख्याता असंख्याता सुधीनी जाणवी. ॥

हवे एकेंद्रियने उपजवा तथा चववानी संख्या कहे छे.

अणुसमयमसंखिज्जा, एगिंदिय हुंति य चवंति ॥४३५॥
वणकाइओ अणंता, इक्किकाओवि जं निगोयाओ ॥
निच्चमसंखो भागो, अणंतजीवो चयइ एइ ॥ ४३६ ॥

अर्थ—(एगिंदिय) के० एकेन्द्रिय जीवो (अणुसमयं) के० समय समय प्रत्ये (असंखिज्जा) के० असंख्याता (हुंति) के० उपजे. य के० अने (चवंति) के० चवे. ॥ ४३५ ॥ वली (वणकाइओ) के० वनस्पतिकाय जीवो प्रतिसमये (अणंता) के० अनंता उपजे अने अनंता चवे. भावार्थ ए छे के-वनस्पतिकायमांथी वनस्पतिकाय उपजे तो अनंता, अने बाकीना पृथ्व्यादि चार स्थावरमांथी वनस्पतिमां उपजे तो असंख्याता उपजे एम जाणवुं. (जं) के० जे कारण माटे (इक्किकाओवि निगोयाओ) के० एक एक एवा निगोदमांथी (निच्चं) के० निरन्तर (असंखो भागो) के० असंख्यातमो भाग जे (अणंतजीवो) के० अनंत जीवात्मक ते (चयइ) के० चवे छे. अने (एइ) के० उपजे छे. अहिं निगोद ते अनंता जीवोनुं एक साधारण औदारिक शरीर सिबुकाकार एटले पाणीना परपोटा सरखुं ते निगोद जाणवुं. ते निगोदीया अनंता जीवो साथे श्वासोश्वास ल्हे अथवा आहार करे छे. तेवा असंख्याता निगोद समुदायने गोलो कहेवाय, तेवा गोला चउदराज लोक असंख्याता छे. ॥ ४३६ ॥

गोला य असंखिज्जा, असंख निग्गोयओ हवइ गोलो ॥
इक्किक्कंमि निगोए, अणंतजीवा मुणेयव्वा ॥ ४३७ ॥

अर्थ—संसारमां (असंखिज्जा गोला) के० असंख्याता

गोना छे. वली (असंखनिगोयओ) के० असंख्याता निगो- गोनो (हवइ) के० एक गोलो थाय छे. तथा (इक्किक्कंमि निगोए) के० एक एक निगोदने विषे (अणंतजीवा मुणेयव्वा) के० अनंता जीवो जाणवा. ॥ अहि निगोदिया जीवोना बे भेद छे. एक संव्यवहारिया बीजा असंव्यवहारिया. तेमां जे अनादि निगोदथी निकली पृथ्वीकायादिकमां जाय ते संव्यवहारिया कहेवाय. कदापि ते जीव फरी पाछो निगोदमां जाय तो पण संव्यवहारीकज कहेवाय पण जे जीवो सूक्ष्म तथा बादर निगोदमांथी निकल्यान नथी ते असंव्यवहारिया कहेवाय छे. ॥ ४३७ ॥

अत्थि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणामो ॥
उप्पज्जंति चयंति य, पुणोवि तत्थेव तत्थेव ॥ ४३८ ॥

अर्थ—(अणंता जीवा अत्थि) के० एवा अनंता जीवो छे के (जेहिं) के० जे जीवो (तसाइपरिणामो) के० त्रस विगेरेना परिणामने (न पत्तो) के० पाम्या नथी, ते जीवो (पुणोवि) के० फरीफरीने (तत्थेव तत्थेव) के० त्यांने त्यांज (उप्पज्जंति चयंति य) के० उपजे छे अने चवे छे ॥ ४३८ ॥

सामग्गी अभावाओ, ववहारगसिमि अप्पवाओ ॥
भवाति ते अणंता, जे मुक्तिसुहं न पाविंति ॥ ४३९ ॥

अर्थ—(सामग्गी अभावाओ) के० व्यवहार विगेरे तथा अष्टकर्मनाशरूप सामग्रीना अभावथी (ववहार रासिंमि) के० व्यवहाररासीमां (अप्पवाओ) के० न आववाथी एवा जे अनंता के० एवा घणा जीवो पण अनंता छे के (जे) के० जे जीवो मुक्ति सुखं न पाविंति के० मुक्तिसुखने पामता नथी ॥ ४३९ ॥

सव्वोवि किसलओ खलु,उग्गममाणो अणंतओ भणिओ
सोचेव विवड्ढंतो, होइ परित्तो अणंतो वा ॥ ४४० ॥

अर्थ—(सव्वोवि किसलओ) के० सर्वे एवा पण किशलय जे कुंपळो (उग्गममाणो) के० उदयपामतां (अणंतओ भणिओ) के० अनंतकाय कह्यां छे. परंतु (सोचेव विवड्ढंतो) के० तेज किसलय वृद्धि पामतां (परित्तो) के० प्रत्येक वनस्पतिकायना किशलय प्रत्येक अने (अणंता) के० साधारण वनस्पतिकायना किशलय अनंत वनस्पतिकाय (होइ) के० होय छे. ॥ ४४०)

जं नरए नेरईया, दुक्खं पावंति गोयमा तिव्वं ॥
तं पुण निगोयमज्झे, अणंतगुणं मुणेयव्वं ॥ ४४१ ॥

अर्थ—श्रीवीर प्रभुए कह्युं छे के-(गोयमा) के० हे गौतम ! (नरए) के० नरकने विषे (नेरईया) के० नारकी जीवो (जं) के० जेवा (तिव्वं) के० आकरा (दुक्खं) के० दुःखने (पावंति) के० पामे छे. (तं पुण) के० तेथी पण (अणंतगुणं) के० अनंतगणु दुःख (निगोयमज्झे) के० निगोदनीमध्ये (मुणेयव्वं) के० जाणवुं ॥ ४४१ ॥

हवे जीवने कया कर्मथी एकेंद्रियपणु प्राप्त थाय ते कहे छे.

जया मोहोदओ तिव्वो, अन्नाणं खु महब्भयं
पेलवं वेयणीयं तु, तया एगिंदियत्तणं ॥ ४४२ ॥

अर्थ—(जया) के० ज्यारे (तिव्वो) के० आकरो एवो (मोहोदओ) के० विषयाभिलाषरूप मोहनो उदय होय, (खु

के० निश्चे (महब्भयं) के० महाभयकारी (अन्नाणं) के० अज्ञान होय, (तु) के० वली (पेज्जं) के० असार एवुं (वेयणीयं) के० असाता वेदनीय कर्म उदय आव्युं होय, (तया) के० त्यारे जीवने (एगिंदियत्तणं) के० एकेन्द्रियपणुं प्राप्त थाय छे. ॥४४२॥

हवे तिर्यंचनी गतिमां कया जीवो आवे? ते आगतिद्वार कहे छे.

तिरिएसु जंति संखा–उतिरिनरा जादुकप्पदेवाओ ॥
पज्जत्तसंख गब्भय, बायर भूदगपरित्तेसु ॥ ४४३ ॥
तो महसारंतसुरा, निरया पज्जत संख गब्भेसु ॥

अर्थ—एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री तथा (संखाउतिरिनरा) के० संख्याता आयुष्यवाला पंचेंद्री तिर्यंच अने मनुष्य एटला जीवो मरण पामी (तिरिएसु) के० एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चउरिंद्री अने पंचेंद्री तिर्यंचने विषे (जंति) के० जाय छे. वली भुवनपति व्यंतर ज्योतषी अने (जादुकप्पदेवाओ) के० सौधर्म तथा ईशान ए बे देवलोकना देवताओ मरण पामीने (पज्जत्तसंखगब्भय) के० पर्याप्ता संख्याता आयुष्यवाला गर्भज तिर्यंचमां तथा (बायर भूदगपरित्तेसु) के० पर्याप्ता बादर पृथ्वीकाय अप्काय अने प्रत्येक वनस्पतिकायमां उपजे ॥ ४४३ ॥ वली (तो महसारंतसुरा) के० सनत्कुमारथी मांडीने सहस्रार देवलोक सुधीना देवता तथा (निरया) के० नारकी ए जीवो मृत्यु पामीने (पज्जत्तसंखगब्भेसु) के० पर्याप्ता संख्याता आयुष्यवाला गर्भज तिर्यंचमां जाय ॥ ए तिर्यंचनु आगतिद्वार कह्युं.

हवे तिर्यंचना भवथी मरण पामी क्यां जाय ? ते गतिद्वार कहे छे.

संखपणिंदिय तिरिया, मरिउं चउसुवि गईसु जंति ॥४४४॥
थावर विगला नियमा, संखाउयतिरिनरेसु गच्छंति ॥
विगला लभिज्ज विरई,सम्मंपि न तेउवाउचुया॥४४५॥

अर्थ—(संखपणिंदियतिरिया) के० संख्याता आयुष्यवाला पंचेंद्रिय तिर्यंच जीवो (मरिउं) के० मरण पामीने (चउसुवि गईसु) के० चारे गतिमां (जंति) के० जाय छे. ॥ ४४४ ॥ वली (थावर) के० एकेंद्री जीवो अने (विगला) के० विकलेंद्री जीवो (नियमा) के० निश्चयी (संखाउयतिरिनरेसु) के० संख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच अने मनुष्यने विषे (गच्छंति) के० जाय छे. (विगला) के० विकलेंद्री जीवो मरण पामी मनुष्य गतिने पामे तेम (लभिज्ज विरई) के० सर्व सावद्यविरतिरूप चारित्र पामे, पण मोक्ष पामे नहीं. वली (तेउवाउचुया) के० तेउकाय अने वाउकायना जीवो मरण पामी मनुष्य तो न थाय, परंतु तिर्यंच भव पामे तो पण (सम्मंपि न) के० समकीत पामे नहीं. ॥ ४४५ ॥

हवे तिर्यंचने तथा मनुष्यने लेश्या कहे छे.

पुढवि दग परित्तवणा, बायरपज्जत्त हुंति चउलेसा ॥
गब्भयतिरियनराणं, छल्लेसा तिन्नि सेसाणं ॥४४६॥

अर्थ—(बायरपज्जत्त) के० बादर अने पर्याप्ता एवा (पुढविदगपरित्तवणा) के० पृथ्वीकाय अप्काय अने प्रत्येक वनस्पतिकाय जीवोने (चउलेसा) के० कृष्ण नील कापोत अने तेजो ए चार लेश्या (हुंति) के० होय छे. तथा (गब्भयतिरियनराणं) के० गर्भज तिर्यंच अने मनुष्यने (छल्लेसा) के० छलेश्या

होय छे. तथा (सेसाणं) के० बाकीना सर्वजीवोने (तिन्नि) के० त्रण लेश्या होय छे. ॥ ॥

अंतमुहुत्तंमि गए, अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव ॥
लेसाहि परिणयाहिं, जीवा वच्चंति परलोयं ॥४४७॥

अर्थ—(जीवा) के० मनुष्य तथा तिर्यंच (लेसाहि परिणयाहिं) के० परभवनी लेश्या आव्या पछी (अंतमुहुत्तंमि गए) के० एक अंतर्मुहूर्त गये थके मरण पामे छे अने देवता तथा नारकी (अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव) के० एक अंतर्मुहूर्त पोतानी लेश्या बाकी रहे होय त्यारेज (परलोयं वच्चंति) के० मरण पामे छे. ॥ ४४७ ॥

तेज वात आगली गाथाथी कहे छे—

तिरिनर आगामिभवे, लेस्साए अइगए सुरानिरया ॥
पुव्वभव लेस्ससेसे, अंतमुहुत्ते मरणमिंति ॥ ४४८ ॥

अर्थ—(तिरिनर) के० तिर्यंच तथा मनुष्य ते (आगामिभवे) के० आवता भवनी (लेस्साए अइगए) के० लेश्या आव्याने अंतर्मुहूर्त गया पछी मरण पामे छे. तथा (सुरानिरया) के० देवता अने नारकी ते (पुव्वभव लेस्ससेसे अंतमुहुत्ते) के० पोताना पूर्वना एटले चाल्या भवनी लेश्या एक अंतर्मुहूर्त बाकी होय त्यारेज (मरणमिंति) के० मरण पामे छे. एटले तेजो लेश्यावाला देवता पृथ्वी अप अने प्रत्येकवनस्पतिकायमां आव्याने अंतर्मुहूर्त थाय त्यांसुधी तेमने तेजो लेश्या होय छे. आ कारणथी पृथ्वी अप अने प्रत्येक वनस्पतिकायने चार लेश्या कहीछे. ॥४४८॥

हवे मनुष्य तथा तिर्यंचने लेश्यानी स्थिति कहे छे.

अंतमुहुत्तट्ठिइओ, तिरियनराणं हवंति लेसाओ ॥
चरिमा नराण पुण नव, वासूणा पुव्वकोडीवि ॥५४९॥

अर्थ—(तिरियनराणं) के० पृथ्वीकायादि तिर्यंच तथा मनुष्यने (लेसाओ) के० पोतपोताने संभवती लेश्याओ (अंतमुहुत्तट्ठिइओ) के० एक अंतर्मुहूर्तनी स्थितिवाळी (हवंति) के० होय छे. (पुण) के० वळी (नराण) के० मनुष्यने (चरिमा) के० छेल्ली शुक्ललेश्या (नववासूणा पुव्वकोडीवि) के० नव वर्ष ऊणी एक पूर्वकोडी वर्ष सुधी रहे छे. ते एवी रीते के—गर्भकाळना नवमास सहित आठ वर्षमां चारित्र न होय, माटे कोइक जीव नवमे वर्षे चारित्र लइ केवलज्ञान पामे अने त्यार पछी नव वर्ष ऊणी एवी एक पूर्वकोडी वर्ष पर्यंत जीवतो रहे त्यां सुधी केवळीने एक शुक्ल लेश्याज होय. अने बीजा मनुष्यने तो शुक्ल लेश्या अंतर्मुहूर्त सुधीज होय छे. ॥ ५४९ ॥

तिरियाणवि ठिइपमुहं, भणियमसेसंपि संपइ वुच्छं ॥
अभिहियदारब्भहियं, चउगइ जीवाण सामन्नं ॥५५०॥

अर्थ—(तिरियाणवि) के० एकेंद्रियथी मांडी पंचेंद्री सुधीना सर्व तिर्यंचनी (ठिइपमुहं) के० स्थितिप्रमुख (असेसंपि) के० सर्वे आठे द्वार (भणियं) के० कह्यां. (संपइ) के० हवे (अभिहियदारब्भहियं) के० जे द्वार पूर्वे कह्यां नथी ते (चउगइ जीवाण) के० चारे गतिना जीवोना (सामन्नं) के० सामान्यपणे द्वार (वुच्छं) के० कहीश. ॥ ५५० ॥

देवा असंखनरतिरि–इत्थीपुंवेय गब्भनरतिरिया ॥
संखाउया तिवेया, नपुंसगा नारगाईया ॥ ५५१ ॥

अर्थ—(देवा) के० देवता तथा (असंख नरतिरि) के० असंख्याता आयुष्यवाळा युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच ए जीवोमां (इत्थी पुंवेय) के० स्त्रीवेद अने पुरुषवेद एवा वेद होय छे. वळी (संखाउया) के० संख्याता आयुष्यवाळा (गब्भनरतिरिया) के० गर्भज मनुष्य अने गर्भज तिर्यंच ते जीवोमां (तिवेया) के० पुरुष स्त्री तथा नपुंसक एवा त्रण वेद होय छे. अने (नारगाईया) के० नारकी आदि एटले नारकी, एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री चउरेंद्री, संमुर्छिम मनुष्य तथा संमुर्छिम तिर्यंच ए जीवो (नपुंसगा) के० एक नपुंसक वेदवाळा जाणवा. ॥ ४५१ ॥

हवे पूर्वे कहेला विमानादिक जे अंगुलप्रमाणथी मपाय ते कहे छे.

आयंगुलेण वत्थुं, सरीर मुस्सेह अंगुलेण तहा ॥
नगपुढविविमाणाइं, मिणसु पमाणंगुलेणं तु ॥ ४५२ ॥

अर्थ—आंगुलनां त्रण भेद छे, आत्मांगुल, उत्सेधांगुल अने प्रमाणांगुल. तेमां (आयंगुलेण) के० आत्मांगुले करी (वत्थुं) के० वास्तु जे घर कूवा तलाव विगेरे मपाय. (तहा) के० तथा (उस्सेह अंगुलेण) के० उत्सेधांगुले करीने (सरीरं) के० देवता विगेरेनुं शरीर मपाय. (तु) के० वळी (पमाणंगुलेणं) के० प्रमाणांगुले करीने (नगपुढविविमाणाइं) के० पर्वत, नरकपृथ्वी, अने देवविमान विगेरे (मिणसु) के० मपाय छे. ॥ ४५२ ॥ जे काळे जे प्राणीओ पोताना हाथना आंगुलथी मान करे ते आत्मांगुल कहेवाय छे. हवे उत्सेधांगुलनुं स्वरूप कहे छे.

सत्थेण सुतिक्खेणवि, छित्तुं भित्तुं च जं किर न सक्का ॥
तं परमाणुं सिद्धा, वयंति आइं पमाणाणं ॥ ४५३ ॥

अर्थ—(सुतिक्खेणवि) के० अत्यन्त तीक्ष्ण एवा (सत्थेण) के० शस्त्रेकरीने (जं) के० जे वस्तु (किर) के० निश्चे (छित्तुं भित्तुं न सक्का) के० छेदी भेदी न शकाय. (सिद्धा) के० सिद्ध एटले केवलज्ञानी पुरुषो (तं) के० ते वस्तुने (परमा) (वयंति) के० परमाणु कहे छे. अने ते परमाणु (पमाणाणं) के० सर्व प्रमाणोनी मध्ये (आइं) के० आदि प्रमाण छे. ॥ ४५३ ॥

परमाणू तसरेणू रहरेणू, वालअग्ग लिक्खा य ॥
जूय जव अट्ठगुणो, कमेण उस्सेह अंगुलयं ॥२५४॥
अंगुल छक्कं पाओ,सो दुगुण विहत्थि सा दुगुण हत्थो॥
चउहत्थं धणुदुसहस्स,कोसो ते जोयणं चउगे ॥२५५॥

अर्थ—(परमाणू) के० आठ व्यवहार परमाणुए (तसरेणू) के० एक तसरेणु थाय. आठ तसरेणुए (रहरेणू) के० एक रथरेणु थाय. आठ रथरेणुए (वालअग्ग) के० एक वालाग्र थाय. आठ वालाग्रे (लिक्खाय) के० एक लीख थाय. आठ लीखे (जूय) के० एक जू थाय. आठ जूवे (जव) के० एक जव थाय. अने (अट्ठगुणो) के० जवने आठगुणो करीये त्यारे (कमेण) के० अनुक्रमे करीने (उस्सेह अंगुलयं) के० एक उत्सेधांगुल थाय. ॥ ४५४ ॥ (अंगुलछक्कं) के० तेवा छ उत्सेधांगुले (पाओ) के० एक पग थाय. (सो दुगुण) के० पगने बमणो करीये त्यारे (विहत्थि) के० एक वेंत थाय. (सा दुगुण)के० बे वेंते (हत्थो) के० एक हाथ. (चउहत्थं) के० चार हाथे (धणु) के० एक धनुष थाय, (दुसहस्स) तेवा बे हजार धनुषे (कोसो) के० एक कोश थाय. (ते चउगे) के० ते चारकोशे (जोयणं) के० एक योजन थाय छे. ॥ ४५५ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ २५६ ॥

[illegible] ॥ २५६ ॥

हवे चोराशी लाख जीवयोनिना भेद कहे छे.

पुढवाइसु पत्तेय, सग वण पत्तेय णंत दस चउद ॥
विगले दुदु सुरनारय, तिरि चउचउ चउदस नरेसु ॥२५७॥

अर्थ—(पुढवाइसु) के० पृथिव्यादिकने विषे एटले पृथ्वी, अप, तेउ, अने वायु ए चारने विषे (पत्तेयं) के० प्रत्येकने (सग)

के० सात सात लाख योनि होय छे. तथा (वण पत्तेय) के० प्रत्येक वनस्पतिकायने (दश) दशलाख योनि होय छे. अने (अणंत) के० साधारण वनस्पतिकायने (चउद) के० चउद लाख योनि होय छे. वली (विगले) के० बेंद्री तेंद्री अने चउरेंद्रीने दरेकने (दुदु) के० बे बे लाख योनि होय छे. तथा (सुरनारय तिरि) के० देवता नारकी अने पंचेंद्री तिर्यंचने (चउ चउ) के० चार चार लाख योनि होय छे. अने (नरेसु) के० मनुष्यने विषे (चउदस) के० चउद लाख योनि होय छे. ॥ ४५७ ॥ अहिं चोराशी लाख योनि संख्यानी गणनी करता सामान्यपणे योनि जातिये करी एक जीव निकायमां जेनो वर्ण, गंध रस अने स्पर्श सरखो होय ते एक जातियोनिमां ग्रहण कराय. तेवा सर्व मली चोराशी लाख भेद थाय छे. ॥

हवे एक एक योनिमां कुल होय ते कहे छे.

एगिंदिएसु पंचसु, बार सगति सत्त अट्ठवीसा य ॥
विगलेसु सत्त अड नव,जल खह चउपय उरगभुयगे॥४५८
अद्धतेरस बारस, दस दस नवगं नरामरे निरए ॥
बारस छवीस पणवीस,हुंति कुलकोडि लक्खाइं ॥४५९॥
इगकोडि सत्त नवई, लक्खा सड्ढा कुलाण कोडीणं ॥

अर्थ—(पंचसु एगिंदिएसु)के० पांच एकेंद्रिय एटले पृथ्वी अप तेउ वाउ अने वनस्पतिकायने विषे अनुक्रमे करीने (बार) के० बार लाख, (सग) के० सात लाख, (ति)के० त्रण लाख, (सत्त) के० सात लाख अने (अट्ठावीसा) के० अट्ठावीस लाख कुलकोडी जाणवी. (विगलेसु)के० विकलेंद्री एटले बेंद्री तेंद्री

अने चउरंद्रीने विषे अनुक्रमे . (सत्त) के० सात लाख,) (अट्ठ) के० आठ लाख, अने (नव)के० नव लाख कुलकोटी जाणवी. वली (जल) के० जलचर, (खह) के० खेचर, (चउप्पय) के० चतुष्पद, (उरग) के० उरपरि सर्प अने (भुयगे) के० भुजपरिसर्प ए पां- चेने अनुक्रमे ॥ ४५८ ॥ (अद्धतेरस) के० साडाबार लाख, (बारस के० बार लाख, (दस) के० दश लाख, (दस) के० दश लाख, अने (नवगं) के० नव लाख कुलकोटी जाणवी. एमज (नरामर निरये) के० मनुष्य, देवता अने नारकीने विषे अनुक्रमे (बारस) के० बार लाख, (छवीस) के० छवीश लाख अने (पणवीस)के० पचीस लाख (हुंति कुलकोडि लक्खाइं) के० कुलकोडी जाणवी. ॥४५९॥ ए सर्व संख्या एकठी करीए त्यारे (इगकोडि) के० एक कोडा कोडी, अने (सगनवइ लक्खा सड्ढा) के० साडीस- त्ताणुं लाख कोडी एटली (कुलाण कोडीण) के० कुलकोडी एटले एटली जीवोने उपजवानी योनिमांहे कुलकोडी छे.

हवे त्रीजे प्रकारे योनी कहे छे.

संवुडजोणि सुरेगिंदि–नारया वियड विगल गब्भु- भया ॥ ४६० ॥

अर्थ—(सुर) के० चार प्रकारना देवता, (एगिंदि) के० एकेंद्री ते पृथ्वी आदि पांच स्थावर, अने (नारया) के० नारकी ए सर्व - (संवुडजोणि) के० ढांकेली योनिवाला होय छे. त्यां देवताना देवदूष्ये ढांकेला देवशयनीय होय, एकेंद्रिय जीवोनी योनि स्पष्ट जाणी शकाय नहीं, नारकीने ढांकेला गोखने आकारे आस्था छे. वली (विगल) के० विकलेंद्रीने तथा संमूर्छिम तिर्यंच अने संमूर्छिम मनुष्यने (वियड) के० प्रगट जलाशय सरोवर विगेरे

देवताय छे. तथा (गब्भुभया) के० गर्भज पंचेंद्रीतिर्यंच अने गर्भज पंचेंद्री मनुष्य ए बन्नेने संवृत अने विवृत एटले ढांकेली अने प्रगट एम प्रकारे योनी होय छे. ॥ ४६० ॥

वली पण योनीना भेद कहे छे.

अचित्तजोणि सुरनिरय, मीस गब्भे तिभेय सेसाणं ॥
सी उसिण निरय सुरगब्भ,मीसत्ते उसीण सेस तिहा॥४६१॥

अर्थ—(सुर) के० देवता अने (निरय) के० नारकी तेमनी (अचित्तजोणि) के० अचित्तयोनी होय छे. जोके सूक्ष्म जीव तो सर्वलोक व्यापी छे तो पण सूक्ष्म एकेंद्री जीवने प्रदेशे ते क्षेत्र संबंध नथी. तथा (गब्भे) के० गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्यने (मीस) के० मीश्र एटले सचित अचित होय छे. शुक्र ऋतु रुधिर संग्राह्य सचित्त अने बीजी अचित जाणवी. (सेसाणं) के० एकेंद्री,बेंद्री, तेंद्री, चउरेंद्री,समूर्च्छिम पंचेंद्री तिर्यंच अने संमूर्च्छिम पंचेंद्री मनुष्य एटलानी (तिभेय) के० सचित अचित अने मिश्र योनी होय छे. जीवती गाय विगेरेना शरीरे कृमी उपजे ते सचित्त योनी जाणवी, सूका लाकडामां घुण विगेरे उपजे ते अचित्त योनी जाणवी, अर्द्ध सूका लाकडा तथा गाय विगेरे शरीरना क्षतादिकमां घुण कृमि विगेरे उपजे ते मिश्र योनी जाणवी. (निरय) के० नारकीजीवोने केटलाकने (सी) के० शीतयोनी अने केटलाकने (उसिण) के० उष्ण योनी होय छे. (सुर) के० देवताने तथा (गब्भ) के० गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्यने (मीस) के० शीत अने उष्ण एम मिश्रयोनी होय छे. (ते) के० तेउकाय जीवोने एक उष्ण योनी होय छे. (सेस) के० बाकी रहेला जे पृथ्वी, अप, वाउ, वनस्पति, संमूर्च्छिम तिर्यंच अने संमूर्च्छिम

मनुष्य ए छएने (तिहा) के० शीत, उष्ण अने शीतोष्ण योनी होय छे. ॥ ४६१ ॥

हवे एकला मनुष्यनी योनीना भेद कहे छे.

हयगब्भ संखवत्ता, जोणी कुम्मुन्नयाइ जायंति ॥
अरिहहरि चक्किरामा, वंसीपत्ताइ सेस नरा ॥४६२॥

अर्थ—मनुष्यनी योनी त्रण प्रकारे छे एक शंखावर्त्ता, बीजी कुर्मोन्नता, त्रीजी वंशीपत्रा. तेमां (संखवत्ता) के० शंखावर्त्ता (जोणी) के० योनी (हयगब्भ) के० हनगर्भा होय छे. कारण एमां उपजेलो गर्भ अत्यंत अग्निनातथी मरण पामे छे. तेवी योनी चक्रवर्तीनी स्त्रीने होय छे. बीजी (कुम्मुन्नयाइ) के० कुर्मोन्नता ते काचबानी पीठ सरखी उंची होय. ते मांहे अरिहहरि चक्किरामा के० अरिहंत, वासुदेव, चक्रवर्ती अने बलदेव (जायंति) के० उत्पन्न थाय छे. त्रीजी (वंसीपत्ताइ) के० वंसीपत्रा ते वांसना पत्राकार योनी होय तेमां (सेसनरा) के० बाकीना सर्व मनुष्यनो जन्म थाय छे. ॥ ४६२ ॥

हवे आयुष्यबंध संबंधी कांइ विशेष कहे छे.

आउस्स बंधकालो, अबाहकालो य अंतसमओ य ॥
अपवत्तण णपवत्तण, उवक्कम णुवक्कमा भणिया ॥ ४६३ ॥

अर्थ—चालता भवनुं आयुष्य पूर्ण थयाना पहेलां परभवनुं आयुष्य बांधे ते (आउस्स) के० आयुष्यनो (बंधकालो) के० बंधकाल कहेवाय १, आयुष्य बांध्या पछी जेटलो काल गये थके आयुष्य उदय आवे तेना वचमलो जे काल ते (अबाहकालो) के० अबाधाकाल कहेवाय २, भोगवातुं आयुष्य जे समये पूर्ण थाय

मनुष्य ए छपने (निहा) के० शीत, उष्ण अने शीतोष्ण योनी होय छे. ॥ ४६१ ॥

हवे एकला मनुष्यनी योनीना भेद कहे छे.

हयगब्भ संखवत्ता, जोणी कुम्मुन्नयाइ जायंति ॥
अरिहहरि चक्किरामा, वंसीपत्ताइ सेस नरा ॥४६२॥

अर्थ—मनुष्यनी योनी त्रण प्रकारे छे एक शंखावर्त्ता, बीजी कूर्मोन्नता, त्रीजी वंशीपत्रा. तेमां (संखवत्ता) के० शंखावर्त्ता (जोणी) के० योनी (हयगब्भ) के० हतगर्भा होय छे. कारण एमां उपजेलो गर्भ अत्यंत अग्निताथी मरण पामे छे. तेवी योनी चक्रवर्तीनी स्त्रीने होय छे. बीजी (कुम्मुन्नयाइ) के० कूर्मोन्नता ते काचबानी पीठ सरखी उंची होय. ते मांहे अरिहहरि चक्कि-रामा के० अरिहंत, वासुदेव, चक्रवर्ती अने बलदेव (जायंति) के० उत्पन्न थाय छे. त्रीजी (वंसीपत्ताई) के० वंशीपत्रा ते वांसना पत्राकार योनी होय तेमां (सेसनरा) के० बाकीना सर्व मनुष्य-नो जन्म थाय छे. ॥ ४६२ ॥

हवे आयुष्यबंध संबंधी कांइ विशेष कहे छे.

आउस्स बंधकालो, अबाहकालो य अंतसमओ य ॥
अपवत्तण णपवत्तण, उवक्कम णुवक्कमा भणिया ॥ ४६३ ॥

अर्थ—चालता भवनुं आयुष्य पूर्ण थवाना पहेलां परभवनुं आयुष्य बांधे ते (आउस्स) के० आयुष्यनो (बंधकालो) के० बंधकाल कहेवाय १, आयुष्य बांध्या पछी जेटलो काल गये थके आयुष्य उदय आवे तेना वचमानो जे काल ते (अबाहकालो) के० अबाधाकाल कहेवाय २, भोगवातुं आयुष्य जे समये पूर्ण थाय

ते (अंतसनभो य) के० अंतसमय कहीये ३, पण काले वेदवा योग्य आयुष्यने थोडा समयमां वेदीये ते (अपवतण) के० अप वर्तन कहीये ४, जे आयुष्य जेटले काले वेदवानु छे ते आयुष्य तेटलेज काले वेदाय ते (णअवतण) के० अनपवर्तन कहीये ५, जेणे करी आयुष्य ओछु करीये ते (उवक्कम) के० सोपक्रम कहीये ६, कारण मलयां छतां पण आयुष्य घटे नहीं ते (णुवक्कमा) के० अनुपक्रम कहीये ७, एवी रीते आयुष्यना सात भेद (भणिया) के० कह्या छे. ॥ ४६१ ॥

हवे ते साते द्वारने अनुक्रमे विस्तारथी बतावे छे.

बंधंति देव नारय, असंख नरतिरि छमास सेसाउ ॥
परभवियाउ सेसा, निरुवक्कम तिभाग सेसाउ ॥४६२॥
सोवक्कमाउया पुण, सेस तिभागे अहव नवम भागे ॥
सत्तावीसइमे वा, अंतमुहुत्तंतिमे वावि ॥ ४६३ ॥

अर्थ—(देव) के० चार निकायना देवता (नारय) के० नारकी तथा (असंख नरतिरि) के० [illegible] युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच ते सर्व (छमास [illegible]) के० पोताना चालता भवनुं आयुष्य छ मास बाकी होय [illegible] (परभवियाउ) के० पर भवनुं आयुष्य (बंधंति) के० बांधे छे. [illegible] ([illegible]) के० बीजा संख्याता आयुष्यवाला तिर्यंच [illegible] एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौरिंद्री अने पंचेंद्री जीवो ([illegible]) के० निरुपक्रम एवा पोताना भोगवातां [illegible] होय त्यारे परभवनुं आयुष्य बांधे छे. ॥ ४६२ ॥ [illegible] वली (सोवक्कमाउया) के० सोपक्रम [illegible] मनुष्य [illegible]

अर्थ—(इह) के० अहिं (बहुकालं पञ्जत्तं) के० बहु काले रेशा योग्य (जे कम्मं) के० जे साधुनुं कर्म (अनेग कालेनं) के० घणा कालनुं [illegible] के० भावना [illegible] भगवाने [illegible] के० उदय आवी (खिव) के० क्षिणे [illegible] के० [illegible] के० [illegible] ॥४१॥ (एवं) के० ए [illegible] के० साधुनुं कर्म [illegible] के० [illegible] करोरे. [illegible] के० [illegible] साधुजनी [illegible] के० [illegible] [illegible] काले रेशा योग्य [illegible] [illegible] करीरे. अहिं कोइने शंका थाय के [illegible] [illegible] के० [illegible] [illegible] (ते) [illegible] [illegible] ॥ ४१ ॥

[illegible] भगवान [illegible] ॥

[illegible] ॥४२॥

अर्थ— [illegible] ॥ ४२ ॥

[illegible]

उत्तम चरमसरीरा, सुरनेरइया असंखनरतिरिया ॥
हुंति निरुवक्कमाओ, दुहावि सेसा मुणेयव्वा ॥ ४७० ॥

अर्थ—चोवीश तीर्थंकर, बार चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव अने नव बलदेव एटला (उत्तम के० उत्तम पुरुषो कहेवाय तेओ, तथा (चरम सरीरा) के० तेज भवे मोक्ष जनारा चरम शरीरवाळा, तथा (सुर) के० चार प्रकारना देवता, तथा (नेरइया) के० साते नरकना जीवो, तथा (असंखनरतिरिया) के० असंख्याता आयुष्यवाळा युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच एटला जीवो (निरुवक्कमाओ) के० निरुपक्रम आयुष्यवाळा (हुंति) के० होय छे. अने (सेसा) के० ते विनाना बीजा जीवो (दुहावि) के० सोपक्रम आयुष्यवाळा तथा निरुपक्रम आयुष्यवाळा एम बे प्रकारना (मुणेयव्वा) के० जाणवा. ॥ ४७० ॥

जेणाउमुवक्कमिज्जइ, अप्पसमुत्थेण इयरगेणावि ॥
सो अज्झवसाणाई, उवक्कमणुवक्कमो इयरो ॥ ४७१ ॥

अर्थ—(जेण) के० जे (अप्पसमुत्थेण) के० आत्माथी उत्पन्न थयेला अध्यवसायादिके करीने अथवा (इयरगेणावि) के० बीजा शस्त्र विगेरेके करीने (आउं उवक्कमिज्जइ) के० पोतानुं आयुष्य ओछुं करीये. (सो अज्झवसाणाई) के० ते अध्यवसाय विगेरे (उवक्कम) के० उपक्रम कहीये. अने (इयरो) के० बीजा ते (अणुवक्कमो) के० अनुपक्रम कहीये. ॥ ४७१ ॥

हवे उपक्रमना आठ भेद कहे छे

अज्झवसाण निमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए ॥
फासे आणापाणू, सत्तविहं भिज्जए आउं ॥ ४७२ ॥

अर्थ—(इहं) के० अहिं (बहुकालवेयणिज्जं) के० बहुकाले वेदवा योग्य (जं कम्मं) के० जे आयुष्य कर्म (अप्पेण कालेणं) के० थोडा कालमां (सव्वप्पएसग्गं) के० आत्माना सर्व प्रदेशना अग्रभागे (उइन्न) के० उदय आणी (चिय) के० निश्चे (जुगवं) के० समकाले (वेइज्जइ) के० वेदे ॥४६९॥ (एयं) के० ए (आउं) के० आयुष्य कर्म (अपवत्तणिज्जं) के० अपवर्त्तन कहीये. (अहवा) के० अथवा आयुष्यनी पेठे (असेसकम्मंपि) के० बीजां सर्व कर्म पण बहुकाले वेदवा योग्य छतां थोडे काले वेदाय ते अपवर्त्तन कहीये. अहिं कोइने शंका थाय के-जेवी रीते कर्म बांध्युं होय तेवी रीते न वेदाय तो पछी बांध्या न बांध्यामां विशेष शुं? त्यां उत्तर कहे छे के-(बंधसमएवि) के० बंधना अवसरे पण (तं) के० ते कर्म (जहा जोगं) के० यथायोग्य मलेला कारणे करी (चिय) के० निश्चे (सिढिलं बद्धं) के० शिथिल एटले ढीलुं कर्म बांध्युं होय जेथी देशकालादिक कारण मलवाथी थोडा समये ते कर्म वेदाय. ते सोपक्रम वदेवाय छे. ॥ ४७० ॥

जं पुण गाढनिकायण—बंधेण पुव्वमेव किल बद्धं ॥
तं होइ अणपवत्तण, जुग्गं कम वेयणिज्जफलं ॥४७१॥

अर्थ— (पुण) के० वली (जं) के० जे कर्म (गाढनिकायणबंधेण) के० गाढ निकाचित बंधेकरीने (पुव्वमेव) के० पूर्वभवे (किल) के० निश्चे (बद्धं) के० बांध्युं छे. (तं) के० ते (अणपवत्तण) के० अनपवर्त्तन (होइ) के० होय. ते (जुग्गं) के० योग्य रीते (कम) के० अनुक्रमे करी (वेयणिज्जफलं) के० वेदवा योग्य फलवालुं होय छे. ॥ ४७१ ॥

हवे कया जीवो सोपक्रमी अने कया जीवो निरुपक्रमी ते कहे छे.

उत्तम चरमसरीरा, सुरनेरइया असंखनरतिरिया ॥
हुंति निरुवक्कमाओ, दुहावि सेसा मुणेयव्वा ॥ ४७२ ॥

अर्थ—चोवीस तीर्थंकर, बार चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव अने नव बलदेव एटला (उत्तम) के० उत्तम पुरुषो कहेवाय तेओ, तथा (चरम सरीरा) के० तेज भवे मोक्षे जनारा चरम शरीरवाला, तथा (सुर) के० चार प्रकारना देवता, तथा (नेरइया) के० साते नरकना जीवो, तथा (असंखनरतिरिया) के० असंख्याता आयुष्यवाला युगलिया मनुष्य अने तिर्यंच एटला जीवो (निरुवक्कमाओ) के० निरुपक्रम आयुष्यवाला (हुंति) के० होय छे. अने (सेसा) के० ते सिवाना बीजा जीवो (दुहावि) के० सोपक्रम आयुष्यवाला तथा निरुप क्रम आयुष्यवाला एम बे प्रकारना (मुणेयव्वा) के० जाणवा. ॥ ४७२ ॥

जेणाउमुवक्कमिज्जइ, अप्पसमुत्थेण इयरगेणावि ॥
सो अज्झवसाणाई, उवक्कमऽणुवक्कमो इयरो ॥ ४७३ ॥

अर्थ—(जेण) के० जे (अप्पसमुत्थेण) के० आत्माथी उत्पन्न थयेला अध्यवसायादिके करीने अथवा (इयरगेणावि) के० बीजा शस्त्र विषादिके करीने (आउं उवक्कमिज्जइ) के० पोतानुं आयुष्य ओछुं करीये. (सो अज्झवसाणाई) के० ते अध्यवसाय विगेरे (उवक्कम) के० उपक्रम कहीये. अने (इयरो) के० बीजा (अणुवक्कमो) के० अनुपक्रम कहीये. ॥ ४७३ ॥

हवे उपक्रमना सात भेद कहे छे.

अज्झवसाण निमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए ॥
फासे आणापाणू, सत्तविहं झिज्झए आउं ॥ ४७४ ॥

अर्थ—(अज्झवसाण) के० राग स्नेह भय विगेरे मननो विकल्प, (निमित्ते) के० शस्त्र विगेरे कारण, (आहारे) के० आहार, (वेयणा) के० शीघ्र विनाशी शूलादि वेदना, (पराघाए) के० खाडा कुवामां तथा वृक्ष विगेरेथी पडवुं. (फासे) के० सर्प अग्नि विष विगेरेनो स्पर्श, अने (आणापाणू) के० श्वासनुं न्यूनाधिक चालवुं. (सत्तविहं) के० ए सात प्रकारे आउं) के० आयुष्य (भिज्जए) के० नाश पामे छे. ॥ ४७४ ॥

ए सात प्रकारना बाल्मरण क्रोधादिक चार कषायना कारणथी थाय छे माटे क्रोधादिक चार कषायनुं स्वरूप कहे छे.

जलरेणुपुढविपव्वय–राई सरिसो चउव्विहो कोहो ॥
तिण सलया कट्ठट्ठिअ–सेलत्थंभोवमो माणो ॥४७५॥

अर्थ—संजलननो, प्रत्याख्याननो अप्रत्याख्याननो, अने अनंतानुबंधीनो एम (चउव्विहो कोहो) के० चार प्रकारनो क्रोध ते अनुक्रमे (जल) के० पाणीमां करेली रेखा सरखो, (रेणु) के० रेतीमां करेली रेखा सरखो, (पुढवि) के० पृथ्वीमां पडेली रेखा सरखो, अने (पव्वयराइ सरिसो) के० पर्वतमां पडेली फाट सरखो जाणवो. तथा संजलननो, प्रत्याख्याननो, अप्रत्याख्याननो, अने अनंतानुबंधीनो एम चार प्रकारनो (माणो) के० मान ते अनुक्रमे (तिणसलया) के० नेतरना थांभला सरखो, (कट्ठ) के० लाकडाना थांभला सरखो, (अट्ठिअ) के० हाडकाना थांभला सरखो, अने (सेलत्थंभोवमो) के० पथ्थरना थांभला सरखो जाणवो. ॥ ४७५ ॥

मायावलेहिगोमुत्ती, मिढसिंगघणवंससूलसमा ॥
लोहोहलिद्दखंजण–कद्दमकिमिरागसामाणो ॥ ४७६ ॥

अर्थ—संजलननी, प्रत्याख्याननी, अप्रत्याख्याननी अने अनंतानुबंधी एम चार प्रकारनी (माया) के० माया ते अनुक्रमे (अवलेहि) के० वांसनी छाल सरखी, (गोमुत्ती) के० गोमुत्र-सरखी, (मिढसिंग) के० मेंढाना शिंगडा सरखी, अने (घण-वंसमूलसमा) के० कठीन वांसना मूल सरखी छे. तेमज संजलननो, प्रत्याख्याननो, अप्रत्याख्याननो अने अनंतानुबंधीनो (लोभ) के० लोभ ते (हलिद्द) के० हलदरना रंग सरखो, (खंजण) के० गाडावलाना मेल सरखो, (कद्दम) के० कादवना पास सरखो, अने (किमिरागसारिच्छो) के० करमजीना रंग सरखो होय छे. ॥ ४७६)

पक्खं चउमास संवच्छर–जावजीवाणु भवे कमसो ॥
देवनरतिरिय नारय–गइ साहणहेउआ भणीया ॥४७७॥

अर्थ—ते संजलनादिक कषाय (कमसो) के० अनुक्रमे (पक्खं) के० पंदर दिवस, (चउमास) के० चारमास, (संवच्छर) के० एक वर्ष अने (जावजीवाणु) के० यावत् जीवित सुधी (भवे) के० होय, वली ते संजलनादिक कषाय अनुक्रमे (देव-नरतिरियनारयगइ) के० देवता, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकीनी गतिना (साहणहेउआ) के० नेलववाना कारण (भणिया) के० कह्यां छे. ॥ ४७७ ॥

हवे सर्व जीवने पर्याप्ति कहे छे.

आहारसरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण भास मणे ॥
चउपंचपंचछप्पिय, इग विगलासन्निसन्नीणं ॥ ४७८ ॥

अर्थ—पुद्गल परिणमन हेतु जे आत्मशक्तिविशेष ते पर्याप्ति कहेवाय. पर्याप्ति छ प्रकारे छे. (आहार) के० आहारपर्याप्ति, (सरीर) के० शरीरपर्याप्ति, (इंदिय पज्जत्ती) के० इंद्रियपर्याप्ति.

(आणपाण) के० श्वासोश्वासपर्याप्ति, (भास) के० भाषापर्या (मणो) के० मनपर्याप्ति. तेमां (इग) के० एकेंद्रियजीवोने (च के० चार, (विगल) के० विकलेंद्रियजीवोने (पंच) के० पां (असन्नि) के० असंज्ञी पंचेंद्रियने (पंच) के० पांच, अने (सन्नी के० संज्ञी पंचेंद्रियने (छप्पिय) के० छ पर्याप्ति होय छे. ॥२७८

आहारसरीरिंदिअ, ऊसासवओ मणोभि निव्वत्ति ॥
होइजओ दलियाओ,करणं पइ सा उ पज्जत्ती ॥२७९॥

अर्थ—(आहार) के० आहारपर्याप्ति, (सरीर) के० शरीर पर्याप्ति, (इंदिअ) के० इंद्रियपर्याप्ति, (पइ) के० अने (ऊसास) के श्वासोश्वासपर्याप्ति, (वओ) के० वचनपर्याप्ति, अने (मणो) के मनपर्याप्ति, ए छ पर्याप्तिनी (अभिनिव्वत्ति) के० उत्पत्ति (जओ दलिआओ) के० जे पुद्गल दल्यकी आहारादिकनी उत्पत्तिने (करण) के० जीव सम्बन्धी शक्तिविशेष (होइ) के० थाय ते (पज्जत्ती) के० पर्याप्ति कहेवाय छे. ॥ २७९ ॥

हवे जीवने दश प्राण होय ते कहे छे.

पण इंदिय तिबलूसा,साऊ दस पाण चउ छ सग अट्ठ॥
इगदुतिचउरिंदीणं, असन्निसन्नाण नव दस य ॥२८०॥

अर्थ—स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु अने श्रोत्र ए(पण इंदिय) के० पांच इंद्रिय, मनोबल वचनबल अने कायबलरूप (तिबल) के० त्रण बल, (ऊसास) के० श्वासोश्वास, अने (आऊ) के० आयुष्य ए (दस पाण) के० दश प्राण जाणवा. तेमां (इग) के० एकेंद्रियने (चउ) के० चार, (दुतिचउरिंदिणं) के० बेंद्री तेंद्री अने चउरिंद्रीने अनुक्रमे (छ सग अट्ठ) के० छ सात अने आठ प्राण होय छे. (य) के० तथा (असन्निसन्नीण) के० असंज्ञी पंचेंद्रीय

तथा संज्ञीपंचेंद्रीयने (नव दस) के० नव अने दस प्राण अनुक्रमे जाणवा. ॥ ४८० ॥

एगिंदियस्सवि आहार–भयमेहुणपरिग्गहाइ सन्नाइ ॥
कोहे माणे माया–लोहे ओहे य लोगे य ॥ ४८१ ॥

अर्थ—(एगिंदियस्सवि) के० एकेंद्रीय जीवोने (आहार) के० आहार, (भय) के० भय, (मेहुण) के० मैथुन, (परिग्गह) के० परिग्रह, (कोहे) के० क्रोध, (माणे) के० मान, (माया) के० माया, (लोहे) के० लोभ. (ओहेय) के० ओघ अने (लोगेय) के० लोक ए दस (सन्नाइ) के० संज्ञा होय छे. ॥ ४८१ ॥

हवे जीवोने समुद्‌घात कहे छे.

वेयण कसाय मरणे, वेउव्वी तेय हार केवलिया ॥
सग पण चउ तिन्नि कमा, नर सुर नेरइयतिरियाणं ॥४८२॥

अर्थ—(वेयण) के० वेदना, (कसाय) के० कसाय, (मरणे) के० मरण, (वेउव्वी) के० वैक्रिय, (तेय) के० तेजस, (आहार) के० आहारक अने (केवलिया) के० केवली, ए सात समुद्‌घात जाणवा–तेमां (नर) के० मनुष्यने (सग) के० सात, (सुर) के० देवताने (पण) के० पांच, (नेरइय) के० नारकीने (चउ) के० चार, अने (तिरियाणं) के० तिर्यंचने (तिन्नि) के० त्रण समुद्‌घात (कमा) के० अनुक्रमे होय छे. ॥ ४८२ ॥

हवे संक्षेपे संग्रहणीना चोवीस द्वार कहे छे.

संखित्तयरी उ इमा, सरीरमोगाहणा य संघयणा ॥
सन्ना संठाण कसाय,लेसिंदिय दु समुग्घाया ॥४८३॥
दिट्ठीदंसणनाणे, जोगुवओगोववायचवणठिइ ॥
पज्जत्ति किमाहारे, सन्नि गई आगई वेए ॥ ४८४॥

अर्थ—(इमा) के० आ संग्रहणी (संखित्तयरी) के० अति संक्षेपमात्र चोवीसद्वारे करी करे छे, १ (सरीर) के० शरीरद्वार, २, ओगाहणाय) के० अवगाहना द्वार, ३ (संघयणा) के० संघयणद्वार, ४ (सन्ना) के० संज्ञाद्वार, ५ (संठाण) के० संस्थानद्वार, ६ (कसाय) के० कषायद्वार, ७ (लेस) के० लेश्याद्वार, ८ (इंदिय) के० इंद्रियद्वार, ९ (दुसमुग्घाया) के० बिसमुद्घातद्वार, १० (दिट्ठी) के० दृष्टिद्वार, ११ (दंसण) के० दर्शनद्वार, १२ (नाणे) के० ज्ञानद्वार अने १३ अज्ञानद्वार, १४ (जोग) के० जोगद्वार, १५ (उवओग) के० उपयोगद्वार, १६ (उववाय) के० उपपातद्वार, १७ (चवण) के० च्यवनद्वार, १८ (ठिइ) के० स्थितिद्वार, १९ (पज्जत्ति) के० पर्याप्तिद्वार, २० (किमाहारे) के० किमाहारद्वार. २१ (सन्नि) के० संज्ञाद्वार, २२ (गई) के० गतिद्वार, २३(आगई) के० आगतिद्वार, २४(वेए) के० वेदद्वार॥४८४॥

मलहारहेमसुरीण, सीसलेसेण सूरिणा रइयं ॥
संघयणिरयणमेयं, नंदउ जावीरजिणतित्थं ॥ ४८५ ॥

अर्थ—(मलहार हेमसुरीण) के० मलधारी गच्छना हेमचन्द्रसूरिना (सीसलेसेण) अल्पशिष्य एवा (सूरिणा) के० चन्द्रसूरिए (रइयं) के० रच्युं (संघयणिरयणं) के० आ संग्रहणीरत्न (जावीरजिणतित्थं) के० ज्यां सुधी वीरतीर्थप्रवर्त्ते त्यां सुधी (नंदउ) के० वृद्धिपामो ॥ इति चन्द्रसूरिरचिता संग्रहणी समाप्ता ॥



ADCARCHAND ...
JAIN LIBRARY
BIKANER, RAJPUTANA.